''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनो-सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय; झांसी

से

पी-एच०डी० (शिक्षाशास्त्र) उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध निर्देशक

डा० प्रताप सिंह सेंगर

रीडर; शिक्षा संकाय

अतर्रा महाविद्यालय; अतर्रा (बांदा)

प्रस्तुति

श्रीमती अर्चना द्विवेदी

प्रवक्ता; शिक्षाशास्त्र विभाग

जी0डी0एस0बी0 महाविद्यालय डेरापुर
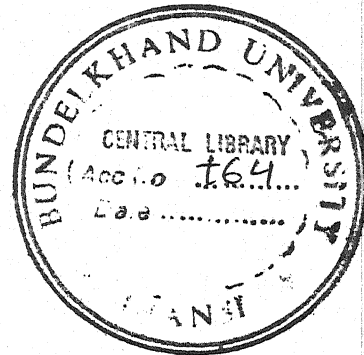
(कानपुर-देहात)

सन् २००२ ई०

प्रमाण - पत्र

डॉ० प्रताप सिंह सेंगर
रीडर शिक्षा संकाय
अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा

आवास-
टीचर्स कालोनी, अतर्रा, बांदा
दूरभाष-०५१९१- २४४२२४

पत्रांक ....

दिनाँक - २५-१२-२००२

प्रमाण - पत्र

सहर्ष प्रमाणित किया जाता है कि श्री मती अर्चना द्विवेदी, प्रवक्ता शिक्षा शास्त्र विभाग, जी.डी.एस.बी. महाविद्यालय डेरापुर (कानपुर देहात) ने "जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनो-सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. उपाधि के लिये बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के नियमों का पालन करते हुए दो सौ दिनों से अधिक तक मेरे निर्देशन में अपना शोध कार्य सम्पन्न किया है।

इनकी वृत्ति सारग्राही एवं दृष्टि अन्वेषी रही है, इन्होंने बड़ी लगन, परिश्रम एवं रुचि के साथ अपने अभिप्रेत कार्य को पूर्ण किया है। मेरी दृष्टि में यह शोध कार्य मौलिक तथा विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति एवं प्रस्तुति में उत्कृष्ट है। अतः निरीक्षण के पश्चात इनकी सफलता की कामना करते हुए, इस शोध प्रबन्ध को मूल्यांकन हेतु विश्वविद्यालय में प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

(डॉ. प्रताप सिंह सेंगर)
शोध निर्देशक

प्राक्कथन

प्राक्कथन

दुनिया के विकासशील देश और प्रमुखतः भारत सहित एशिया महाद्वीप के देश वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि की त्रासदी से ग्रसित हैं। इन देशो की जनसंख्या वृद्धि दर ने सामान्य व्यक्ति के लिये जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की उपलब्धता भी दूभर बना दी है। भारतीय जनसंख्या परिवेश के सन्दर्भ में जनगणना आंकड़ों से स्पष्ट है कि जनसंख्या की कुल आबादी का लगभग ३० प्रतिशत भाग सोलह वर्ष से कम आयु के बच्चों का है। यही कारण है कि देश के संसाधनों का एक बहुत बड़ा भाग इस आयु वर्ग की आवश्यकताओं जैसे भोजन, नये विद्यालय, स्वास्थ्य सुविधाओं आदि में ही व्यय हो जाता है, तथा जीवन की गुणवत्ता तो दूर आज देश के सामान्य व्यक्ति का जीवन अशिक्षा, गरीबी तथा भुखमरी का पर्याय है।

देश में उत्तरोत्तर बढ़ती जनसंख्या के उदर पूर्ति हेतु अपेक्षित खाद्यान्नों की पूर्ति हेतु वन प्रदेशों की निरन्तर कटान तथा अन्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बनने वाले कल-कारखानें वर्तमान समय में पारस्थितिकीय असुन्तलन के प्रमुख कारण हैं। इस पारस्थितिकीय असंतुलन की स्थिति में उत्तरोत्तर वृद्धि विभिन्न वैज्ञानिकों की चिन्ता का कारण बने हुए है और वह इस पारस्थितिकीय असन्तुलन की स्थिति में सुधार न होने की दशा में पृथ्वी पर जीवन की समाप्ति की आशंका से ग्रसित हैं।

अस्तु निःसन्देह यह कहा जा सकता है कि जनसंख्या वृद्धि एक ऐसी समस्या है जिस पर प्रभावी नियन्त्रण अत्यन्त आवश्यक है। यह समस्या एक सामाजिक समस्या है जिसका कारण व्यक्ति के परिवार के

आकार तथा बच्चों के प्रति मनोवृत्ति में निहित है। अतएव जनसंख्या समस्या के समाधान हेतु व्यक्तियों की मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आवश्यक है। तथा इसका निदान वैयक्तिक स्तर पर ही खोजा जाना चाहिये। वस्तुतः जनसंख्या समस्या का समाधान व्यक्तियों का वह आयु वर्ग कर सकता है जो सन्तानोत्पत्ति में सक्षम है अर्थात नई पीढ़ी में जो निकट भविष्य में मां-बाप बनने वाला है, उत्तरदायित्व पूर्ण मातृत्व एवं पितृत्व विकसित करने में निहित है।

जनगणना तथा जनांकिकीय आंकड़े दर्शाते है। कि एशिया महाद्वीप के अधिकांश देशों की कुल आबादी का ४० से लेकर ५० प्रतिशत तक का भाग १५ वर्ष से कम आयु वर्ग के बच्चों का है। अतएव यह स्पष्ट है कि आगामी दशकों में जनसंख्या विकास के स्वरूप का निर्धारण प्रमुखतः परिवार के आकार के प्रति इस नई पीढ़ी के दृष्टिकोण पर निर्भर करेगा।

वस्तुतः जनसंख्या की वृद्धि तथा अधिकता की समस्या ऐसी नहीं है; जिसका अंतिम निदान मात्र वर्तमान में बच्चों की जन्म दर घटाने में निहित हो। वर्तमान में बच्चों की जन्मदर घटाने की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उन बच्चों की मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जाय जो आगामी एक दो दशकों में सन्तानोत्पत्ति में सक्षम आयु वर्ग में प्रविष्ट होने वाले हैं। प्रकरान्तर से कहा जा सकता है कि जनसंख्या समस्या का समाधान एक ऐसे सामाजिक और शैक्षिक परिवेश की अपेक्षा रखता है; जिसमें बच्चों को जनाधिक्य जनित समस्याओं से अवगत कराया जाय तथा उनमें परिवार के आकार के प्रति ऐसे सकारात्मक सोच को विकसित किया जाय कि वह सीमित परिवार के मानक को जीवन दर्शन के रूप में अंगीकार कर सके। तब और केवल तब ही जनसंख्या समस्या,

एक स्थाई समाधान पा सकेगी तथा समाज में जीवन की गुणवत्ता दृष्टि गोचर हो सकेगी।

अस्तु मेरा अभिमत है कि जनसंख्या-शिक्षा को सामान्य विद्यालयी पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग बनाया जाय तथा जनाधिक्य की समस्या का समाधान जनसंख्या-शिक्षा में खोजा जाना अधिक युक्ति संगत होगा। जनसंख्या-शिक्षा से आशय एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम का रूप जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व में जनसंख्या की स्थिति के सम्बन्ध में अध्ययन समाहित हो तथा जिसका छात्रों में उक्त स्थिति के प्रति उत्तरदायित्व पूर्ण तथा औचित्यपूर्ण सोच विकासित करना है।

यह निर्विवाद रूप से स्वीकार्य है कि भारत और विश्व की जनसंख्या समस्या का समाधान प्रौढ़ वर्ग तथा प्रमुखतः युवा वर्ग में संतानोत्पत्ति के संदर्भ में एक सकारात्मक अभिवृत्तिक परिवर्तन में निहित है। परिवार नियोजन जैसे उपाय तात्कालिक समाधान के रूप में प्रौढ़ आयु वर्ग द्वारा संतानोत्पत्ति में अवरोधक की भूमिका का निर्वाह कर सकते है; किन्तु रक्त बीज की भांति नित जन्म लेती यह समस्या का स्थाई समाधान उन बच्चों में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने में ही निहित है, जो आज विद्यालयों में अध्ययनरत हैं; क्योंकि भविष्य की जनसंख्या स्थिति और उसका स्वरूप प्रमुखतः इन बच्चों की सन्तानोत्पत्ति के सम्बन्ध में अवधारणा पर ही निर्भर करेगी। अस्तु शिक्षण-संस्थायें जनसंख्या समाधान हेतु जनसंख्या-शिक्षा के माध्यम से जन-चेतना के केन्द्र बन सकतीं हैं तथा एक ऐसे परिवेश का निर्माण कर सकतीं हैं; जिसमें वर्तमान में पल रही पीढ़ी अपने भावी जीवन में सीमित परिवार के मानक स्वतः अंगीकार कर सकें और इस प्रकार जनसंख्या समस्या का स्थाई और तार्किक समाधान हो सके। किन्तु वस्तुतः यह

शिक्षकों के दृष्टिकोण पर ही निर्भर करता है क्योंकि मात्र वह शिक्षक ही हैं; जिनका जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच है तथा जो स्वयं सीमित परिवार के मानक के प्रति आस्थावान हैं; बच्चों में सही अर्थों में सकारात्मक सोच विकसित कर सकते हैं।

जहां तक जनसंख्या-शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न पूर्व अनुसंधान कार्यो का प्रश्न है बारासुब्रामनी, नरायणदास व अन्य (१९७०), शैवालादयाल (१९७३), डी. गोपाल राव (१९७९), आर.कल्यान सालकर (१९७५), वास्वानी तथा कपूर (१९७७), सत्तार शकवाला (१९८१)

आदि के शोध कार्य उल्लेखनीय हैं। किन्तु उपरोक्त सभी शोधकार्य शिक्षण के तीनो स्तरों - प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षकों पर आधारित नहीं हैं तथा इनमें एक साथ विविध चरों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन भी नहीं किया गया है। साथ ही शिक्षकों के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में व्यापक एवं समन्वित निष्कर्ष भी प्राप्त नहीं किया गया है। अतः इन्हीं तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुये मुझे और अध्ययन करने की इच्छा जागृत हुई। इस इच्छा को लक्षित करते हुए बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी से इस विषय पर शोध कार्य करने का संकल्प किया। इस संकल्प को शीर्षक दिया ''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनों-सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पांच अध्यायों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय- भूमिका, शोध की आवश्यकता एवं महत्व, समस्या कथन, शोध के उद्देश्य, परिकल्पनाएं; शोध विषय का परिसीमन एवं प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण सहित कुल सात उपभागों में बँट कर अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय- 'सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन' है जिसे तीन उपभागों क्रमशः जनसंख्या का परिदृश्य (विश्व, भारत, उत्तर प्रदेश), जनसंख्या नीति एवं जनसंख्या-शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न शोध कार्य को उद्घटित किया गया है।

तृतीय अध्याय- 'शोध-विधि' से सम्बन्धित है; जिसमें अनुसंधान क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि वर्तमान शोध की प्रकृति, न्यादर्श, न्यादर्श हेतु प्रयुक्त विधि, न्यादर्श का आकार, प्रयुक्त मानकी करण परीक्षण और उनका वर्णन तथा प्रयुक्त सांख्यिकी नामक कुल सात उपविभागों में त्रिभक्त किया गया है।

'चरों का सारणीयन विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या' नामक अध्याय शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय है। जिसे सोलह उपविभागों में बाँटा गया है यथा-जनसंख्या-शिक्षा के प्रति प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों-शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण, महाविद्यालय स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं का दृष्टि कोण; महाविद्यालय स्तरीय शिक्षक- शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण, जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों-शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण (सम्पूर्ण शिक्षा),जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण तथा विभिन्न चरों के मध्य सह-सम्बन्ध, परिणामों की व्याख्या शोध परिणामों की पूर्व शोध निष्कर्षो से तुलना, शोध परिणामों का सारांश।

शोध प्रबन्ध के अन्तिम पाचवें अध्याय में निष्कर्ष, सारांश एवं सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

प्रबन्ध की यात्रा एक महायात्रा होती हैं। इसमें अनेकानेक ऋण स्नेह, आत्मीयता के दर्शन होते हैं। मनुष्य की यही पूँजी है- यही

जीवन धन है। इस कार्य में श्रद्धेय गुरूवर डॉ० प्रताप सिंह सेंगर, रीडर, शिक्षा संकाय अतर्रा महाविद्यालय अतर्रा (बांदा) की मैं ह्रदय से ऋणी हूँ जिनके मार्गदर्शन के अभाव में शायद ही यह यात्रा गंतव्य तक पहुँचती। उनके स्नेह और ज्ञान ने मुझे अभिभूत किया है। ब्रम्हानन्द कालेज के पूर्व प्राचार्य एवं जी० डी० एस० बी० महाविद्यालय डेरापुर के संरक्षक श्रद्धेय डा० नरेन्द्र द्विवेदी जी का सरल-तरल स्नेह उनके स्वभाव की अपनी विशेषता है। शोध पूर्ण करने हेतु अध्ययन अवकाश स्वीकृत कर उनकी कृपा का धन ऐसे बरस गया कि मेरा अन्तर तक भीग उठा है। साथ ही समय-२ पर उनके विचार, मार्गदर्शन मुझे मिलते रहे, मेरी यात्रा का यह मधुरतम संबल रहा । डा० विवेक द्विवेदी, रीडर, भौतिक विज्ञान विभाग एवं प्रबंधक जी० डी० एस० बी० महाविद्यालय डेरापुर तो मेरे भाई जैसे हैं, उनकी सह्रदयता से मैं भला कैसे वंचित रह पाती? उनके प्रति ह्रदय की जो सौहार्द्रता है वही उन्हें अर्पण, जो स्नेह दिया है, उसके प्रति मौन के अलावा और कोई उत्तम अभिव्यक्ति हो सकती है? मैं ह्रदय से आभारी हूँ श्री सी० पी० अग्निहोत्री, प्राचार्य जी० डी० एस० बी० महाविद्यालय डेरापुर (कानपुर देहात) की, जिनहोंने इस शोध कार्य में अनेकानेक सुझाव तथा अध्ययन हेतु अवकाश प्रदान कर सहयोग प्रदान किया। मैं चिरऋणीं एवं कृतज्ञ हूँ पूज्य पिता श्री दयाशंकर शुक्ल, एडवोकेट की, जिन्होंने बाल्यकाल में उंगली पकड़कर मात्र चलना ही नहीं सिखाया वरन मानसिक विकास के अन्तर्गत बौद्धिक रूप से तार्किक एवं विश्लेषणात्मक समझ को विकसित किया जिसके फलस्वरूप ही मैं यह शोध कार्य करने में समर्थ हो सकी। अपने ह्रदय की कृतज्ञता और एक व्यक्ति के प्रति अर्पण करने में मुझे गौरव का अनुभव होता है , जिन्हें कर्मयोगी कहने में मुझे तनिक भी संकोच नहीं होता है- प्रो० सी० पी० द्विवेदी (पूर्व प्राचार्य पो० ग्रे० कालेज पुखरायां) जो मेरे श्वसुर भी हैं, अध्ययनशील रहने के लिये सदैव मुझे प्रेरणा देते रहे । समझ नहीं पा रही हूँ कि मुझे आभार व्यक्त करना भी

चाहिये या नहीं, मेरे जीवन सम्बल डॉ० मुकेश द्विवेदी जिनका स्नेलिह साथ व सहायूय मैं मात्र अनुभव कर सकती हूँ व्यक्त नहीं। बेटी जुलिषा व बेटे यश की प्रेरणा हेतु मैं स्नेह व्यक्त करती हूँ। ग्रन्थालय अध्यक्ष अतर्रा महाविद्यालय अतर्रा जिन्होनें सन्दर्भ ग्रन्थ उपलब्ध कराने एवं संजीत सिंह (मनीषा कम्प्यूटर पुखरायां) जिन्होनें अथक एवं अद्म्य उत्साह के साथ इस ग्रन्थ का टंकण किया, को भी आभार व्यक्त करती हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में मैं अपने कार्य की उत्कृष्टता का तनिक भी दावा नहीं करती हूँ क्योंकि शोधकर्त्री एक विचारग्राही पाठक भर रही है, अस्तु, जनसंख्या-शिक्षा जैसे विस्तृत विषय के सन्दर्भ में मात्र कुछ बूंदे ही निकालकर रख सकी हूँ। विद्वान समीक्षक मेरी इस सीमा को समझते हुए मुझे क्षमा करेंगें तथा मेरा उत्साहवर्द्धन करेंगें, ऐसी मेरी आशा है।

विनम्रता एवं प्रणति के साथ।

सादर-

भवदीया

(श्रीमती अर्चना द्विवेदी)

प्रवक्ता- शिक्षा शास्त्र विभाग

जी०डी० एस० बी० महाविद्यालय

डेरापुर, (कानपुर-देहात)

दिनाँक - २५-१२-२००२
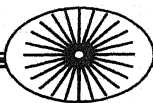
विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

प्रथम - अध्याय

प्रथम - अध्याय

१.१. भूमिका
१.२. शोध की आवश्यकता एवं महत्व
१.३. समस्या कथन
१.४. शोध के उद्देश्य
१.५. परिकल्पनाएं
१.६. शोध विषय का परिसीमन
१.७. प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

सुख सुन्दरता है वहाँ

दो ही बच्चे हैं जहाँ

अध्याय-१ - भूमिका

वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय विकास के फलस्वरूप आज दुनिया का आकार सिकुड़ गया है। विभिन्न देशों के बीच की भौतिक दूरी अब इतिहास की बात हो चुकी है। आज व्यक्ति दुनियां के एक सिरे से दूसरे सिरे तक कुछ ही घंटों में पहुँच सकता है। मानव का यह प्रगति अभियान निर्बाध गति से सतत रूप में जारी है। आज वैज्ञानिक दूसरे ग्रहों में जीवन की सम्भावनायें खोज रहे हैं। बहुत सम्भव है निकट भविष्य में मनुष्य पृथ्वी से अन्य ग्रहों की यात्रायें उसी भाँति करेंगे जैसे आज एक देश से दूसरे देश अथवा एक नगर से दूसरे नगर की यात्रा कर रहा है।

दुनियाँ के देशों के बीच की भौतिक दूरी समाप्त होने तथा सूचना क्रान्ति के फलस्वरूप आज विश्व के किसी कोने की समस्या सारी मानव जाति की समस्या बन जाती है। तथा विश्वव्यापी प्रयास उस समस्या के समाधान खोजने के लिये उद्यत हो जाते हैं। समय-समय पर आयी विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं- भूकम्प, महामारी, अनावृष्टि, अतिवृष्टि इत्यादि के अवसरों पर विभिन्न देशों द्वारा दर्शायी गई संवेदनशीलता तथा एक जुटता इन प्राकृतिक आपदाओं जनित समस्याओं को सामूहिक रूप से मिल जुल कर दूर करने के प्रयासों के प्रमाण हैं। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं- विश्वबैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि के गठन के मूल में मानव मात्र के कल्याण का ही भाव एवं दर्शन निहित है।

आज मानव यह अनुभव कर रहा है कि उसके सम्मुख उपस्थित विभिन्न समस्याओं के समाधान, निराकरण एवं पारस्परिक सहयोग की आपेक्षा रखते हैं। वर्तमान समय में दुनियाँ जिन विभिन्न समस्याओं से दो चार हो रही हैं उन प्रमुखतम् समस्याओं में जनसंख्या बृद्धि भी एक है। द्रुतगति से उत्तरोत्तर बढ़ती विश्व जनसंख्या आज प्रत्येक विचारवान व्यक्ति की चिन्ता का कारण बनती जा रही है क्योंकि जनाधिक्य की स्थिति कहीं प्रत्यक्षतः तो कहीं परोक्षतः अनेकानेक समस्याओं की जननी हैं।

वर्तमान समय में विश्व दो ध्रुवों में बटा है। एक ध्रुव पर विश्व के वे विकसित देश हैं जो भौतिक संसाधन तथा समृद्धि के पर्याय हैं। जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें, स्वास्थ्य, शिक्षा, रहन-सहन तथा जीवन-स्तर इत्यादि की दृष्टि से समुन्नत श्रेणी में हैं, जबकि दूसरे ध्रुव का प्रतिनिधित्व वे विकासोन्मुख राष्ट्र कर रहे हैं जिनकी अधिकांश आबादी अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण में जीवन जीने के लिये अभिशाप्त हैं। सामान्यतः दुनियाँ के अधिकांश भागों में जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। किन्तु विकासशील देशों में वृद्धि दर अपेक्षाकृत अधिक है। वस्तुतः अनियंत्रित जनसंख्या की बढ़वार का विकासशील देशों की आर्थिक विपन्नता में महत्वपूर्ण योगदान हैं। अस्तु, जनसंख्या वृद्धि सामान्यतः सम्पूर्ण मानव जाति तथा प्रमुखतः विकासशील देशों की एक प्रमुख समस्या है दुनियां के विभिन्न देशों की बढ़ती हुई जनसंख्या उन देशों को अधिकाधिक खाद्य पदार्थों की उपज बढ़ानें के लिये विवश कर रही है, फल स्वरूप जंगलों की कटान जारी है। जिससे वन्य जीवन के अस्तित्व का संकट उत्पन्न हो रहा है। पैदावार बढ़ाने की विवशता रासायनिक खादों के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित कर रही है। परिणामतः भूमि के बंजर होने की सम्भावनायें नित प्रबल होती जा रही हैं तथा भूमि प्रदूषित हो रही है।

विकसित राष्ट्रों की उपभोक्तावादी संस्कृति तथा बढ़ती हुई जनसंख्या की अनेकानेक व्यवहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नित नये कलकारखाने आस्तित्व में आ रहे हैं। जिनसे निकली हुई कार्बनडाईआक्साइड गैसें वायुमण्डलीय ओजोन परत को पतला कर रहीं हैं जिससे जहां एक ओर वायुमण्डल का तापक्रम बढ़नें से हिम प्रदेशों की बर्फ के पिघलनें से जल प्लावन की सम्भावनायें आज वैज्ञानिकों की चिन्ता का कारण बन रहीं हैं, वहीं दूसरी ओर ओजोन परत में छिद्र होने से हानि कारक विकरण के पृथ्वी पर अत्यधिक आने की सम्भावनायें बढ़ रहीं है। जो पृथ्वी पर जीवन के लिये हानिकारक है। कलकारखानों से निकला अपशिष्ट नदियों के जल को प्रदूषित कर रहा है। जिससे जल जीवों तथा

स्वयं मनुष्य के लिये शुद्ध पानी की उपलब्धता की समस्या उत्तरोत्तर घनीभूत होती जा रही है।

जनाधिक्य के दबाव के फलस्वरूप यातायात के साधनों में बड़ी द्रुतगति से बृद्धि हो रही है। जो एक ओर तो ऊर्जा के प्राकृतिक श्रोतों के अधिकाधिक दोहन की प्रवृत्ति हेतु प्रेरित कर रही है। वहीं दूसरी ओर यातायात के साधनों की अधिकता ध्वनि तथा वायु को प्रदूषित कर रही है।

सारांशतः यह कहना युक्तिसंगत है कि विश्व में जनसंख्या की असामान्य बृद्धि प्रत्यक्षतः जहाँ एक ओर विकासशील देशों में निम्न जीवन स्तर के लिये उत्तरदायी है। वहीं दूसरी ओर विकसित देशों में जनाधिक्य का दबाव उन अनेकों परिस्थितियों को जन्म दे रहा है जिससे पारिस्थितिकीय संतुलन बिगड़ रहा है। जो अन्ततः पृथ्वी पर विनाश की परिस्थितियाँ निर्मित कर रहा है। अतएव यह निर्विवाद रूप में सत्य है कि यदि मानव स्वयं अपना अस्तित्व समाप्त नहीं करना चाहता है तो उसे उत्तरोत्तर बढ़ते जन-घनत्व पर विराम लगाना ही होगा नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब जीवन अस्तित्व के प्रति उत्पन्न भयावह स्थिति हमारे विकास का उपहास करेगी।

वर्तमान शोध की आवश्यकता एवं महत्व-

जनसंख्या वृद्धि के संदर्भ में जहां तक भारत की स्थिति का प्रश्न है वह अन्य विकासशील देशों की भाँति ही भयावह है। देश की आबादी एक सौ करोड़ का आंकड़ा पार कर चुकी है। प्रति वर्ष लगभग दो करोड़ नयी जिन्दगियाँ देश की जनसंख्या में जुड़ रहीं हैं। वस्तुतः जनसंख्या की इस वार्षिक वृद्धि दर के आगे विकास के सभी संकल्प बौने सिद्ध हो रहे हैं। देश की आजादी के पचपन वर्ष बाद भी तमाम संवैधानिक तथा सामाजिक प्रतिबद्धतायें पूरी नहीं हो सकीं हैं। १४ वर्ष तक की आयु के बच्चों की अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का संकल्प जिसे संविधान लागू होनें के मात्र १० वर्ष के भीतर पूरा होना था, आज भी पूरा नहीं हो सका है।

शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, बेरोजगारी, शुद्ध पेय जल की उपलब्धता, यातायात के साधनो की समुचित व्यवस्था के अभाव की उत्तरोत्तर घनीभूत होती समस्या तथा इनके समुचित निराकरण न दे पाने की स्थिति किसी भी कल्याणकारी राज्य के लिये चिन्ता का विषय हो सकती है। वस्तुतः इन समस्याओं के मूल मे द्रुतगति से बढ़ती देश की जनसंख्या ही है। देश की सकल राष्ट्रीय आय का अधिकांश बढ़ती हुई आबादी के भरण-पोषण में व्यय करने की विवशता, मूलभूत आवश्यकताओं की यथेष्ट रूप में पूर्ति तथा अन्य विकास कार्यो हेतु अपेक्षित धन के अभाव की स्थिति को जन्म दे रही है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का क्षेत्रफल दुनियाँ के कुल भूभाग का १/१६ भाग है जबकि जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का प्रत्येक पांचवां व्यक्ति भारतीय है। भौगोलिक क्षेत्रफल तथा जनसंख्या घनत्व के मध्य का वैषम्य जनसंख्या वृद्धि पर त्वरित एवं प्रभावी नियंत्रण की अनिवार्य अवश्यकता का संकेत देती है।

ऐसा नहीं है कि देश का राजनीतिक नेतृत्व जनसंख्या वृद्धि की असामान्य दर के प्रति चिन्तित नहीं है। विभिन्न पंच-वर्षीय योजना-कालों में जनसंख्या वृद्धि रोकने हेतु किये गये प्रयास जनाधिक्य की समस्या के प्रति स्वाभाविक चिन्ता का संकेत देते हैं। किन्तु जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिये किये गये अभी तक के शासकीय प्रयासों में यह मूलभूत त्रुटि रही कि यह प्रयास मात्र उस आयु वर्ग द्वारा प्रजनन रोकने तक सीमित रहा जो वर्तमान में प्रजनन में समर्थ था जबकि जनसंख्या वृद्धि की समस्या के समाधान तो सीमित परिवार के मानक को स्वतः अंगीकार करने की सामाजिक चेतना विकसित करने में निहित है। कोई भी दीर्घकालिक जनसंख्या नीति तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि उसका आधार वह विशाल समूह न हो जो आज विद्यालयों में अध्ययनरत है तथा जो निकट भविष्य के माँ बाप हैं।

क्योंकि वर्तमान में प्रजनन में सक्षम आयु वर्ग को पुनरोत्पादन से रोकने से तो मात्र वर्तमान की समस्या के आंशिक रूप में हल होने की ही सम्भावना है। किन्तु प्रजनन वर्ग में निरंतर जुड़े रहे, वयस्क वर्ग के सोच में परिवर्तन के अभाव में रक्त बीज की भाँति समस्या की निरन्तरता सदैव अस्तित्व में बनी ही रहेगी।

वर्तमान समय की अतिशय व्याप्त एवं भागमभाग पूर्ण दैनिकचर्या तथा समाज के अन्य अनौपचारिक संस्थाओं की सीमित होती भूमिका के फलस्वरूप विद्यालय के सामाजिक दायित्वों में अनपेक्षित वृद्धि हुई है। यही कारण है कि जनसंख्या वृद्धि की समस्या के समाधान हेतु आज भी विद्यालयों की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा जा रहा है। विचारकों, समाजशास्त्रियों तथा शिक्षाविदों का यह सोच है कि जनसंख्या वृद्धि की समस्या का श्रोत मानव सोच तथा उसके यौन व्यवहार में निहित है। अतएव प्रभावी नियंत्रण भविष्य की पीढ़ी को जनाधिक्य की समस्या से अवगत कराने तथा उसमें जीवन की गुणवत्ता के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करनें में ही निहित है। बच्चों को यह बताया ही जाना चाहिये कि वह देश के भविष्य है, वह भविष्य में बनने वाले माँ-बाप हैं। शिक्षा के एक अनिवार्य अंग के रूप में बच्चों में आदर्श मातृत्व एवं पितृत्व विकसित करने की महती आवश्यकता है। अर्थात उनमें जनसंख्या वृद्धि जनित अन्यान्य समस्याओं की विद्यालयी जीवन में अवगति करायी जायें ताकि उनके प्रजनन व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके और अन्त तक जनसंख्या वृद्धि की समस्या का सामाजिक स्तर पर निराकरण सम्भव हो सके। विद्यालय के बालक/बालिकाओं में यह सामाजिक चेतना विकसित करें कि सन्तानोत्पत्ति के सन्दर्भ में वे विभिन्न रूढ़ियाँ, अन्धविश्वास और परम्परायें जो वर्तमान परिवेश में अपनी प्रासांगिकता खो चुकीं हैं, हमारे कल के समाज के लिये अभिशाप न बनने पायें। प्रकारान्तर से आज विद्यालयों में जनसंख्या-शिक्षा की महती आवश्यकता की पक्षधरता की जा रही है।

जनसंख्या-शिक्षा:-

जनसंख्या-शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो जनसंख्या अथवा मानव शक्ति या संसाधन से सम्बन्धित है। जनसंख्या-शिक्षा में जनसंख्या के आकार जनसंख्या-बृद्धि अथवा ह्रास जनसंख्या-संरचना जनसंख्या में लैंगिक अनुपात, विवाह की आयु आदि विषयों का ज्ञान कराया जाता है। जनसंख्या-शिक्षा से मात्र आंकड़ों का ही पता नहीं चलता, बल्कि जनसंख्या वृद्धि या ह्रास के कारणों तथा उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। जनसंख्या-वृद्धि की गति तीव्र होने की दशा में यदि उसके द्वारा मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर कुप्रभाव पड़ रहा है। तो जनसंख्या-शिक्षा से हमें यह भी जानकारी हो सकती है कि जनसंख्या वृद्धि की गति को कैसे कम किया जाये। यही नहीं यदि जनसंख्या के उत्तरोत्तर ह्रास की प्रवृत्ति दिखायी दे रही है तो जनसंख्या-शिक्षा उन उपायों को भी सुझाती है। कि कैसे जन्म दर में आ रही निरन्तर कमी की प्रवृत्ति को रोका जाये। वस्तुतः जनसंख्या-शिक्षा का मूल उद्देश्य जनसंख्या के आकार को प्राकृतिक संसाधनों के अनुरूप बनाये रखना है। ताकि जीवन की गुणवत्ता सुनिश्चित हो सके। जनसंख्या-शिक्षा, जनसंख्या में वृद्धि अथवा ह्रास दोनों की ही असामान्य प्रवृत्ति का निषेध करती है। अर्थात वह शैक्षिक कार्यक्रम जो परिवार के आकार को सीमित करने अथवा असामान्य रूप से जनसंख्या में ह्रास की दशा में परिवार के आकार को बढ़ाने की ओर प्रेरित करने वाली शिक्षा, जनसंख्या-शिक्षा है। अर्थात जनसंख्या-शिक्षा परिवार के आकार के सम्बन्ध में सही दृष्टिकोण विकसित करने का शैक्षिक कार्यक्रम है।

जनसंख्या-शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षकों के दृष्टिकोण जानने विषयक वर्तमान शोध विषय दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । प्रथम तो यह कि जनसंख्या-शिक्षा पाठ्यक्रम की सफलता स्वंय शिक्षकों के दृष्टिकोण पर निर्भर करती है क्योंकि जनाधिक्य जैसी ज्वलंत समस्या के प्रति शिक्षकों का सकारात्मक सोच ही बालक/बालिकाओं में सकारात्मक सोंच का अविर्भाव

कर सकेंगें अर्थात शिक्षकों के सकारात्मक सोच की स्थिति विद्यालय और अन्ततः समाज में ऐसे परिवेश का निर्माण कर सकेगा जहाँ प्रत्येक ओर से जनाधिक्य की समस्या के समाधान की प्रतिध्वनि गूँज उठेगी तथा अन्ततः लोगों के संततिजनन व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन दृष्टिगोचर हो सकेगा। दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष जो प्रस्तुत शोध को औचित्यपूर्ण बनाता है। वह यह है कि शोध के निष्कर्षों से समाज की ज्वलंत समस्यों के प्रति शिक्षक समुदाय की जागरूकता का ज्ञान हो सकेगा। अन्यथा निष्कर्षों की स्थिति में शोध परिणाम स्वयं शिक्षकों के दृष्टिकोण में अपेक्षित परिवर्तन लाने की आवश्यकता प्रतिपादित करेंगे जो जनसंख्या-वृद्धि की समस्या के समाधान तथा विद्यालयी पाठ्क्रम में जनसंख्या-शिक्षा कार्यक्रम के समायोजन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण तथ्य होगा।

शोध की दृष्टि से जनसंख्या-शिक्षा का क्षेत्र अपेक्षाकृत नया है। यही कारण है कि बोस एवं आशीष (१९६७), मेंहता, सक्सेना एवं मुखर्जी (१९६९), चन्द्रशेखर (१९७२) मेहता एवं अन्य (१९७२), मेहता एवं रमेश चन्द्र (१९७२), अग्रवाल(१९७४), दुबे एवं वर्द्धन (१९७४), फेमिली प्लानिंग ऐसोशियेशन आफ इण्डिया(१९७४), मेहता एवं प्रकाश(१९७४), मान एवं रमेश चन्द्र(१९७८), गुप्ता (१९८३), अमृत गावरी (१९८३), अग्रवाल (१९८५), प्रकाश (१९८५), हंसराज(१९८६), मिश्र (१९८७), सरोज(१९८८), शैय्यद(१९८८), अग्रवाल (१९८०), पटनायक (१९९०), कुलश्रेष्ठ (१९९०), जार्ज (१९९१), मर्थी(१९९१), ऊषा (१९९१), तथा रीतासिंह (१९९८), आदि महत्वपूर्ण शोध निष्कर्ष भी वर्तमान शोध की आवश्यकता और महत्व को न्यून नहीं करते क्योंकि शोधकर्त्री के संज्ञान में ऐसा कोई शोध कार्य नहीं आया है। जो शिक्षा के तीनों स्तरों के शिक्षक/ शिक्षिकाओं के दृष्टि शोध के अध्ययन से सम्बन्धित हो। शोधकर्त्री की यह भी मान्यता है कि मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार के मूल में उसका जीवन-दर्शन तथा जीवन-मूल्य निहित होते हैं। प्रस्तुत शोध में शिक्षक/शिक्षिकाओं के जनसंख्या-शिक्षा विषयक दृष्टिकोण

का उनके जीवन-मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में किया गया अध्ययन शोध निष्कर्षों को और भी महत्वपूर्ण बनाता है।

अस्तु, प्रस्तुत शोध, शोध की जनसंख्या, विशिष्ट क्षेत्र एवं अध्ययनों में समाहित कारकों तथा अपेक्षित शोध निष्कर्षों की दृष्टि से उपयोगी, महत्वपूर्ण तथा औचित्यपूर्ण है।

समस्या कथन:-

वर्तमान शोध जिसमें जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों/शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण का विभिन्न कारकों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है, अधोलिखित शोध शीर्षक है-

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनो-सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति विषयक वर्तमान शोध के न्यादर्श में ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश में स्थित प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय विद्यालयों के शिक्षक तथा शिक्षकाओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य :-

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक प्रस्तुत शोध के अधोलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं-

सामान्य उद्देश्य:-

१. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना ।

३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं कीं अभिवृत्ति तथा चरों -परिवेश लिंगभेद, शिक्षण स्तर आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना

विशिष्ट उद्देश्य:-

१. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्त की पारस्परिक तुलना करना।

५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक / शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक / शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

८ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

९. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

१०. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति की पास्परिक तुलना करना।

११. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय तथा ग्रामीण शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

१२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना करना।

१३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना

१४. जनसंख्या- शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

१५. जनसंख्या- शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

१६. जनसंख्या- शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों - शिसक्षण स्तर, परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

वस्तुतः उपरोक्त सामान्य तथा विशिष्ट उद्देश्य अधोलिखित प्रश्नों को जन्म देते हैं-

सामान्य प्रश्न-

१. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

विशिष्ट प्रश्न-

१. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेद हैं?

३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

४. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेद है?

५. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

६. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

७. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

८. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

९. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१०. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति समान है?

११. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों- शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

१४. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

१५. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

१६. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों शिक्षणस्तर, परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

शोध की परिकल्पनाएँ-

प्रस्तुत शोध में सामान्य तथा विशिष्ट शोध -प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में अधोलिखित शोध परिकल्पनाओं का परीक्षण वांछित है।

सामान्य परिकल्पनाएँ-

१. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध हैं?

३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

विशिष्ट-परिकल्पनाएँ-

४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद हैं?

६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद है?

८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?
९. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१०. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
११. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों- शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?
१६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं?
१७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं?
१८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।
१९. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों तथा शिक्षण स्तर, परिवेश लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण-

प्रस्तुत शोध-विषय के स्वरूप को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाने की दृष्टि से शोध-शीर्षक में प्रयुक्त विशिष्ट तथा उनसे मिलते-जुलते शब्दों को अधोलिखित रूप में परिभाषित किया गया है-

जनसंख्या-शिक्षा की परिभाषा-

जनसंख्या-शिक्षा की प्रकृति को और अधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा दी गयी परिभाषाओं का उल्लेख करना समीचीन होगा। यद्यपि जनसंख्या-शिक्षा की एक मानक परिभाषा देना अत्यन्त दुरूह है क्योंकि मानव-जीवन की सभी परिस्थितियों से सम्बन्धित, समस्त पहलू किसी न किसी रूप में जनसंख्या-शिक्षा से सम्बन्धित हैं तथापि विभिन्न परिभाषाएँ जनसंख्या-शिक्षा के स्वरूप तथा उसके क्षेत्र पर तो प्रकाश डालेंगीं ही अतएव उनका उल्लेख आवश्यक तथा महत्वपूर्ण है।

साइमन महोदय ने जनसंख्या-शिक्षा को परिभाषित करते हुये माना है कि जनसंख्या-शिक्षा "युवा पीढ़ी के विचारों, व्यवसायों, अभिवृत्तियों एवं मूल्यों में वांछित परिवर्तन लाने का एक माध्यम है।"

जनसंख्या-शिक्षा-

डा० वी०के०आर०वी० राव के शब्दों में- "जनसंख्या-शिक्षा परिवार के आकार के सम्बन्ध में सही अभिवृत्ति विकसित करने के लिये प्रेरणा शक्ति प्रदान करती है।"

एक अन्य विद्वान डा० चन्द्रशेखर जनसंख्या-शिक्षा को परिभाषित करते हुये मानते हैं कि-"जनसंख्या-शिक्षा, जनसंख्या-वृद्धि के विभिन्न अयामों तथा आर्थिक, सामाजिक तथा सांख्यकीय जनसंख्या वितरण और जीवन स्तर से सम्बन्ध तथा कल्याण कारी राज्य/अर्थ व्यवस्था में इसके आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में अन्तिम परिणामों के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करती है।"

यूनेस्को ने जनसंख्या-शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम मानते हुए विधार्थियों में जनसंख्या के प्रति एक जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार विकसित करना माना है। यथा "जनसंख्या-शिक्षा को एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समूह, राष्ट तथा विश्व की जनसंख्या-स्थिति के सन्दर्भ में विद्यार्थियों में आदर्श एंव जिम्मेदारी पूर्ण अभिवृत्ति तथा व्यवहार विकसित करती है।"

राज्य शिक्षा संस्थान ने जनसंख्या-शिक्षा को अधोलिखित रूप में परिभाषित किया है।

" जनसंख्या-शिक्षा एक शैक्षिक प्रयास है जिसके द्वारा विभिन्न वर्गों विशेष कर छात्र छात्राओं की विश्व के परिपेक्ष्य में देश प्रदेश तथा क्षेत्र की जनसंख्या स्थिति, जनांकिकी के प्रमुख तत्वों, जनसंख्या और पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्ध, जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक एवं समाजिक विकास पर प्रभाव आदि का बोध कराया जा सकेगा। साथ ही जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं और जनसाधारण के जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों के विषय में भी जागरुक कराया जा सकेगा। अतः जनसंख्या-शिक्षा न तो परिवार नियोजन सम्बन्धी कार्यक्रम है, न यौन शिक्षा है और न कोई प्रचार या विशिष्ट दीक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम है।"

जनांकिकी-

जनांकिकी, जनसंख्या-शिक्षा से भिन्न है। जनांकिकी में जनसंख्या सिद्धान्तों, जनसंख्या आकलन के विभिन्न तरीकों, जन्म दर, मृत्यु दर, आवास-प्रवास दर, शिशु-मृत्यु दर आदि की गणना का तकनीकी ज्ञान दिया जाता है। जनांकिकी के ज्ञान से हम बच्चों के जीवित रहने की प्रत्याशा एवं जीवन तालिका जैसे विषयों का गहन अध्ययन करते हैं। जबकि जनसंख्या-शिक्षा में संख्या के साथ-साथ जनसंख्या की गुणवत्ता पर अधिक बल दिया जाता है। संक्षेप में, जनसंख्या-शिक्षा का उद्देश्य मानव विकास के उन समस्त आकड़ों एवं घटकों का ज्ञान देना है, जो मानव जीवन के

बहुमुखी विकास में सहायक हो सके, जबकि जनांकिकी जनसंख्या के आकड़ों से सम्बद्ध तकनीकी ज्ञान है।[१]

जनांकिकी की परिभाषा:-

जनांकिकी की परिभाषा के सम्बन्ध में विद्वान एक मत नहीं हैं। विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी जनांकिकी की परिभाषाओं को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

(अ)–जनांकिकी का संकुचित दृष्टिकोण (ब)–जनांकिकी का व्यापक दृष्टिकोण

(अ) - जनांकिकी का संकुचित दृष्टिकोण:-

विद्वान हाउसर तथा डंकन, हिवपिल, थामसन एवं लेविस तथा बर्कले इत्यादि जनांकिकी के संकुचित दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके अनुसार जनांकिकी–

१. किसी भी क्षेत्र में व्यक्तियों की कुल संख्या का अध्ययन है।
२. पांच प्रकार की जनांकिकी प्रक्रियाओं–प्रजनन, मृत्यु, विवाह, प्रवासिता तथा सामाजिक गतिशीलिता का अध्ययन है।
३. जनांकिकी जनसंख्या के आकार गठन एवं वितरण से सम्बन्धित विभिन्न घटकों (जन्म, मृत्यु प्रवास, लिंग, अनुपात, आयु के अनुसार वर्गीकरण आदि) का अध्ययन है।
४. जनांकिकी विज्ञान यह निशिचित करता है कि क्षेत्र विशेष की जनसंख्या किस परिवर्तन वृद्धि या ह्रास दर का प्रतिनिधित्व करती है।
५. जनांकिकी में गणित एवं सांख्यकी का प्रयोग किया जाता है।

(ब) जनांकिकी का व्यापक दृष्टिकोण:-

विद्वानगण फ्रेंक, मूर, बोग, लोरिमर इत्यादि जनांकिकी के व्यापक दृष्टिकोण के पक्षधर हैं। यह सभी वैज्ञानिक जनांकिकी को जनसंख्या

---

[1] श्रोतः "जनसंख्या–शिक्षा सिद्धान्त एवं तत्व", जनसंख्या केन्द्र, उत्तरप्रदेश, लखनऊ, पृ०सं०–७

का व्यापक अध्ययन मानते हैं। इनके अनुसार जनांकिकी में जनसंख्या की आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक तथा जैविक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

-- प्रो. बोग ने जनांकिकी की व्यापक परिभाषा देते हुये कहा है–" जनांकिकी मानवीय जनसंख्या के आकार संरचना एवं क्षेत्रीय तथा समय समय पर इन दशाओं में हो रहे परिवर्तनों जो पांच प्रमुख प्रक्रियाओं प्रजनन, मृत्यु, विवाह, प्रवासिता, सामाजिक गतिशीलता आदि के फलस्वरूप होते रहते हैं, उनका सांख्यकीय एवं गणितीय अध्ययन है।"[२]

जनांकिकी की संकुचित तथा व्यापक परिभाषा के आधार पर कहा जा सकता है कि "जनांकिकी जनसंख्या के अध्ययन की एक ऐसी गणितीय शाखा है जिसमें जनसंख्या की दशा एवं गतिशीलता का सांख्यकीय विश्लेषण किया जाता है। तथा जनसंख्या के आकार, वितरण, संरचना, जन्मदर, मृत्युदर आदि का अध्ययन समूह के रूप में किया जाता है"।

डा. एस. एन. अग्रवाल ने जनांकिकी को परिभाषित करते हुये कहा है- "जनांकिकी के अन्तर्गत जनसंख्या का विश्लेषण किया जाता है, जनांकिकी जनसंख्या की गणितीय शाखा है। जनसंख्या अध्ययन में इसके अतिरिक्त जनसंख्या परिवर्तन एवं जनसंख्या गति का भी अध्ययन होता है। अतः उन्होंने जनांकिकी शब्द के स्थान पर "जनसंख्या अध्ययन" शब्द का प्रयोग किया है"।[३]

२– श्रोतः "जनसंख्या-शिक्षा सिद्धान्त एवं तत्व", जनसंख्या केन्द्र, उत्तरप्रदेश, लखनऊ।

[3] डॉ. एस.एन. अग्रवाल "ट्रेनिंग इण्यिाज डिमो ग्राफर्स, एन इन्टरव्यू द्वारा के.एन.एम. पिल्लई, स्थान/ जून-१९७०, पृ०सं०-३१

जनसंख्या-शिक्षा तथा परिवार-नियोजन:-

जनसंख्या-शिक्षा तथा परिवार नियोजन कार्यक्रम के उद्‌देश्यों में इस अंश में समानता है कि दोनो ही परिवार के आकार के नियोजन की बात करते हैं तथापि इनके क्रिया चयन में मौलिक भेद हैं। जनसंख्या-शिक्षा जहां छात्र-छात्राओं में जनसंख्या के आकार को उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप नियोजित करने की बात करती है ताकि जनाधिक्य अथवा ह्रास की स्थिति मानवीय गुणवत्ता को प्रभावित न कर सके अर्थात जनसंख्या-शिक्षा का उद्‌देश्य बालक बालिकाओं में जनसंख्या के आकार के सम्बन्ध में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है। ताकि वर्तमान के बच्चों में आदर्श मातृत्व एवं पितृत्व विकसित किया जा सके तथा भविष्य की जनाधिक्य को समस्या का स्थाई समाधान खोजा जा सके। जनसंख्या-शिक्षा का क्रियाशील समूह तथा आयु वर्ग प्रमुखतः वह आयुवर्ग है जो वर्तमान में विद्यालयों में अध्ययनरत है। जबकि परिवार नियोजन कार्यक्रम का क्रियान्वयन उस आयु वर्ग पर किया जाता है जो वर्तमान में सन्तानोत्पत्ति की दृष्टि से सक्षम हैं। परिवार नियोजन कार्यक्रम के माध्यम से वर्तमान समय के दम्पतियो को सन्तानोत्पत्ति के प्रति हतोत्साहित किया जाता है। दूसरे शब्दो विभिन्न स्थाई तथा अस्थाई विधियों के द्वारा दम्पतियों के सन्तानोत्पत्ति के व्यवहार को बाधित किया जाता है जबकि जनसंख्या-शिक्षा कार्यक्रम का उद्‌देश्य वर्तमान समय की जनसंख्या के परसीमन से नहीं अपितु भविष्य की जनसंख्या के नियोजन के उपक्रम तथा सार्थक प्रयास हैं।

जनसंख्या-शिक्षा तथा यौन-शिक्षा :-

प्रायः सामान्य जनसंख्या-शिक्षा तथा यौन-शिक्षा को एक दूसरे के पर्याय मानने की त्रुटि कर जाते हैं। जबकि यह दोनों प्रत्यय प्रथक-प्रथक हैं। दोनों की प्रकृति भिन्न है यद्यपि इन दोनो ही प्रत्ययों में आंशिक समानता भी हैं और यह आंशिक समानता ही भ्रान्ति का करण है। वस्तुतः

यौन-शिक्षा उस सीमा ही तक जनसंख्या-शिक्षा के उद्देश्यों से साम्य रखती है। जिस सीमा तक वह जनसंख्या-नियंत्रण की बात करती है। यौन-शिक्षा के अन्तर्गत परिवार नियोजन की विशिष्ट विधियों आदि की शिक्षा दी जाती है। ताकि परिवार का आकार सीमित रह सके जबकि जनसंख्या-शिक्षा के अन्तर्गत पारिस्थितिकीय सन्तुलन सुनिश्चित करने की दृष्टि से सन्तानोत्पत्ति के सम्बन्ध में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना होता है। यौन शिक्षा, मूल प्रवृत्तियों की आवश्यकताओं से सम्बन्धित है जिनमें परिवर्तन कठिन होता है जबकि जनसंख्या-शिक्षा का प्रतिपाद्य विषय ज्ञान, चातुर्य तथा अभिवृत्ति है जिनमें परिवर्तन अपेक्षाकृत आसान होता है। यौन-शिक्षा बालक-बालिकाओं में पुरषत्व तथा नारीत्व का बोध कराती है। जबकि जनसंख्या-शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में आदर्श पितृत्व तथा मातृत्व विकसित करना है। यौन-शिक्षा में वर्जनाभाव है; जबकि जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से बालक/बालिकाओं में जनसंख्या-आकार के परिप्रेक्ष्य में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना है ताकि पारिस्थितिकीय असंतुलन मानव-विकास में अवरोधक न बन सके।

अभिवृत्ति:-

विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति तथा एक विशिष्ट परिस्थिति में विभिन्न व्यक्तियों का व्यवहार उनकी अभिवृत्ति का प्रतिबिम्व होता है। आलपोर्ट (१९३५), मैकग्वायर (१९७२) का मानना है कि जब से समाज मनोविज्ञान का औपचारिक संगठन हुआ है उसी समय से अभिवृत्तियों का अध्ययन एक प्रमुख विषय बन गया है। फलतः अभिवृत्तियों पर उपलब्ध साहित्य बहुत विशद है, सम्भवतः वह समाज मनोविज्ञान के किसी भी अन्य विषय पर उपलब्ध साहित्य से अधिक है। (शेरिफ तथा शेरिफ १९६९)

वस्तुतः किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति उसके व्यवहार का नियामक तत्व है। यही कारण है कि विभिन्न समाज मनोविज्ञानी अभिवृत्ति की परिभाषा पर एक मत नहीं है। यथा आलपोर्ट (१९३५) के अनुसार

''यह व्यवहार करने की तत्परता की मानसिक तथा तांत्रिक स्थिति है जो अनुभवों के द्वारा व्यवहार पर पड़ने वाले निर्देशात्मक तथा प्रकार्यात्मक प्रभाव के फलस्वरूप निर्मित होती है।

-- रस्तोगी (१९८०)[४] ने अपनी पुस्तक आधुनिक समाजिक मनोविज्ञान में उल्लेख किया है कि आलपोर्ट की भांति ही डूब (१९४४) भी अभिवृत्ति को एक निदेशात्मक तथा अभिप्रेरणात्मक प्रक्रम मानते हैं। किन्तु कुछ अन्य मनोवैज्ञानिक इसे केवल निदेशात्मक शक्ति मानते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति को 'केवल अनुक्रिया करने की तत्परता के रूप में ही स्वीकार करते हैं और कुछ मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति को अनुक्रिया की तत्परता तथा अनुक्रिया दोनो ही मानते हैं। निदेशात्मक प्रकृम से तात्पर्य है कि अनूक्रिया के लिये उद्दीपक का चयन अभिवृत्ति द्वारा निर्धारित होता है। अभिप्रेरणात्मक प्रकृम का तात्पर्य यह है कि अभिवृत्तियाँ न केवल पूर्व निहित ऊर्जा को दिशा प्रदान करतीं हैं। अपितु स्यवं व्यवहार अर्जित करने की क्षमता रखती हैं।

अभिवृत्ति के संघटक:-

सामान्यतः माना जाता है कि अभिवृत्ति के तीन प्रमुख घटक हैं।

१- संज्ञानात्मक संघटक :-

संज्ञानात्मक संघटक से तात्पर्य अभिवृत्ति के वैचारिक या संप्रत्यात्मक पक्ष से है, जो चिन्तन में प्रयुक्त होता है।

२- भावनात्मक संघटक:-

जब किसी विचार के साथ कुछ संवेग जुड जाते हैं तो वह अभिवृत्ति का भावनात्मक तत्व कहलाता है। जैसे वनस्पति घी पौष्टिक और

---

[४] घनश्याम रस्तोगी, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान टाटा मैक्ग्रा-हिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड़, नई दिल्ली, १९८० - पृ०सं०-२५२

सस्ता है या वह हानिकारक है, यह भाव भी वनस्पति घी के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्ति का अंश होता है।

३- व्यवहारात्मक संघटक:-

उद्दीपक के प्रति व्यक्ति एक विशिष्ट प्रकार से व्यवहार करने की प्रवृत्ति या तत्परता भी प्रदर्शित करता है । यह तत्परता अभिवृत्ति के व्यवहारात्मक संघटक का परिचायक है ।

उपरोक्त तीनो घटकों के आधार पर अभिवृत्ति का निर्माण होता है। अभिवृत्ति के यह तीनो घटक प्रायः स्वीकार्य है तथापि सभी मनोवैज्ञानिक इन पर समान बल नही देते हैं। समाज मनोविज्ञान मे प्रमुखतः तीन प्रकार की परिभाषायें उपलब्ध है।

एक विमीय परिभाषायें:-

एक विमीय परिभाषा के अनुसार अभिवृत्तियाँ वस्तुओं के मूल्यांकन की अथवा इनके प्रति भावात्मक प्रतिक्रियायें हैं। अभिवृत्ति मापन के प्रणेता थर्सटन महोदय को यही परिभाषा स्वीकार्य थी । समाज मनोविज्ञानी फिसबैन (१९६७)[५] तथा बर्कोविट्ज (१९६९)[६] अभिवृत्ति की इसी परिभाषा को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। मनोवैज्ञानिक रोकीज (१९६८)[७] अभिवृत्ति को किसी उद्दीपक से सम्बद्ध विचारों तथा विश्वासों का संगठन मानते हैं।

[5] Marstin fishbein , Readings in attitude theory and management, wiley 1967.
[6] L.Berkowitz, A survey of Social Psychology, Illinois, the dryden press, Hinsdale, 1975.
[7] Rokeach, Beliets, Attitudes and values, Somfrancisco Jossey- Boss, 1998.

द्विविमीय परिभाषायें:-

कुछ मनोवैज्ञानिक (रोसेन वर्ग १९५६, १९६०) संज्ञानों तथा भावों दोनों को अभिवृत्ति के महात्वपूर्ण संघटक मानते हैं।[८] इस दृष्टिकोण के अनुसार उद्दीपक के विषय में व्यक्ति के जो भाव होते हैं उनमें यह विश्वास भी सन्निहित रहता है कि वह उद्दीपक वस्तु किसी विधेयात्मक अथवा निषेधात्मक लक्ष्य की प्रति मे सहायक अथवा बाधक है।

त्रिविमीय परिभाषाएँ:-

कुछ मनोवैज्ञानिक उपरोक्त परिभाषाओं के अतिरिक्त व्यवहार या व्यवहार प्रवृत्ति को भी अभिवृत्ति का अंश मानते हैं। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि किसी उद्दीपक के बार-बार संपर्क में आने के कारण उससे संबद्ध वही संज्ञान भाव तथा अनुक्रियात्मक तत्परताएँ बार-बार उत्पन्न होती हैं और वे अपेक्षाकृत एक स्थाई तथा संगठित व्यवस्था के रूप में मन में बैठ जातीं हैं। (ट्रिएंडिस१९७१)[९]

अभिवृत्ति के लिये अभिवृत्ति उद्दीपक के प्रति कुछ विचारों का होना आवश्यक है। वस्तुतः यदि उद्दीपक के प्रति हमारे मन में कोई विचार ही नहीं है तो उस उद्दीपक के प्रति व्यवहार ही नहीं होगा उदाहरणार्थ- घर से विद्यालय को जाते समय एक विद्यार्थी रास्ते में तमाम ऐसे व्यक्तियों से मिलता है। जिससे वह पूर्व परिचित नहीं है तो उसके प्रति वह कोई प्रतिक्रिया नहीं करता किन्तु इन अपरिचितों के स्थान पर यदि कोई परिचित व्यक्ति या साथी मिलता है तो वह अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर प्रतिक्रिया करता है क्योंकि अभिवृत्ति के लिये अभिवृत्ति उद्दीपक के प्रति कुछ विचारों का होना आवश्यक है। यदि व्यक्ति के मन में उद्दीपक की कोई विशिष्ट धारणा नहीं है तो उसके प्रति उसमें अभिवृत्ति भी नहीं हो सकती।

---

[8] घनश्याम रस्तोगी, आधुनिक सामाजिक मनोविज्ञान, टाटा मैक्ग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली १९८० पृ०सं०-२५४

अभिवृत्ति तथा सम्बद्ध प्रत्यय:-

सामान्य व्यवहार में अभिवृत्ति से मिलते-जुलते विभिन्न शब्दों/प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है किन्तु यह प्रत्यय अभिवृत्ति के पर्याय नहीं होते ऐसे शब्दों/प्रत्ययों का अधोलिखित रूप में विवेचन प्रस्तुत है।

अभिवृत्ति विश्वास तथा मत:-

सामान्यतः व्यक्ति के मत या विश्वासों से यह पता चलता है कि वह उद्दीपक के विषय में क्या विचार रखता है किन्तु इन मतों तथा विश्वासों में भावात्मकता नहीं होती जबकि अभिवृत्ति में भावात्मक तत्व ही प्रधान होता है। क्योंकि अभिवृत्ति उद्दीपक के प्रति अनुरक्ति प्रकट करती है। अभिवृत्ति ब्यवहार की दिशा का बोध कराती है। अर्थात उद्दीपक के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक व्यवहार उस उद्दीपक के प्रति अभिवृत्ति के स्वरूप का संकेत होता है। केवल संज्ञानात्मक तत्व अभिवृत्ति का निर्माण नहीं करते इसलिये बहुत से ऐसे तथ्य या स्थितियाँ जिनके विषय में हम विश्वास या मत तो रखते हैं किन्तु कोई तीव्र भाव नहीं रखते। ऐसे तथ्य तथा स्थितियाँ हमें व्यवहार के लिये बाध्य नहीं करते।

अभिवृत्ति तथा मूल्य:-

अभिवृत्ति किसी उद्दीपक के प्रति व्यवहार का स्वरूप है। अर्थात अभिवृत्ति किसी उद्दीपक विशेष के प्रति होती है। जबकि मूल्य का सम्बन्ध किसी विशिष्ट उद्दीपक से न होकर एक प्रकार के बहुत से उद्दीपकों के प्रति होता है। अधिकांश अभिवृत्तियां किसी न किसी मूल्य से सम्बद्ध होतीं हैं।

अभिवृत्ति तथा व्यवहार :-

किसी उद्दीपक के प्रति व्यावहारिक तत्परता अभिवृत्ति का एक संघटक है क्योंकि व्यवहार के फलस्वरूप ही उद्दीपक के प्रति अभिवृत्ति का प्रगटीकरण होता है। तथापि यह हर परिस्थिति में दर्शाये गये व्यवहार के लिये सत्य नहीं हैं क्योंकि किसी विशिष्ट व्यवहार के लिये

---

[9] H.C. Triandis , attitude and attitude change Frantice-Hall , John Wiley,1971.

अनेकानेक परिस्थितिजन्य कारकों की भूमिका की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। हाँ, यदि व्यवहार आदर्श प्रायोगिक दशाओं में सम्पन्न हो सके तो निःसंदेह व्यवहार अभिवृत्ति का प्रतिविम्व होता है किन्तु व्यवहार में ऐसी आदर्श स्थितियाँ सम्भव नहीं हैं। अभिवृत्ति से तात्पर्य किसी उद्दीक के प्रति स्वाभाविक भावनात्मक प्रतिक्रिया जबकि व्यवहार में भावात्मकता के साथ ही साथ विविध समाजिक कारकों की भी भूमिका संन्निहित होती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि अभिवृत्ति पूर्ण रूपेण वैयक्तिक मनोदशा है; जबकि व्यवहार समाज सापेक्ष होता है।

मनो-सामाजिक कारक :-

मनो-सामाजिक कारकों से तात्पर्य मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक कारकों से है। प्रस्तुत शोध में सामाजिक कारकों में प्रतिदर्श में लिये गये शिक्षकों का शैक्षिक तथा आर्थिक स्तर आयु, परिवार का आकार, नगरीय-ग्रामीण परिवेश लिंग भेद इत्यादि को सम्मिलित किया गया है। जबकि शिक्षकों के जीवन मूल्यों को मनोवैज्ञानिक कारक के रूप में सम्मिलित किया गया है।

जीवन-मूल्य :-

मूल्य शब्द अंग्रेजी के VALUE शब्द का समानार्थी है जो लैटिन भाषा के VALERE से बना है और इसका अर्थ योग्यता या महत्व है। संस्कृत में 'मूल्य' के लिए 'ईष्ट' शब्द है जिसका अर्थ है- 'वह जो इच्छित है।'[१०] भारतीय धर्म ग्रन्थों में मूल्य के लिये 'शील' शब्द अनेक स्थानों पर प्रयुक्त हुआ है। 'शील' शब्द मूल्य का पयार्य नहीं वरन समीचीन है। 'शील' सर्वत्र भूषण का कार्य करता है। वस्तुतः ''मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी क्रिया, विचार अथवा वस्तु को अपनाने के पूर्व यह

[10] प्रतिमा उपाध्याय, 'भारतीय समाज में नवीन प्रवृत्तियाँ' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, १९९६ पृ०सं०- १०३

निर्णय करता है कि वह उसे अपनाए या त्याग दे। व्यक्ति के मन में जब ऐसा विचार निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह 'मूल्य' कहलाता है।''[11]

'मूल्य' के अर्थ को स्पष्ट करने हेतु अधोलिखित परिभाषाएँ प्रासंगिक हैं-

समाजशास्त्री 'काने' के अनुसार 'मूल्य वे आदर्श, विश्वास या प्रतिमान हैं जिनको एक समाज या समाज के अधिकांश सदस्यों ने ग्रहण कर लिया है।'

जबकि 'पारसन' महोदय समाज की विभिन्न मान्यताओं में से किसी एक मान्यता के चयन का मानक है यथा 'मूल्य किसी सामाजिक व्यवस्था के कई अनुस्थापनों में से किसी एक अनुस्थापन के चुनने का एक मानक है।'

शिक्षणस्तर :-

प्रस्तुत शोध के न्यादर्श में सम्मिलित प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च्व शिक्षा स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं को क्रमशः प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च्व शिक्षण स्तरीय संज्ञा दी गयी है।

परिवेश :-

परिवेश शब्द से तात्पर्य ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश से है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों की व्यवहारिक परिभाषा :-

अभिवृत्ति-

यद्यपि पूर्व पृष्ठों में विभिन्न विद्धानों द्वारा अभिवृत्ति की दी गयी एक विमीय, द्विविमीय तथा त्रिविमीय परिभाषाओं का उल्लेख कर के शोधकर्त्री ने अभिवृत्ति के आशय को स्पष्ट करने का प्रयास किया है तथापि प्रस्तुत शोध में अभिवृतति से तात्पर्य परीक्षण के उस गुण से है जिसका मापन शोढ़ी एवं शर्मा द्वारा निर्मित परीक्षण करता है।

[11] त्यागी एवं नन्द, उदीयमान भारत में शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, पृ०सं०-३६१

जीवन-मूल्य :-

जीवन मुल्यों से तात्पर्य व्यक्ति के उन गुणों से है जिसका मापन शोध में प्रयुक्त मानकी कृत परीक्षण 'मूल्य अध्ययन' करता है।

शोध परिसीमन:-

वर्तमान शोध अधोलिखित रूप में परिसीमित किया गया है-

(१) प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं में से लिये गये न्यादर्श में प्रत्येक शिक्षण स्तर से मात्र ३०० इकाइयों का चयन किया गया है। अस्तु प्रस्तुत शोध न्यादर्श के आकार की दृष्टि से एक सीमित अध्ययन है।

(२) परिवेशीय कारक की दृष्टि से न्यादर्श को दो वर्गों गामीण तथा नगरीय में बाँटा गया है।

(३) शिक्षक/शिक्षकाओं की अभिवृत्ति में कारक के रूप में मात्र शिक्षणस्तर परिवेश, आयु, परिवार का आकार तथा लिंगभेद के प्रभाव का अध्ययन किया जाना प्रस्तावित है। जबकि अन्य सामाजिक चरों को शोध में सम्मिलित नहीं किया गया है।

(४) शिक्षक/शिक्षकाओं का धार्मिक आधार पर वर्गीकरण नहीं किया गया है।

(५) मनोकारकों में मात्र जीवन-मूल्यों को सम्मिलित किया गया है। जबकि अन्य विविध मनोवैज्ञानिक कारक प्रस्तुत शोध की सीमा के बाहर हैं।
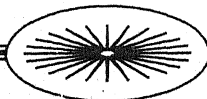
द्वितीय - अध्याय

द्वितीय - अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

२.१ जनसंख्या का परिदृश्य

(१) विश्व

(२) भारत

(३) उत्तर प्रदेश

२.२ जनसंख्या - नीति

२.३ जनसंख्या - शिक्षा के क्षेत्र में सम्पन्न शोध कार्य

अध्याय -२

सम्बन्धित साहित्य का सिंहावलोकन

विषय प्रवेश-

सम्बन्धित साहित्य का सिंहावलोकन शोधकार्य का एक महत्वपूर्ण चरण है । सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से जहाँ पूर्व शोध निष्कर्षो के परिणाम स्वरूप वर्तमान शोध हेतु अपेक्षित और आवश्यक सैद्वान्तिक आधार प्राप्त होता है , वहीं दूसरी ओर शोधकार्य में अनावश्यक पुनरावृत्ति से भी बचने की स्थितियाँ निर्मित होती है ।

प्रस्तुत अध्याय की विषय वस्तु दो भागों में विभक्त है । प्रथम भाग में विश्व जनसंख्या का इतिहास, विश्व के विकसित तथा विकासशील देशों की जनांकिकीय विशेषतायें, विभिन्न जनगणना वर्षों में भारत तथा विभिन्न राज्यों की जनसंख्या स्थिति , उत्तरप्रदेश की जनसंख्या , जनाधिक्य जनित समस्याओं का संक्षिप्त विवेचन , तथा भारत की जनसंख्या नीति समाहित हैं । अध्याय के द्वितीय भाग में जनसंख्या शिक्षा पर सम्पन्न पूर्व शोध निष्कर्षों का विवेचन, तथा पूर्व शोध निष्कर्षों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शोध की प्रासंगिकता तथा औचित्य समाहित है । वर्तमान समय में जनसंख्या बृद्धि ने एक विश्वव्यापी समस्या का रूप ले लिया है। दुनिया के लगभग प्रत्येक कोने में जनसंख्या में बृद्धि की प्रवृत्ति देखी जा सकती है। यद्यपि विश्व जनसंख्या में योगदान विकसित देशों की अपेक्षा विकाशसील तथा अल्प विकसित देशों का अधिक है। यही कारण है कि आज जनाधिक्य की बृद्धि दर जनसंख्या विज्ञानियों की चिन्ता का कारण बनने लगा है। क्योंकि यदि जनाधिक्य की विकास दर में कमी नही लाई जाती है तो वह दिन दूर नहीं जब धरती पर प्राकृतिक संसाधनों की अपर्याप्तता मानव जाति के अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर सकती है। विश्व जनसंख्या के वर्तमान स्वरूप का विवेचन करने के पूॅर्व यह प्रसंगिक है कि विश्व जनसंख्या के इतिहास पर दृष्टिपात किया जाये।

विश्व की जनसंख्या का इतिहास -

मानव जाति के इतिहास को चार काल खण्डों में विभाजित किया जा सकता है-

१- कृषि खोज के पूर्व का काल

२- कृषि खोज एवं औद्योगिक क्रान्ति के मध्य का काल

३- औद्योगिक क्रान्ति का प्रारम्भ एवं द्वितीय विश्व युद्व के मध्य का काल।

४- द्वितीय विश्व युद्व से वर्तमान अवधि तक ।

विद्वानों का अनुमान है कि कृषि खोज के पूर्व का काल जिसे प्रागैतिहासिक पाषाण काल की संज्ञा दी जाती है जो आज से दस लाख वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था । प्रागैतिहासिक काल से आज तक के लगभग दस हजार वर्ष पूर्व तक का ९९ प्रतिशत काल खण्ड में मानव का जीवन यापन मात्र शिकार पर ही निर्भर था । विद्वानों का मानना हैं कि लगभग ४० हजार वर्ष पूर्व जनसंख्या में क्षेत्रीय विभिन्नतायें, आकार, घनत्व तथा वृद्धि दर उभर कर सामने आने लगी थी। अफ्रीका से पश्चिम एशिया, तत्पश्चात उत्तर पश्चिम यूरोप की ओर जनसंख्या का विस्तार हुआ। उत्तरोत्तर चीन तथा भारत की ओर विश्व के दूसरी ओर अमेरिका में जनसंख्या का धीरे धीरे विस्तार हुआ। विद्वानों का यह भी मानना है कि पाषाण युग में शिकारी समुदायों का अस्तित्व प्रत्येक मानव इतिहास में रहा है।

जनसंख्या इतिहास के दूसरे चरण को कृषि युग कहा जा सकता है। इस युग में मनुष्य समुदाय बनाकर एक स्थान पर स्थाई रूप से रहने लगा था । इस युग का प्रारम्भ आज से लगभग दस हजार वर्ष पूर्व्र माना जाता है। विद्वानों का मत है कि ईसा से लगभग आठ हजार वर्ष पूर्व कृषि क्रान्ति प्रारम्भ हुई थी जो एक हजार ईसा पूर्व में अपनी पराकाष्ठा पर थी। पाषाण युग के बाद मानव सभ्यता अब लौह युग में प्रवेश कर गई थी।

कृषि क्रान्ति के चरम विकास के काल तथा औद्योगिक क्रान्ति के प्रादुर्भाव के समय जनसंख्या वृद्धि के तीसरे चरण का प्रारम्भ हुआ। इस काल में जनसंख्या में वृद्धि पूर्ववर्ती कालों की तुलना में अधिक तीव्र रही।

जनसंख्या -वृद्धि के चौथे चरण को औद्योगिक क्रान्ति तथा वर्तमान काल कहा जाता है। इस काल में विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ववर्ती कालों की तुलना में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हुई। सन् (१७५०-१८५०) के मध्य यूरोप, अमेरिका, कैरेवियन भारतीय उपमहाद्वीप तथा चीन में जनसंख्या वृद्धि की ऊर्ध्वगामी प्रवृत्ति पायी गयी जबकि विश्व के अन्य भागों में जनसंख्या वृद्धि की गति धीमी रही।

जनसंख्या-वृद्धि के विभिन्न चरणों में जनसंख्या के घटने-बढ़ने में अन्तर की प्रवृत्ति भी पाई गयी है। जनसंख्या वृद्धि का सम्यक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि प्रथम चरणों में जब भी राजनीतिक स्थिरता तथा आर्थिक सम्पन्नता रही है, जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई है। तथा इसके विपरीत स्थितियों में जनसंख्या घटी है।

"जनसंख्या के आकार का विश्लेषण से यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि लगभग बारह हजार वर्ष पूर्व विश्व की जनसंख्या दस करोड़ से अधिक नहीं थी। बारह हजार वर्ष पूर्व की यह जनसंख्या आज अकेले लंदन शहर की जनसंख्या के बराबर थी। यह भी अनुमान है कि लगभग दो हजार वर्ष पूर्व विश्व की आबादी लगभग २५० करोड़ थी जो वर्ष १९७५ में अकेले रूस की थी ईसवीय वर्षो के प्रारम्भ में औद्योगिक क्रांति के समय तक जनसंख्या में वृद्धि एक अरब से कुछ अधिक रही। वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में यह १.६५ अरब तथा वर्ष १९५० तक २५३ अरब पहुंची। वर्ष १९८० में विश्व की जनसंख्या लगभग ४४ अरब अनुमानित की गयी है।"[1]

---

[1] श्रोतः जनसंख्या शिक्षा, सिद्धान्त एवं तत्व (जनसंख्या केन्द्र उत्तर प्रदेश लखनऊ) १९८७, पृ०सं०-७२

"संयुक्त राष्ट्र के अनुमानों के अनुसार विश्व की सन् २००१ की जनसंख्या लगभग ६१३.४ करोड़ है।"[2]

विद्वानों का मत है कि कृषि काल के पूर्व के लगभग २० लाख वर्ष में जन्म दर तथा मृत्यु दर दोनों ही उच्च रहीं जिससे जनसंख्या में सन्तुलन बना रहा तथा जनसंख्या की वृद्धि नगण्य रही। विद्धानों का मानना है कि यदि इस काल में उच्च जन्म दर न होती तो पृथ्वी पर मानव जाति के आस्तिव का ही संकट उत्पन्न हो जाता ।

कृषि खोज तथा औद्योगिक क्रांति के लगभग १२ हजार वर्षों में जनसंख्या वृद्धि में निरंतर अति मन्द गति प्रभावी रही।

विश्व जनसंख्या के विकासात्मक स्वरूप विषयक तालिका २.१ के अवलोकन से स्पष्ट है कि सन् १७५० से लेकर सन् १९६० तक विश्व जनसंख्या की प्रतिशत वाषिक वृद्धि दर में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। सन् १९६० तथा १९६५ में स्थिर वार्षिक वृद्धि दर २.०० प्रतिशत रही है। जिसके अनुसार विश्व की जनसंख्या के दुगने होने में मात्र ३५ वर्ष का समय ही पर्याप्त था। सन १९६५- १९७० की अवधि में वार्षिक वृद्धि दर में ०.१

प्रतिशत कमीं पायी गयी । सन् १९७० से १९८० के मध्य स्थिर प्रतिशत वृद्धि दर १.८ का अनुमान लगाया गया जिसके अनुसार विश्व जनसंख्या के दुगने होने में लगने वाला समय मात्र ३९ वर्ष था । सन् १९८० के पश्चात भी विश्व जनसंख्या में प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर में स्थिर ह्रास की प्रवृत्ति पायी गयी । यद्यपि सन् २००१ में विश्व की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर में कमीं आयी है किन्तु १.४ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर वर्तमान विश्व की जनसंख्या को आगामीं मात्र ५० वर्षों में ही दुगना कर देगी । निश्चय ही १.४ प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर में कमीं लाने हेतु

---

2 जी०सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजूकेशन(शिप्रा पब्लिकेसन्स देहली- २००२) पृ०सं०-२४

विश्वस्तरीय प्रयोगों की महती आवश्यकता है ताकि विश्व जनसंख्या को स्थिर रखा जा सके ।

तालिका २.१

विश्व जनसंख्या का विकासात्मक स्वरूप

वर्ष	विश्व जनसंख्या (करोड़ में)	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)	जनसंख्या दुगनी होने में लगा समय
१७५०	७६	–	–
१८००	९८	०.४	१७५
१८५०	१२६	०.५	१४०
१९००	१६५	०.५	१४०
१९५०	२५१	०.८	८७
१९५५	२७५	१.८	३९
१९६०	३०३	२.०	३५
१९६५	३४४	२.०	३५
१९७०	३६८	१.९	३७
१९७५	४०८	१.८	३९
१९८०	४४५	१.८	३९
१९८५	४८४	१.७	४१
१९८७	५०३	१.७	४१
१९९०	५२५	–	–
२०००	६१२	–	–
२००१	६१३.४	१.४	५०

श्रोतः जनसंख्या शिक्षा दिग्दर्शिका(राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद)पृ.सं.-८२

विश्व की जनसंख्या प्रवृत्ति का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में जनसंख्या अति धीमीं गति से बढ़ी है फिर वृद्धि दर में

उत्तरोत्तर तीव्रता आती गयी है । निम्नांकित तथ्यों से ऐसा ही निष्कर्ष निकलता है ।

तालिका २.२

विश्व जनसंख्या प्रवृत्ति

विश्व की जनसंख्या	लगा समय	सन्
प्रथम एक अरब	२० लाख वर्ष	१८३० तक
द्वितीय एक अरब	१०० वर्ष	१९३० तक
तृतीय एक अरब	३० वर्ष	१९६० तक
चतुर्थ एक अरब	१५ वर्ष	१९७५ तक
पंचम एक अरब	११ वर्ष	१९८६ तक
छठां एक अरब	१० वर्ष	१९९६ तक

श्रोतः जनसंख्या शिक्षा दिग्दर्शिका(राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद)पृ.सं.- ९०

तलिका २.२ के अवलोकन से स्पष्ट है कि आगामी प्रति दशक के अन्तराल में विश्व की जनसंख्या में एक अरब की बढोत्तरी अनुमानित है। निश्चय ही यह तथ्य चौकानें वाला है कि जिस विश्व भूभाग में एक अरब की जनसंख्या होनें में लगभग बीस लाख वर्ष लगे अब यह एक अरब की बढोत्तरी मात्र १० वर्ष में ही हो रही है।

जहाँ तक विश्व जनसंख्या वृद्धि में विभिन्न क्षेत्रों तथा देशों का प्रश्न हैं , यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि विश्व जनसंख्या में विकसित क्षेत्रों / देशों की अपेक्षा विकासशील क्षेत्रों में । देशों का योगदान अधिक है जिसका प्रमुख कारण विकासशील क्षेत्रों में विकसित क्षेत्रों की अपेक्षा जन्मदर उच्च होने के फलस्वरूप जन्मदर में अत्यधिक अंतर का होना है । तालिका २.३ में विकसित तथा विकासशील क्षेत्रों की जनांकिकीय विशेषतायें उक्त कथ्य की पुष्टि करती हैं -

तालिका २.३

विश्व के विकसित एवं विकासशील क्षेत्र :

जनांकिकीय विशेषतायें

विशेषतायें	विश्व	विकसित क्षेत्र	विकासशील क्षेत्र
वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत)			
१९६०-६५	१.९९	१.१९	२.३५
१९७०-७५	१.८४	०.९१	२.२४
१९७५-८०	१.८१	०.८१	२.२१
१९९५-२०००	१.५६	०.५१	१.८४
जन्मदर			
१९६०-६५	३४.०	२०.३	४०.०
१९७०-७५	३०.३	१६.७	३५.५
१९७५-८०	२८.९	१५.६	३३.६
१९९५-२०००-	२३.८	१४.९	२६.२
मृत्युदर			
१९६०-६५	१४.४	९.०	१६.८
१९७०-७५	१२.०	९.२	१३.२
१९७५-८०	११.३	९.४	१२.०
१९९५-२०००	८.७	१०.१	८.३
जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा			
१९६०-६५			
१९७०-७५	४७.४	६५.२	४२.६
१९७५-८०	५६.२	७१.२	५३.४
१९९५-२०००	५७.६	७१.९	५५.२
	६४.५	७३.७	६३.१

स्रोतः जनसंख्या शिक्षा, सिद्वान्त एवं तत्व (जनसंख्या केन्द्र, उत्तर प्रदेश, लखनऊ) १९८७, पृ०८२

विकसित तथा विकासशील क्षेत्रों की जनांकिकीय विशेषताओं विषयक तालिका से स्पष्ट है कि यद्यपि विकसित तथा विकासशील दोनों ही क्षेत्रों में वार्षिक वृद्धि दर में ह्रास की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है, तथापि यह वृद्धि दर विकसित क्षेत्रों की तुलना में विकासशील क्षेत्रों में अधिक है । विकसित तथा विकासशील दोनों ही क्षेत्रों में काल खण्ड १९६०-६५ के मध्य वृद्धि दर उत्तरवर्ती वर्षों की तुलना में अधिक रही है।

जहाँ तक विकसित और विकासशील क्षेत्रों में जन्मदर तथा मृत्युदर के अंतर का प्रश्न है, विकासशील क्षेत्रों में यह अंतर विकसित क्षेत्रों की तुलना में अधिक है जो इन क्षेत्रों में जनाधिक्य का प्रमुख कारण है।

जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा विषयक आकड़े दर्शाते हैं कि दोनों ही क्षेत्रों अर्थात विकसित तथा विकासशील क्षेत्रों में जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा बढ़ रही है तथापि विकासशील क्षेत्रों की तुलना में विकसित क्षेत्रों में यह अधिक है जो प्रकारान्तर से स्पष्ट करती है कि विकासशील क्षेत्रों में आयु वर्ग ०-१४ वर्ष की निर्भर जनसंख्या अधिक हैं जबकि विकसित क्षेत्रों में ६५˙ आयु की निर्भर जनसंख्या में क्रमशः वृद्धि हो रही हैं अर्थात विकासशील क्षेत्रों में जहाँ वर्ग ०-१४ की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति की समस्या हैं वहीं दूसरी ओर भविष्य में विकसित क्षेत्र बुढ़ापे में सुरक्षा , पूर्व निर्मित स्कूलों में कालेजों में विद्यार्थियों में कर्मी निर्मित आवासीय भवनों आदि की माँग में कमी तथा श्रम आदि की कमी की समस्या से प्रभावित होंगे ।

विश्व जनसंख्या परिदृश्य में भारत का स्थान दूसरा है जबकि जनसंख्या की दृष्टि से चीन की जनसंख्या सर्वाधिक है। निम्नलिखित तालिका २.४ में विश्व के दस सर्वाधिक आबादी वाले देशों की जनसंख्या को दर्शाया गया है।

भारत की जनसंख्या सम्पूर्ण विश्व की जनसंख्या का १६.८७ प्रतिशत है तथा विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले छः देशों यू० एस० ए०, ब्राजील, पाकिस्तान,रूस,बंगलादेश तथा जापान की सम्मिलित जनसंख्या से अधिक है ।

भारत की जनसंख्या यूरोप महाद्वीप के ४७ देशों तथा यू. एस. ए. सहित उत्तरी अमेरीका के पाँच देशों की सम्मिलित जनसंख्या के बराबर है ।

तालिका २.४

विश्व के सर्वाधिक आबादी वाले देश (२००१)

देश	संदर्भ तिथि	जनसंख्या करोड़ों में	विश्व जनसंख्या का प्रतिशत
चीन	१.२.२०००	१२७.७६	२१.०३
भारत	१.३.२००१	१०२.७	१६.८७
यू० एस० ए०	अप्रैल २०००	२८.१४	४.६३
इंण्डोनेशिया	१.७.२०००	२१.२१	३.४९
ब्राजील	१.७.२०००	१७.०१	२.८
पाकिस्तान	१.७.२०००	१५.६५	२.५८
रूस	१.७.२०००	१४.६९	२.४२
बंगला देश	१.७.२०००	१२.६२	२.१३
जापान	१.१०.२०००	१२.६९	२.०९
नाईजीरिया	१.२.२०००	११.१५	१.८४

श्रोतः यू० एस० एस्टीमेट (पापुलेशन,इनवायरमेंट एण्ड डिवलेप २००१ यू० एन० पापुलेशन डिवीजन,२००१)

भारत प्रत्येक दस वर्ष की अवधि में अपनी जनसंख्या में ६ कनाडा अथवा ३ फ्राँस अथवा ३ यूनाइटेड किंगडम अथवा २.३ जर्मनी की जनसंख्या को जोड़ रहा है ।

क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का २.४ है जबकि जनसंख्या की दृष्टि से १६.८ विश्व की जनसंख्या भारत में निवास करती है अर्थात दुनिया का प्रत्येक छठा व्यक्ति भारतीय है । तालिका २.५ में भारत तथा विश्व के जनसंख्या आँकड़ो को प्रदर्शित किया गया है–

तालिका २.५

विश्व तथा भारत : जनसंख्या संदर्भ (२००१)

क्षेत्र	जनसंख्या (करोडों में)	वार्षिक वृद्धि दर (प्रतिशत में)	कुल का प्रतिशत	
			जनसंख्या	क्षेत्रफल
विश्व	६१३.४	१.४	–	–
भारत	१०२.५१	१.६	१६.८७	२.४

सोत्रः जे.सी. अग्रवाल, पापुलेशन एजूकेशन, शिक्षा पब्लिकेसन्स २००२) पृ. सं०- २५

तालिका २.५ में दर्शाये गये आँकड़ों का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि विश्व के परिप्रेक्ष्य में भारत के क्षेत्रफल तथा उसकी जनसंख्या के मध्य आनुपातिक दृष्टि से पर्याप्त असमानता है जो कि भारत की जनसंख्या का विश्व की जनसंख्या का १६.८७ प्रतिशत तथा क्षेत्रफल का मात्र २.४ प्रतिशत होने से है ।

भारत का जनसंख्या इतिहास

देश की जनसंख्या के इतिहास के सम्बन्ध में यद्यपि विभिन्न- विद्वानों ने भिन्न- भिन्न मत व्यक्त किये हैं तथापि लगभग सभी विद्वान इस तथ्य से सहमत हैं कि ईसा से लगभग ३०० वर्ष पूर्व एवं १६०० ई. तक भारत की जनसंख्या लगभग १० से - १४ करोड़ के मध्य थी । प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता मोरलैण्ड का मानना है कि सत्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में, लगभग १० करोड़ जनसंख्या थी । फिन्डले एवं डेविस इसी अवधि में यह संख्या १३ करोड़ मानते हैं जबकि डॉ. राधाकमल मुकर्जी का मानना है कि यह संख्या १५ करोड़ थी । डॉ. डेविस का मानना है कि १६०० ई. से लेकर लगभग डेढ़ शताब्दी तक देश की जनसंख्या स्थिर रही है । इसके पश्चात शनैः शनैः इसमें वृद्धि दृष्टिगोचर हुई है ।

भारत में जनसंख्या वृद्धि

विभिन्न दशकों में सम्पन्न जनगणना के आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट हैं कि मात्र १९२१ दशक को छोड़ कर शेष सभी दशकों में जनसंख्या में उत्तोत्तर वृद्धि होती रही है ।

तालिका २.६

विभिन्न दशकों में भारत में जनसंख्या वृद्धि

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	कुल वृद्धि (करोड़ में)	दशकानुसार प्रतिशत वृद्धि	प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर	प्रतिशत विकास दर (आधार वर्ष १९०१)
१९०१	२३.८४	–	–	–	–
१९११	२५.२१	१.३७	५.७५	०.५६	५.७५
१९२१ (१९०१–१९२१)	२५.१३	–०.०८ १.५	–०.३१ ०.१९	–०.०३	५.४२
१९३१	२७.८९	२.७६	११.००	१.०६	१७.०२
१९४१	३१.८७	३.९७	१४.२२	१.३४	३३.६७
१९५१ (१९२१–१९५१)	३६.११	४.२३ १०.९८	१३.३१ १.२२	१.२६	५१.४७
१९६१	४३.९२	७.८१	२१.६४	१.९६	८४.२५
१९७१	५४.८२	१०.८९	२४.८०	२.२४	१२६.६४
१९८१ (१९५१–१८८१)	६८.३३	१३.७० ३२.२२	२५.०० २.१४	२.२८	१८६.६४
१९९१	८४.६०	१६.२७	२३.८६	२.१४	२५५.०३
२००१	१०२.७	१८.३१	२१.३४	१.९३	३३०.८०

श्रोतः जनगणना भारत, २००१, सीरीज १ पेपर १, २००१.

तालिका २.६ में १९०१ से लेकर २००१ तक की अवधि की जनसंख्या, जनसंख्या में वृद्धि दशकानुसार जनसंख्या वृद्धि – दशकानुसार

प्रतिशत वृद्धि, वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाया गया है। जनसंख्या विषयक के आकड़ें स्पष्ट करते हैं कि जनसंख्या में अनपेक्षित वृद्धि हुई है।

तालिका २.६ के अवलोकन से स्पष्ट है कि विभिन्न जनगणना वर्षों में मात्र १६२१ का ही दशक ऐसा है जिसमें पूववर्ती दशक १६११ की तुलना में ०.०८ करोड़ जनसंख्या में ह्रास हुआ जबकि शेष अन्य सभी वर्षों में उत्तोत्तर जनसंख्या- वृद्धि परिलक्षित हो रही है। जनगणना वर्ष २००१ की जनसंख्या की तुलना जनगणना वर्ष १६०१ से करने पर स्पष्ट है कि एक शताब्दी की अवधि में देश की जनसंख्या में लगभग ८० करोड़ की वृद्धि हुई है। प्रतिशत वृद्धि की दृष्टि से लगभग ३३०.८० प्रतिशत की वृद्धि आर्थिक विकास की सभी सम्भावनाओं को बौना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। यदि जनसंख्या- वृद्धि को विभिन्न अन्तरालों में देखा जाए तो १६०१ तथा १६२१ के मध्य लगभग १.५ करोड़ की वृद्धि हुई है। इस अवधि में प्रतिशत वृद्धि ०.१६ आँकी गयी। जनगणना वर्ष १६२१ के पश्चात जनसंख्या में अपेक्षाकृत तीव्र वृद्धि की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है। वर्ष १६२१ तथा १६५१ के मध्य जनसंख्या में १.२२ प्रतिशत की वृद्धि दर से लगभग ११ करोड़ की वृद्धि उत्तम कथन की पुष्टि करती है। अगले ३० वर्षों अर्थात १६५७ से १६८१ के मध्य २.१४ प्रतिशत वृद्धि दर से कुल ३२.२ करोड़ नई जिन्दगियाँ देश की आवादी में जुड़ गयीं। दकशानुसार वृद्धि दर से यदि परीक्षण किया जाए तो १६५१ के दशक में पूर्ववर्ती दशक १६४१ की तुलना में वृद्धि दरें में ह्रास दृष्टिगोचर हो रहा है। किन्तु उत्तरवर्ती दशकों अर्थात १६६१- १६७१ तथा १६८१ में वृद्धि दर में उत्तोत्तर वृद्धि हुई है। जनगणना आकड़ों से स्पष्ट कि १६८१ का दशक सर्वाधिक लगभग २५ प्रतिशत दशकीय वृद्धि वाला दशक है जिसमें प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर भी सर्वाधिक २.२८ है। जनगणना वर्ष १६८१ के पश्चात निःसन्देह जनगणना वर्ष १६६१ तथा जनगणना वर्ष २००१ के दशकों में प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर का क्रमशः २.१४ तथा १.६३ पाया जाना उत्तोत्तर कमीं का संकेत दे रही है। तालिका में दर्शाये गये आँकडे यह भी

स्पष्ट कर रहे हैं कि १६६१ तथा सन् २००१ के मध्य हुई जनसंख्या में लगभग १८.३१ करोड़ की वृद्धि देश में प्राति वर्ष आस्ट्रेलिया महाद्वीप की जनसंख्या के बराबर जन-वृद्धि दर्शा रही है। तालिका में दर्शायी गयी जनसंख्या वृद्धि को वृद्धि की प्रकृति की दृष्टि से अवलोकन किया जाये तो स्पस्टतः प्रतीत होता है कि सन् १६०१ से लेकर १६२१ की अवधि में स्थिर कालखण्ड है क्योंकि इस अवधि में जनसंख्या लगभग स्थिर रही है। सन् १६०१ तथा १६५१ के मध्य के कालखण्ड में जनसंख्या में वृद्धि तो हुई है किन्तु इन तीस वर्षों में जनसंख्या में मात्र लगभग ११ करोड़ (१०.६८) की वृद्धि धीमीं गति से वृद्धि दर्शाती है। जबकि सन् १६५१ से १६८१ का कालखण्ड जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से तीव्र वृद्धि काल है क्योंकि इन वर्षों में ३२.२० करोड़ की कुल असाधारण वृद्धि हुई है। प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर की दृष्टि से सन् १६७१ से सन् १६८१ का दशक सबसे अधिक वार्षिक वृद्धि दर २.२८ का कालखण्ड है। कालखण्ड सन् १६८१ तथा २००१ के मध्य यद्यपि वृद्धि दर उच्च्च रही है किन्तु वृद्धि दर की प्रवृत्ति ह्रासोन्मुख रही है। जोकि १६८१, १६६१ तथा २००१ क्रमशः २.२८, २.१४ तथा १.६३ की प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से स्पष्ट है।

जनसंख्या घनत्व-

किसी क्षेत्र अथवा देश विशेष की जनसंख्या की स्थिति क्षेत्र विशेष में जनसंख्या की सघनता पर निर्भर करती है अर्थात यदि जनसंख्या वितरण सघन है तो जनसंख्या अधिक होगी और यदि जनसंख्या का वितरण विरल है तो जनसंख्या कम होगी जनसंख्या की सघनता को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। किसी क्षेत्र विशेष के एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की कुल संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते हैं। विभिन्न जनगणना वर्षों में देश के जनसंख्या घनत्व को तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका २.७

भारत में जनसंख्या घनत्व (१६०१ - २००१)

जनगणना वर्ष	घनत्व	दशकानुसार वृद्धि दर
१६०१	७७	-
१६११	८२	५
१६२१	८१	-१
१६३१	६०	६
१६४१	१०३	१३
१६५१	११७	१४
१६६१	१४२	२५
१६७१	१७७	३५
१६८१	२१६	३६
१६६१	२६७	५१
२००१	३२४	७७

श्रोतः सेन्सस आफ इण्डिया, २००१ सीरीज- प्रथम, पेपर प्रथम, २००१

जनसंख्या घनत्व वितरण विषयक (तालिका २.७) के आँकड़ों से स्पष्ट हैं कि देश के जन घनत्व में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। जनगणना वर्ष १६०१ में जहाँ ७७ व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर आवासित थी वहीं वर्ष २००१ में घनत्व ३२४ हो गया। जनसंख्या घनत्व में दशकानुसार वृद्धि की दृष्टि से देखा जाये तो मात्र जनगणना वर्ष १६२१ ही ऐसा है जिसमें घनत्व में १ की कर्मी पायी। फलस्वरूप उस जनगणना वर्ष में भी जनसंख्या में ह्रास पाया गया था। इसके पश्चात उत्तरोत्तर जनगणना वर्षों में सतत वृद्धि हो रही है। तालिका से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष १६०१ में प्रति वर्ग किलोमीटर जहाँ मात्र ७७ व्यक्ति ही आवासित थे वहीं वर्ष २००१ में यह संख्या बढ़ कर ३२४ हो गयी है। वस्तुतः उत्तरोत्तर बढ़ते जनघनत्व भी प्रति व्यक्ति आय तथा सामान्य व्यक्ति के जीवन को गुणवत्ता को प्रभावित करता है। तथापि मात्र जनघनत्व को किसी क्षेत्र विशेष

की सम्पन्नता अथवा विपन्नता का निर्धारक तत्व नहीं माना जा सकता है क्योंकि आर्थिक सम्पन्नता प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग तथा श्रम के कुशल उपयोग पर निर्भर करती है अर्थात जो समाज तकनीकी तथा औद्योगिक दृष्टि से समुन्नत हैं वह जनसंख्या घनत्व की अधिकता के बावजूद आर्थिक दृष्टि से समुन्नत तथा उनके नागरिकों की जीवन गुणवत्ता उच्च कोटि की हो सकती है । जापान इसका उपयुक्त उदाहरण है। जहाँ पर जनघनत्व अधिक होने के बाद भी आर्थिक सम्पन्नता है क्योंकि जापान की

तालिका - २.८ भारत की जनसंख्या-वृद्धि : लिंगभेद

जनगणना वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)			दशकानुसार		प्रतिशत
	कुल	पुरूष	स्त्री	अन्तर	अन्तर	वार्षिक वृद्धि दर
१९०१	२३.८४	१२.०८	११.७४	०.३४	---	--
१९११	२५.२१	१२.८४	१२.३७	०.४७	०.१३	०.५६
१९२१	२५.१३	१२.८५	१२.२८	०.५७	०.१०	-०.०३
१९३१	२७.८९	१४.२६	१३.५८	०.७१	०.१४	१.०६
१९४१	३१.८७	१६.३७	१५.४७	०.९०	०.१९	१.३४
१९५१	३६.११	१८.५५	१७.५६	०.९९	०.०९	१.२६
१९६१	४३.९२	२२.६३	२१.२९	१.३४	०.३५	१.९६
१९७१	५४.८२	२८.४०	२६.४१	१.९९	०.६५	२.२४
१९८१	६८.३३	३५.४४	३३.०८	२.३६	०.३७	२.२८
१९९१	८४.६०	४३.९०	४०.७०	३.२०	०.८४	२.१४
२००१	१०२.७	५३.१०	४९.६	३.५	०.३	१.९३

श्रोत- विभिन्न वर्षों की इण्डियन इयर बुक

अर्थव्यवस्था का आधार औद्योगिक विकास है। इसके विपरीत भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि होने के फलस्वरूप जापान की अपेक्षा कम जनसंख्या घनत्व के बाद भी आर्थिक दृष्टि से भारत जापान से पीछे है।

भारत की जनसंख्या वृद्धि को यदि लिंगानुसार देखा जाए तो स्पष्ट होता है कि प्रत्येक जनगणना वर्ष में स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों की संख्या आधिक रही है। तालिका २.८ में विभिन्न जनगणना वर्षो में देश की जनसंख्या को लिंगानुसार दर्शाया गया है।

जनगणना वर्ष १६०१ से लेकर २००१ तक की समास्त जनगनाओं में पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम रही है। साथ ही साथ तलिका २.८ यह भी स्पष्ट कर रही है कि पुरूषों तथा स्त्रियों के मध्य अन्तर उत्तरोत्तर बढ़ा है फलस्वरूप पुरूषों तथा स्त्रियों की संख्या में दशकानुसार अंतर में भी वृद्धि की प्रवृति दृष्टिगोचर हो रही है। यहाँ यह कहना युक्ति संगत होगा कि जनगणन वर्ष १६८१ व १६६१ के अपवाद के अतिरिक्त सभी दशकों में पुरूषों तथा स्त्रियों की संख्या में अंतर तथा वार्षिक वृद्धि दर में समानानुपात है अर्थात पुरूषों और स्त्रियों के मध्य अंतर की अधिकता से प्रतिशत वाषिक वृद्धि दर में भी वृद्धि प्रवृति पायी गयी है। मात्र जनगणना वर्ष १६८१ तथा १६६१ के आकडें इसका अपवाद हैं। जब सम्बधित जनगण्ना वर्षों में दशकानुसार अंतर तथा वार्षिक वृद्धि दर के बीच प्रतिलोम अनुपात पाया गया । ऑकड़ों का उपरोक्त विश्लेषण यह निष्कर्ष उपलब्ध कराता है कि महिलाओं की जनसंख्या में कमी तथा प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर के मध्य विलोमानुपात है अर्थात महिला जनसंख्या में कमी वार्षिक वृद्धि को प्रोत्साहित कर रही है।

जनसंख्या में ग्रामीण तथा शहरी वितरण -

परिवेश की दृष्टि से देश की जनसंख्या प्रमुखतः दो भागों में विभक्त की जा सकती है ग्रामीण परिवेश तथा नगरीय परिवेश ग्रमीण तथा नगरीय परिवेश की सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक परिस्थितियाँ भिन्न होती हैं अतएव जनसंख्या वृद्धि के सदर्भ में यह उचित होगा कि विभिन्न जनगणना वर्षो में ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों में हुई प्रतिशत वृद्धि दर का आंकलन किया जाये । अस्तु, एतद विषयक आधार पर जनसंख्या के वितरण को तालिका २.६ मे दर्शाया गया है -

तालिका २.९

भारत में जनसंख्या : ग्रामीण तथा नगरीय(१९०१-२००१)

जनगणना वर्ष	जनसंख्या प्रतिशत		दशकानुसार वृद्धि दर		नगरीय-ग्रामीण अनुपात
	ग्रामीण	नगरीय	ग्रामीण	नगरीय	
१९०१	८९.२०	१०.८			१:८.१
१९११	८९.७०	१०.३	६.४०	०.३	१:८.६
१९२१	८८.८०	११.२०	-१.३०	८.३०	१:७.८
१९३१	८८.००	१२.००	९.९०	१९.१०	१:७.२
१९४१	८६.१०	१३.९०	११.८०	३१.९०	१:६.१
१९५१	८२.७२	१७.३०	८.८०	४१.४०	१:४.७
१९६१	८२.००	१८.००	२०.६०	२६.४०	१:४.५
१९७१	८०.१०	१९.९०	२१.८०	३७.८०	१:३.७
१९८१	७६.२७	२३.७३	१८.९६	४६.०२	१:३.३
१९९१	७४.२७	२५.७३	१९.२८	३५.६०	१:२.६
२००१	७२.००	२८.००	१८.३२	३१.२०	१:२.६

श्रोत- विभिन्न वर्षों की इण्डियन इयर बुक

भारत की जनसंख्या का ग्रामीण-नगरीय वितरण (तालिका२.९) से स्पष्ट है कि ग्रामीण जनसंख्या के प्रतिशत में उत्तरोतर कमी आ रही है। इसके विपरीत नगरीय जनसंख्या में निरंतर वृद्धि की प्रवृत्ति दृष्टिगोचर हो रही है । जनगणना वर्ष १९०१ मे ग्रामीण जनसंख्या का कुल जनसंख्या में प्रतिशत ८९.२० था जो २००१ में घटकर मात्र ७२.०० प्रतिशत रह गया है। इसके ठीक विपरीत जनगणना वर्ष १९०१ में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत मात्र १०.८ था, जो जनगणना वर्ष २००१ में बढ़कर २८.०० हो गया है, अर्थात ग्रामीण जनसंख्या में जहाँ जनगणना वर्ष १९०१ की त१लना में जनगणना वर्ष २००१ में लगभग २० प्रतिशत की कमी आई है वहीं दूसरी ओर नगरीय जनसंख्या मे लगभग १८० प्रतिशत की वृद्धि हुई है । नगरीय तथा ग्रामीण जनसंख्या में मध्य अनुपात जनगणना वर्ष १९०१ में

जहां १:८.१ था वहीं जनगणना वर्ष २००१ नगरीय जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि के फलस्वरूप १:२.६ रह गया है । नगरीय जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि तथा ग्रामीण जनसंख्या में निरंतर कमी की प्रवृति, सम्भव है ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में नगरों की ओर पलायन हो। वस्तुतः जनसंख्या में वृद्धि, जन्मदर और मृत्युदर के मध्य के अंतर पर निर्भर करती है । यदि जन्मदर मृत्युदर की अपेक्षा उच्च है तो फलस्वरूप जनसंख्या में वृद्धि दर उच्च होगी । तालिका २.१० में विभिन्न जनगणना वर्षों मे जन्मदर तथा मृत्युदर को दर्शाया गया है।

तालिका २.१० -

भारत में जन्मदर तथा मृत्युदर

जनगणना वर्ष	जन्म प्रति (१०००)	मृत्यु प्रति (१०००)
१९०१	४५.८	४४.४
१९११	४८.१	४२.६
१९२१	४६.२	४८.६
१९३१	४६.४	३६.३
१९४१	४५.२	३१.२
१९५१	३९.९	२७.४
१९६१	४०.०	१८.०
१९७१	४१.२	१९.२
१९८१	३७.२	१५.०
१९९१	३२.५	११.४
२००१	२५.००	९.००

श्रोतः रूद्रदत्त एवं के.पी.एम. सुन्दरम्: इण्डिया इकोनोमी (एस. चाँद एण्ड कम्पनी न्यू देहली -२००२) पृ. सं.- ४५

भारत में जनसंख्या के जन्मदर तथा मृत्युदर विषयक आँकड़े (तालिका २.१०) दर्शाते हैं कि प्रारम्भ में जन्मदर तथा मृत्युदर में अंतर अधिक नहीं था किन्तु समय के बढ़ने के साथ ही जन्मदर तथा दोनों में ही यद्यपि ह्रास हुआ है तथापि प्रथम तो जन्मदर में अंतर की अपेक्षा मृत्युदर मे अधिक हैं। जनगणना वर्ष १६०१ में जन्मदर प्रति हजार ४५.८ जो जनगणना वर्ष २००१ में घटकर २५ प्रति हजार हो गयी है अर्थात जनगणना वर्ष २००१ में जनगणना वर्ष १६०१ की तुलना में जन्मदर में लगभग ४५.४ प्रतिशत की कमी आयी किन्तु इसी अवधि में मृत्युदर में लगभग ८० प्रतिशत की कमी दृष्टिगोचर हो रही है जो प्रकारान्तर से जनधिक्य को बढ़ावा दे रही है । मृत्युदर में कमी आने का प्रश्न है भविष्य में अपेक्षाकृत अधिक चिकित्सीय सुविधाओं के फलस्वरूप ओर अधिक कमी आने की सम्भावनाएँ हैं अतएव जनसंख्या वृद्धि को रोकने का एक मात्र आधार आकर उपाय उत्तरोतर जन्मदर में कमी में ही निहित है ।

भारत में परंपरावादी सोच तथा सामाजिकताओं में भी चिकित्सकीय संसाधनो के फलस्वरूप शिशु मृत्युदर में वृद्धि तथा जन्त के समय जीवन की प्रत्याशा में कमी जैसी स्थितियों ने भी जनाधिक्य की ओर प्रेरित करने में सकारात्मक भूमिका निभाई है। यद्यपि वर्तमान समय में उत्तरोत्तर बढ़ती स्वास्थ्य सुविधाओं से शिशु मृत्युदर में कमी तथा जीवन की प्रत्याशा में वृद्धि हो रही है जो प्रकारान्तर से शिशु जन्मदर मे कमी की प्रवृत्ति को बढ़ावा देगी। तालिका २.११ मे शिशु मृत्युदर तथा जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा विषयक आंकड़े दर्शाये गये हैं जो शिशु मृत्युदर तथा जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा विषयक आंकड़े दर्शाये गये हैं जो शिशु मृत्युदर तथा जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा की उभर रही प्रवृति की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

तालिका २.११

भारत में शिशु-मृत्युदर तथा जीवन प्रत्यशा

जनगणना वर्ष	शिशु-मृत्युदर	जीवन की प्रत्याशा
१९११	२८७	२२.९
१९२१	२९१	२०.०
१९३१	२४१	२६.८
१९४१	२११	३१.८
१९५१	१८३	३२.१
१९६१	१४६	४१.३
१९७१	१२६	४५.६
१९८१	११०	५४.४
१९९१	८७	५८.२
२००१	७१	६३.०

श्रोतः- रुद्रदत्त एवं के.पी.एम. सुन्दरम, इण्डियन इकोनामी (एस. चाँद एण्ड कम्पनी न्यू देहली)- २००२- पृ० सं.- ४५

तालिका २.११ में दर्शाये गये आंकड़ो से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष १९९९ से २००१ के मध्य प्रत्येक जनगणना वर्ष में शिशु मृत्युदर में उत्तरोत्तर ह्रास की प्रवृत्ति पाई गई है इसके विपरीत जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा में उत्तोत्तर वृद्धि हुई है वस्तुतः यह दोनों ही स्थितियाँ उत्तरोत्तर स्वास्थ्य सुविधओं मे बढ़ोत्तरी का ही परिणाम हैं। बहुत सम्भव है शिशु मृत्युदर में कमी तथा जीवन प्रत्याशा में बृद्धि की स्थिति जन्मदर में ह्रासोन्मुखी प्रवृत्ति का कारण है। जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा में वृध्दि की स्थिति से दम्पति में अधिक बच्चे पैदा करने की सोच में बदलाव सम्भव है।

जनसंख्या संरचना-

किसी भी देश अथवा समाज की आर्थिक-सम्पन्नता आर्थिक उपार्जन में लगने वाली मानव-शक्ति के प्रतिशत पर निर्भर करती है अर्थात

जिन देशों में आर्थिक उपार्जन से जुड़ी मानव शक्ति का प्रतिशत अधिक है वहाँ आर्थिक-सम्पन्नता की सम्भावनाएँ अपेक्षाकृत अधिक रहतीं हैं अर्थात अर्थिक-सम्पन्नता कुल जनसंख्या के उस प्रतिशत पर निर्भर करती है। जिसे क्रियाशील आयु वर्ग कहा जाता है। सामान्यतः १५ वर्ष से कम आयु वर्ग तथा ६० वर्ष से ऊपर आयु वाले जनसंख्या समूह को निर्भर जनसंख्या की संज्ञा दी जाती है और इस प्रकार आर्थिक उपार्जन की दृष्टि से १५ से ६० वर्ष आयु वर्ग की जनसंख्या ही महत्वपूर्ण है। अस्तु, आयु के आधार पर जनसंख्या वितरण का अध्ययन देश की जनसंख्या के उस आयु वर्ग के स्थान की दृष्टि से आवश्यक है। जिसे अर्थिक उपार्जक वर्ग कहा जाता है। अधोलिखित तालिका २.१२ में आयु के आधार पर जनसंख्या वितरण दर्शाया गया है।

तालिका २.१२

प्रतिशत जनसंख्या का वितरण एवं आयु (१९११-२००१)

जनगणना वर्ष	आयु वर्ग		
	०-१४	१५-६०	६० से ऊपर
१९११	३८.८	६०.२	१.०
१९२१	३६.२	५९.६	१.२
१९३१	३८.३	६०.२	१.५
१९६१	४१.०	५३.३	५.७
१९७१	४१.४	५३.४	५.२
१९८१	३९.७	५४.१	६.२
१९९१	३६.५	५७.१	६.४
२००१	३४.३३	५८.७०	६.९७

श्रोतः- जनसंख्या शिक्षा, दिग्दर्शिका (राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद) पृ.सं०- १०१

आयु वर्ग के अनुसार जनसंख्या-वितरण (तालिका २.१२) स्पष्ट कर रही है कि ६० वर्ष से अधिक आयु वर्ग की जनसंख्या प्रतिशत

में वृद्धि के फलस्वरूप निर्भर जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। क्योंकि स्वास्थ्य सेवाओं में उत्तोत्तर हो रही वृद्धि से जीवन प्रत्याशा में वृद्धि हुई है तथा ६० वर्ष आयु से अधिक आयु वाली जनसंख्या में वृद्धि हुई है। तालिका २.१३ में कुल कार्यशील जनसंख्या तथा निर्भर जनसंख्या को दर्शाया गया है। जो स्पष्ट करती है कि निर्भर जनसंख्या में सतत् वृद्धि हो रही है। जो आर्थिक संसाधनो तथा निर्भर जनसंख्या प्रमुखतः ०-१५ वर्ष आयु वर्ग की विशिष्ट आवश्यकताओं को प्रतिकूल रूप में प्रभावित कर रही हैं।

तालिका २.१३

भारत में उत्पादक एवं निर्भर जनसंख्या

वर्ष	कुल उत्पादक जनसंख्या		कुल निर्भर जनसंख्या	
	करोड़	प्रतिशत	करोड़	प्रतिशत
१९६१	१८.३०	४३.००	२५.६०	५७.००
१९७१	१७.५०	३४.२०	३७.२०	६५.००
१९८१	२२.००	३७.६०	४६.४०	६२.४०
१९९१	३१.५०	३७.६०	५२.९०	६२.४०
२००१	४०.२०	३९.२०	६२.३०	६८.८०

श्रोतः- जनसंख्या शिक्षा, दिग्दर्शिका (राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद) पृ.सं०- १०१

देश की कुल जनसंख्या को उत्पादक तथा निर्भर जनसंख्या विषयक (तालिका२.१३) वितरण में उत्पादक जनसंख्या में आयु वर्ग १५ से ६०वर्ष की जनसंख्या को सम्मिलित किया गया है जबकि निर्भर जनसंख्या में आयुवर्ग ० - १५ तथा ६० वर्ष से अधिक आयु की जनसंख्या के साथ ही साथ आयु वर्ग १५से ६० की उस जनसंख्या को भी जोड़ा गया है जो बेरोजगार होने के फलस्वरूप आर्थिक उपार्जन में कोई योगदान नही कर रही है। तालिका २.१३ में दर्शाया गयी उत्पादक जनसंख्या तथा निर्भर जनसंख्या का वितरण स्पष्ट कर रहा है कि वर्ष १९६१ तथा वर्ष २००१ के मध्य अपवाद स्वरूप वर्ष १९७१ को छोड़कर सभी जनगण्ना वर्षों में

उत्पादक जनसंख्या में वृद्धि हुई है क्योंकि वर्ष १९६१ में जहाँ उत्पादक जनसंख्या १८.३० करोड़ थी वहीं वर्ष २००१ में बढ़कर ४०.२० करोड़ हो गयी है किन्तु तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि उत्पादक जनसंख्या के प्रतिशत में कमी आयी है वर्ष १९६१ में उत्पादक जनसंख्या का प्रतिशत ४३.०० था जो वर्ष २००१ में घटकर भाग मात्र ३९.२० प्रतिशत ही रह गया ।

जहाँ तक वर्ष १९६१ तथा वर्ष २००१ के मध्य निर्भर जनसंख्या का प्रश्न है उसमें लगभग ढ़ाई गुना वृद्धि हुई है क्योकि वर्ष १९६१ में देश में निर्भर जनसंख्या लगभग मात्र २५.६० करोड़ थी जो वर्ष २००१ में बढ़कर ६२.३० करोड़ हो गयी है । कुल जनसंख्या में प्रतिशत निर्भर जनसंख्या का आंकलन भी स्पष्ट करता है कि वर्ष १९६१ तथा वर्ष २००१ के मध्य निर्भर जनसंख्या प्रतिशत में लगभग १२ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जनसंख्या वर्ष १९८१तथा १९९१ में भी जिनमें निर्भर जनसंख्या का प्रतिशत ६२.४ स्थिर रहा है, निर्भर जनसंख्या में लगभग ६.५ करोड की वृद्धि हुई है।

किसी भी विकासशील देश के आर्थिक संसाधानो की दृष्टि से ४० वर्ष के अतंराल (१९६१-२००१) में ढ़ाई गुना निर्भर जनसंख्या का बोझ असाधारण है। वस्तुतः यह निर्भर जनसंख्या विकास के सारे प्रतिमानों तथा प्रयासों को बौना सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। अस्तु, यह उत्पादक जनसंख्या पर ही निर्भर करता है कि वह देश में पूँजी के उत्पादन में तो वृद्धि के प्रति सतत् प्रयत्नशील रहे वहीं जनसंख्या उत्पादन में कमी लाने के प्रति भी जागरूक रहें अन्यथा इस निर्भर जनसंख्या का बोझ उत्पादक जनसंख्या वहन न कर सकेगी तथा सबके लिए विकास के समान अवसरों तथा जीवन की गुणवत्ता यहां तक जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की कल्पना कभी साकार न हो सकेगी।

साक्षरता :-

साक्षरता तथा शिक्षा किसी देश के विकास की आधार शिला होती है। उच्च साक्षरता स्तर की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक विकास में उत्प्रेरक की भूमिका होती है।

तालिका २.१४ में स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न जनगणना वर्षो से सम्बन्धित साक्षरता के आकड़े प्रदर्शित किये गये हैं।

तालिका २.१४

भारत में साक्षरता दर (१९५१-२००१)

जनगणना वर्ष	प्रतिशत			पुरूष-महिला साक्षरता दर में अंतर
	साक्षर जनसंख्या	पुरुष	महिला	
१९५१▲	१८.३३	२७.१६	८.८६	१८.३०
१९६१▲	२८.३०	४०.४०	१५.३५	२५.०५
१९७१▲	३४.४५	४५.९६	२१.९६	२३.९८
१९८१▲▲	४३.५७	५६.३८	२९.७६	२६.६२
१९९१▲▲	५२.२१	६४.३१	३९.२९	२४.८४
२००१▲▲	६५.३८	७५.८५	५४.१६	२१.६९

स्रोतः जनगणना भारत २००१, सीरीज १,इण्डियन पेपर १, २००१

▲ जनगणना में पाँच वर्ष तथा उससे अधिक आयु वर्ग

▲▲ जनगणना में सात वर्ष तथा उससे अधिक आयु वर्ग

तालिका २.१४ में दर्शित साक्षरता आंकड़े स्पष्ट करते है कि देश में स्वातंत्रोत्तर काल में साक्षरता प्रतिशत में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। वर्ष १९५१-में कुल साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत १८.३३ था जो वर्ष २००१ में बढकर ६५.३८ हो गया है अर्थात काल खण्ड़ १९५१-२००० के मध्य ४७.०५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है पुरूष साक्षर जनसंख्या में भी आशातीत वृद्धि हुई है क्योंकि वर्ष १९५१ में जहाँ कुल साक्षर पुरूषों की संख्या लगभग २८ प्रतिशत थी वहीं जनगणना वर्ष २००१ में बढ़कर ७५.८५ हो

गयी। यद्यपि अभी भी शत-प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अथक प्रयासों की आवश्यकता है। वस्तुतः साक्षरता के लक्ष्य प्राप्ति में सबसे बडी बाधा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा जिसके अनुसार भारत के संविधान लागू होने के दस वर्ष के अन्तराल में ६-१४ आयु वर्ग के बच्चों हेतु अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना था, को प्राप्त न कर पाना है। निःसन्देह इस स्थिति के लिए अन्य कारकों के साथ ही साथ इस आयु वर्ग की जनसंख्या की बहुलता भी एक बहुत बडा कारण है।

साक्षरता तालिका २.१४ पर विश्लेषणात्मक दृष्टि स्पष्ट करती है कि महिला साक्षरता की स्थिति में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है जो कि वर्ष १९५१ में मात्र ८.८६ प्रतिशत के स्थान पर वर्ष २००१ में महिला साक्षरता के ५४.१६ प्रतिशत होने से स्वमेव स्पष्ट है। एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी उभरकर सामने आया है कि दशकानुसार साक्षरता प्रतिशत में वृद्धि पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक है। यथा वर्ष १९९१ तथा २००१ के मध्य पुरूष साक्षरता में ११.५४ प्रतिशत वृद्धि के स्थान पर इसी अवधि में महिला साक्षरता में लगभग १५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। साक्षरता प्रतिशत में उत्तरोत्तर हो रही वृद्धि निःसन्देह शुभ संकेत है किन्तु अभी भी देश में लगभग ३५ प्रतिशत जनसंख्या निरक्षर है जिसमें पुरूषों का प्रतिशत लगभग २५ तथा निरक्षर महिलाओं का प्रतिशत ४६ है।

भारत में जनसंख्या प्रक्षेपण -

किसी देश की जनसंख्या जहाँ तात्कालिक समस्याओं के समाधान की अपेक्षा रखती है वहीं जनसंख्या के भावी अनुमान , भोजन, आवास, वस्त्र आदि की भावी आवश्यकताओं की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ ही साथ शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सेवायोजन जैसी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सुविचारित योजनाओं के निर्माण में उपयोगी सिद्ध होते है। जनसंख्या के प्रक्षेपण, भावी जनसंख्या के स्वरूप एवं विविधता जन्म आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संसाधनो को जुटाने की दृष्टि से

महत्वपूर्ण होते हैं।तालिका २.१५ में १९९६ से २०१६ के मध्य की अवधि के जनसंख्या प्रक्षेपण को दर्शाया गया है–

तालिका २.१५

भारत की प्रक्षेपित जनसंख्या

(१९९६–२०१६)

वर्ष	प्रक्षेपित जनसंख्या (करोड़ में)			पुरूष- महिला जनसंख्या
	कुल	पुरूष	महिला	
१९९६–२००१	१०१.२४	५२.३७	४८.८६	३.५१
२००१–२००६	१०९.४१	५६.४४	५२.९६	३.४८
२००६–२०११	११७.८६	६०.६७	५७.२१	३.४६
२०११–२०१६	१२६.३५	६४.८८	६१.४६	३.४२

श्रोतः रिपोर्ट आफ टेक्नीकल कमेटी, प्लानिंग कमीशन, १९९६ रजिस्ट्रार जनरल इण्डिया

देश की जनसंख्या के सम्बन्ध में प्रक्षेपित आंकलन (तालिका २.१५) दर्शाता है कि २००१–२०१६ के मध्य जनसंख्या में लगभग २५.११ करोड़ की वृद्धि सम्भावित है जिसमें उक्त अवधि में पुरूषो की संख्या में लगभग १२.५१ करोड़ तथा महिला जनसंख्या में १२.६० करोड की वृद्धि अनुमानित है उक्त अनुमानों से स्पष्ट है कि पुरूषो की अपेक्षा महिला जनसंख्या में लगभग ०.०९ करोड़ की वृद्धि सम्भावित है। महिला जनसंख्या में सापेक्षिक वृद्धि का अनुमान इस आधार पर भी कराया जा सकता है कि पुरूष तथा महिला जनसंख्या के मध्य का अंतर उत्तरोत्तर घट रहा है। वर्ष १९९६–२००१ के मध्य महिलाओं की अपेक्षा पुरूषों की संख्या जहाँ ३.५१ करोड़ अधिक थी वहीं २०११–२०१६ के मध्य पुरूषो की संख्या महिलाओं से मात्र ३.४२ करोड़ अधिक है। महिलाओं की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि की प्रवृत्ति भले ही, इस वृद्धि की गति अतिमंद हो, इस बात का संकेत देती है कि कन्या शिशुओं के प्रति धारणा में परिवर्तन हो रहा है। वास्तव

में इन प्रक्षेपित अनुमानों का उपयोग बालिकाओं के प्रति सोच में परिवर्तन लाने के प्रयासों में तीव्रता लाने की आवश्यकता की ओर संकेत देते हैं।

देश में नवीं पंचवर्षीय योजना बनने के पूर्व १९९६ में योजना आयोग द्वारा जनसंख्या प्रक्षेपण हेतु गठित समिति ने १९९१-२०१६ के मध्य जनसंख्या विकास का आंकलन किया था जिसमें जनगणना वर्ष १९७१, १९८१, तथा १९९१ की जनसंख्या तथा उसके वितरण को आधार बनाया गया था। समिति ने १९९६-२०१६ के मध्य जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा का भी अनुमान लगाया है जिसका तालिका २.१६ में उल्लेख किया गया है।

तालिका २.१६

जीवन प्रत्याशा एवं जन्म दर प्रक्षेपण

(१९९६-२०१६)

वर्ष	जीवन-प्रत्याशा		कुल जन्मदर
	पुरुष	महिला	
१९९६-२००१	६२.३०	६५.२७	३.१३
२००१-२००६	६३.८७	६६.९१	२.८८
२००६-२०११	६५.६५	६७.६७	२.६८
२०११-२०१६	६७.०४	६९.१८	२.५२

श्रोतः पापुलेशन प्रोजेक्सन फार इण्डिया एण्ड स्टेट्स, १९९६-२०१६ रजिस्ट्रार जनरल, भारत, न्यूदेलही, १९९६

प्रक्षेपित जनसंख्या तथा आयु-

वर्ष १९९६-२०१६ हेतु प्रक्षेपित जनसंख्या का विभिन्न आयु वर्गो ने विभाजन तालिका २.१७ में दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि ०-१४ आयु वर्ग में वर्ष १९९६ में जनसंख्या जहां ३५.२७ करोड़ थी तथा जो कुल जनसंख्या का ३७.७ प्रतिशत थी वह वर्ष २०१६ में घटकर ३५. ०४ करोड़ अनुमानित है तथा कुल जनसंख्या का २७.७ प्रतिशत सम्भावित है। जहां तक उत्पादक आयु वर्ग १५-५९ की प्रक्षेपित जनसंख्या का प्रश्न

है, अनुमान है वर्ष १६६६ में इनकी कुल संख्या ५१.६२ करोड़ थी जिसकी वर्ष २०१६ में बढ़कर ६३.३ करोड़ होने की सम्भावना है। इस आयु वर्ग के प्रतिशत के भी ५५.६ के स्थान पर वर्ष २०१६ मे ६३.३ होने का अनुमान है अर्थात वर्ष २०१६ में उत्पादक जनसंख्या १६६६ की उत्पादक आयु वर्ग से लगभग ७.७ प्रतिशत की वृद्धि सम्भवित है।

तालिका २.१७

प्रक्षेपित जनसंख्या तथा आयु-

(१६६६-२०१६)

आयु वर्ग	१६६६ जनसंख्या (करोड़ में)	प्रतिशत	२०१६ जनसंख्या (करोड़ में)	प्रतिशत
०-१४	३२.२७	३७.७	३५.०४	२७.७
१५-६०	५१.६२	५६.६	८०.०१	६३.३
६०+	६.२३	६.७	११.३	६.०
कुल	६३.४२	१००	१२६.३५	१००

स्रोत : रिपोर्ट आफ टेक्नीकल ग्रुप आन पापुलेशन प्रोजेक्शन

प्रक्षेपित अनुमानों के अनुसार ६० तथा उससे अधिक आयु वालों की संख्या में भी १६६६ की तुलना में २०१६ में लगभग ५ करोड़ की वृद्धि अनुमानित है। तथा इनका प्रतिशत भी १६६६ के ६.७ प्रतिशत के स्थान पर वर्ष २०१६ में बढ़कर ६.०० होने का अनुमान है।

प्रक्षेपित अनुमाानों के आधार पर (तालिका २.१७)वर्ष १६६६ में जहां कुल जनसंख्या ६३.४२ करोड़ अनुमानित है वहीं वर्ष २०१६ में इससे बढकर १२६.३५ करोड़ तक पहुचने की सम्भावना है

तालिका २.१८

प्रक्षेपित जीवन प्रत्याशा :

भारत एवं घने जनसंख्या राज्य (१९९६-२०१६)

राज्य	पुरूष			महिला		
	१९९६ -२००१	२००१ -२००६	२०११ -२०१६	१९९६ -२००१	२००१ -२००६	२०११ -२०१६
आ० प्रदेश	६१.६	६२.८	६४.९	६३.७	६५.०	६७.२
आसाम	५७.३	५६.०	६१.८	५८.८	६०.९	६४.४
बिहार	६३.६	६५.७	७०.०	६२.१	६४.८	६६.१
गुजरात	६१.५	६३.१	६५.८	६२.८	६४.१	६६.५
हरयाणा	६३.९	६४.६	६६.०	६७.४	६९.३	७०.०
कर्नाटक	६१.७	६२.४	६३.७	६५.४	६६.४	६८.४
केरल	७०.७	७१.७	७२.०	७५.०	७५.०	७५.०
मध्यप्रदेश	५६.८	५६.२	६०.७	५७.२	५८.०	६१.४
महाराष्ट्र	६५.३	६६.८	६९.०	६८.२	६९.८	७२.०
उड़ीसा	५८.५	६०.१	६२.७	५८.१	५९.७	६२.६
पंजाब	६८.४	६९.८	७१.७	७१.४	७२.०	७२.०
राजस्थान	६०.३	६२.२	६५.२	६१.४	६२.८	६६.८
तमिलनाडु	६५.२	६७.०	६९.६	६७.६	६९.८	७२.०
उत्तरप्रदेश	६१.२	६३.५	६७.१	६१.१	६४.१	६८.७
प०बंगाल	६४.५	६६.१	६८.६	६७.२	६९.३	७२.०
भारत	६२.४	६४.१	६६.९	६३.४	६५.४	६८.८

स्रोतः जे०सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, शिप्रा पब्लिकेसन्स, नई दिल्ली २००२, पृ०सं०-४८

तालिका २.१८ के अवलोकन से स्पष्ट है भारत के सन्दर्भ में जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा विषयक अनुमान में आगामी वर्षो में

उत्तरोत्तर वृद्धि सम्भावित है। पुरूष वर्ग में वर्ष २०११-२०१६ के मध्य जीवन की प्रत्याशा ६६.६ है जबकि इसी वर्ग में वर्ष १६६६-२००१ में यह केवल ६२.४ थी अर्थात अनूमान है कि १६६६-२००१ की तुलना में ४.६ की वृद्धि सम्भावित है। महिलाओं के संदर्भ में भी १६६६-२००१ की तुलना में २०११-२०१६ में ५.८ की बढ़ोत्तरी सम्भावित है। प्रक्षेपित तथ्यों से यह भी स्पष्ट है कि महिला वर्ग में जीवन प्रत्याशा में पुरूष वर्ग की तुलना में अधिक वृद्धि सम्भावित है।

जहाँ तक विभिन्न राज्यों के जीवन प्रत्याशा विषयक अनुमानों का प्रश्न है केरल सर्वोच्च जीवन प्रत्याशा वाला राज्य है जबकि मध्यप्रदेश के सन्दर्भ में सबसे क्रम प्रत्याशा अनुमानित है। उत्तर प्रदेश के विषय में अनुमान है कि यहाँ जीवन प्रत्याशा भारत की स्थिति के अनुरूप ही है।

जनसंख्या प्रक्षेपण समिति ने भारत तथा घनी आबादी वाले प्रदेशों की शिशु-मृत्युदर का भी वर्ष १६६६-२०१६ हेतु प्रक्षेपण किया है। एतद् विषयक आकड़ो हेतु तालिका २.१६ विकाश दृष्टव्य है।

प्रक्षेपित शिशु मृत्यु के आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सम्बन्धित वर्षों (१६६६-२०१६) में शिशु मृत्यु दर में उत्तरोत्तर कमी अनुमानित है। शिशु मृत्यु दर में कमी दोनों ही लिंगों अर्थात पुरूष-शिशु तथा महिला-शिशुओं की मृत्युदर में कमी आयेगी । आंकड़ो के आधार पर यह भी अनुमान है कि केरल में सबसे कम शिशु मृत्युदर वाला राज्य है। जबकि उड़ीसा राज्य की शिशु मृत्युदर सर्वाधिक है। जहां तक उत्तर प्रदेश मे शिशु मृत्युदर का प्रश्न है। पुरूष शिशुओ के लिए १६६६ में जहां यह दर ६४ अनुमानित थी वहीं २०११-२०१६ में घटकर यह दर २६ रह जायेगी। शिशु मृत्युदर में सम्भावित कमी का कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हो सकता है। महिला शिशु दर में लोगों में बालिकाओं के प्रति सोच में बदलाव भी एक कारण हो सकता है । केरल राज्य में सबसे कम शिशु मृत्यु दर की पृष्ठभूमि में वहां के साक्षरता स्तर का उच्च होना ही सबल कारण प्रतीत होता है।

तालिका २.१९

प्रक्षेपित शिशु मृत्युदर : भारत एवं राज्य (१९९६-२०१६)

राज्य	पुरूष			महिला		
	१९९६-२००१	२००१-२००६	२०११-२०११	१९९६-२००१	२००१-२००६	२००१-२०१६
आन्ध्रपदेश	६५	५९	४८	५६	५०	३९
आसाम	६४	५३	३६	६१	५१	३६
बिहार	५४	४३	२८	५५	४४	२८
गुजरात	४६	३४	२१	४४	३३	१९
हरयाणा	५४	४६	३४	५७	४६	३१
कर्नाटक	७६	७६	७५	६७	६६	६४
केरल	१३	१०	९	९	८	८
मध्य प्रदेश	९९	९१	७६	१०१	९४	८३
महाराष्ट्र	४६	३९	२९	४६	४०	३०
उड़ीसा	१०६	९७	८१	१०५	९८	८७
पंजाब	४४	३९	३०	५१	४५	३६
राजस्थान	६४	५३	३७	६५	५२	३५
तमिलनाडु	४६	३८	२६	४३	३४	२३
उत्तरप्रदेश	६४	४९	२९	७४	५७	३६
प० बंगाल	५४	४६	३५	५६	५१	४३
भारत	६३	५३	३८	६४	५४	३९

स्रोतः जे०सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, शिप्रा पब्लिकेसन्स, नई दिल्ली २००२, पृ०सं०५१

प्रक्षेपित जीवन-प्रत्याशा तथा मृत्युदर के प्रस्तुतीकरण के पश्चात यह उचित होगा कि भारत के विभिन्न प्रदेशों की संख्या के प्रक्षेपणों का उल्लेख किया जाये क्योंकि जन्म के समय जीवन की प्रत्याशा तथा शिशु मृत्युदर एक बहुत बड़ी सीमा तक जनसंख्या की स्थिति को प्रभावित करते

हैं। अस्तु तालिका २.२० में विभिन्न राज्यों से सम्बन्धित वर्ष १६६६-२०१६ के मध्य जनसंख्या प्रक्षेपण दर्शाया गया हैं ।

तालिका २.२०

भारत तथा भारत के प्रमुख राज्य : जनसंख्या प्रक्षेपण (१६६६-२०१६)

राज्य	१६६६	२००१	२०२१	२०५१	वृद्धि १६६६-२०५१	वृद्धि प्रतिशत
आन्ध्र प्रदेश	७.२	७.६	६.०	६.३	२.१	२८.१
आसाम	२.५	२.७	३.४	३.७	१.२	४८.३
बिहार	६.३	१०.३	१४.३	१६.३	७.०	७५.७
गुजरात	४.६	४.६	५.८	६.०	१.४	३१.८
हरयाणा	१.६	२.०	२.४	२.६	०.७	३६.७
कर्नाटक	४.६	५.३	६.६	७.०	२.१	४२.७
केरल	३.१	३.३	३.८	३.६	०.८	२५.६
मध्यप्रदेश	७.४	८.१	११.०	१२.८	५.४	७२.३
महाराष्ट्र	८.७	६.३	११.६	१२.४	३.७	४२.६
उड़ीसा	३.४	३.७	४.५	४.६	१.२	३४.६
पंजाब	२.२	२.४	२.८	२.८	०.६	२६.२
राजस्थान	५.०	५.५	८.२	११.४	६.४	१२८.७
तमिलनाडु	५.६	६.२	७.१	६.६	१.०	१६.४
उत्तरप्रदेश	१५.७	१७.४	२६.६	४४.१	२८.४	१८१.२
पश्चिमबंगाल	७.५	७.६	६.५	६.७	२.२	३०.६
भारत	६३.४१	१०१.२	१३४.५	१६४.६	७१.२	७६.२

श्रोतः जे०सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, शिप्रा पब्लिकेसन्स, नई दिल्ली २००२

जनसंख्या प्रक्षेपण (तालिका २.२०) के अवलोकन से स्पष्ट है कि देश में सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है क्योंकि वर्ष १६६६ हेतु उत्तर प्रदेश की अनुमानित जनसंख्या १५.७ करोड़ सर्वाधिक

है। आगामी वर्षों में भी जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश अपना प्रथम स्थान बनाये रखेगा। वर्ष १९९६ की अनुमानित जनसंख्या १५.७ करोड़ थी तथा वर्ष २०५१ में बढ़कर ४४.१ करोड़ तक पहुँचने का अनुमान है जो प्रतिशत बृद्धि की दृष्टि से भी १८१.२ प्रतिशत होने के फलस्वरूप सर्वोच्च वृद्धि है। जनसंख्या की दृष्टि से दूसरे तथा तीसरे स्थान पर क्रमशः बिहार तथा महाराष्ट्र का स्थान है। जिनकी वर्ष १९९६, २००१, २०२१ में जनसंख्या क्रमशः ९.३ करोड़, ८.७ करोड़, १०.३ करोड़, १.३ करोड़ ,१४.३ करोड़ व ११.६ करोड़ अनुमानित है। वर्ष २०५० हेतु प्रक्षेपित जनसंख्या में महाराष्ट्र की जनसंख्या १२.४ कारोड़ की तुलना में मध्य प्रदेश की जनसंख्या के १२.८ करोड़ होने की सम्भावना है। प्रतिशत वृद्धि की दृष्टि से वर्ष २०५० तक राज्यों- बिहार, महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश में क्रमशः ७५.७ ,४२.९ तथा ७२.३ की वृद्धि सम्भावित है । राज्यों की जनसंख्या प्रक्षेपण की स्थिति स्पष्ट करती है कि बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान व उत्तर प्रदेश राज्य १९९६-२०५० के मध्य कुल जनसंख्या में ४७.२ करोड़ की वृद्धि कर रहे हैं जो भारत की उक्त अवधि में कुल जनसंख्या वृद्धि ७१.२ का ६६.२ प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश अकेले ही २८.४ करोड़ की वृद्धि कर रहा है जो कुल वृद्धि का ३९.९ प्रतिशत है। इससे स्पष्ट है कि यदि जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन इन राज्यों विशेषकर उत्तर प्रदेश में ही सम्भव हो सके तो देश में जनसंख्या वृद्धि की विभीषिका पर नियंत्रण सम्भव है वर्ष १९९६ में इन चारों राज्यों की जनसंख्या का भारत की कुल जनसंख्या में प्रतिशत ४० मात्र था जो २०५० में बढ़ कर ५१.३ प्रतिशत होने की सम्भावना है। यह स्थिति पुनः इन राज्यों में जनसंख्या नियंत्रण प्रयासों की सघनता की आवश्यकता प्रकट करती है ।

भारत में अत्यधिक जनसंख्या वाले राज्य -

भारत के विभिन्न राज्यों में जनसंख्या स्थिति एक जैसी नहीं है और न ही जनसंख्या प्रतिशत समान है। विभिन्न राज्यों की जनसंख्या में

अंतर का प्रमुख कारण उन राज्यों के क्षेत्रफल तथा उनके जनसंख्या घनत्व में असमानता है। तालिका २.२१ में भारत के प्रमुख जनसंख्या वाले राज्यों को दर्शाया गया है।

तालिका २.२१

भारत के सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रमुख राज्य (जनगणना वर्ष २००१)

क्रम	राज्य	जनसंख्या २००१ (करोड़ में)	भारत की कुल जनसंख्या में प्रतिशत		स्थान	
			२००१	१९९१	२००१	१९९१
१	२	३	४	५	६	७
१	उत्तर प्रदेश	१६.६०	१६.१७	१५.६०	१	१
२	महाराष्ट्र	९.६७	९.४२	९.३३	२	२
३	बिहार	८.२८	८.०७	७.६२	३	३
४	प०बंगाल	८.०२	७.८१	८.०४	४	४
५	आन्ध्रप्रदेश	७.५७	७.३७	७.८६	५	५
६	तमिलनाडु	६.२१	६.०५	६.५६	६	६
७	मध्य प्रदेश	६.०३	५.८८	५.७४	७	७
८	राजस्थान	५.६४	५.५०	५.२०	८	८
९	कर्नाटक	५.२७	५.१४	५.३१	९	९
१०	गुजरात	५.०५	४.९३	४.८८	१०	१०
११	उड़ीसा	३.६७	३.५७	३.७४	११	११
१२	केरल	३.१८	३.१०	३.४४	१२	१२

श्रोतः जे०सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, शिप्रा पब्लिकेसन्स, नई दिल्ली २००२, पृ०सं० ६५

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष २००१ के अनुसार उत्तर प्रदेश सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है जो भारत की कुल जनसंख्या का १६.१७ प्रतिशत है । महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा आन्ध्र प्रदेश की कुल जनसंख्या (२००१) में क्रमश ९.४२ प्रतिशत, ८.

०७ प्रतिशत, ७.८१ प्रतिशत, तथा ७.३७प्रतिशत का योगदान देकर क्रमशः २,३,४ व ५ वें स्थान पर है तालिका २.२१ से यह भी स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष १९९१-२००१ के मध्य पश्चिमी बंगाल व आन्ध्र प्रदेश ने अपनी जनसंख्या में अपेक्षाकृत नियंत्रण किया है जिसके फलस्वरूप जनगणना वर्ष २००१ में जनसंख्या की दृष्टि से उनके स्थान चौथे व पाचवें हो गये है; जबकि इसी अवधि में बिहार जो जनगणना वर्ष १९९१ में जनसंख्या की दृष्टि से पाचवें स्थान पर था वर्ष २००१ में तीसरे स्थान पर आ गया । यह स्थिति स्पष्ट करती है कि जनसंख्या नियोजन वे प्रयासों के प्रति बिहार इस अवधि में सचेष्ट राज्य नही रहा ।

जहाँ तक भारत में सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रमुख राज्यों की जनसंख्या में पुरूषों तथा महिलाओं की प्रथक-प्रथक संख्या का प्रश्न है उसे तालिका २.२२ में निम्नलिखित रूप में दर्शाया गया है ।

तालिका २.२२ में दर्शाये गये आँकड़ों से स्पष्ट है कि भारत के सर्वाधिक जनसंख्या वाले बारह राज्यों में प्रति एक हजार पुरूषों पर महिला-संख्या केरल में सर्वाधिक है जहाँ प्रति एक हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या १०५८ है जबकि उत्तर प्रदेश पुरूष-महिला अनुपात की दृष्टि से सर्वाधिक कम महिलाओं वाला प्रदेश है जहाँ प्रति १००० पुरूषों पर महिलाओं की संख्या ८९८ है। आकड़ों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट है कि प्रति हजार पुरूषो पर महिलाओं की संख्या दशकानुसार वृद्धि

दर को प्रभावित कर रही है । केरल, तमिलनाडु आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक तथा पश्चिमी बंगाल इसके प्रमाण हैं ।

तालिका २.२२

सर्वाधिक जनसंख्या वाले प्रमुख राज्य
जनसंख्या - वितरण लिंगानुपात, घनत्व
दशकानुसार वृद्धि दर(२००१)

क्रम	राज्य	कुल जनसंख्या में प्रतिशत	प्रति १००० पुरूषों पर महिला संख्या	घनत्व	दशकानुसार वृद्धि दर
१	उत्तर प्रदेश	१६.१७	८९८	६८९	२५.८०
२	महाराष्ट्र	९.४२	९२२	३१४	२२.५७
३	बिहार	८.०७	९२१	८८०	२८.४३
४	प० बंगाल	७.८१	९३४	१५६	१६.२० -५
५	आन्ध्रप्रदेश	७.३७	९७८	२७५	१३.८६ -३
६	तमिलनाडु	६.०५	९८६	४७८	११.१९ -२
७	मध्य प्रदेश	५.८८	९२०	१९६	२४.३४
८	राजस्थान	५.५०	९२२	१६५	२८.३३
९	कर्नाटक	५.१४	९६४	२७५	१७.२५ -४
१०	गुजरात	४.९३	९२१	२५८	२२.४८
११	उड़ीसा	३.५७	९७२	२३६	१५.९४
१२	केरल	३.१०	१०५८	८१९	९.४२ -१

श्रोत : जे० सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, (शिप्रा पब्लिकेशन, २००२, दिल्ली) पृ० सं०- २३

केरल में जहाँ प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की सर्वाधिक संख्या १०५८ है वहाँ पर सबसे कम दशकानुसार वृद्धि दर ९.४२ आँकी गयी है । केरल के बाद तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा

पश्चिम-बंगाल राज्य हैं जिनका दशकानुसार वृद्धि दर में क्रमशः दूसरा, तीसरा तथा चौथा स्थान है। निष्कर्षतः यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि जिन राज्यों में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या अधिक है वहाँ पर वृद्धि दर अपेक्षाकृत कम है। इसके विपरीत जिन राज्यों में प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या जिस अनुपात में कम है वहाँ जन्म दर लगभग उसी अनुपात में अधिक है अर्थात जनसंख्या में महिलाओं की संख्या तथा जन्म दर में प्रतिलोम अनुपात की पुष्टि होती है।

वस्तुतः जनसंख्या घनत्व की अधिकता प्राकृतिक संसाधनों की खपत पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है जो अन्ततः जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है । देश के विभन्न राज्यों में पश्चिम बंगाल सर्वाधिक घनत्व वाला प्रदेश है जहाँ वर्ष १९९१ के जन घनत्व ७६७ की तुलना में वर्ष २००१ में जनघनत्व ९०४ हो गया है ।

तालिका २.२३ में देश के सर्वाधिक घनी तथा सर्वाधिक विरल जनसंख्या वाले प्रदेशों को दर्शाया गया है ।

तालिका २.२३

सर्वाधिक तथा सबसे कम घनत्व वाले राज्य

(२००१)

क्रम	अत्यधिक घनी आबादी वाले राज्य	घनत्व	क्रम	सर्वाधिक विरल आबादी वाले राज्य	घनत्व
१ -	पश्चिमी बंगाल	९०४	१ -	अरूणाचल प्रदेश	१३
२ .	बिहार	८८०	२ -	मिजोरम	४२
३ -	केरल	८१९	३ -	सिक्किम	७६
४ -	उत्तर प्रदेश	६८९	४ -	जम्मू-कश्मीर	९९
५ -	पंजाब	४८२	५ -	मेघालय	१०३

श्रोत : जे० सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, (शिप्रा पब्लिकेशन, २००२, दिल्ली) पृ० सं० २५

तालिका में प्रदर्शित आकड़े इस तथ्य के द्योतक हैं कि देश का पूर्वांचल सबसे अधिक घनी आबादी वाला क्षेत्र है जबकि उत्तरी पूर्वी क्षेत्र का जन घनत्व सब से कम है ।

साक्षरता दर -

तालिका २.२४ में भारत के प्रमुख जनसंख्या वाले राज्यों की साक्षरता दर तथा वर्ष १९९१-२००१ के मध्य प्रतिशत वृद्धि को दर्शाया गया है ।

तालिका २.२४

प्रमुख राज्यों की साक्षरता दर तथा प्रतिशत वृद्धि (१९९१-२००१)

क्रम	राज्य	साक्षरता दर		प्रतिशत वृद्धि
		१९९१	२००१	१९९१-२००१
१	उत्तर प्रदेश	४१.६०	५७.३६	१५.७६
२	महाराष्ट्र	६४.८७	७७.२७	१२.४०
३	विहार	३८.४८	४६.५३	६.०५
४	पश्चिमी बंगाल	५७.७०	६९.२२	११.५२
५	आन्ध्र प्रदेश	४४.०९	६१.११	१७.०२
६	तमिलनाडु	६२.६६	७३.४७	१०.८१
७	मध्यप्रदेश	४४.२०	६४.११	१९.९१
८	राजस्थान	३८.५५	६१.०३	२२.४६
९	कर्नाटक	५६.०४	६७.०४	११.००
१०	गुजरात	६१.२९	६९.९७	८.६८
११	उड़ीसा	४९.०९	६३.६१	१४.५२
१२	केरल	८९.८१	९०.९२	१.११
१३	भारत	५२.२१	६५.३८	१३.१७

श्रोत : जे० सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, (शिप्रा पब्लिकेशन, २००२, दिल्ली) पृ० सं० ३७

जनसंख्या की दृष्टि से अधिक जनसंख्या वाले प्रमुख साक्षरता प्रतिशत के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि इन राज्यों में केरल की साक्षरता दर सर्वाधिक ९०.९२ है और इस प्रकार अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में केरल साक्षरता की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है । महाराष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात तथा पश्चिमी बंगाल क्रमशः २,३,४ तथा ५वें स्थान पर हैं जिनकी साक्षरता दर क्रमशः ७७.२७, ७३.४७, ६९.९७ तथा ६९.२२ है। जहां तक उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर का प्रश्न है , जनसंख्या की दृष्टि से भले ही इन बारह राज्यों में उसका स्थान प्रथम हो किन्तु साक्षरता दर की दृष्टि से मात्र बिहार ही ऐसा राज्य है जिसकी जनसंख्या दर उत्तर प्रदेश से कम है । वर्ष १९९१-२००१ की अवधि में साक्षरता प्रतिशत की बृद्धि की दृष्टि से राजस्थान एक ऐसा राज्य है जिसकी साक्षरता में सर्वाधिक २२.४६ प्रतिशत की वृद्धि हुई है । मध्य प्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश ने भी अपनी साक्षरता दर में क्रमशः १९.९१ तथा १७.०२ प्रतिशत की वृद्धि करके साक्षरता के प्रति अपनी जागरूकता का परिचय दिया है । यद्यपि इस अवधि में उत्तर प्रदेश ने अपनी साक्षरता को बढ़ा कर उसके प्रतिशत में लगभग १५.७६ प्रतिशत की वृद्धि की है। तथापि २००१ की जनगणना में मात्र ५७.७६ लोगों के साक्षर होने का प्रतिशत संतोषजनक नहीं है। वस्तुतः उत्तर प्रदेश तथा बिहार जैसे राज्य ही वर्तमान में भारत की साक्षरता प्रतिशत मात्र ६५.३८ प्रतिशत होने के लिए उत्तरदायी है। उड़ीसा ने भी वर्ष १९९१ के साक्षरता प्रतिशत ४९.०९ से बढ़ाकर वर्ष २००१ में ६३.६१ तक पहुँचाकर लगभग १४.५२ प्रतिशत की वृद्धि अर्जित की है। तालिका के आकड़ों के विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश, बिहार जैसे राज्यों में साक्षरता कार्यक्रमों के कियान्वयन में अत्यधिक जागरूकता की आवश्यकता है तब ही भारत की साक्षरता में संतोषजनक वृद्धि सम्भव है।

साक्षरता की दृष्टि से विभिन्न राज्यों की तुलना करने के बावजूद पुरूष और महिला साक्षरता का प्रथक-प्रथक आकलन आवश्यक

तथा उपयोगी है क्योंकि साक्षरता और विशेष रूप से महिला साक्षरता के विषय में यह माना जाता है कि साक्षरता और जनाधिक्य प्रतिलोमानुपात है। तालिका २.२५ में सर्वाधिक आबादी वाले बारह राज्यों की साक्षरता तथा पुरूष एवं महिला साक्षरता को दर्शाया गया है (तलिका २.२५) देश में केरल ही एक मात्र ऐसा राज्य है जहां पुरूष तथा महिला साक्षरता की दृष्टि से प्रथम स्थान पर है। तालिका २.२५ के अनुसार केरल के बाद पुरूष साक्षरता में महारष्ट्र, तमिलनाडु, गुजरात पश्चिम बंगाल तथा मध्य प्रदशे राज्य हैं जो क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें एवं छठें स्थान पर हैं।

तालिका २.२५- भारत तथा प्रमुख राज्यों में साक्षरता : लिगांनुसार (२००१)

क्रम	राज्य	साक्षरता दर		
		कुल जनसंख्या	पुरुष	महिला
१-	उत्तर प्रदेश	५७.३६	७०.२३	४२.९८
२-	महाराष्ट्र	७७.२७	८६.२७	६७.५१
३-	बिहार	४७.५३	६०.३२	३३.५७
४-	पश्चिम बंगाल	६९.२२	७७.५८	६०.२२
५-	आन्ध्र प्रदेश	६१.११	७०.८५	५१.१७
६-	तमिलनाडु	७३.४७	८२.३३	६४.५५
७-	मध्य प्रदेश	६४.११	७६.८०	५०.२८
८-	राजस्थान	६१.०३	७६.४०	४४.३४
९-	कर्नाटक	६७.०४	७६.२९	५७.४५
१०-	गुजरात	६९.९७	८०.५०	५८.६८
११-	उड़ीसा	६३.६१	७५.९५	५०.९७
१२-	केरल	९०.९२	९४.२०	८७.८६
भारत		६५.३८	७५.८५	५४.१६

श्रोत : जे० सी० अग्रवाल, पापुलेशन एजुकेशन, (शिप्रा पब्लिकेशन, २००२, दिल्ली) पृ० सं० ५६

जहाँ तक उत्तर प्रदेश में पुरूष एवं महिला साक्षरता का प्रश्न है वह इन राज्यों की साक्षरता तालिका में मात्र बिहार से ऊपर है क्योंकि बिहार की पुरूष साक्षरता ६०.३२ की तुलना में उत्तर प्रदेश में लगभग ७०.२३ प्रतिशत पुरूष साक्षर हैं।

इसी प्रकार बिहार महिला साक्षरता का प्रतिशत ३३.५७ है जो उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता दर ४२.९८ से काफी कम है। महिला साक्षरता दर में दूसरा, तीसरा चौथा तथा पाँचवा स्थान महाराष्ट्र, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल तथा गुजरात राज्य का है जिनकी महिला साक्षरता दर क्रमशः ६७.५१, ६४.५५ ६०.२२ तथा ५८.६८ है। विश्लेषणात्मक दृष्टि से साक्षरता को दृष्टिगत रखते हुये पुरूष तथा महिला साक्षरता दर में प्रथम द्वितीय तथा तृतीय स्थान क्रमशः केरल, महाराष्ट्र तथा तमिलनाडु का है । गुजरात को पुरूष साक्षरता में चौथे स्थान पर था वह महिला साक्षरता की दृष्टि से पाँचवें स्थान पर है जब कि पुरूष साक्षरता में पॉचवें स्थान वाले पश्चिम बंगाल ने महिला साक्षरता में ६०.२२ साक्षरता दर के फलस्वरूप चौथा स्थान पाया है । जहाँ तक भारत में पुरूष और महिला साक्षरता का प्रश्न है, देश में आज भी लगभग २४ प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं जबकि महिलायें लगभग ४६ प्रतिशत निरक्षरता के अंधकार में हैं।

कानपुर मण्डल : जनसंख्या एवं क्षेत्रफल :-

प्रस्तुत शोध प्रबंध के दत्तो का संकलन कानपुर मडण्ल के विभिन्न जनपदों में स्थित प्राथमिक, माध्यमिक तथा महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं के समूह में से किया जाना प्रस्तावित है, अतएव पूर्ववर्ती पृष्ठों में भारत तथा विभिन्न राज्यों की जनसंख्या वितरण प्रवृत्ति पर विशद् चर्चा के पश्चात यह समीचीन होगा कि कानपुर मण्डल की जनसंख्या-स्थिति तथा जनसंख्या वितरण की प्रकृति पर प्रकाश डाला जाए। तथा की जनसंख्या के सन्दर्भ में तुलनात्मक मीमांसा प्रस्तुत की जाये।

तालिका २.२७

कानपुर मण्डल की जनसंख्या एवं क्षेत्रफल

(जनगणना वर्ष २००१)

जनपद/ मण्डल	जनसंख्या			क्षेत्रफल वर्ग कि. मी.
	कुल	पुरुष	महिला	
औरैया	११,७६,४६६	६,३५,५२७	५४३,६६६	२,०५२
इटावा	१३,४०,०३१	७,२१,६१३	६,१८,११८	२,२८८
फरुर्खाबाद	१५,७२,२३७	८,४८,०८८	७,२६,१४६	२,२७६
कन्नौज	१३,८५,२२७	७,४१,३८०	६,४३,८४७	१,६६५
कानपुर दे०	१५,८४,०३७	८,५३,५६०	७३,४७१	३,१४६
कानपुर न०	४१,३७,४८६	२२,१३,६५५	१६,२३,५३४	३,०३०
कानपुर मण्डल	१,१२,०३,५१७	६०,१४,४२६	५१,८६,०८८	१,४७६
उत्तर प्रदेश	१६,६०,५२,८५६	८७,४६,६३०१	७८,५८६,५५८	२,४०,६२८

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ -जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

तालिका २.२७ में मण्डल के विभिन्न जनपदों की जनगणना वर्ष २००१ के अनुसार जनसंख्या प्रस्तुत की गयी है। तालिका में मण्डल तथा उसके प्रत्येक जनपद का क्षेत्रफल भी प्रस्तुत किया गया है। तालिका २.२७ में मण्डल के विभिन्न जनपदों की जनसंख्या में पुरूषों तथा महिला की संख्या को प्रथक-प्रथक दर्शाने के साथ ही उ० प्र० की जनसंख्या का भी उल्लेख किया गया है। ताकि मण्डल तथा प्रदेश की जनसंख्या के मध्य तुलनात्मक पक्ष को भी प्रस्तुत किया जा सके।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रदेश का कुल क्षेत्रफल २,४०,६२८ वर्ग किलोमीटर है। जबकि कानपुर मण्डल का क्षेत्रफल लगभग १४,७६० वर्ग किलो मीटर है। अर्थात प्रदेश तथा मण्डल के क्षेत्रफल के

मध्य १:०.०६ का अनुपात है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मण्डल का क्षेत्रफल प्रदेश के क्षेत्रफल का लगभग ६.१ प्रतिशत है। प्रदेश की कुल जनसंख्या लगभग ७८५.८६ लाख है। जबकि कानपुर मण्डल की कुल जनसंख्या लगभग ५१.८६ लाख है। (तालिका-२.२७) प्रदेश तथा मण्डल की जनसंख्या की तुलना से स्पष्ट होता है कि प्रदेश तथा मण्डल के मध्य जनसंख्या अनुपात १:०.०६६ है अर्थात मण्डल की जनसंख्या प्रदेश की जनसंख्या का लगभग ६.६ प्रतिशत है। मण्डल तथा प्रदेश की जनसंख्या के मध्य के अनुपात से सपष्ट है कि प्रदेश के प्रत्येक १०० व्यक्तियों में लगभग १७ व्यक्ति कानपुर मण्डल में निवास करते हैं।

जहाँ तक मण्डल के जनपदों के क्षेत्रफल का प्रश्न है नवगठित कन्नौज जनपद का क्षेत्रफल अन्य जनपदों की तुलना में सबसे कम मात्र १६६५ वर्ग किलोमीटर है जबकि कानपुर (देहात) अपने क्षेत्रफल ३१४६ वर्ग किमी के फलस्वरूप सबसे अधिक क्षेत्रफल वाला जनपद है। क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा, तीसरा, चौथा तथा पाँचवा स्थान क्रमशः कानपुर नगर, इटावा, फरुर्खाबाद तथा औरैया जनपद का है। यह उल्लेखनीय है कि कानपुर नगर का क्षेत्रफल की दृष्टि से भले ही स्थान दूसरा हो किन्तु जहाँ तक जनसंख्या का प्रश्न है वह न केवल प्रथम स्थान पर है बल्कि कानपुर मण्डल की कुल आबादी का लगभग ३६ प्रतिशत भाग कानपुर (नगर) में निवास करता है। जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से कानपुर (नगर) का क्षेत्रफल मण्डल के क्षेत्रफल का लगभग २० प्रतिशत ही है।

शेष जनपदों तथा कानपुर नगर के क्षेत्रफल की तुलना करने से स्पष्ट होता है (तालिका २.२७) कि कानपुर नगर का क्षेत्रफल शेष जनपदों के क्षेत्रफल का २५ प्रतिशत है जबकि जनसंख्या की दृष्टि से मण्डल के शेष जनपदों की जनसंख्या का लगभग ६० प्रतिशत भाग मात्र कानपुर-नगर में आवासित है। सारांशतः कहा जा सकता है कि मण्डल में आबादी का समान वितरण नहीं है। जनसंख्या वितरण की दृष्टि से

कानुर-देहात, फरूर्खाबाद, कन्नौज, इटावा तथा औरैया जनपद क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवे तथ छठवें स्थान पर हैं।

जनसंख्या : पुरुष तथा महिला प्रतिशत-

विभिन्न जनपदों में पुरुष तथा महिला जनसंख्या की सापेक्षिक स्थिति के आकलन हेतु, तालिका २.२८ में विभिन्न जनपदों की पुरुष तथा महिला जनसंख्या को सम्बधित जनपद की कुल जनसंख्या में से निकाले गये प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका २.२८

कानपुर मण्डल की जनसंख्या : प्रतिशत वितरण (जनगणना वर्ष-२००१)

जनपद / मण्डल	जनसंख्या		
	कुल जनसंख्या (लाख में)	पुरुष प्रतिशत	महिला प्रतिशत
औरैया	११.७६	५३.८५	४६.१५
इटावा	१३.४०	५३.८	४६.११
फरुर्खाबाद	१५.७२	५३.६४	४६.३६
कन्नौज	१३.८५	५३.५०	४६.४८
कानपुर (देहात)	१५.८४	५३.८५	४६.०८
कानपुर (नगर)	४१.३७	५३.४६	४६.४७
कानपुर मण्डल	११२.०३	५३.६८	४६.३१
उत्तर प्रदेश	१६६०.५२	५२.६७	४७.३२

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि मण्डल के प्रायः सभी जनपदों में पुरुषों की जनसंख्या लगभग ५४ प्रतिशत है तथा महिलाओं की जनसंख्या लगभग ४७ प्रतिशत है अर्थात महिला तथा पुरुष जनसंख्या में लगभग ८ प्रतिशत का अंतर पुरुषों के पक्ष में है।

कानपुर मण्डल की जनसंख्या : ग्रामीण एवं नगरीय-

तालिका २.२६ में मण्डल की जनसंख्या को ग्रामीण तथा नगरीय तथा प्रत्येक परिवेश में पुरुषों तथा महिलाओं की जनसंख्या को प्रथक-प्रथक दर्शाया गया है।

तालिका २.२९

कानपुर मण्डल की जनसंख्या : ग्रमीण एवं नगरीय

जनगणना वर्ष २००१ (लाख में)

जनपद/ मण्डल	ग्रामीण			नगरीय		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरया	१०.१०	५.४६	४.६४	१.६६	०.८६	०.७६
इटावा	१०.३१	५.५७	४.७३	३.०६	१.६४	१.४४
फरुर्खाबाद	१२.३६	६.६६	५.७	३.४०	१.८२	१.५८
कन्नौज	११.५३	६.१६	५.३४	२.३१	१.२२	१.०६
कानपुर देहात	१४.७६	७.६६	६.८०	१.०७	०.५७	०.५०
कानपुर नगर	१३.६५	७.३०	६.३४	२७.७२	१४.८३	१२.६०
कानपुर मण्डल	७२.७३	३६.१५	३३.५७	३६.३०	२०.६६	१८.३१
उत्तर प्रदेश	१३१५.४	६६०. ६७	६२४. ४३	३४५. १२	१८३. ६६	१६१.४३

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ -जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जहाँ तक मण्डल के विभिन्न जनपदों की ग्रामीण जनसंख्या का प्रश्न है कानपुर (देहात) में लगभग १४.७६ लाख लोग आवासित हैं तथा ग्रामीण जनसंख्या की दृष्टि से यह जनपद मण्डल के समस्त जनपदों में अग्रणी है। द्वितीय स्थान पर कानपुर (नगर) है जहाँ की कुल जनसंख्या लगभग १३.६५ लाख है। तृतीय, चतुर्थ, पंचम व षष्ठ स्थान क्रमशः फरुर्खाबाद, कन्नौज, इटावा तथा औरया

जनपद है जिनकी ग्रामीण जनसंख्या लगभग क्रमशः १२.३६ लाख, ११.५३ लाख, १०.३१ लाख तथा १०.१० लाख है। मण्डल के ग्रामीण तथा नगरीय अर्थात दोनों ही परिवेशों में पुरुषों की अपेक्षा महिला जनसंख्या कम है। कानपुर जनपद जिसका ग्रामीण जनसंख्या के संदर्भ में मण्डल के समस्त जनपदों से की गयी तुलनात्मक दृष्टि से दूसरा स्थान था, नगरीय जनसंख्या के संदर्भ में प्रथम स्थान है। कानपुर (देहात) जिसका ग्रामीण जनसंख्या के संदर्भ में प्रथम स्थान था; नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से अंतिम अर्थात छठवें स्थान पर है। नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से फरुर्खाबाद, इटावा, कन्नौज तथा औरैया जनपद अपनी जनसंख्या क्रमशः ३.४० लाख, ३.०६ लाख, २.३१ लाख तथा १.६६ लाख के आधार पर क्रमशः दूसरे, तीसरे, चौथे तथा पाँचवें स्थान पर हैं।

तालिका २.२६ के अवलोकन से यह भी स्पष्ट है कि जनपद कानपुर (नगर) की जनसंख्या जो लगभग २७.७२ लाख है। अन्य सभी जनपदो की सम्मिलित नगरीय जनसंख्या (लगभग ११.४७ लाख) की २.४१ गुनी है । कानपुर मण्डल की कुल नगरीय जनसंख्या लगभग ३६.३० लाख है । इस प्रकार ज़नपद कानपुर (नगर) में मण्डल की कुल नगरीय जनसंख्या का लगभग ७०.५३ प्रतिशत निवास करता है ।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या प्रतिशत -

मण्ड़ल की ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या की पारस्परिक तुलना की दृष्टि से जनसंख्या को कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में तालिका २.३० में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका २.३०

कानपुर मण्ड़ल की जनसंख्याः ग्रामीण एवं नगरीय प्रतिशत

जनगणना वर्ष (२००१)

जनपद/ मण्डल	ग्रामीण प्रतिशत			नगरीय प्रतिशत		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरैया	८५.६६	४६.३१	३६.३५	१४.३४	७.५४	६.७०
इटावा	७६.८६	४१.५६	३५.२६	२३.१४	१२.३४	१०.८०
फरुर्खाबाद	७८.६०	४२.३०	३६.२५	२१.४०	११.३५	१०.०५
कन्नौज	८३.३४	४४.६२	३८.५५	१६.६६	८.८०	७.८६
कानपुर (देहात)	६३.२८	५०.२५	४२.६२	६.७२	३.५७	३.१५
कानपुर (नगर)	३३.००	१७.६४	१५.३२	६७.००	३५.८४	३१.१३
कानपुर मण्डल	६४.६२	३४.६४	२६.६६	३५.०७	१८.७३	१६.३४
उत्तर प्रदेश	७६.२२	४१.६१	३७.६१	२०.७८	११.०६	६.७२

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३- जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

तालिका से स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल की लगभग ६५ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है जबकि नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगभग ३५ प्रतिशत है ग्रामीण अंचलों में सबसे अधिक निवास करने वाली जनसंख्या कानपुर देहात की है । कानपुर देहात की लगभग ६३ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है, मात्र लगभग ६-७ प्रतिशत नगरीय है । वस्तुतः

कानपुर जनपद को दो भागों में विभाजित करने के फलस्वरूप दो जनपद बना दिये गये हैं- कानपुर-देहात तथा कानपुर-नगर। फलतः कानपुर (देहात) जनपद वस्तुतः ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है। यही कारण है कि कानपुर (नगर) जनपद जो प्रमुखतः नगरीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, की ग्रामीण जनसंख्या भाग ३३ प्रतिशत है। ग्रामीण जनसंख्या की दृष्टि से नवगठित औरैया तथा कन्नौज जनपदों की भी क्रमशः लगभग ८६ प्रतिशत तथा ८४ प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण अंचलों में निवास करती है। कानपुर देहात जनपद में नगरीय जनसंख्या मात्र लगभग ७ प्रतिशत है। नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से कानपुर देहात के पश्चात क्रमशः औरैया तथा कन्नौज जनपद का स्थान है। जिसकी क्रमशः लगभग १४ प्रतिशत तथा १६ प्रतिशत जनसंख्या नगरीय है।

कानपुर मण्डल की ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या की तुलना उत्तर प्रदेश से करने पर ज्ञात होता है कि उत्तर प्रदेश में जहां लगभग ८० प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। कानपुर मण्डल में यह प्रतिशत मात्र लगभग ६५ है।

साक्षरता दर (जनगणना वर्ष २००१)-

वर्ष २००१ में सम्पन्न देश की जनगणना के आधार पर कानपुर मण्डल कर साक्षरता दर ७०.७२ प्रतिशत है जिसमें शिक्षित पुरुषों की संख्या ७८.७६ प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर ६१.३५ है। मण्डल की साक्षरत दर की प्रदेश साक्षरता दर से तुलना करनें पर ज्ञात होता है कि प्रदेश के साक्षरता प्रतिशत से मण्डल का साक्षरता प्रतिशत लगभग १३.३६ अधिक है।

तालिका २.३१
कानपुर मण्डल में साक्षरता दर
जनगणना वर्ष (२००१)

जनपद/ मण्डल	साक्षरता दर		
	कुल	पुरुष	महिला
औरया	७१.५	८१.१८	६०.०८
इटावा	७०.७५	८१.१५	५८.४६
फरुर्खाबाद	६७.२७	७२.४	५०.३५
कन्नौज	६२.५७	७३.३८	४६.६६
कानपुर (देहात)	६६.५६	७६.८४	५४.४६
कानपुर (नगर)	७७.६३	८२.०८	७२.५
कानपुर मण्डल	७०.७२	७८.७६	६१.३५
उत्तर प्रदेश	५७.३६	७०.२३	४२.६७

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

मण्डल की पुरुष तथा महिला साक्षरता प्रतिशत भी प्रदेश की पुरुष तथा महिला साक्षरता से क्रमशः ८.५३ तथा १८.३८ अधिक है। तालिका २.३१ में दर्शित साक्षरता आकड़ों से यह भी स्पष्ट है कि मण्डल के विभिन्न जनपदों में कानपुर नगर की साक्षरता दर ७७.६३ के फलस्वरूप सर्वोच्च है। जिसमें पुरुष साक्षरता का प्रतिशत ८२.०८ तथा महिला साक्षरता प्रतिशत ७२.५ है। अर्थात जनपद के प्रति १०० व्याक्तियों में मात्र १८ व्यक्ति तथा लगभग २८ महिलायें अशिक्षित हैं। प्रतिशत साक्षरता की दृष्टि से दूसरा, तीसरा और चौथा स्थान क्रमशः जनपद औरैया, इटावा तथा कानपुर देहात का है जिनका साक्षरता प्रतिशत क्रमशः ७१.५, ७०.७५ प्रतिशत और ६६.५६ प्रतिशत है। उक्त जनपदों की पुरुष तथा महिला साक्षरता भी क्रमशः द्वितीय, तृतीय तथा चौथे स्थान पर है।

जनपद कन्नौज तथा फरूर्खाबाद दोनों की ही साक्षरता दर लगभग समान है।

पुरुषों में सबसे अधिक साक्षरता कानपुर नगर (८२.०८ प्रतिशत) तथा सबसे कम साक्षरता फरुर्खाबाद जनपद (७२.४प्रतिशत) की है। महिला साक्षरता सबसे अधिक कानपुर नगर जनपद की ७२.५ प्रतिशत है।जबकि सबसे कम साक्षरता प्रतिशत कन्नौज का है। जहाँ पर लगभग ५० प्रतिशत महिला ही साक्षर है। सबसे अधिक तथा सबसे कम महिला साक्षरता प्रतिशत के मध्य तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि कानपुर नगर जनपद में कन्नौज जनपद की तुलना में लगभग २३ प्रतिशत अधिक साक्षरता है।तथापि प्रदेश की महिला साक्षरता दर मण्डल की महिला साक्षरता प्रतिशत से तुलना करने पर यह स्थिति मण्डल की महिलाओं के पक्ष में ठीक तो है किन्तु पर्याप्त नहीं।

ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता प्रतिशत

मण्डल में पुरुष तथा महिला साक्षरता प्रतिशत की विवेचना के पश्चात यह उचित होगा कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में भी पुरुष तथा महिला साक्षरता प्रतिशत का उल्लेख किया जाये। तालिका २.३२ में मण्डल तथा प्रदेश की ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रों की पुरुष तथा महिला प्रतिशत साक्षरता को दर्शाया गया है। तालिका २.३२के अवलोकन से स्पष्ट है कि मण्डल की ग्रामीण साक्षरता का प्रतिशत ६५.६६ है जबकि प्रदेश का ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत लगभग ५३.६८ है इस प्रकार प्रति सौ व्यक्तियों में साक्षर व्यक्तियों की संख्या मण्डल में प्रदेश की तुलना में १२ व्यक्ति अधिक है जहाँ तक पुरुष और महिला साक्षरता में प्रथक- प्रथक तुलना का प्रश्न है मंण्डल में पुरुष साक्षरता प्रतिशत ७६.६८ है जो प्रदेश के ग्रामीण पुरुष साक्षरता प्रतिशत ६८ से लगभग ८ प्रतिशत अधिक है। यद्यपि महिला साक्षरता के संदर्भ में यह अंतर अधिक है।

तालिका २.३२

क़ानपुर मण्डल में साक्षरता दर : ग्रामीण एवं नगरीय

जनगणना वर्ष २००१

जनपद/ मण्डल	ग्रामीण			नगरीय		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरैया	६६.५४	७६.८७	५७.२५	८२.८६	८८.६५	७५.६८
इटावा	६८.६१	८०.३१	५४.६५	७७.६१	८३.६१	७०.४७
फरुर्खाबाद	५६.५६	७०.८३	४६.२२	७१.६४	७७.६५	६४.४०
कन्नौज	६१.६७	७३.१८	४८.१७	६६.६१	७४.३७	५८.६१
कानपुर (देहात)	६५.६२	७६.४४	५३.४६	७५.६८	८२.३०	६८.१४
कानपुर (नगर)	६६.२४	७६.६६	५६.७३	८१.५२	८३.०५	७६.७६
कानपुर मण्डल	६५.६६	७६.६८	५२.७२	७६.४६	८२.४३	७६.०८
उत्तर प्रदेश	५३.६८	६८.०१	३७.७४	७०.०१	७८.१३	६२.०५

श्रोतः उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स,२००३- जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

प्रदेश में ग्रामीण महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत जहाँ ३७.७४ है वही मण्डल में यह प्रशित ५२.७२ है ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत को वरीयता क्रम से देखा जाये तो सबसे अधिक साक्षरता प्रतिशत ६६.५४ औरैया जनपद का है जबकि सबसे निम्न साक्षरता प्रतिशत फरुर्खाबाद जनपद का है। जहां पर ग्रामीण जनसंख्या का लगभग ६० प्रतिशत ही साक्षर है। ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत की दृष्टि से द्वितीय तथा तृतीय स्थान क्रमशः कानपुर नगर जनपद तथा इटावा जनपद का है। जनपद में कुल ग्रामीण साक्षरता की दृष्टि से भले ही इटावा जनपद का स्थान तीसरा हो किन्तु ग्रामीण पुरुष साक्षरता प्रतिशत की दुष्टि से ८०.३१ प्रतिशत साक्षर

पुरुषो की संख्या के अधार पर प्रथम है। दूसरा तथा तीसरा स्थान क्रमबशः कानपुर (नगर) जनपद तथा औरया जनपद का है जहाँ की ग्रामीण साक्षरता का प्रतिशत क्रमशः ७६.६६ तथा ७६.८७ है। सबसे कम साक्षरता प्रतिशत फरुर्खाबाद जनपद का है। जहां ग्रामीण अंचलों में मात्र ७१ प्रतिशत व्यक्ति साक्षर हैं। मण्डल के ग्रामीण क्षेत्रों में पुरुष साक्षरता ७०.८३ प्रतिशत से ८०.३१ प्रतिशत के मध्य है।

महिला साक्षरता प्रतिशत की दृष्टि से भी औरैया जनपद अपनी साक्षर महिला प्रतिशत ५७.२५ के आधार पर प्रथम स्थान पर है। सबसे कम साक्षर प्रतिशत फरूर्खाबाद जनपद का है जहां प्रति सौ महिलाओं में मात्र लगभग ४६ महिलाएँ ही साक्षर है अर्थात महिला जनसंख्या का लगभग ५४ प्रतिशत निरक्षर है।

तालिका (२.३२) में उल्लिखित नगरीय साक्षर जनसंख्या के विश्लेषण से स्पष्ट है कि ग्रामीण परिवेश की भांति ही नगरीय परिवेश के संदर्भ में भी औरैया जनपद में साक्षरता प्रतिशत सर्वधिक ८२.८६ प्रतिशत है। जबकि सबसे कम प्रतिशत साक्षरता वाला जनपद फरुर्खाबाद ही है। मण्डल के विभिन्न जनपदों के नगरीय साक्षरता प्रतिशत ६६.६१ प्रतिशत तथा ८२.८६ प्रतिशत के मध्य है अर्थात नगरीय साक्षरता प्रतिशत की सीमायें ६६.६१ प्रतिशत से ८२.८६ प्रतिशत के मध्य है नगरीय क्षेत्र की पुरुष साक्षरता प्रतिशत ७४.३७ तथा ८८.६५ के मध्य है। नगरीय क्षेत्र में सबसे अधिक साक्षर पुरुषों का प्रतिशत औरैया जनपद का है। जहां पर लगभग ८६ प्रतिशत पुरुष साक्षर है। महिला साक्षरता की दृष्टि से भी लगभग ७६ प्रतिशत महिलायें साक्षर हैं। पुरुष साक्षर की दृष्टि से फरुर्खाबाद जनपद सबसे पीछे है। यही महिला साक्षर के सन्दर्भ में भी सत्य है। उत्तर प्रदेश में नगरीय साक्षरता लगभग ७०.६१ है अर्थात नगर क्षेत्र की कुल जनसंख्या में लगभग ७१ प्रतिशत साक्षर है। जबकि पुरुष साक्षरता तथा महिला साक्षरता क्रमशः ७८.१३ प्रतिशत एवं ६० प्रतिशत है।

कानपुर मण्डल में जनसंख्या का विकास क्रम

पूर्व तालिकाओं में जनगणना वर्ष २००१ से सम्बधित कानपुर मण्डल की जनसंख्या के विविध पक्षों के सन्दर्भ में यथेष्ट विवरण एवं व्याख्या की गयी किन्तु किसी जनगणना वर्ष विशेष के आकड़े जनसंख्या की प्रवत्ति के परिप्रेक्ष्य में तब तक उपयोगी नहीं माने जा सकते जब तक उन आकड़ो की पूर्ववर्त्ती आकड़ों से तुलना प्रस्तुत न की जाये क्योंकि पूर्व आकड़ोसे तुलनात्मक दृष्टि ही जनसंख्या में वृद्धि या ह्रास के संकेत देती है।

अस्तु, आगामी पृष्ठों में विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से जनगणना वर्ष १९९१ के विविध पक्षों को प्रस्तुत करने के पश्चात जनगणना वर्ष १९९१ के आकड़ो की, जनगणना वर्ष २००१ के आकड़ों से तुलना की गयी है जो मण्डल में जनसंख्या की विकासात्मक प्रवृत्ति को प्रकट करने की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध होगी। तालिका २.३३ में जनगणना वर्ष १९९१ की कुल जनसंख्या, पुरूष तथा महिला जनसंख्या तथा पुरूष एवं महिला जनसंख्या को कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

तालिका २.३३ - कानपुर मण्डल की जनसंख्या (जनगणना वर्ष १९९१)

जनपद- मण्डल	जनसंख्या (लाख में)			प्रतिशत में	
	कुल	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
इटावा	२१.२५	११.६०	९.६४	५४.५८	४५.३६
फरूर्खाबाद	२४.४०	१३.२९	११.११	५४.४६	४५.५३
कानपुर (देहात)	२१.३८	११.६०	९.७८	५४.२५	४५.७४
कानपुर (नगर)	२४.१८	१३.२६	१०.९२	५४.८३	४५.१६
कानपुर मण्डल	९१.२२	४९.७६	४१.४६	५४.५४	४५.४५
उत्तर प्रदेश	१३२०.६२	७०३.९६	६१६.६५	५३.२५	४६.६६

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

तालिका (२.३३) के अवलोकन से स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल के जनपद- इटावा तथा कानपुर देहात की जनसंख्या लगभग बराबर है जबकि यही स्थिति फरूर्खाबाद जनपद तथा कानपुर (नगर) जनपद की है जिनकी जनसंख्या क्रमशः २४.४ तथा २४.१८ लाख है। मण्डल के जनपदों इटावा तथा कानपुर में पुरूष जनसंख्या समान है। यही स्थिति फरूर्खाबाद तथा कानपुर नगर जनपद के सम्बन्ध में भी है क्योंकि उनमें से प्रत्येक की जनसंख्या लगभग १३.२६ लाख है। महिला जनसंख्या की दृष्टि से फरूर्खाबाद जनपद का (थोड़े अन्तर से ही सही) प्रथम स्थान है। द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर क्रमशः कानपुर (नगर) तथा कानपुर (देहात) जनपद है जिनकी महिला जनसंख्या क्रमशः लगभग १०.६२ लाख तथा ६.७८ लाख है। पुरूष तथा महिला जनसंख्या को प्रतिशत में बदल कर देखा जाए तो मण्डल के सभी जनपदों में पुरूष तथा महिला का प्रतिशत लगभग समान है पुरूषों का प्रतिशत प्रायः सभी जनपदों में लगभग ५४.५ है तथा महिलाओं का लगभग ४५.५१। इस प्रकार यह कहने का पर्याप्त आधार है कि मण्डल में महिलाओं की संख्या से लगभग १० प्रतिशत कम है । तालिका से यह स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल की जनसंख्या उत्तर प्रदेश की जनसंख्या का लगभग ६.६ प्रतिशत है ।

जनसंख्या का ग्रामीण एवं नगरीय प्रतिशत-

मण्डल की कुल जनसंख्या ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश में निवास करती है । जनसंख्या के ग्रामीण एवं नगरीय वितरण दर्शाती हुई तालिका २.३४ से स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल की कुल जनसंख्या का लगभग ६७. ६८ प्रतिशत ग्राम वासी है जिसमें पुरूषों का प्रतिशत लगभग ३६.६४ है तथा महिलाओं का प्रशिसत ३०.७३ है । नगर में आवासित ३२.३१ प्रतिशत जनसंख्या में पुरूषो की संख्या लगभग १७.५६ प्रतिशत तथा महिलाओं की संख्या १४.७१ प्रतिशत है । जहाँ तक विभिन्न जनपदों में संख्या के ग्रामीण तथा नगरीय वितरण का प्रश्न है, नाम के अनुरूप जनपद कानपुर (देहात) में लगभग ६४.२६ प्रतिशत गाँवो में वास करती है

तालिका २.३४

कानपुर मण्डल जनसंख्या ग्रामीण एवं नगरीय प्रतिशत

(जनगणना वर्ष-१६६१)

जनपद/ मण्डल	ग्रामीण प्रतिशत			नगरीय प्रतिशत		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरैया▲						
इटावा	८४.४८	४६.१८	३८.०८	१५.६७	८.३८	७.२६
फरूर्खावाद	८१.३५	४४.५०	३६.८०	१८.२३	६.६१	८.६४
कन्नौज▲						
कानपुर(देहात)	६४.२६	५१.१६	४३.०७	५.७०	३.०४	२.६१
कानपुर (नगर)	१५.७५	८.५६	७.१५	८४.२४	४६.२३	३७.६६
कानपुर(मंण्डल)	६७.६८	३६.६४	३०.७३	३२.३१	१७.५६	१४.७१
उत्तर प्रदेश	८०.३३	४२.७५	३७.५८	१६.६६	१०.५५	६.११

▲ नव गठित जनपद (आंकड़े अनुप्लब्ध)

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३ -जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

जिसमें पुरूषों का प्रतिशत लगभग ५१.१६ तथा महिलाओं का प्रतिशत ४३.०७ है। दूसरे तथा तीसरे स्थान पर क्रमशः जनपद इटावा तथा फरूर्खाबाद है जिनका ग्रामीण जनता का प्रतिशत क्रमशः ८४.२८ तथा ८१. ३५ है । उक्त जनपदों में पुरूष जनसंख्या क्रमशः ४६.१८ तथा ४४.५० प्रतिशत है जबकि महिला जनसंख्या का प्रतिशत क्रमशः ३८.०८ तथा ३६. ८० है । सबसे कम ग्रामीण आबादी कानपुर (नगर) जनपद की है जिसका अधिकाँश भाग नगरीय है । नगरीय जनसंख्या की दृष्टि से कानपुर (नगर) जनपद की लगभग ८४.२४ जनसंख्या नगरवासी है जिसमें जगभग ४६.२३ प्रतिशत पुरुष तथा ३७.६६ प्रतिशत महिला जनसंख्या है । कानपुर नगर को जनसंख्या मण्डल की कुल नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत के सापेक्ष

आँकलन करने पर ज्ञात होता है कि अकेले कानपुर (नगर) जनपद की नगरीय जनसंख्या मण्डल की कुल नगरीय जनसंख्या का ७० प्रतिशत है । जबकि कानपुर (देहात) जनपद में सबसे कम नगरीय जनसंख्या लगभग ५.७ प्रतिशत है । तालिका से यह भी स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल में कुल जनसंख्या का लगभग ६८ प्रतिशत भाग ग्रामीण है जबकि नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगभग ३२ है। किन्तु इस ३२ प्रतिशत नगरीय जनसंख्या में लगभग ७० प्रतिशत भाग कानपुर नगर का है अर्थात कानपुर मण्डल में यदि कानपुर (नगर) की जनसंख्या पर विचार न किया जाये तो अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है ।

साक्षरता दर (जनगणना वर्ष १९९१)

जनगणना वर्ष १६६१ के अनुसार कानपुर मण्डल की साक्षरता दर ५५.४३ प्रतिशत है । तालिका २.३५ के अवलोकन से ये भी स्पष्ट है कि मण्डल में सबसे अधिक साक्षरता प्रतिशत कानपुर (नगर) का है । जो वस्तुतः कानपुर (नगर) की नगरीय जनसंख्या के अनुरूप ही है । क्योंकि कानपुर (नगर) की अधिकांश जनसंख्या कानपुर नगर अथवा जनपद के नगरीय क्षेत्रों में आवासित है (तलिका २.३२) यह एक कटु सत्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्रों में साक्षरता दर अधिक होती है । मण्डल की साक्षरता दर ५५.४३ प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता ६६.६ प्रतिशत तथा महिला साक्षरता लगभग ४१.७२ प्रतिशत है। कानपुर (नगर) जनपद की साक्षरता कानपुर मण्डल की साक्षरता दर से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि कानपुर मण्डल की तुलना में चाहे कुल साक्षरता दर का प्रश्न हो या फिर पुरूष अथवा महिला साक्षरता का प्रश्न हो कानपुर (नगर) जनपद की साक्षरता सभी स्थितियों में मण्डल के साक्षरता आंकड़ो को पार कर जाते हैं।

तालिका २.३५

कानपुर मंण्डल में साक्षरता दर (जनगणना वर्ष १९९१)

जनपद/ मंण्डल	साक्षरतादर		
	कुल	पुरूष	महिला
औरैया▲			
इटावा	५३.६६	६६.२४	३८.३४
फरूर्खावाद	४७.१३	५६.४८	३१.६७
कन्नौज▲			
कानपुर (देहात)	५०.७१	६२.८८	३५.६२
कानपुर(नगर)	६८.७५	७६.७३	५८.८२
कानपुर मंण्डल	५५.४३	६६.६०	४१.७२
उत्तर प्रदेश	४१.६०	५५.७३	२५.३१

▲ नव गठित जनपद (आंकड़े अनुप्लब्ध)

श्रोत : उत्तरांचल एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स,-२००३ -जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

यह तथ्य पुनः इस बात की पुष्टि करता है कि नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा साक्षरता दर अधिक होती है। यद्यपि सांख्यिकीय आधार तो ऐसे निष्कर्ष तालिका २.३६ की ब्याख्या के पश्चात ही निकाले जा सकते हैं साक्षरता दर की दृष्टि से फरूर्खाबाद जनपद अपनी साक्षरता दर ४७.१३ के आधार पर साक्षरता क्रम में निम्नतम पायदान पर है जबकि दूसरे तथा तीसरे स्थान पर क्रमशः इटावा एवं कानपुर (देहात) जनपदों का है। महिला साक्षरता प्रत्येक जनपद में पुरूष साक्षरता से कम है। यद्यपि महिलाओं में साक्षरता दर का प्रतिशतीय स्वरूप पुरूषों के अनुरूप ही है अर्थात पुरूंषों की भांति ही महिलाओं की साक्षरता दर में भी दूसरा तथा तीसरा स्थान क्रमशः इटावा तथा कानपुर (देहात) जनपद का है जबकि पुरूष साक्षरता की भांति ही ३१.६७ प्रतिशत महिला साक्षरता के साथ फरूर्खाबाद जनपद में सबसे कम महिला साक्षरता वाला जनपद है ·

आँकड़ों के विश्लेषण (तालिका २.३५) से यह भी स्पष्ट है कि कानपुर मण्डल की साक्षरता दर ५५.४३, प्रदेश की साक्षरता दर ४१.६० से अधिक है अर्थात प्रदेश में ऐसे स्थान भी हैं जो प्रदेश की साक्षरता दर को कम कर रहे हैं ।

ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता (जनगणना वर्ष १९९१)-

तालिका २.३६ में दर्शायी गयी साक्षरता दर भी वस्तुतः उस वस्तु स्थिति को स्पष्ट नहीं कर पा रही है जो कि परिवेशीय कारकों की पृष्ठभूमि में निहित हैं अर्थात मण्डल में तथा मण्डल के विभिन्न जनपदों में पुरूषों तथा महिलाओं की साक्षरता दर सम होने के उपरान्त भी जब तक साक्षरता दर का परिवेशीय आधार पर आंकलन न किया जाये साक्षरता स्थिति की यर्थाथता स्पष्ट नहीं हो पा रही है अतएव तालिका २.३६ में जनसंख्या को परिवेशीय आधार ग्रामीण तथा नगरीय में वितरित करके पुरूषों तथा महिलाओं की साक्षरता को स्पष्ट किया गया है । ग्रामीण साक्षरता दर की दृष्टि से इटावा जनपद का प्रथम स्थान है जबकि फरूर्खाबाद जनपद सबसे कम साक्षरता दर होने के फलस्वरूप साक्षरता क्रम में सबसे निम्न स्थान पर है । कानपुर देहात की साक्षरता दर ५०.०६ पायी गयी है जिसमें पुरूष साक्षरता दर ६२.५४ तथा महिला साक्षरता दर ३४.८ है । ग्रामीण परिवेश में सबसे कम साक्षरता दर फरूर्खाबाद जनपद की महिलाओं की है क्योंकि इनकी साक्षरता २८.२० से सभी वर्गो तथा दोनों वर्गो-पुरूष तथा महिला की साक्षरता दर अधिक है ।

जहाँ तक नगरीय साक्षरता दर का प्रश्न है कानपुर नगर का अपनी साक्षरता दर ७२.११ के फलस्वरूप प्रथम स्थान है ।

तालिका २.३६

कानपुर मण्डल में साक्षरता दर : ग्रामीण एवं नगरीय

(जनगणना वर्ष–१९९१)

जनपद/ मण्डल	ग्रामीण प्रतिशत			नगरीय प्रतिशत		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरैया▲	–	–	–	–	–	–
इटावा	५१.२८	६४.७३	३४.६५	६६.३५	७४.३६	५७.०२
फरूर्खावाद	४४.७६	५८.१४	२८.२०	५७.२७	६५.५०	४७.७०
कन्नौज▲	–	–	–	–	–	–
कानपुर (देहात)	५०.०६	६२.५४	३४.६६	६०.७६	६८.५८	५१.५०
कानपुर (नगर)	४६.५६	६१.५५	३४.८३	७२.११	७६.३८	६३.०६
कानपुर मण्डल	४८.७१	६१.७०	३२.७१	६८.८४	७६.४३	५६.६
उत्तर प्रदेश	३६.६६	५२.०५	१६.०२	६१.००	६६.६८	५०.३८

▲ नव गठित जनपद (आंकड़े अनुप्लब्ध)

स्रोत : उत्तरांचल एण्ड़ उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स२००३– जागरण रिसर्च सेण्टर कानपुर

पुरूष तथा महिला साक्षरता दर के भी क्रमशः ७६.३८ तथा ६३.०६ होने के परिणामस्वरूप पुरूष तथा महिला साक्षरता भी न केवल मण्डल के अन्य जनपदों की साक्षरता दर से आगे है वरन प्रदेश की साक्षरता दर को भी पीछे छोड़ दिया है । ग्रामीण साक्षरता की भांति ही नगरीय साक्षरता के संदर्भ में भी इटावा तथा कानपुर (देहात) जनपद का स्थान क्रमशः द्वितीय तथा तृतीय है । उत्तर प्रदेश की ग्रामीण साक्षरता दर ३६.६६ जबकि कानपुर मण्डल की ग्रामीण साक्षरता दर ४८.७१ है जो यह

स्पष्ट करती है कि मण्डल की साक्षरता दर प्रदेश की साक्षरता दर की १.३२ गुना है अर्थात प्रदेश में ऐसे ग्रामीण स्थान भी हैं जिनकी साक्षरता दर कानपुर मण्डल के ग्रामीण अंचलों की साक्षरता दर से कम होने के फलस्वरूप ही प्रदेश की ग्रामीण साक्षरता दर कम आ रही है । यद्यपि मण्डल की नगरीय साक्षरता दर भी प्रदेश की नगरीय साक्षरता दर से अधिक है किन्तु यह अधिकता ग्रामीण साक्षरता दर के तुल्य नहीं है । मण्डल की नगरीय साक्षरता प्रदेश की नगरीय साक्षरता का लगभग १.११२ गुना है । साक्षरता दर विषयक तालिका २.३६ के आकड़े स्पष्ट करते है कि साक्षरता दर विशेषतः महिला साक्षरता दर में वृद्धि हेतु अत्यधिक सघन प्रयासों तथा इच्छा शक्ति की आवश्यकता है क्योंकि अनेकों सामाजिक अंध विश्वासों तथा मान्यताओं के मूल में महिला निरक्षरता तथा सामाजिक आवश्यकताओं के प्रति महिला वर्ग की उपेक्षा ही निहित होती है ।

कानपुर मण्डल की जनसंख्या : तुलनात्मक परिदृश्य (१९९१-२००१)

जनगणना वर्ष १६६१ तथा जनगणना वर्ष २००१ के जनसंख्या आकड़ों की पारस्परिक तुलना उक्त काल खण्ड में जनसंख्या में हुई वृद्धि की दृष्टि से उपयोगी होगी । वास्तव में यह पारस्परिक तुलना जनसंख्या विकास की दर को कम करने के प्रयासों की सफलता तथा असफलता पर भी प्रकाश डाल सकेगें । अस्तु जगणना वर्ष २००१ तथा जनगणना वर्ष १६६१ की जनांकिकीय आकड़ों की तुलना उपयोगी तथा आवश्यक है। तालिका २.३७ में कानपुर मण्ड़ल की जनगणना वर्ष १६६१ तथा जनगणना वर्ष २००१ की जनसंख्या को दर्शाया गया है ।

तालिका - २.३७

कानपुर मण्डल की जनसंख्या (लाख में)

वर्ष १९९१–२००१

जनपद मण्डल	जनगणना वर्ष					
	१९९१			२००१		
	कुल	पुरूष	महिला	कुल	पुरूष	महिला
औरैया▲	–	–	–	११.७९	६.३५	५.४४
इटावा	२१.२५	११.६०.	९.६४	१३.४०	७.२२	६.१८
फर्रूखाबाद	२४.४०	१३.२९	११.११	१५.७२	८.४८	७.२६
कन्नौज▲	–	–	–	१३.८५	७.४१	६.४४
कानपुर (देहात)	२१.३८	११.६०	९.७८	१५.८४	८.५३	७.३
कानपुर (नगर)	२४.१८	१३.२६	१०.९३	४१.३७	२२.१४	१९.२३
कानपुर मंण्डल	९१.२२	४९.७६	४१.४६	११२.०३	६०.१४	५१.९०
उत्तर प्रदेश	१३२०.६२	७०३.६६	६१६.६५	१६६०.५३	८७४.६६	७८५.८६

▲ नव गठित जनपद (आंकड़े अनुप्लब्ध)

श्रोत– उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स– २००३ (जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर) पृ० सं०– १२६

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष १९९१ में कानपुर मण्डल की जनसंख्या लगभग ९१.२२ लाख थी जो वर्ष २००१ की जनगणना में ११२.०३ लाख हो गयी है। इस प्रकार एक दशक में मण्डल की जनसंख्या में लगभग २०.८१ लाख की वृद्धि हुई है अर्थात दस वर्ष के अंतराल में जनसंख्या में लगभग २२.८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है । अवलोकनीय है कि इसी अवधि में उत्तर प्रदेश की जनसंख्या जो वर्ष

१९९१ में १३२०.९२ लाख थी जो बढ़कर वर्ष २००१ में १६६०.५३ लाख हो जाती है अर्थात १० वर्षो के अंतराल में जनसंख्या में वृद्धि लगभग २५.७४ प्रतिशत है । जो मण्डल में हुई जनसंख्या वृद्धि से २.९४ प्रतिशत अधिक है । जहाँ तक जनगणना वर्ष १९९१ तथा वर्ष २००१ के मध्य मण्डल में पुरूषों और महिलाओं में संख्या वृद्धि का प्रश्न है, तालिका २.३७ स्पष्ट करती है कि जनगणना वर्ष २००१ में पुरूषो की संख्या लगभग ६०.१४ लाख है अर्थात दस वर्ष के अंतराल में पुरूषो की संख्या में लगभग १०.९२ लाख की वृद्धि हुई है अर्थात मण्डल की पुरूष संख्या में २१.९४ प्रतिशत की दशकानुसार वृद्धि हुई है । जबकि इसी अवधि में उत्तर प्रदेश में पुरूषो की जनसंख्या में वृद्धि १७.०७ लाख आँके जाने के फलस्वरूप दशकानुसार वृद्धि दर २४.२४ प्रतिशत है जो मण्डल में पुरूषों की संख्या में हुई प्रतिशत वृद्धि से २.३ प्रतिशत अधिक है ।

जहाँ तक जनगणना वर्षो १९९१ तथा २००१ के मध्य महिला जनसंख्या में प्रतिशत वृद्धि का प्रश्न है उसमें जनगणना वर्ष २००१ में महिलाओं की जनसंख्या में १०.४४ की वृद्धि होने के फलस्वरूप दशकावधि में प्रतिशत वृद्धि २५.१८ तक पहुँच गयी है । मण्डल में महिलाओं की संख्या में प्रतिशत वृद्धि को प्रदेश में उक्त अवधि में महिला वृद्धि के परिप्रेक्ष्य में देखने से स्पष्ट होता है कि प्रदेश में वर्ष १९९९-२००१ के मध्य की संख्या में लगभग १६९.२१ लाख की वृद्धि के फलस्वरूप वर्ष २००१ में वृद्धि दर २७.४४ प्रतिशत के करीब है। जो मण्डल में उक्त अवधि में आँकी गयी प्रतिशत वृद्धि २५.१८ से लगभग २.२६ प्रतिशत अधिक है । दशकावधि में पुरूषों तथा महिलाओं की संख्या में प्रतिशत की दृष्टि से उत्तरप्रदेश में मण्डल की तुलना में पुरूषों तथा महिलाओं की संख्या में प्रतिशत वृद्धि क्रमशः लगभग २.३ तथा २.२६ है अर्थात मण्डल में प्रदेश के सापेक्ष पुरूषों की अपेक्षा महिला संख्या में वृद्धि कुछ कम हुई है ।

जहाँ तक विभिन्न जनपदों में वर्ष १९९१ से २००१ के मध्य हुई जनसंख्या वृद्धि का प्रश्न है, कानपुर जनपद में सर्वाधिक लगभग ११.६५ लाख की वृद्धि पायी गयी है, दूसरा तथा तीसरा स्थान क्रमशः जनपदों फरूर्खाबाद तथा इटावा का है जिन्होंने अपनी जनसंख्या में लगभग क्रमशः ५.१७ लाख तथा ३.६४ लाख की वृद्धि की है । तुलना हेतु नवगठित जनपदों औरैया, कन्नौज तथा कानपुर देहात की जनसंख्या को उनके मूल जनपदों क्रमशः इटावा, फरूर्खाबाद तथा कानपुर से जोड़कर तुलना की गयी है ।जनपदों की पुरूष तथा महिला जनसंख्या में वृद्धि की दृष्टि से देखा जाये तो तालिका २.३१ स्पष्ट करती है कि जनपद –इटावा तथा फरूर्खाबाद में पुरूष तथा महिलाओं की जनसंख्या में लगभग समान रूप से वृद्धि हुई है जबकि कानपुर जनपद में पुरूष तथा महिला जनसंख्या में वृद्धि का अंतर अपेक्षाकृत अधिक है । तालिका से यह भी स्पष्ट है कि काल खण्ड १९९१–२००१ के मध्य जनपद इटावा तथा फरूर्खाबाद में पुरूषों की अपेक्षा महिला जनसंख्या में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि हुई है जबकि कानपुर जनपद के संदर्भ में स्थिति इसके ठीक विपरीत है । कानपुर जनपद में वर्ष १९९१–२००१ के मध्य पुरूष जनसंख्या में हुई वृद्धि ५.८१ लाख की तुलना में महिलाओं की संख्या में मात्र ४.८२ लाख की वृद्धि उक्त निष्कर्ष की पुष्टि करती है ।

मण्डल की जनसंख्या दशकानुसार वृद्धि-

तालिका २.३८ में विभिन्न जनगणना वर्षो में मण्डल की जनसंख्या में पायी गयी दशकानुसार वृद्धि अंकित की गयी है। तालिका में दर्शाये गये आंकड़ों के प्रति गहन एवं सूक्ष्म दृष्टि स्पष्ट करती है कि मण्डल की जनसंख्या की दशकानुसार वृद्धि में जनसंख्या वर्ष १९६१ से लेकर जनगणना वर्ष १९८१ तक प्रत्येक दसवर्षीय अन्तराल में जनसंख्या वृद्धि की दर में बढ़ोत्तरी हुई है । कानपुर मण्डल जनगणना वर्ष में दशवर्षीय वृद्धि दर जहाँ २१.३७ थी वहीं उत्तरोत्तर विकास के साथ जनगणना वर्ष १९८१ में यह २३.८८ हो गयी है । जबकि आगामी जनगणना वर्षो १९९१ तथा

२००१ में विकास दर लगभग स्थिर रही है । फरूर्खाबाद जनपद की जनसंख्या में जनगणना वर्ष १६६१ से १६८१ तक दसवर्षीय वृद्धि दर में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है जो १६६१ की वृद्धि दर १८.५३ से बढकर १६८१ में २५.१६ होने से स्वतः स्पष्ट है ।

तालिका २.३८

कानपुर मण्डल की जनसंख्या : दशकानुसार वृद्धि दर

जनपद/	जनगणना वर्ष				
मण्डल	१६६१	१६७१	१६८१	१६६१	२००१
औरैया▲	–	–	–	२७.२३	१४.७०
इटावा	२१.७८	२२.४५	२०.३७	१७.२४	२१.५६
फरूर्खाबाद	१८.५३	२०.२१	२५.१६	२४.४६	२२.८०
कन्नौज▲	–	–	–	२४.६४	१६.५८
कानपुर(दे०)				१६.८६	२१.५५
कानपुर(न०)	२२.७६	२५.८१	२४.८६	२२.५४	२७.१७
कानपुर(मं०)	२१.३७	२३.५०	२३.८८	२२.७०	२२.८२
उत्तर प्रदेश	१६.६६	१६.८६	२६.७६	२५.५५	२५.८०

▲ नव गठित जनपद (आंकड़े अनुप्लब्ध)

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३-जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

आँकड़ो से यह भी स्पष्ट है कि मण्डल के अन्य जनपदों ने थोड़े बहुत विचलन के साथ अपनी जनसंख्या की दस वर्षीय वृद्धि दर स्थिर रखी है किन्तु कानपुर (नगर) की जनगणना वर्ष २००१ में सर्वोच्च विकास दर २७.१७ रही है जो निःसन्देह अनुमान के विपरीत है क्योंकि यह माना जाता है कि शिक्षा तथा उच्च जीवन स्तर जनसंख्या वृद्धि को हतोत्साहित करता है । सम्भव है कानपुर (नगर) क्षेत्र में ग्रामीण अंचलों से अधिकाधिक संख्या में आये श्रमिकों की उपस्थिति के परिणामस्वरूप यह स्थिति हो, क्योंकि कानपुर एक औद्योगिक नगर है परिणामस्वरूप रोजगार

के अवसरों की अपेक्षाकृत अधिक सम्भावनाओं के होने के कारण ग्रामीण जनसंख्या जो श्रम जीवी है अधिकाधिक नगर का ओर पलायन कर रही है।

जनसंख्या घनत्व एवं लिंगानुपात, दशकानुसार वृद्धि दर-

जहाँ तक मण्ड़ल में जनसंख्या घनत्व का प्रश्न है सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व कानपुर (नगर) जनपद का है जहाँ पर प्रति वर्ग किलो मीटर में अनुमानतः १०७४ व्यक्ति निवास करते हैं। जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से कन्नौज तथा फरूर्खाबाद जनपद का है जहाँ वर्ष १९९१ की जनगणना के आधार पर क्रमशः ५८१ तथा ५६३ व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर में निवास करते हैं । सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला जनपद कानपुर (देहात) है जिसका घनत्व मात्र ४१४ है कानपुर (मण्डल) का जनघनत्व की तुलना उत्तरप्रदेश के जनघनत्व से करने पर विदित होता है कि कानपुर (मण्डल) के जनघनत्व ६१७ उत्तर प्रदेश के जन घनत्व ५४८ से अधिक है जिसके लिए प्रमुखतः कानपुर (नगर) जिसका जनसंख्या घनत्व १०७४ है उत्तरदायी हैं।

जहाँ तक जनगणना वर्ष २००१ के अनुसार मण्डल के विभिन्न जनपदों तथा सम्पूर्ण कानपुर मण्डल के जनघनत्व का प्रश्न है तालिका (२.३६) से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष २००१ में भी जनसंख्या घनत्व का वरीयता क्रम जनगणना वर्ष १९९१ के ही अनुरूप है अर्थात जनगणना वर्ष २००१ में भी कानपुर (नगर) जनपद सर्वोच्च जनघनत्व वाला जनपद है जिसका जनसंख्या घनत्व १३६६ व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। जनघनत्व की दृष्टि से दूसरा तथा तीसरा स्थान क्रमशः कन्नौज तथा फरूर्खाबाद जनपद का है जिसका घनत्व क्रमशः ६९५ तथा ६९२ है।

तालिका २.३९

जनसंख्या घनत्व एवं लिंगानुपात दशकानुसार वृद्धि (१९९१-२००१)

जनपद / मंण्डल	घनत्व		वृद्धि
	१९९१	२००१	२००१ -१९९१
औरैया	५०१	५७५	७४
इटावा	४८२	५८६	१०४
फरूर्खावाद	५६३	६९२	१२९
कन्नौज	५८१	६९५	११४
कानपुर(देहात)	४१४	५०४	९०
कानपुर (नगर)	१०७४	१३६६	२९२
कानपुर(मंण्डल)	६१७	७५८	१४१
उत्तर प्रदेश	५४८	६८९	१४१

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३- जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

जनगणना वर्ष २००१ के अनुसार भी कानपुर (देहात) जनपद सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला जनपद है क्योंकि इस जनपद की जनसंख्या का घनत्व मात्र ५०४ है। (तालिका २.३६) मण्डल में यदि सबसे अधिक तथा सबसे कम जनघनत्व वाले जनपदों की पारस्परिक तुलना की जाये तो यह अनुपात २.७१ : १ कानपुर (नगर) तथा कानपुर (देहात) जनपदों के मध्य है । इसी प्रकार यदि कानपुर (नगर) जनपद के जनघनत्व की तुलना कानपुर मण्डल से की जाये तो यह अनुपात १.८:१ है अर्थात कानपुर नगर जनपद में शेष जनपदो की तुलना में प्रति वर्ग किलोमीटर लगभग दो गुने लोग आवास करते है ।

यदि मण्डल के विभिन्न जनपदों में जनसंख्या घनत्व को १० वर्षीय वृद्धि दर की तुलना की जाये तो विदित होता है कि कानपुर (नगर) जनपद में वृद्धि दर सर्वोच्च २९२ पायी गयी है जबकि घनत्व में सबसे कम

वृद्धि दर वाला जनपद औरैया है जिसके घनत्व में दस वर्ष के अंतराल में मात्र ६० इकाई की वृद्धि दर पाई गयी है जनसंख्या में दशकानुसार वृद्धिदर की दृष्टि से कानपुर (नगर) जनपद के बाद फरूर्खाबाद तथा कन्नौज जनपद हैं जिनके जनघनत्व में क्रमशः १२६ तथा ११४ इकाई की वृद्धि हुई है । जनघनत्व में वृद्धिदर की तुलना सबसे अधिक तथा सबसे कम वृद्धि वाले जनपदों के मध्य की जाये तो यह अनुपात ३.६४:१ कानपुर (नगर) जनपद तथा औरैया जनपद की वृद्धिदर के मध्य है।

कानपुर मण्डल के जनघनत्व जनगणना वर्ष २००१ तथा जनगणना वर्ष १६६१ के मध्य की अवधि में १४१ इकाई की वृद्धि हुई है जो इसी अवधि में कानपुर (नगर) की वृद्धि दर की लगभग आधी है ।

मण्डल की दस वर्षीय वृद्धि दर की विभिन्न जनपदों की सम्बधित अवधि में वृद्धि दर की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि औरैया जनपद की सापेक्षिक वृद्धि दर सबसे कम है क्योंकि औरैया जनपद ने वृद्धि दर की वर्तमान तुलनात्मक स्थिति मण्डल की कुल वृद्धि दरी की अपेक्षा अपनी वृद्धि दर मात्र ०.५२ रखने से पायी है अर्थात औरैया जनपद में जनगणना वर्ष १६६१ तथा २००१ के मध्य हुई जनसंख्या वृद्धि मण्डल की जनसंख्या वृद्धि का मात्र लगभग ५२ प्रतिशत है । मण्डल में जनसंख्या वृद्धि दर में कम जनवृद्धि दर के क्रम में द्वितीय स्थान पाये कानपुर (देहात) जनपद में १६६१-२००१ के दशक में मण्डल की वृद्धि दर का लगभग ६३ प्रतिशत वृद्धि हुई है ।

मण्डल की जनसंख्या में लिंगानुपात-

जनसंख्या वितरण की प्रकृति की व्याख्या जनसंख्या में लिंगानुपात के विवेचन की अपरिहार्य अपेक्षा रखती है । अतएव शोधकर्त्री ने तालिका २.४० में कानपुर मण्डल की जनसंख्या में महिलाओं की संख्या प्रति हजार पुरूषों पर दर्शाकर लिंगानुपात स्पष्ट करने का प्रयास किया है । तालिका में दशकावधि में हुई वृद्धि दर को भी दर्शाया गया है

तालिका २.४०

कानपुर मण्डल की जनसंख्या

लिंगानुपात एवं दशका नुसार वृद्धि दर

(१९९१-२००१)

जनपद/मण्डल	लिंगानुपात महिला प्रति एक हजार पुरूष		दशकीय वृद्धि दर
	१९९१	२००१	२००१-१९९१
औरैया	८२८	८५६	२८
इटावा	८३४	८५६	२२
फरूर्खावाद	८३२	८६०	२८
कन्नौज	८३५	८६८	३३
कानपुर(देहात)	८३६	८५६	२०
कानपुर(नगर)	८३२	८६६	३७
कानपुर(मंण्डल)	८३३	८६३	३०
उत्तर प्रदेश	८७६	८९८	२२

श्रोत- उत्तराखण्ड एण्ड उत्तर प्रदेश, एट ए ग्लान्स- २००३- जागरण रिसर्च सेण्टर, कानपुर

तालिका २.४० के अवलोकन से स्पष्ट है कि मण्डल के विभिन्न जनपदों में प्रति एक हजार पुरूषों में महिलाओं की संख्या ८२८ से लेकर ८३६ के मध्य है । मण्डल के औरैया जनपद में सबसे कम महिला जनसंख्या प्रति एक हजार पुरूष पर ८२८ है जबकि सर्वाधिक का अंक ८३६ कानपुर (देहात) जनपद के पक्ष में है । शेष जनपदों कन्नौज तथा इटावा में महिला जनसंख्या प्रति एक हजार पुरूष पर क्रमशः ८३५ तथा ८३४ है । जनपद फरूर्खाबाद तथा कानपुर (नगर) दोनों में ही महिला की संख्या ८३२ प्रतिहजार पुरूष है । जहाँ तक मण्डल की कुल जनसंख्या में महिलाओं की प्रति एक हजार पुरुष पर जनसंखा का प्रश्न है यह ८३३ है। जबकि उत्तर प्रदेश के संदर्भ में यह आंकड़ा ८७६ है अर्थात उत्तर

प्रदेश की जनसंख्या में प्रति हजार पुरूषों पर महिला जनसंख्या मण्डल की तुलना में ४३ महिला प्रतिहजार अधिक है । महिला जनसंख्या की दर की दृष्टि से कानपुर (नगर) जनपद जो सबसे कम महिला जनसंख्या दर वाले जनपद औरैया के बाद था उसमें वर्ष १९९१-२००१ के मध्य प्रतिहजार पुरूषों पर ३७ महिलाओं की वृद्धिके फलस्वरूप वर्ष २००१ में सबसे अधिक ८६६ महिला प्रति एक हजार पुरूष वाला जनपद हो गया है । महिलाओं में दशकीय वृद्धि दर की दृष्टि से द्वितीय स्थान कन्नौज जनपद का है जिसकी महिला जनसंख्या दर में ३३ की वृद्धि हुई है।

महिला जनसंख्या वृद्धि दर की दृष्टि से देखा जाए तो सबसे पिछड़ा जनपद कानपुर (देहात) है जिसने दस वर्ष के अंतराल १९९१-२००१ में अपनी महिला जनसंख्या दर में मात्र २० की ही वृद्धि की है । कम वृद्धि दर वाले जनपदों में द्वितीय स्थान इटावा जनपद का है। जिसकी वृद्धि दर मात्र २२ महिला प्रति एक हजार पुरुष है तीसरा स्थान जनपद औरैया तथा फरूर्खाबाद का संयुक्त रूप से है । जिहोंने अपनी महिला जनसंख्या में २८ की वृद्धि दर दर्शायी है । उपरोक्त तालिका से यह भी स्पष्ट है कि उत्तर प्रदेश में महिला जनसंख्या में दस वर्षीय अवधि में जहाँ मात्र २२ महिला प्रति हजार की वृद्धि हुई है वही कानपुर मण्डल में ३० महिला प्रतिहजार पुरुष की दर से वृद्धि पायी गयी है जो या तो कानपुर मण्डल में महिला- जनसंख्या के प्रति बढ़ते सकारात्मक सोच का परिणाम हो सकता है या फिर जनांकिकीय कारणों से हो सकता है।

विकसित तथा विकासशील देशों का जनसंख्या विश्लेषण भारत के विशिष्ट संदर्भ में-

जनसंख्या घनत्व :-

भारत के जनघनत्व के इतिहास की समीक्षा करने से स्पष्ट होता है कि भारत में सन् १९४१ में जहां मात्र १०३ व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर में आवास करते थे वहीं यह संख्या १९९१ में २६७ तथा सन्

२००१ में बढकर ३२४ प्रतिवर्ग किलोमीटर हो गयी है। जो शहरों में मलिन बस्तियों तथा झुग्गी झोपडियों को जन्म दे रही है। तथा प्रकारान्तर से जो अनेकों बीमारियों का भी कारण है।

विश्व जनगणना के आंकड़े बताते हैं कि जनगणना वर्ष सन् २००१ की भारत की जनसंख्या अफ्रीका की सम्पूर्ण जनसंख्या से अधिक है। जबकि भारत का क्षेत्रफल अफ्रीका के क्षेत्रफल का लगभग १/१० भाग ही है। यही नहीं भारत की जनसंख्या यूरोप, अमेरिका आदि की जनसंख्या से कहीं अधिक है। जबकि इनका क्षेत्रफल भारत के क्षेत्रफल से अधिक है। चीन की जनसंख्या जो भारत से लगभग सवा गुनी है, का क्षेत्रफल तीन गुना है। अनुमान है कि यदि वर्तमान जनसंख्या वृद्धि दर यथावत् रहती है तो भविष्य में आवश्यक खाद्यानों की उपज एक बहुत बड़ी समस्या तथा चुनौती होगी।

विश्व की जनसंख्या का लगभग ७५ प्रतिशत भाग विकासशील देशों में निवास करता है जबकि वह विश्व की आय के मात्र १६ प्रतिशत पर निर्भर है अर्थात विश्व के विकसित देशों की २५ प्रतिसत जनसंख्या पूँजी के लगभग ८४ प्रतिशत का उपभोग करती है। विश्व के अधिकांश विकसित देशों में जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत बहुत कम है।

औद्योगीकरण -

विकसित देशों की अर्थव्यवस्था का आधार उन्नत कोटि का औद्योगीकरण है जबकि विकासशील देश औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हैं। विकसित देशों के आर्थिक दृष्टि से समपन्न होने के फलस्वरूप जीवन स्तर उन्नत कोटि का है। जबकि विकासशील देश अति अभाबों एवं विपन्नता में परिभाषित हैं। यही कारण है कि विकसित देशों में औसत आयु विकासशील देशों की अपेक्षा अधिक है। विकसित देशों की प्रति व्यक्ति आय विकासशील देशों की प्रति व्यक्ति औसत आय से कहीं अधिक है।

जन्मदर -

विकसित देशों की प्रतिशत वार्षिक जन्मदर लगभग शून्य है आस्ट्रेलिया, इटली, रूस, स्वेडन तथा स्विटजरलैण्ड आदि विकसित देश तो ऐसे हैं जहां प्रतिशत वार्षिक वृद्धिदर ऋणात्मक है। जहां तक विकसित देशों की महिलाओं की सामाजिक स्थिति का प्रश्न है वह विकासशील देशों की तुलना में बेहतर स्थिति में है। विकासित देशों में जन्म के समय जीवन प्रत्यशा विकासशील देशों की तुलना में उच्च है।

शिशु मृत्युदर-

विकासशील देशों में शिशु मृत्युदर विकसित देशों की तुलना में अधिक है। एक अनुमान के अनुसार लगभग ७ प्रतिशत बच्चे एक वर्ष की उम्र के भीतर ही समाप्त हो जाते हैं। माताओं का खराब स्वास्थ्य, शिशुओं के कम वजन तथा अपरिपक्व जन्म की स्थितियां उत्पन्न करता होने के कारण होते हैं। स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव तथा कुपोषण शिशु मृत्यु का प्रमुख कारण है, भारत के ग्रामीण अंचलों में महिला शिशुओं की मृत्युदर अपेक्षाकृत अधिक है जिसके विभिन्न सामाजिक कारण तथा मान्यताएँ है।

पुरुष शिशु की चाह -

सामाजिक मान्यताओं तथा दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों के कारण स्वरूप परिवार में कन्या का जन्म अभिशाप माना जाता है तथा परिवार में बालक की अत्यधिक मांग रहती है। इसलिये लिंगानुपात प्रभावित होता है। वर्तमान समय में भारत में महिलाओं की संख्या प्रतिहजार पुरुषों पर ६३३ है जबकि विश्व लिंगानुपात ६८६ है।

महिला साक्षरता -

विश्व के विभिन्न देशों की महिला साक्षरता तथा महिलाओं द्वारा गर्भ निरोधक साधनों के उपयोग के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। अर्थात शिक्षित महिलाएँ अशिक्षित महिलाओं की तुलना में गर्भ निरोधक साधनों का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग करतीं हैं। जो प्रकारान्तर से शिशु जन्मदर में कमी का आधार बनता है।

विकसित तथा विकासशील देशों की जन्मदर की पारस्परिक तुलना यह भी स्पष्ट करती है कि विकसित देशों की जन्मदर विकासशील देशों की अपेक्षा कम है। यह तथ्य भी सामने आया है किन्तु दुनियां के वे देश जिनमें मुस्लिम जनसंख्या अधिक है, जन्मदर सामान्यतः उच्च है।

भारत में जनसंख्या- बृद्धि के प्रमुख कारक-

भारत में जनसंख्या वृद्धि के अधोलिखित प्रमुख कारक हैं-

१- **जन्मदर तथा मृत्युदर के मध्य अन्तर-**

विभिन्न जनगणना वर्षों के आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत में मृत्युदर में उत्तरोत्तर कमी आ रही है किन्तु उसी अनुपात में जन्मदर में कमी नहीं आ पा रही है। फलस्वरूप जन्मदर तथा मृत्युदर के मध्य का यह अन्तर जनाधिक्य को जन्म दे रहा है।

२- **विवाह की आयु-**

भारत में विवाह की आयु पुरूषों के लिये २१ वर्ष तथा महिलाओं के लिये १८ वर्ष है। जबकि ऐसा माना जाता है कि १५ वर्ष की आयु तक लगभग २६ प्रतिशत बालिकाओं का विवाह हो जाता है। तथा १८ वर्ष की आयु तक पहुंचते-पहुंचते लगभग ५४ प्रतिशत बालिकाओं का विवाह हो चुका होता है। अनुमान यह भी है कि लगभग ५० प्रतिशत बालिकाओं का विवाह १८ वर्ष की आयु के पूर्व ही हो चुका होता है। जो प्रकारान्तर से अधिक बच्चों के जन्म के लिये उत्तरदायी है। जनगणना के आंकड़ों के विशलेषण से सिद्ध होता है कि १५ से १६ वर्ष की आयु वर्ग की विवाहित बालिकाओं का कुल जन्मे शिशुओं की संख्या में बहुत बडा योगदान होता है। भारत, बांगलादेश, पाकिस्तान तथा नेपाल की लगभग २० प्रतिशत से २५ प्रतिशत किशोर-किशोरियाँ १७ वर्ष की आयु में ही जनसंख्या वृद्धि में योगदान देने लगती हैं।

३- पजनन दर रोकने के साधनों की अनउपलब्धता-

देश की आजादी के पांच दशक बीत जाने के बाद भी अनेकों ऐसे ग्रामीण क्षेत्र हैं जहां पर प्रजनन दर रोकने के साध्नों की अपेक्षित उपलब्धता नहीं है। परिणामस्वरूप प्रजननदर उच्च है।

४- उच्च शिशु मृत्युदर -

उच्च शिशु मृत्यु दर भी परिवार में अधिक बच्चों को जन्म देने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।

५- परिवार नियोजन के साधनों के सम्बन्ध में समुचित जानकारी का अभाव-

भारत में किशोरवय के बालक बालिकाओं में परिवार नियोजन के साधनों का उपयोग अत्यधिक कम है जिसका प्रमुख कारण गर्भ निरोधक साधनों की अनउपलब्धता तथा यथेष्ट रूप में जानकारी का अभाव है। एक अनुमान के अनुसार २० से ३० प्रतिशत किशोर बालक तथा लगभग १० प्रतिशत किशोर बालिकाएं विवाह के पूर्व ही यौन क्रियाओं में संलग्न हो जाते हैं। निःसन्देह इस किशोर वर्ग के लिए यथेष्ट जानकारी दिया जाना अत्यन्त आवश्यक है।

६- शिक्षा का अभाव-

शिक्षा के यथेष्ट रूप में प्रचार-प्रसार न हो पाने के फलस्वरूप देश में अभी भी शत प्रतिशत साक्षरता क लक्ष्य दूर है। महिला साक्षरता की स्थिति तो और भी चिंताजनक है। जनसंख्या विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि निरक्षर जनसंख्या में शिशु जन्मदर अपेक्षाकृत अधिक है क्योंकि वह अंधविश्वास के कारण बच्चे के जन्म को भगवान की कृपा मानते हैं।

७- मनोरंजन के साधनों का अभाव-

देश की आवादी का बहुत बड़ा भाग मनोरंजन के साधनों की उपलब्धता से बहुत दूर है। अतएव वह यौन क्रियाओं की

ओर प्रवृत्त होते हैं। जो प्रकारान्तर से अनचाहे बच्चों को जन्म देती है। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर आधारित है। कृषि कार्यों में संलग्न होने के कारण अवकाश का भी पर्याप्त समय मिलता है। फलस्वरूप दम्पति यौन क्रियाओं की ओर प्रवृत्त होते हैं। जो परिवार में नये सदस्यों को जन्म देने के लिये उत्तरदायी है।

८- सामाजिक धारणा-

यदि किसी दम्पति के संतान नहीं है तो समाज में उसे हेय दृष्टि से देखा जाता है। यह स्थिति भी परिवार में अधिक बच्चों को जन्म देने के लिये प्रेरित करती है। परिवार में बच्चों की उपस्थिति आज भी बृद्धावस्था में सामाजिक सुरक्षा की कसौटी मानी जाती है। यह स्थिति भी दम्पतिओं को पुनरुत्पादन हेतु प्रेरित करती है।

९- परिवार में बालिकाओं की तुलना में बालकों का अधिक महत्व-

भारत पुरुष प्रधान समाज है फलतः परिवार में बालिकाओं को बालकों की अपेक्षा कम महत्व दिया जाता है। बालिका का जन्म परिवार में विभिन्न सामाजिक जटिलताओं जिनमें शादी में दहेज आदि प्रमुख है, के कारण अभिशाप माना जाता है। लड़कियाँ दूसरों का धन मानी जातीं हैं 'धरी धरोहर सी लौटा दी, बेटी तो औरों का धन है", फलतः परिवार में बेटे की ललक तथा चाहअधिकाधिक प्रजनन प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है।

१०- बढ़ती जनसंख्या के कारण (सारांश)-

जनसंख्या वृद्धि के कारणों को संक्षेप में निम्न लिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है-

१- जन्मदर तथा मृत्यु दर के मध्य अंतर

२- विवाह की आयु का कम होना

३- उच्च प्रजनन दर

४- उच्च प्रजनन काल

५- परिवार नियोजन के साधनों की अपर्याप्तता

६- परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता का अभाव

७- जनाधिक्य जनित समस्याओं के प्रति जागरूकता का अभाव

८- कृषि आधारित पिछड़ी अर्थव्यवस्था

९- साक्षरता विशेषतः महिला साक्षरता में कमी

१०- मनोरंजन के साधनों का अभाव

११- अवकाश काल की अधिकता

१२- बालक-जन्म को वरीयता

१३- जन्म तथा मृत्यु के प्रति अंधविश्वास

१४- विवाह की सार्वभौमिकता

१५- सामाजिक कुरीतियाँ

भारत में जनाधिक्य जनित समस्याएँ-

भारत में वर्तमान समय की अधिकांश समस्याओं के मूल में कहीं प्रत्यक्षतः तो कहीं परोक्षतः जनाधिक्य ही उत्तरदायी है। संक्षेप में जनाधिक्य जनित समस्याओं को अधोलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

१- आवास की समस्या

२- स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव

३- कुपोषण

४- जीवन की गुणवत्ता में कमी

५- शिक्षा की सर्वसुलभता का अभाव

६- सम्पन्नता तथा विपन्नता के बीच में अपेक्षाकृत अधिक अंतर

७- निर्भर जनसंख्या का उच्च प्रतिशत

८- बेरोजगारी

९- भूमि दबाव

१०- प्रदूषण

आदि ऐसी समस्यायें हैं जो प्रमुखतः जनाधिक्य से ही जुड़ीं हैं।

अस्तु उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं पारिस्थितिकीय असंतुलन के लिये कहीं प्रत्यक्षतः तो कहीं परोक्षतः जनवृद्धि एक प्रमुख कारण है। अतएव पृथ्वी पर भावी पीढ़ियों की सुख-समृद्धि तथा समुन्नत जीवन की दृष्टि से आवश्यक है कि जनसंख्या-वृद्धि नियंत्रण हेतु प्रभावी कदम उठाये जायें और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों के प्रति बाल, किशोर युवकों-युवतियों, स्त्री-पुरुष आदि सभी को जागरुक किया जाए। निःसन्देह जनसंख्या-वृद्धि जनित पारिस्थितिक की जटिलताओं की विभीषिका एक स्पष्ट तथा दूरगामी जनसंख्या-नीति की अनिवार्य अपेक्षा रखती है।

जनसंख्या नीति-

जनसंख्या नीति के प्रत्यय के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत व्यक्त किये हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि जनसंख्या नीति पूर्णतया जनांकिकीय तत्वों एवं प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाने से सम्वन्धित नीति है, जबकि अन्य दूसरे विद्वानों के अनुसार किसी समाज के सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकीय परिवर्तन लाने की दिशा में उठाये गये कदम ही जनसंख्या नीति है।

मिरडाल के अनुसार ''जनसंख्या नीति वास्तव में मोटे रूप से सम्पूर्ण समाज सम्बन्धी नीति ही होती है यदि हम सामाजिक नीति के व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान देंगे, तो जनसंख्या नीति का क्षेत्र अनावश्यक रूप से संकुचित हो जायेगा। अतः जनसंख्या नीति को अन्य सामाजिक नीतियों के अनुरूप ही होना चाहिए।'' उपर्युक्त परिभाषा में आर्थिक नीतियाँ जनसंख्या नीति के ही अंतर्गत आतीं हैं।

लैक्सोग्राफर वेबास्टर के मत से किसी भी नीति का आधार ''विभिन्न विकल्पों के बीच चुनाव, एक निश्चित कार्य प्रणाली जो वर्तमान

और भावी निर्णयों के निर्देशन एवं निर्धारण में सहायक हो " होना चहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ ने जनसंख्या नीति के निम्नांकित दो दृष्टिकोण दिये हैं।

अ- संकुचित

ब- व्यापक

संकुचित दृष्टिकोण के अंतर्गत वह समस्त प्रयास समाहित होते हैं, जो जनसंख्या के आकार, वितरण तथा सम्पूर्ण जनसंख्या को प्रभावित करते है। इस नीति को विषम विशेष नीतियॉ (Explicit Theoriė) कहा जाता है।

व्यापक दृष्टिकोण के अन्तर्गत उन सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं पर नियंत्रण का प्रयास किया जाता है, जो जनांकिकीय स्तर पर अपना प्रभाव डालते हैं। इन नीतियां को सम्बन्धित कारकों की नीतियाँ (Implicit Theories) कहा जाता है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए स्पैगलर मान्ते हैं कि "राष्ट्रीय नीति के उद्देश्यों के अन्तर्गत हम राष्ट्र की उन समस्त नीतियों को शामिल करेंगे, जिनके अंतर्गत वह जनसंख्या की मात्रा व प्रकार या भौगोलिक वितरण में परिवर्तन लाता है।"

जनसंख्या नीति के संदर्भ में भत व्यक्त करते हुए जूड़िथ ने लिखा है "आज तक कम विकसित देशों में जनसंख्या नीति को निम्नांकित दो रूपों में अलग अलग कार्यान्वित किया गया है-

१- आर्थिक विकास दृष्टिकोण, जिसमें माना जाता है कि आर्थिक, सामाजिक सुधार एवं परिवर्तन से जो देश की स्थिति में सुधार आयेगा, उससे जन्मदर स्वतः कम हो जायेगी।

२- परिवार नियोजन दृष्टिकोण जिसमें स्वास्थ्य सुविधाओं के विकास, परिवार नियोजन साधन तथा सामग्री की उपलब्धता तथा तत्सम्बन्धी प्रचार से जन्मदर नियंत्रित की जाती हैं।

शोधकर्त्री का मानना है कि जनसंख्या का वितरण अपेक्षित तथा उपलब्ध राष्ट्रीय संसाधनों के आलोक में जनसंख्या के आकार

का नियोजन, जनसंख्या नीति का आवश्यक पहलू है। जनसंख्या नीति का उद्देश्य न केवल वर्तमान अपितु भविष्य के भी सुखी और सम्पन्न समाज को सुनिश्चित करना है।

कार्यात्मक दृष्टि से जनसंख्या-नीति के अन्तर्गत जन्म-दर को बढ़ाने या घटाने, मृत्यु दर को घटाने, वृद्धि दर कम या अधिक रखने सम्बन्धी, स्वास्थ्य स्तर को ऊँचा उठाने, जनसंख्या-वितरण को किस कार्यक्रमों के अनुरूप नियंत्रण तथा जनसंख्या की संरचना में वांछित परिवर्तन लाने आदि के कार्यक्रम समाहित होते हैं।

जनसंख्या नीति का वर्गीकरण -

जनसंख्या नीतियों को मुख्यतया निम्नांकित दो वर्गो में विभक्त किया जा सकता है-

१- जनसंख्या वृद्धि दर आधारित नीति-

जनसंख्या वृद्धि पर आधारित नीतियों के अंतर्गत वे प्रयास होते हैं, जिनसे किसी देश की जनसंख्या के आकार को नियंत्रित किया जाता है। इस नीति के दो स्वरूप है- यदि किसी देश की जनसंख्या में निरंतर ह्राष हो रहा है तो जनसंख्या को बढ़ाने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जाता है, जिसे प्रसव वादी नीति कहते हैं। इसके विपरीत यदि किसी देश की जनसंख्या का आकार संसाधनों की तुलना में निरंतर बढ़ रहा है तो उन प्रयासों का सहारा लिया जाता है, जिनसे मृत्युदर को कम करने के साथ ही साथ जन्मदर में कमी लायी जा सके, इस नीति को प्रसव विरोधी नीति की संज्ञा दी जाती है।

२- जनसंख्या वितरण पर आधारित नीति-

इस नीति का उपयोग जनसंख्या के वितरण में संतुलन लाने की दृष्टि से किया जाता है। यदि किसी देश के राज्यों में आर्थिक कारणों से जनसंख्या का पलायन किसी क्षेत्र विशेष की ओर होने लगता है तो इस प्रवृत्ति को रोकने की दृष्टि से कुछ प्रतिबंध और हतोत्साहन प्रयासों का सहारा लिया जाता है। जिससे जनसंख्या का वितरण सामंजस्यपूर्ण रहे।

इसके विपरीत जहाँ जनसंख्या की कमी होती है या जहाँ जनसंख्या पलायन करती है उस क्षेत्र के लिए प्रोत्साहन कार्यक्रम लागू किये जाते हैं। जिससे जनसंख्या की पलायनवादी प्रवृत्ति रूक सके। जनसंख्या नीति का यह स्वरूप जनसंख्या वितरण पर आधारित नीति कहलाती है।

भारत की जनसंख्या नीति-

देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को नियंत्रित करने के प्रयास सन् १९५२ से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ हो गये थे। साथ ही साथ इस प्रयासों को प्रभावी बनाने तथा वांछित परिणामों को प्राप्त करने की दृष्टि से समय-समय पर परिवर्तन भी किये जाते रहे हैं- यथा वर्ष १९६५-६६ तक परिवार नियोजन केन्द्रों की स्थापना करके परिवार नियोजन सुविधाओं को जनता तक पहुँचाया जाता रहा है, किन्तु सन् १९६६ से परिवार नियोजन केन्द्रो के साथ ही प्रसार शिक्षा पर जोर दिया जाने लगा जिसे एक्सटेशन का नाम दिया गया। इस पद्धति के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में अस्सी हजार से एक लाख की जनसंख्या तथा नगरीय क्षेत्रों में प्रति पचास हजार पर एक प्रसार शिक्षक की नियुक्ति की गयी। जिला स्तर पर दो प्रसार शिक्षक के पद सृजित किये गये। प्रसार शिक्षकों का कार्य जनता को परिवार नियोजन, शिक्षा एवं सेवाओं सम्बन्धी जानकारी देना था इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रति बीस हजार की जनसंख्या पर परिवार नियोजन स्वास्थ्य सहायक की नियुक्ति की गयी। वर्ष १९७२-७३ में विशाल नसबंदी शिविर पद्धति पर विशेष बल दिया गया। यह शिविर योजना अधिक दिनों तक नहीं चल सकी, परिणामतः १९७३७४ से आगामी तीन वर्षों तक परिवार नियोजन कार्यक्रम अपने पूर्ववर्ती रूप में ही मन्थर गति से चलता रहा।

जनसंख्या को कम करने हेतु अपनाये गये विभिन्न प्रयास कोई विशेष सारगर्भित परिणाम नहीं दे सके। अस्तु, देश में पहली बार सन् १९७६ में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति का निर्धारण किया गया, जो सन् १९७७ में किये गये आँशिक परिवर्तनों के साथ निम्नलिखित रूप में हैं

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति १९७६-

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (१९७६) की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं-

१- जन्मदर कम करने का लक्ष्य पांचवी पंचवर्षीय योजना के अंत (वर्ष १९७९) तक तीस प्रति हजार जनसंख्या तथा छठी पंचवर्षीय योजना के अंत (वर्ष १९८४) तक पच्चीस प्रति हजार जनसंख्या रखा गया। अनुमान था कि इस घटी हुई जन्म दर से जनसंख्या वृद्धि दर २.५ प्रतिशत प्रतिवर्ष से घटकर १.४ प्रतिशत प्रतिवर्ष हो जायेगी।

२- जन्मदर को कम करने के लिए परिवार नियोजन कार्यक्रम को सघन रूप में चलाने की पेशकश की गयी, जिसमें नशबंदी कराने वाले पात्र दम्पतियों को विशेष सुविधाओं तथा प्रोत्साहन का प्रावधान किया गया। इस योजना को "प्रोत्साहन योजना" के नाम से जाना जाता है। राजकीय कर्मचारियों को जो पात्र दम्पति की श्रेणी में आते थे और नसबन्दी नहीं करवाना चाहते थे, उन्हें कुछ सुविधाओं/अधिकारों से वंचित करने का प्रावधान भी किया गया।

३- विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों की १५ वर्ष से बढ़ाकर १८ वर्ष तथा लड़कों की १८ वर्ष से बढ़ा कर २१ वर्ष कर दी गयी।

४- गर्भ समापन की वैधता प्रदान करने के साथ ही साथ तत्सम्बन्धी आवश्यक सेवाओं को उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया।

५- शिक्षा और संतान-अधिक्य के परस्पर सह सम्बन्धों को ध्यान में रखते हुए लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया गया तथा शिक्षा प्रणाली में जनसंख्या-शिक्षा को सम्मिलित करने के सम्बन्ध में योजनएँ तैयार करने का कार्यक्रम भी रखा गया।

६- लोकसभा तथा राज्य सभा के लिए राज्यों का प्रतिनिधित्व सन् २००१ तक, १९७१ की जनगणना के आधार पर ही निर्धारित करने का निर्णय लिया गया, ताकि जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम को सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने वाले राज्यों का प्रतिनिधित्व उन राज्यों की

तुलना में न घटे, जिनकी जनसंख्या, जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रम को समुचित रूप से न चलाने के परिणाम स्वरूप बढ़ रही है।

७- राज्यों को केन्द्र सरकार द्वारा दी जाने वाली वित्तीय सहायता का ८ प्रतिशत नियोजन-कार्यक्रम की उपलब्धि से जोड़ दिया गया। नसबंदी पर आवश्यकता से अधिक बल देने के परिणामस्वरूप इस कार्यक्रम को जनसमर्थन नहीं मिल सका। सन् १९७७ के केन्द्रीय सरकार में सत्ता में परिवर्तन के पश्चात् पुनः जनसंख्या नीति को संशोधित किया गया।

जनसंख्या नीति वर्ष १९७७-

जनसंख्या की वर्ष १९७७ की संशोधित नीति १९७६ की नीति पर ही आधारित थी किन्तु इसमें नसबन्दी की अनिवार्यता को स्वेच्छा के सिद्धान्त पर लागू करने की नीति बनाई गयी तथा परिवार नियोजन को अब इसके व्यापक रूप में परिवार कल्याण के नाम से अंगीकार किया गया संशोधित नीति में निम्नलिखित व्यवस्थाएँ दी गयी है-

१- छठी पंचवर्षीय योजना तक देश के जन्मदर को ३० प्रति हजार करने के लिये लगभग ३६.६ प्रतिशत लक्ष्य व्यक्तियों को प्रविार नियोजन की किसी न किसी विधि द्वारा सुरक्षित करने का लक्ष्य रखा गया।

२- वर्ष १९७६ की नसबन्दी के अत्यधिक आग्रह के स्थान पर स्वेच्छा से नशबन्दी कराने पर विशेष बल दिया गया।

३- राष्ट्रीय-कार्यक्रमों में परिवार-कल्याण एवं परिवार- नियोजन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गयी ताकि जनवृद्धि की दर को कम किया जा सके।

४- पूर्व नीति में घोषित सभी हतोत्साहनों को समाप्त करते हुए व्यक्तिगत प्रोत्साहनों के साथ ही साथ सामूहिक प्रोत्साहनों का भी प्रावधान किया गया। सरकारी सेवाओं में दो बच्चो के पश्चात् नसबंदी कराने वालों को एक अतिरिक्त वेतन वृद्धि का लाभ देने का भी प्रावधान किया गया।

५- परिवार नियोजन को प्रोत्साहन देने वाली स्वंयसेवी संस्थाओं को राजकीय सहायता प्रदान करने एवं उन्हें प्राप्त होने वाले उपहारों पर आयकर में छूट देने एवं अन्य प्रलोभनों से प्रोत्साहन देने का प्रावधान दिया गया।

६- राज्यों को कंन्द्रीय सहायता एवं अनुदान तथा लोकसभा में प्रतिनिधित्व का आधार १६७१ की जनसंख्या को ही रखा गया।

७- जनसंख्या नियंत्रण एवं परिवार नियोजन सम्बन्धी कार्यों के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें प्रोत्साहित करने का प्रावधान किया गया।

जनसंख्या नीति में वर्ष १९८१ में की गयी कुछ घोषणाएँ-

केन्द्रीय स्वास्थ्य परिषद् और केन्द्रीय कल्याण परिषद के १६८१ में सम्पन्न सातवें अधिवेशन में निम्न लक्ष्य निर्धारित किये गये-

१- सन् २००० तक जन्मदर २१ प्रति हजार तक लाना।

२- सन् २००० तक मृत्युदर को १४ से घटाकर६ प्रति हजार लाना।

३- वर्तमान शिशु मृत्युदर (१२५ प्रति हजार) को सन् २००० तक ६० प्रति हजार लाना।

४- लोगों को छोटे परिवार की ओर प्रेरित करते हुए जनसंख्या को स्थिर रखते हुए दीर्घ-कालीन नीतियों पर जोर देना।

५- परिवार-नियोजन के विभिन्न साधनों और उपायों को सुलभ कराने और इस सम्बन्ध में सेवाएँ प्रदान करने की समुचित व्यवस्था करना।

६- महिलाओं की शिक्षा और रोजगार पर विशेष बल देना ताकि आत्म निर्भरता तथा सुरक्षा की भावना का विकास किया जा सके।

७- संतान नियंत्रण के सभी तरीकों को बढ़ावा देना। गर्भ समापन की सुविधाओं को बढ़ावा देना तथा गर्भ समाप्ति के बाद भी देख-भाल की ओर पूरा ध्यान रखा जाये।

८- सम्मेलन ने एक परिवार कल्याण सलाहकार बोर्ड के गठन की सिफारिश की, जो समय-समय पर परिवार कल्याण कार्यक्रम की

मानिटरिंग समीक्षा और प्राथमिकताओं को पुनः समायोजन में सहायता करे आदि।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति (१९८३)-

सन् १६८३ की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति स्वयंसेवी प्रयासों द्वारा छोटे परिवार के मानक की आवश्यकता तथा जनसंख्या के स्थिरीकरण की नीति पर जोर देती है। स्वास्थ्य नीति को अंगीकार करते हुए देश की संसद ने एक स्वतंत्र राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की आवश्यकता पर बल दिया था।

जनसंख्या समिति १९९१-

सन् १६६१ में राष्ट्रीय विकास परिषद् ने श्री करुणाकरन जी की अध्यक्षता में जनसंख्या के सम्बन्ध के में एक समिति का गठन किया था। समिति द्वारा एक राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के निर्माण तथा संसद् द्वारा इसके पारित किये जाने की संस्तुति की।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति प्रारूप (१९९३)-

डॉ० एम०एम० स्वामीनाथन की अध्यक्षता में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के प्रारूप निर्माण हेतु एक समिति का गठन किया गया जिसने प्रारूप के स्वरूप को संसद के सदस्यों के बीच उपयोगी सुझाव हेतु वितरित किया। यह माना गया कि संसद् द्वारा अनुमोदित तथा संस्तुत जनसंख्या नीति के माध्यम से राजनीतिक सहमति बन सकेगी जो अन्ततः जनसंख्या नियंत्रण के प्रयासों को सफल बनाने में सहयोगी होगी। सन् १६६७ में मन्त्रिपरिषद ने समिति द्वारा प्रस्तावित रूपरेखा को स्वीकृति प्रदान कर दी तथा यह चाहा गया कि उक्त प्रारूप को संसद के सदन पटल पर रखा जाए किन्तु लोकसभा के भंग होजाने के परिणाम स्वरूप मन्त्रिपरिषद की उक्त संस्तुतियों को संसद में प्रस्तुत नहीं किया जा सका।

नवीं पंचवर्षीय योजना में जनसंख्या नीति (१९९७-२००२)

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (२०००)-

कालांतर में राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के प्रारूप को अंतिम स्वरूप प्रदान किया गया तथा इसे मार्च १९९९ में केन्द्रीय मन्त्रि परिष्द के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

केन्द्रीय समिति ने योजना आयोग के उपाध्यक्ष की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जिसका दायित्व तैयार प्रारूप का परीक्षण करना था समिति ने अंतिम प्रारूप १९ नबम्बर १९९९ को केन्द्रीय मन्त्रिय परिषद के समक्ष पुनः प्रस्तुत किया जिसमें विभिन्न सुझाव आये तथा उन सुझावों का समावेश करते हुए अंतिम प्रारूप मन्त्रि परिषद के समक्ष १५ फरवरी २००० को प्रस्तुत किया जिसें मन्त्रिपरिषद नें स्वीकृति प्रदान कर दी और इस प्रकार राष्ट्रीय जनसंख्या नीति-२००० आस्तित्व में आगयी, जिसका प्रमुख उद्देश्य परिवार में दो बच्चों के मानक को प्रोत्साहित करना है ताकि सन् २०४६ तक जनसंख्या के स्थिरीकरण के उद्देश्य को पाया जासके।

जनसंख्या नीति २००० के अधोलिखित प्रमुख बिन्दु है-

१- सर्वप्रथम केन्द्रीय सरकार के निश्चय किया कि लोकसभा में राज्यों के प्रतिनिधित्व हेतु स्थानों की संख्या जिसका निर्धारण सन् १९७१ की जनगणना के आधार पर किया गया था तथा जिसे २००१ तक लागू रहना था, अब इस अनुपात की अवधि बढ़ाकर सन् २०२६ तक कर दी गयी है ताकि उन राज्यों का समुचित प्रतिनिधित्व बना रह सके जिन्होंने परिवार नियोजन कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के फलस्वरूप अपनी जनसंख्या पर नियंत्रण किया है। तथा उत्तरप्रदेश तथा बिहार जैसे राज्यों को जिन्होंने अपनी जनसंख्या में सफल नियंत्रण न कर पाने के फलस्वरूप अधिकाधिक वृद्धि की है, को इस वृद्धि के लिये प्रोत्साहित न किया जाये।

उपरोक्त के अतिरिक्त राष्ट्रीय जनसंख्या नीति में अधोलिखित का उपायों का उल्लेख किया है ताकि सन् २०४६ तक जनसंख्या को स्थिर कर पाने के उद्देश्य को पाया जा सके-

१- शिशु मृत्युदर को प्रति एक हजार बच्चों पर ३० से कम किया जाय।

२- मातृ मृत्युदर को प्रति एक लाख पर १०० से कम स्तर पर लाया जाये।

३- ८० प्रतिशत तक प्रसवों के स्वास्थ-केन्द्रों तथा अस्पतालों में प्रशिक्षित स्वास्थ कर्मियों के माध्यम से सम्पन्न कराने के लक्ष्य को प्राप्त करना।

४- एड्स जैसी बीमारियों के प्रति समुचित रूप में जानकारी देना।

५- दो बच्चो के सीमित परिवार के मानक को प्रोत्साहित करना।

६- सुरक्षित गर्भपात की सुविधाओं में वृद्धि करना।

७- विवाह से सम्बन्धित आयु तथा लिंग परीक्षण निषेध कानून का कड़ाई से पालन कराया जाय।

८- बालिकाओं की विवाह की आयु २० वर्ष तथा उससे अधिक के लिए प्रयास करना।

९- उन महिलाओं के लिए जिन्होंने २१ वर्ष की आयु के पश्चात विवाह किया है तथा जिन्होंने दो बच्चों के पश्चात् आगे बच्चों को जन्म न देने हेतु सफल प्रयास किये हैं, को विशेष पुरुष्कार देने की व्यवस्था करना।

१०- गरीबी से नीचे जीवन यापन करने वाले ऐसे लोगों को जिन्होंने दो बच्चों के पश्चात् बंधीकरण करवा लिया है, को स्वास्थ्य बीमा का लाभ उपलब्ध करना।

११- प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग का गठन करना जो जनसंख्या नीति कार्यक्रमों के क्रियान्वयन का परीक्षण करे। जिसका उद्देश्य राष्ट्र को जनसंख्या की विभीषिका के प्रति जागरूक करना है तथा जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता के महत्व को

स्पष्ट करना है। जनसंख्या नीति २००० का उद्देश्य है कि सन् २०१० तक जनसंख्या को ११० करोड़ से ऊपर न बढ़ने देने का लक्ष्य है।

आगामी दस वर्षो की कार्ययोजना की रूपरेखा निम्नवत् है-

१- ग्राम पंचायत स्तर पर स्वयं सहायता समूहों जिनमें अधिकांश काम-काजी महिलाएं होंगी, स्वास्थ्य कर्मियों से इण्टरएक्ट करेंगी।

२- प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य की जायेगी।

३- विवाह, गर्भधारण, जन्म तथा मृत्यु का पंजीकरण अनिवार्य हो।

सरकार को विश्वास है कि वर्ष २०४६ तक जनसंख्या के स्थिरीकरण की अवस्था को पाया जा सकता है। संसाधन को जुटाने के लिए ३००० करोड़ रूपये का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है ताकि परिवार नियोजन के साधनों की अन-उपलब्धता की पूर्ति की जासके।

यद्यपि समालोचकों का मानना है कि नई जनसंख्या-नीति जनसंख्या-नियंत्रण का सम्पूर्ण भार महिलाओं पर डालती है, जो ठीक नहीं है तथा जनसंख्या -नियंत्रण का दायित्व पुरुषों तथा महिलाओं पर समान रूप से डाला जाना चाहिए।

नीतिगत समीक्षा

जनसंख्या नीति का विशलेष्ण करने से यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि जनसंख्या नियंत्रण हेतु किये प्रयासों से कमोवेश लाभ अवश्य हुआ है यदि इन प्रयासों को न अपनाया गया होता तो देश में जनसंख्या की अत्यंत ही भयावह स्थिति होती। एक तथ्य और स्पष्ट होता है कि जनसंख्या के परिणामात्मक पक्ष पर ही अधिक जोर दिया गया है, जिसके परिणामस्वरूप परिवार कल्याण कार्यक्रम का उद्देश्य कमोवेश मृत्युदर, जन्मदर एवं वृद्धिदर घटाने तक ही सीमित हो रहा है, जबकि सामान्य जन को परिवार के आकार को सीमिति रखने के साथ ही साथ संतति के गुणात्मक उन्नयन की ओर भी प्रेरित करने की आवश्यकता है। अतः नीतियों में जीवन की गुणवत्ता विषयक सुस्पष्ट लक्ष्यों के निर्धारण की

आवश्यकता है ताकि जहाँ एक ओर जनसंख्या में वृद्धि में कमी आये, वहीं जनता के स्वास्थ्य तथा जीवन स्तर में भी वांछित सुधार के परिणाम स्वरूप एक उज्वल और स्वालम्बी राष्ट्र की परिकल्पना साकार हो सके, जो जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से ही संभव है।

भारत में सम्पन्न प्रमुख शोध निष्कर्ष

बारा सुब्रामनियम, नारायणदास एवं अन्य (१६७०) ने हाईस्कूल स्तरीय शिक्षकों के जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर एक अध्ययन किया, जिसका उद्देश्य था–

१ भारत में जनसंख्या समस्या के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

२ विद्यालय पाठ्क्रम में जनसंख्या-शिक्षा सम्मिलित किये जाने के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

३ यौन-शिक्षा को जनसंख्या-शिक्षा के साथ पढ़ाये जाने के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

उपर्युक्त शोधकर्ताओं ने सम्पन्न अपने शोध नें, जो कि १५० माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों के प्रतिदर्श पर आधारित था, पाया–

१ शिक्षकों में देश की जनसंख्या- समस्या के प्रति उच्च जागरुकता पायी गयी। शिक्षकों का मानना था कि बेरोजगारी रहन-सहन के निम्न स्तर और खाद्यानों की कमी जैसी समस्याओं के मूल में जनाधिक्य निहित है।

२ जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने विषयक किये गये प्रयासों के सम्बन्ध में अधिकांश शिक्षकों को ज्ञान नहीं था।

३ अधिकांश शिक्षकों का अभिमत था कि विद्यालयी शिक्षा पाठ्यक्रम में जनसंख्या-शिक्षा को सम्मिलित किया जाये तथा उन्होंने जनसंख्या शिक्षा की पाठ्यवस्तु के विषय में निम्नलिखित सुझाव दिये–

(अ) आर्थिक विकास और जनसंख्या के मध्य सह-संम्बन्ध।

(ब) जनसंख्या विषयक समस्याओं के समाधान हेतु साधन और उपाय।

लगभग ३० प्रतिशत शिक्षकों ने जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के प्रति नकारात्मक मन्तव्य व्यक्त किया, क्योंकि इनका मानना था कि स्कूल स्तर पर बच्चों की अपरिपक्वता शिक्षण में अवरोध उत्पन्न करेगी।

४ अधिकांश शिक्षकों का अभिमत था कि जनसंख्या-शिक्षा शिक्षण के साथ यौन शिक्षा भी दी जाये। इसके अनुसार यौन-शिक्षा के माध्यम से बच्चों की गलत धारणाओं का निराकरण हो सकेगा, जो अंततः उनके नैतिक चरित्र के उन्नयन में सहायक सिद्ध होगी।

५ लगभग ४६ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा को अन्य विषयों के साथ समाकलित करने के पक्षधर थे, जबकि लगभग २३ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा को स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाये जाने के पक्षधर थे।

शैवाला दयाल (१९७३) ने बी० एड० पत्राचार के अध्यापकों पर परिवार कल्याण और जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण जानने के लिये एक शोध कार्य किया, जिसके निम्न लिखित उद्देश्य थे-

१ परिवार-कल्याण कार्यक्रम के संदर्भ में शिक्षकों के ज्ञान, व्यवहार और स्वीकृति की जानकारी प्राप्त करना।

२ जनसंख्या-शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रति प्रतिक्रिया ज्ञात करना।

उपर्युक्त शोध के प्रतिदर्श में ९८ अध्यापक सम्मलित थे, जिनमें ७१ पुरुष २७ महिलायें थीं, जिनमें लगभग ५३ सदस्य विवाहित थे। शोध के परिणामस्वरुप निम्नलिखित निष्कर्ष पाये गये।

१ अधिकांश छात्र अध्यापकों तथा छात्रा अध्यापिकाओं (९० प्रतिशत पुरुष तथा ७५ प्रतिशत महिलाओं) ने २ बच्चों के जन्म के मध्य दो वर्ष से चार वर्ष के अन्तराल की आवश्यकता पर बल दिया।

२ लगभग ७५ प्रतिशत सदस्यों ने अनिश्चित बच्चों के जन्म को रोकने के लिये कृत्रिम साधनों के उपयोग की पक्षधरता की।

३ सभी महिला सदस्यों ने एक या दो बच्चों के जन्म के बाद परिवार नियोजन विधियों के प्रयोग को उचित ठहराया।

४ लगभग ६५ प्रतिशत छात्र अध्यापक/ छात्रा अध्यापिकाओं ने जनसंख्या शिक्षा को माध्यमिक स्तर से पढाये जाने को उचित ठहराया, जबकि लगभग २४ प्रतिशत लोगो ने प्राथमिक स्तर से ही इसके पढाये जाने के औचित्य की पुष्टि की।

५ लगभग ५५ प्रतिशत सदस्यों ने जनसंख्या विकास के झुकाव, जन्म दर तथा स्थानान्तरण प्रक्रिया से सम्बन्धित तथ्यों का हाईस्कूल स्तर पर ६ प्रतिशत ने प्राथमिक स्तर पर तथा १७ प्रतिशत ने इसके जूनियर हाईस्कूल स्तर पर शिक्षण की पक्षधरता की।

६ छात्राध्यापकों/(पुरुष तथा महिला) के ६७.६ प्रतिशत भाग नें अभिमत व्यक्त किया कि सरकार के परिवार नियंत्रण कार्यक्रमों का शिक्षण माध्यमिक स्तर पर किया जाये न कि प्राथमिक स्तर पर।

७ ७० प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में प्रजनन अंगों आदि का विवेचन जूनियर स्तर एवं माध्यमिक स्तर पर किया जाये तथा किसी भी सदस्य ने प्राथमिक स्तर पर इनके शिक्षण को उचित नहीं ठहराया। मात्र ७ प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में जूनियर हाईस्कूल स्तर पर इनके शिक्षण में कोई औचित्त नही है।

८ ७० प्रतिशत सदस्यों ने जनसंख्या-शिक्षा को सामाजिक विज्ञान, ३० प्रतिशत ने बॉयलौजी तथा २४ प्रतिशत ने इसको नागरिकशास्त्र और अर्थशास्त्र के साथ सम्मिलित करने के पक्ष में अपना अभिमत प्रकट किया।

डी० गोपाल राव(१९७९) ने जनसंख्या-समस्या के प्रति शिक्षकों की जागरुकता तथा जनसंख्या-शिक्षा को विद्यालय पाठ्यक्रम

में सम्मिलित किये जाने के प्रति प्रतिक्रिया विषयक एक अध्ययन किया, जिसके निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य थे–

१ जनसंख्या-समस्या के प्रति शिक्षकों की जागरुकता का अध्ययन करना।

२ विद्यालयों में जनसंख्या-शिक्षा को सम्मिलित किये जाने के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।

३ जनसंख्या-शिक्षा की विषयवस्तु तथा हाईस्कूल पाठ्यक्रम में समावेश किये जाने के ढंग के प्रति अभिमत ज्ञात करना।

शोधकर्ताओं ने अपने उपयुक्त शोध में अधोलिखित निष्कर्ष पाये–

१ अधिकांश शिक्षक जनसंख्या आधिक्य के कारणो तथा परिणामों का सम्यक ज्ञान रखते हैं।

२ शिक्षकों का मानना था कि बेरोजगारी खाद्यान्नों की कमी तथा गरीबी का कारण जनसंख्या की अधिकता है।

३ जनसंख्या-शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के पक्ष में मत व्यक्त किया।

४ अधिकांश शिक्षकों का अभिमत था कि जनसंख्या-शिक्षा को विद्यालयी पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य अंग के रूप में पढ़ाया जाना चाहिये।

५ शिक्षकों ने जनसंख्या-शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाये जाने तथा इसे परीक्षा के एक विषय के रूप में सम्मिलित किये जाने की संस्तुति की।

६ शिक्षकों ने विद्यालयी शिक्षा में यौन-शिक्षा-शिक्षण के प्रति भी सकारात्मक मत व्यक्त किया।

आर० कल्यान सालकर (१६७५) द्वारा सम्पन्न पी-एच.डी. स्तरीय शोध में जो २०६३ विद्यार्थियों, ४०० शिक्षकों और २०० अभिवावकों के सम्मिलित प्रतिदर्श पर आधारित है, पाया गया कि–

१ अधिकांश छात्र जनसंख्या-समस्या के प्रति जागरुक हैं।

२ अधिकांश छात्र जनसंख्या विषयक तथ्यों को जानने के इच्छुक थे।

३ लगभग ५० प्रतिशत छात्र जनसंख्या-शिक्षा को अन्य विषयों के साथ पढ़ाये जाने के पक्ष में पाये गये।

४ शिक्षक जनसंख्या-समस्या के प्रतिपूर्ण जानकारी रखते पाये गये।

५ शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में थे।

६ शिक्षकों का अभिमत था कि जनसंख्या शिक्षा के साथ ही साथ यौन शिक्षा को भी पाठ्यक्रम का आवश्यक अंग बनाया जाना चाहिये।

७ शिक्षकों का अभिमत था कि जनसंख्या शिक्षा हेतु अध्यापकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

८ अभिभावक भी जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में पाये गये।

९ अभिभावकों का अभिमत था कि वाह्य विशेषज्ञों की अपेक्षा शिक्षकों द्वारा जनसंख्या-शिक्षा देना अधिक प्रभावी होगा। इस हेतु विद्यालय के कुछ शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

वास्वानी तथा कपूर (१९७७) द्वारा बम्बई महानगर के ४०५ स्कूल शिक्षकों पर आधारित जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषयक एक शोध में निम्नलिखित निष्कर्ष पाये गयेः-

१ लगभग ५४.२ प्रतिशत शिक्षकों ने जनसंख्या-शिक्षा के विषय में यत्र-तत्र सुना था किन्तु उनमें से मात्र ३ प्रतिशत शिक्षक ही जनसंख्या-शिक्षा को परिभाषित कर सके।

२ जनसंख्या-शिक्षा के अर्थ तथा क्षेत्र को बताने के पश्चात् लगभग ७५ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के पक्ष में पाये गये।

३ वे शिक्षक जो जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के पक्ष में नहीं थे उनका मानना था कि जनसंख्या-शिक्षा शिक्षकों के लिये पढाना तथा छात्रों के लिये समझना कठिन है।

४ शिक्षकों के समूह के लगभग ४७.२ प्रतिशत शिक्षकों का विश्वास था कि जनसंख्या-शिक्षा को अन्य स्कूली विषयों केसाथ-सम्मिलित कर दिया जाना चाहिये। जबकि ८.७ प्रतिशत स्वतंत्र विषय के रूप में पढाये जाने के पक्षधर थे। मात्र १३.६ प्रतिशत शिक्षकों ने कोई मन्तव्य व्यक्त नहीं किया।

५ लगभग ४६ प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत था कि जनसंख्या-शिक्षा को कक्षा८ के पूर्व पढाया जाना चाहिये जबकि २६.६ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा को कालेज स्तर पर पढाये जाने के पक्ष में थे।

६ प्रतिदर्श में सम्मिलित ४४ प्रतिशत शिक्षकों को जनसंख्या-शिक्षा के विषय में कोई विशेष जानकारी नहीं है। इसलिये इनका मानना था कि जनसंख्या-शिक्षा को नहीं पढ़ाया जाना चाहिये।

एस० एल० नंदा तथा अन्य (१९७४) शिक्षकों के जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषयक एक अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष में पहुँचे-

१ शिक्षकों का ६० प्रतिशत भाग जनसंख्या-शिक्षा के तात्पर्य से अवगत हैं।

२ ६५ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा तथा परिवार-नियोजन को एक ही तथ्य मानते हैं।

३ जनसंख्या के प्रति जागरूकता उत्तरदायित्वपूर्ण पितृत्व को २५ प्रतिशत शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा का आवश्यक अंग मानते हैं।

४ उत्तरदायित्वपूर्ण अभिभावक के विकास हेतु युवकों के लिये जनसंख्या-शिक्षा आवश्यक है। यह विचार ६० प्रतिशत शिक्षकों ने व्यक्त किया।

५ ५० प्रतिशत शिक्षकों का मत था कि परिवार के आकार का रहन-सहन के स्तर पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

६ ६० प्रतिशत शिक्षकों ने विश्वास व्यक्त किया कि व्यक्तियों द्वारा परिवार के आकार को नियोजित किया जा सकता है।

७ अधिकांश शिक्षकों का मानना था कि बच्चों की अधिकता माँ के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। अतएव माँ के स्वास्थ्य की दृष्टि से बच्चों का जन्म- अंतराल आवश्यक है।

८ खुशहाल परिवार की दृष्टि से सीमित परिवार की आवश्यकता अधिकांश शिक्षकों ने व्यक्त की।

६ शिक्षकों का यह भी मानना पाया गया कि हमारा देश उत्तरोत्तर बढते लोगों की आवश्यकता-पूर्ति करने में समर्थ नहीं है, यदि वर्तमान गति से जनसंख्या में वृद्धि होती रही।

नलिनी देवी(१६८१) ने अपने शोध ''स्कूल स्तरीय छात्रों की जनसंख्या के प्रति जागरूकता तथा जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के प्रति दृष्टिकोण, विषयक शोध के निम्नलिखित उद्देश्य, निरूपित किये-

१ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति बालकों की जागरूकता का आकलन करना।

२ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति बालकों की अभिरूचि ज्ञात करना।

३ बालकों को जनसंख्या-शिक्षा से अवगत कराना तथा इससे बालकों में उत्पन्न जागरूकता एवं अभिरुचि के संदर्भ में प्रभाव का अध्ययन करना।

उपर्युक्त शोध में अन्वेषिका ने अधोलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये-

१ ग्रामीण छात्रों विशेष रूप से बालकों ने नगरीय बालकों की अपेक्षा जनसंख्या समस्याओं के प्रति अत्यधिक जागरुकता प्रदर्शित की।

२ हाईस्कूल स्तरीय बालकों में प्राथमिक तथा जूनियर हाईस्कूल के छात्रों की अपेक्षा जनसंख्या विषयक समस्याओं के प्रति अधिक जागरूकता पायी गयी। जनसंख्या-समस्याओं के प्रति जागरूकता के संदर्भ में हाईस्कूल के बच्चे प्राथमिक तथा जूनियर हाईस्कूल स्तरीय बच्चों से

सार्थक रूप से भिन्न है, जबकि प्राथमिक तथा जूनियर हाईस्कूल के मध्य पारस्परिक अंतर सार्थक नहीं पाया गया।

३ अधिकांश बच्चों ने जनसंख्या-शिक्षा के अध्ययन के प्रति रूचि प्रदर्शित की

४ जनसंख्या-शिक्षा के शिक्षण का बालकों की जनसंख्या विषयक जागरूकता पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

५ बायोलॉजी, गणित तथा वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में कला वर्ग के छात्रों की जानकारी अधिक है, जर्बाकि बॉयोलाजी तथा कला वर्ग के विद्यार्थी वाणिज्य तथा गणित वर्ग के छात्रों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है।

६ विभिन्न आय वर्गीय बालकों में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सार्थक दृष्टिकोण भेद है।

७ संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकाकी परिवारों के बच्चे जनसंख्या-शिक्षा के विषय में सकारात्मक ज्ञान तथा दृष्टिकोण रखते हैं।

८ मुसलमान तथा सिख परिवारों के बच्चे हिन्दू तथा ईसाई परिवारों के बच्चों की अपेक्षा जनसंख्या समस्या विषयक बेहतर जानकारी रखते हैं। धार्मिक आधार पर बच्चों की जनसंख्या- शिक्षा विषयक ज्ञान तथा उसमें जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में सार्थक भेद नहीं पाया गया।

९ अनुसूचित जाति के छात्रों में अनुसूचित जनजाति तथा सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा जनसंख्या-शिक्षा विषयक जानकारी अधिक पायी गयी। अनुसूचित जनजाति के छात्रों को जनसंख्या शिक्षा विषयक अल्प जानकारी है तथा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति उनका निम्न स्तरीय सकारात्मक दृष्टिकोण है।

१० यह मानने का पर्याप्त आधार पाया गया कि यदि छात्रों को जनसंख्या-शिक्षा विषयक जानकारी प्रदान की जाती है तो उनके जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास सम्भव है।

सत्तारशक बाला (१९८१) के पी-एच०डी० शोध के निष्कर्षों को निम्न लिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है।

१ परीक्षण में सम्मिलित सम्पूर्ण समूह (छात्र, अभिभावक तथा परिवार नियोजन कार्यक्रम में संलग्न कार्यकर्ता-गण) में जनसंख्या-शिक्षा विषयक साहित्य के अध्ययन के पश्चात् जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में प्रगति सार्थक रूप में सकारात्मक पायी गयी।

२ परिवार-नियोजन कार्यक्रम से जुडे कार्यकर्ताओं के दृष्टिकोण में जनसंख्या-शिक्षा साहित्य के शिक्षण के पश्चात् सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

३ जनसंख्या-शिक्षा विषयक साहित्य के शिक्षण के पश्चात् बालक तथा बालिकाओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन क्रमशः०१ तथा ०.०५ विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक पाया गया।

४ सामान्य नागरिकों(महिला तथा पुरुष) में जनसंख्या-शिक्षा विषयक साहित्य के अवलोकन के पश्चात् जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में आया अंतर ०.०५ विश्वसनीयतास्तर पर सार्थक पाया गया।

५ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन पर नगरीय तथा ग्रामीण एवं लिंग-भेद का सार्थक रूप में प्रभाव नहीं पड़ता।

जी० डी० शर्मा(१९८३) ने अपने जनसंख्या-शिक्षा विषयक शोध-अध्ययन के अधोलिखित उद्देश्य निरूपित किये थे-

१ पति की शैक्षिक योग्यता और परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात करना।

२ परिवार के सामाजिक स्तर तथा परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात करना।

३ छोटे परिवार और जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शैक्षिक योग्यता वाले दम्पतियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

४ शोध परिणामो के आधार पर जनसंख्या आधिक्य की समस्या के समाधान हेतु सुझाव देना।

शोधकर्ता ने उपर्युक्त शोध में पाया कि-

१ पति की शैक्षिक योग्यता और परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है।

२ उच्च सामाजिक, आर्थिक स्तरीय व्यक्तियों के परिवार का आकार निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तरीय परिवारों की अपेक्षा छोटा पाया गया।

३ व्यक्तियों के शैक्षिक-स्तर तथा जनसंख्या-शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये जाने के प्रति दृष्टिकोण में धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया।

आर० अमृत गावरी (१९८३) ने हाईस्कूल स्तरीय बच्चों में जनसंख्या-शिक्षा के शिक्षण की प्रभावी शिक्षण-विधियों विषयक एम० फिल० स्तरीय शोध में जनसंख्या-शिक्षा तथा ग्रामीण नगरीय परिवेश,आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के मध्य सकारात्मक सह-सम्बन्ध पाया।

सरस्वती अग्रवाल (१९९०) ने प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों की जनसंख्या-समस्या के प्रति जागरूकता तथा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण विषयक पी-एच.डी. स्तरीय शोध कार्य के निष्कर्षों में जातीय कारक की प्रमुख भूमिका का उल्लेख किया है। शोधकर्ता ने पाया कि उच्च जाति के शिक्षक अन्य शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

एस० कुलश्रेष्ठ(१९९०) ने शिक्षिकाओं के जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषयक अपने शोध में पाया कि अप्रशिक्षित शिक्षिकायें, शिक्षित प्रशिक्षिकाओं की तुलना में सकारात्मक दृष्टिकोण रखतीं हैं।

नवजवान शिक्षिकाओं के संदर्भ में अन्य की तुलना में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि हुई।

पी० ऊषा अब्राहम (१९९१) ने माध्यमिक स्तरीय छात्रों की जनसंख्या विषयक संदर्भों में जागरूकता, दृष्टिकोण एवं कुशलता विषयक शोध में धर्म, लिंग तथा शैक्षिक स्तर को महत्वपूर्ण कारक पाये जाने का उल्लेख किया है।

के० वी० जार्ज(१९९१) ने यौन शिक्षा के प्रति शारीरिक कार्य की (फिजियोलाजिकल) तथा मनोवैज्ञानिक चरों के संदर्भ में लिंग भेद की महत्वपूर्ण भूमिका की पुष्टि की है। शोध निष्कर्ष में आवास, परिवार के आकार, सामाजिक, आर्थिक स्तर तथा धर्म आदि के आधार पर बालक तथा बालिकाओं के प्रत्यक्षीकरण में भेद पाये जाने का उल्लेख किया गया है।

एम० एस० क्यू० मर्थी(१९९१) ने ग्रामीण अविवाहित बालिकाओं में यौन-क्रियाओं तथा सन्तानोपत्ति विषयक प्रत्ययों के निर्माण में सम्पन्न जाति और धर्म को महत्वपूर्ण कारक पाया है। शोध निष्कर्षों से हरिजन बालिकाओं में यौन क्रियाओं तथा संतानोत्पत्ति के प्रति प्रत्यय निर्माण में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि हुयी है। धार्मिक आधार पर किये गये वर्गीकरण में मुस्लिम तथा हिन्दू बालिकाओं के प्रत्यय निर्माण में स्पष्ट अंतर पाये जाने की पुष्टि की है। शोध निष्कर्षों से मुस्लिम बालिकाओं में यौन क्रियाओं तथा संतानोत्पत्ति के प्रति प्रत्यय निर्माण में तथा प्रत्यक्षीकरण में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया गया।

कु० एस० (१९९१) ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषयक अपने शोध निष्कर्षों का उल्लेख करते हुए अभिमत व्यक्त किया है कि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टि कोण तथा तद्विषयक ज्ञान परस्पर एक दूसरे से सह-सम्बन्धित हैं। शोधकर्त्री के निष्कर्षों से पिता वर्ग की अपेक्षा माताओं में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण की पुष्टि हुयी है।

एस० अख्तर (१९९८) ने शिक्षकों की जानकारी तथा आर्थिक स्तर को जनसंख्या-शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण कारक माना है।

आर० पटनायक(१९९८) द्वारा सम्पन्न जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मापन विषयक अपने लघु शोध प्रबंधीय अध्ययन में शैक्षिक स्तर को महत्वपूर्ण कारक पाया, किन्तु शोधकर्ता ने चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों के परिवार-नियोजन शिक्षा तथा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के पाये जाने का उल्लेख किया है।

संदर्भित अनुसंधानों का विश्लेषण

विभिन्न संदर्भित शोधों का उद्देश्य जनसंख्या-शिक्षा और उससे संम्बधित विविध पक्षों के प्रति शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना था ताकि शोध के परिणाम जनसंख्या-शिक्षा कार्यक्रम की रुपरेखा निर्माण तथा उसके क्रियान्वयन हेतु दिशा निर्देश का कार्य कर सकें।

जनसंख्या आधिक्य का व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की आर्थिक समृध्दि पर पडने वाले प्रभाव इस समस्या के निस्तारण हेतु परिवार नियोजन कार्यक्रम तथा जनसंख्या-शिक्षा-कार्यक्रम द्वारा किये गये शासकीय प्रयासों का ज्ञान, जनसंख्या परिसीमन हेतु शासकीय हस्तक्षेप तथा जनसंख्या-शिक्षा को औपचारिक शिक्षा का आवश्यक अंग बनाने के प्रति शिक्षको, छात्रों और अभिभावकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, इन शोधों का प्रमुख उद्देश्य रहा है।

संदर्भित अनुसंधान सर्वेक्षण प्रकृति के है जिनमें दत्तों का संकलन प्रश्नावली तथा साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है।

शोध परिणामों का सामान्यीकरण

जनसंख्या तथा परिवार नियोजन

१ अधिकांश शिक्षक, छात्र तथा अभिभावक जनसंख्या आधिक्य को जीवन की गुणवत्ता, तथा देश के आर्थिक विकास पर पडने वाले प्रभाव के प्रति जागरुक पाये गये। यद्यपि अधिकांश शिक्षकों, छात्रों

तथा अभिभावकों को जनांकिकी तथ्यों यथा-जनसंख्या-आकार वृद्धि-दर, आयु अनुपात, स्थानान्तरण दर आदि के विषय में पर्याप्त जानकारी नही थी। शोध निष्कर्षों में यह भी पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाताओं को देश की सरकार द्वारा जनसंख्या नियंत्रण हेतु किये गये प्रयासों तथा उनकी जनसंख्या नीतियों का भी पर्याय ज्ञान नही है।

२ शिक्षक,छात्र तथा अभिभावकों ने जनसंख्या परिसीमन हेतु परिवार नियोजन के कृत्रिम साधनों के अपनाने के पक्ष में मत किया, किन्तु इनमें से प्रत्येक ने गर्भ समापन को कानूनन वैध ठहराने को उचित नही माना और न ही किसी ने परिवार के आकार को सीमित करने हेतु प्रत्यक्ष शासकीय हस्तक्षेप को उचित माना है।

३ अधिकांश लोगों का अभिमत आया था कि परिवार के आकार को नियोजित किया जा सकता है, बच्चों की अधिकता माँ के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है, इसलिये जन्म अंतराल आवश्यक है। सीमित परिवार, परिवार की खुशहाली के लिये आवश्यक है। उत्तरदाताओं का अभिमत था कि जन-आधिक्य, आर्थिक तथा सामाजिक अस्थिरता को जन्म देता है। लोगों का यह भी मानना था कि जन-आधिक्य आर्थिक तथा सामाजिक अस्थिरता को जन्म देता है। लोगों का यह भी मानना था कि विवाह की आयु में बढोत्तरी परिवार को सीमित करने का प्रभावी कदम है। कुछ शोध निष्कर्षों में पारस्परिक विरोधाभास भी पाया गया। यथा एक ओर यह भी मानना है कि जनशक्ति आर्थिक प्रगति के लिये आवश्यक है, किन्तु दूसरी ओर यह विश्वास व्यक्त करना कि जनसंख्या की अधिकता आर्थिक दुर्बलता का प्रमुख कारण है। शोध परिणामों से यह तथ्य भी स्पष्ट हुआ कि प्रायः सभी परिवारो में बालकों को वरीयता दी जाती है।

४ अधिकांश शोधों में परिवार में बच्चों की उपयुक्त संख्या २ से ४ तक मानी गयी है।

५ विभिन्न शोध परिणामों में जनसंख्या शिक्षा के विषय में जानकारी तथा दृष्टिकोण के संदर्भ में लिंग-भेद सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक पाया गया। जहाँ तक परिवार के आर्थिक स्तर का प्रश्न है, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवार जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है। जनसंख्या समस्या के प्रति ज्ञान तथा दृष्टिकोण के प्रति विभिन्न शोधों में धार्मिक आधार पर परिणामों में एकरूपता नही पायी गयी।

कुछ शोधों में पाया गया कि सामाजिक विषय तथा शारीरिक शिक्षा विषयक शिक्षक जनसंख्या शिक्षा के प्रति जागरूक तथा सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है, जबकि कुछ शोधों में प्राकृतिक विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान के शिक्षकों में अधिक साकारात्मक दृष्टिकोण का पाया जाना बताया गया है। जनसंख्या शिक्षा को प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ करने के पीछे एक तर्क यह भी प्रकट हुआ कि यह उन बच्चों की दृष्टि से उपयोगी और आवश्यक है, जो विविध कारणों से प्राथमिक शिक्षा के पश्चात् अपनी औपचारिक विद्यालयी शिक्षा से वंचित हो जाते हैं।

शोध के निष्कर्षों से एक प्रवृत्ति यह भी स्पष्ट हुई कि यौन शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के प्रति शिक्षक, छात्रों और अभिभावकों में नकारात्मक दृष्टिकोण नही है। जैसा कि सामान्य माना जाता है तथा इसके हाईस्कूल तथा विश्वविद्यालयी स्तर पर जनसंख्या-शिक्षा पाठ्क्रम के साथ सम्मिलित करने की पक्षधारता की है।

जनसंख्या-शिक्षा

१ अधिकांश शोध परिणामों में पाया गया है कि शिक्षक तथा छात्र पाठ्क्रम में जनसंख्या शिक्षा को सम्मलित किये जाने वाले प्रयासों के प्रति जागरुक नही है। बहुत कम शिक्षक और छात्र पाये गये जिन्हें जनसंख्या शिक्षा की वास्तविक परिभाषा एवं इसके प्रत्यय का समुचित ज्ञान है। अधिकांश शिक्षक और छात्र जनसंख्या-शिक्षा को परिवार नियोजन और जनसंख्या परिसीमन से भिन्न नही मानते है।

२ अधिकांश शोध परिणाम जनसंख्या-शिक्षा को विद्यालय पाठ्क्रम में सम्मलित किये जाने के पक्ष में पाये गये, ताकि छात्रों में परिवार के आकार तथा दायित्वपूर्ण पितृत्व के प्रति सही दृष्टिकोण का विकास हो सके तथा जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को रोका जा सके। वह शोध परिणाम जो इसमें सहमत नही थे उनमें उत्तरदाताओं का मानना था कि छात्र अपरिपक्व होते है, इसलिये जनसंख्या-शिक्षा जैसे विवादग्रस्त विषय- का शिक्षण उचित नही है।

३ अधिकांश शोध परिणामों में पाया गया कि जनसंख्या-शिक्षा को स्वतंत्र विषय के स्थान पर अन्य विद्यालयी विषयों के साथ समन्वित किया जाना चाहिये। सामाजिक विज्ञान विषयों को सबसे उपयुक्त पाया गया, जबकि जनसंख्या-शिक्षा को सम्मिलित किये जाने वाले कम उपयुक्त विषयों की श्रेणी में विज्ञान, बायोलॉजी, भूगोल, अर्थशास्त्र, स्वास्थ्य, गणित तथा भाषा आदि है।

४ जनसंख्या-शिक्षा के शिक्षण के संदर्भ में भिन्न-भिन्न शोधों में भिन्न-भिन्न परिणाम दृष्टिगोचर हुए। कतिपय शोधों में पाया गया कि शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा शिक्षण में दक्ष नही है, जबकि अन्य शोध में पाया गया कि शिक्षकों को जनसंख्या-शिक्षा का अध्ययन करना चाहिये, जबकि एक अन्य शोध में पाया गया कि शिक्षकों के स्थान पर वाह्य विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाना चाहिये।

५ अधिकांश शोध परिणामों में पाया गया कि जनसंख्या-शिक्षा को माध्यमिक तथा महाविद्यालयी/विश्वविद्यालयी स्तर पर पढाया जाना चाहिये। कतिपय शोध परिणामों में विभिन्न शैक्षिक स्तरों के लिये भिन्न-भिन्न पाठ्य वस्तु की अनुशंसा की गयी है यथा-जनसंख्या आधिक्य एवं छोटे परिवार की आवश्यकता प्राथमिक स्तर पर, माध्यमिक स्तर पर छोटे परिवार का प्रत्यय और इसके लाभ जनांकिकी प्रत्यय, जनसंख्या कार्यक्रम और शासकीय नीतियां, मानव प्रजनन तथा विश्वविद्यारलय स्तर पर परिवार नियोजन, परिवार नियोजन हेतु कृत्रिम

साधनों का प्रयोग तथा मानव प्रजनन जैसे तथ्यों का शिक्षण किया जाना चाहिये।

६ अधिकांश लोगो ने जनसंख्या-शिक्षा की निम्नलिखित विषय वस्तु सुझायी है- जनसंख्या और उसका जीवन की गुणवत्ता के विविध पक्षों में सह सम्बन्ध, जनांकिकी प्रत्यय, जनसंख्या विकास की प्रवृत्तियां तथा परिणाम, जनसंख्या समस्या का समाधान, पारिवारिक जीवन और परिवार नियोजन आदि। कुछ शोधों में मानव पुनरुत्पादन तथा परिवार नियोजन को जनसंख्या शिक्षा में सम्मिलित न किये जाने को उचित माना गया है।

७ जनसंख्या-शिक्षा पाठ्यक्रम के अंर्तगत यौन शिक्षा तथा अन्य विवादित प्रकरण तथा यौन प्रत्ययों का नामकरण, मानव प्रजनन अंगों का चित्रण, परिवार नियोजन के कृत्रिम साधनों का शिक्षण किये जाने के पक्ष में अधिकांश शिक्षकों छात्रों व अभिभावकों ने मत व्यक्त किया। इनका मानना था कि इससे बच्चे में सही दृष्टिकोण और समायोजित व्यक्तित्व का विकास हो सकेगा, जबकि कुछ ने इस आधार पर इनके शिक्षण का प्रतिवाद किया कि बच्चे अपरिपक्व होते हैं। यह प्रकरण उनमें अनैतिकता को विकसित करेंगे।

८ अधिकांश शोध के परिणाम यौन शिक्षा को अन्य विषयों- बॉयोलाजी, स्वास्थ्य और सामाजिक विषयों के साथ सम्मिलित करने तथा शिक्षकों व डाक्टरों द्वारा पढ़ाये जाने के पक्ष धर पाये गये।

६ यौन शिक्षा के अंतर्गत प्रजनन अंगों की संरचना, परिवार नियोजन के कृत्रिम साधनों का शिक्षण तथा किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों आदि का शिक्षण किया जाना चाहिये। अधिकांश शोध परिणाम हाईस्कूल स्तर से जनसंख्या-शिक्षा के समावेश के पक्ष में है।

१० महिला शिक्षकों की अपेक्षा पुरुष शिक्षकों का दृष्टिकोंण अधिक सकारात्मक पाया गया तथा वे जनसंख्या शिक्षण के प्रति अपेक्षाकृत अधिक उत्सुक पाये गये।

शोध-परिणामों का सारांश

संदर्भित शोधों में अधिकांश में किसी स्पष्ट प्रवृत्ति के स्थान पर मिले- जुले परिणाम दृष्टिगोचर हुये है। यहां तक कि कुछ शोधों में जिनमें जनांकिकी विशेषताओं तथा जनसंख्या विषयक जानकारी, दृष्टिकोण के मध्य सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया है वह भी किसी स्पष्ट प्रवृत्ति और निष्कर्ष तक नही पहुँची है। अतएव यह आवश्यक माना जाना चाहिये कि जनसंख्या शिक्षा विषयक अध्ययनों में विभिन्न चरों यथा–आयु, लिंग, शिक्षा, रोजगार, निवास स्थान, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा संस्कृति परिवेश एवं विवाह सम्बन्धी वैयक्तिक कारकों के प्रभाव के अध्ययन को भी सम्मलित किया जाना चाहिये। इन अधिकांश शोधों में दत्तों का विश्लेषण तथा शोध निष्कर्ष वितरण एवं प्रतिशतता की विधि की गणना के आधार पर निकाले गये है। अतएव अधिक सारगर्भित निष्कर्षों के उद्देश्य से उच्च साख्यिकीय विधियों का प्रयोग वांच्छित है।

एक विशिष्ट प्रवृत्ति इन शोधों में यह भी उभरकर सामने आयी, कि सामान्यतः शिक्षक और छात्र जनसंख्या समस्या के प्रति जागरूक है, किन्तु उनमें जनसंख्या–शिक्षा की वास्तविक परिभाषा तथा जनांकिकी प्रत्ययों के विषय में यथेष्ट जानकारी का अभाव है। अतएव शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्क्रमों में इनका समावेश अपेक्षित है।

विभिन्न शोध परिणामों में यह भी सामान्यतः पाया गया कि शिक्षक, छात्र तथा अभिवावक सरकार द्वारा परिवार के आकार को सीमित करने के प्रत्यक्ष दबाव के पक्ष में नही है। जनसंख्या–शिक्षा की पाठ्वस्तु के रूप में भी ऐसे पाठों को न रखा जाये जो बच्चों को एक या दो बच्चों तक सीमित परिवार के आकार हेतु सोचने को बाध्य करते हों।

शोध निष्कर्षों से एक तथ्य यह भी स्पष्ट हुआ कि अधिकांश उत्तरदाता जनसंख्या–शिक्षा को परिवार नियोजन कार्यक्रम तथा यौन–शिक्षा का पर्याय मानते हैं। अतएव आवश्यक है कि इस भ्रान्ति को दूर किया जाये।

शोध निष्कर्षों से उत्तरदाताओं की इस मनोंवृत्ति का भी प्रकटन हुआ है कि वे जनसंख्या-शिक्षा को माध्यमिक तथा विश्वविद्यालयी स्तर पर अन्य विषयों के साथ संलग्न कर पढ़ाये जाने के पक्ष में हैं तथा जनसंख्या-शिक्षा को स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ाये जाने के प्रति नाकारात्मक मत व्यक्त करते है।

पूर्व सम्पन्न शोध निष्कर्षों के परिप्रेदय में वर्तमान शोध की प्रासंगिकता-

पूर्व सम्पन्न शोधों के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि शिक्षकों तथा छात्रों में जनसंख्या-शिक्षा के प्रत्यय, जनसंख्या-शिक्षा तथा यौन शिक्षा के पारस्परिक अंतर आदि के संदर्भ में पर्याप्त ज्ञान का अभाव है। उत्तरदाता समूह इस अर्थ में भी एकमत नही पाये गये है कि जनसंख्या-शिक्षा को पृथक विषय के रूप में अथवा किसी विषयक के साथ जोड़कर तथा शिक्षा के किस स्तर से पढ़ाया जाये।

अधिकांश शोध कार्यों में सभी स्तर के शिक्षकों को सम्मलित न करके मात्र किसी स्तर विशेष के शिक्षकों तक ही सीमित रखा गया है, जिससे एक व्यापक निष्कर्ष का अभाव दृष्टिगोचर हुआ है। पूर्व सम्पन्न अधिकांश शोध नगरीय परिवेश तथा मात्र पुरुष शिक्षकों के दृष्टिकोण से सम्बन्धित है। जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक शोधों में मनो सामाजिक कारकों की भूमिका विषयक शोध प्रायः नगण्य हैं।

अस्तु वर्तमान शोध शिक्षा के विभिन्न स्तरों से सम्बन्धित नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं में से न्यादर्श के चयन तथा अभिवृत्ति में मनो-सामाजिक कारकों की भूमिका के अध्ययन के परिणामस्वरूप अधिक व्यापक तथा समन्वित है। शोधकर्त्री का विश्वास है कि वर्तमान शोध अपने अपेक्षित सारगर्भित निष्कर्षों के परिणामस्वरूप प्रासंगिक तथा अत्यन्त उपयोगी है।
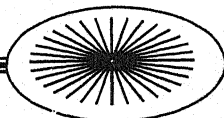
तृतीय - अध्याय

तृतीय - अध्याय

शोध - विधि

अध्याय - 3

अनुसंधान-विधि

शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुत अध्याय में शोध क्षेत्र के भौगोलिक स्थिति, शोध की प्रकृति, शोध की जनसंख्या तथा प्रतिदर्श, प्रतिचयन की विभिन्न विधियाँ, वर्तमान शोध हेतु प्रतिदर्श चयन में प्रयुक्त विधि प्रतिदर्श चयन हेतु प्रयुक्त उपकरण तथा उनका विवरण एवं प्राप्त दत्तों से सारगर्भित निष्कर्ष निकाले जाने हेतु प्रयुक्त सांख्यकीय का उल्लेख समाहित है।

सम्पूर्ण अध्ययन की विषय वस्तु दो खण्ड़ों में विभक्त है। प्रथम खण्ड़ में शोध क्षेत्र की भौगोलिक, आर्थिक तथा शैक्षिक स्थिति, जनसंख्या, प्रतिदर्श संकलन की विभिन्न विधियाँ इत्यादि का विवरण निहित है जब कि- अध्याय के द्वितीय भाग में प्रस्तुत शोध की जनसंख्या, प्रतिदर्श, प्रतिदर्श चयन हेतु प्रयुक्त विधि, प्रयुक्त उपकरण तथा संख्यकीय का उल्लेख किया गया है।

प्रथम खण्ड

शोध क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति-

प्रस्तुत शोध उत्तर-प्रदेश के कानपुर-मण्डल के जनपदों-कानपुर, कानपुर देहात, औरैया और फरूर्खाबाद में स्थिति विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के प्राध्यापक/प्राध्यापिकाओं में से लिए गये न्यादर्श पर आधारित है। भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण में यमुना नदी तथा उत्तर में गंगा नदी शोध क्षेत्र की प्राकृतिक सीमाएँ है। शोध क्षेत्र के पूर्व में उन्नाव जनपद, दक्षिण-पूर्व में फतेहपुर व हमीरपुर तथा दक्षिण में हमीरपुर व जालौन जनपद स्थिति हैं। जबकि पश्चिमी सीमा में मध्यप्रदेश का भिण्ड जनपद की बाह तहसील है। शोध क्षेत्र उत्तर-पश्चिम में मैनपुरी तथा एटा, उत्तर में बदायूँ व शाहजहाँपुर तथा उत्तर-पूर्व में हरदोई जनपद से घिरा हुआ है।

सम्पूर्ण शोध क्षेत्र ७८° ३०' पूर्वी देशान्तर सें ८०° ३०' पूर्वी देशान्तर तथा २६° उत्तरी अक्षांश २७° ४५° उत्तरी अक्षांश के मध्य अवस्थित है।

आर्थिक तथा औद्योगिक स्थिति-

प्रस्तुत क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से गंगा-यमुना के दोआबा में स्थिति है। यहाँ की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है तथा आर्थिक दष्टि से यह सम्पन्न तथा खुशहाल क्षेत्र है।

कानपुर मण्ड़ल में स्थिति कानपुर नगर उत्तर प्रदेश की औद्योगिक राजधानी कही जाती है। औरैया नगर अनाज की बहुत बड़ी मण्डी है। फर्रूखाबाद के किसान आलू उत्पादन में विशेष रूचि रखते हैं। कन्नौज इत्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र के किसान गुलाब की खेती बहुतायत में करते हैं।

कानपुर मण्डल की साक्षरता स्थिति-

जनगणना वर्ष २००१ की जनगणना के अनुसार कानपुर मण्डल का साक्षरता प्रतिशत ७०.७२ है; जिसमें पुरुष साक्षरता प्रतिशत ७८.७६ है जब कि महिलाओं का साक्षरता प्रतिशत ६१.३५ है। जहाँ तक ग्रामीण तथा नगरीय जनसंख्या की साक्षरता प्रतिशत का प्रश्न है, ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत ६५.६६ है। जिसमें पुरुषों का साक्षरता प्रतिशत ७६.६८ तथा महिलाओं का साक्षरता ५२.७२ प्रतिशत है। मण्डल में नगरीय साक्षरता प्रतिशत से अनुमान के अनुरूप ही ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत से अधिक है। मण्डल में ग्रामीण साक्षरता प्रतिशत ६५.६६ के स्थान पर नगरीय जनसंख्या का साक्षरता प्रतिशत ७६.४६ है। नगरीय पुरूष साक्षरता ८२.४३ प्रतिशत है जब कि ग्रामीण पुरूष साक्षरता का प्रतिशत ७६.६८ है। नगर की महिला साक्षरता प्रतिशत ७६.०८ प्रतिशत की तुलना में ग्रामीण महिला साक्षरता प्रतिशत मात्र ५२.७२ होना स्पष्ट रूप से ग्रामीण महिला साक्षरता प्रतिशत के कम होने का प्रगटीकरण है। मण्डल की ग्रामीण तथा नगरीय साक्षरता को अधोलिखित तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका ३.१

साक्षरता प्रतिशत - जनगणना वर्ष- २००१

क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत		
	कुल	पुरुष	महिला
कानपुर मण्डल	७०.७२	७८.७६	६१.३५
ग्रामीण	६५.६६	७६.६८	५२.७२
नगरीय	७६.४६	८२.४३	७६.०८

शोध की जनसंख्या :-

किसी शोध की जनसंख्या से तात्पर्य शोध क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली वह सम्पूर्ण इकाइयाँ हैं जिन पर शोध किया जाना है। यथा- 'माध्यमिक स्तरीय बालकों की शैक्षिक रुचियों का विकास', नामक शोध में शोध क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सम्पूर्ण माध्यमिक स्तरीय बालकों का समूह शोध की जनसंख्या कहलायेगी।

प्रतिदर्श:-

शोध में प्रतिदर्श से तात्पर्य शोध की जनसंख्या में से चुनी गयी इकाइयों का वह समूह है। जिसमें सम्पूर्ण-जनसंख्या के गुण-धर्म विद्यमान हों अर्थात प्रतिदर्श किसी बड़े समूह का प्रतिनिधित्व करता है। तथा इस प्रतिनिधिकारी समूह में बड़े समूह की सभी विशेषताएँ विद्यमान मानी जाती हैं।

प्रतिदर्श के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों की अधोलिखित परिभाषाओं का उल्लेख समीचीन होगा-

समाज विज्ञानी विद्वान कारलिंगर ने प्रतिदर्श को परिभाषित करते हुए लिखा है, "प्रतिदर्श जनसंख्या या लोक में से लिया गया कोई

भाग होता है जो जनसंख्या या लोक के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता है।''[12]

गुडे व हॉट प्रतिदर्श को विशाल सम्पूर्ण समूह का छोटा प्रतिनिधि मानते हैं।'' एक प्रतिदर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट है किसी विशाल समूह का छोटा प्रतिनिधि है।''[13]

श्रीमती यंग, प्रतिदर्श को सम्पूर्ण में से लिए गये उसके लघु चित्र के रूप परिभाषित करती हैं। ''एक सांख्यकीय प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण समूह या योग का एक अति लघु चित्र है, जिसमें से कि प्रतिदर्श लिया गया है।''[14]

प्रतिदर्श चयन की विधियाँ :-

शिक्षा तथा समाज-मनोविज्ञान विषयक शोधों में जनसंख्या की समस्त इकाइयों पर शोध कार्य करना सम्भव नहीं होता क्योंकि शोध क्षेत्र तथा जनसंख्या की व्यापकता शोधकर्त्री की सामर्थ्य तथा साधनों की सीमा से परे होती है। अतएव शोध की जनसंख्या में से उसके प्रतिदर्श के चयन का प्रत्यय अस्तित्व में आया है। वास्तव में यदि एक ऐसे प्रतिदर्श का चयन किया जा सके जो सम्पूर्ण जनसंख्या का यथेष्ट रूप में प्रतिनिधित्व करता हो तो प्रतिदर्श के आधार पर निकाले गये निष्कर्ष वस्तुतः सम्पूर्ण जनसंख्या के संदर्भ में निष्कर्ष माने जा सकते हैं।

शोध की प्रकृति तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए प्रतिदर्श-चयन की विभिन्न विधियाँ अपनायी जाती हैं। जिन्हें समान्यतः दो वर्गों में बाँटा जा सकता है[15]-

---

12 F.N. "Karlinger,Foundastion of Behavioinal Research "-(New york, Holt Rinehart and Winston, inc. 1969) -Page.52

13 W.J. "Goode & P.K. Hatt, Methods in Social Research "-(New York, Mc Graw Hill, 1952) - Page- 201

14 P.V. Young, " Scientific Social Sarvey and Research", Bombay, (Asia /Publishing House, 1966) - Page-302

15 गोविंद तिवारी,- ''शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसंधान के मूलाधार''- (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९७९) पृ०सं०- २१९

(अ) सम्भाव्य या प्रायिकता प्रति चयन

(ब) असम्भाव्य या अप्रायिकता प्रति चयन

(अ) सम्भाव्य या प्रायिकता प्रति चयन:-

सम्भाव्य या प्रायिकता प्रतिचयन के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं-

(१) - यादृच्छिक प्रतिचयन

(२) - यादृच्छिक संख्या सारिणी प्रतिचयन

(३) - व्यवस्थित प्रतिचयन

(४) - स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन

(५) - गुच्छ प्रतिचयन

(ब) असम्भाव्य या अप्रायिकता प्रतिचयन:-

असम्भाव्य या अप्रायिकता प्रतिचयन के मुख्य प्रकार निम्नलिखित हैं-

(१) सोद्देश्य प्रतिचयन

(२) यथांश प्रतिचयन

शोधकर्त्री अपने उद्देश्यों के प्रकाश में उपरोक्त विधियों में से उपयुक्त विधि के माध्यम से प्रतिदर्श का चयन करती है।

शोध उपकरण :-

शोध क्षेत्र की जनसंख्या से न्यादर्श के चयन के पश्चात न्यादर्श की इकाइयों से शोध के उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में अपेक्षित ज्ञान, सूचना आदि का प्राप्त किया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। इस अपेक्षित ज्ञान/ सूचना इत्यादि के संकलन हेतु प्रयुक्त साधनों को शोध की भाषा में उपकरण कहते हैं अर्थात शोध के उपकरण वह साधन तथा माध्यम हैं। जिनके द्वारा शोध-इकाइयों से अपेक्षित सूचनाओं का संकलन किया जाता है।

सामान्यतः शोध कार्यों में अधोलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जाता है[१६] -

अ- अन्वेषण प्रपत्र-

१. प्रश्नावली

२. अनुसूची

३. चैकलिस्ट

४. निर्धारण मापनी

५. प्राप्तांक पत्र

६. अभिवृत्ति मापनी

ब- निरीक्षण

स- साक्षात्कार

द- समाजमिति

इ- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

शोधकर्त्री अपने शोध की प्रकृति तथा उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त उपकरणों में से उपयुक्त उपकरण के माध्यम से वांछित सूचनाओं का संकलन करती है।

द्वितीय खण्ड :-

वर्तमान शोध की प्रकृति :-

प्रस्तुत शोध विषय वर्णनात्मक सर्वेक्षण कोटि का है। वर्णनात्मक विधि का उद्देश्य वर्तमान में जो कुछ है उसका अध्ययन तथा व्याख्या करना है। वर्णनात्मक विधि उन विभिन्न दशाओं, सहसम्बन्ध, विश्वास, अभिवृत्ति का भी विवेचन करती है; जो विकसित हो रही होती हैं।

वास्तव में वर्णनात्मक विधि दत्तों का संकलन तथा उनका सारणीयन मात्र नहीं है। अपितु यह आंकड़ों में अन्तर्निहित मर्मों का भी उद्घाटन करती है।

---

[16] सुखिया एवं मेहरोत्रा, शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९७०) पृ०सं०- १६६

वर्णनात्मक विधि की प्रकृति को स्पष्ट करने की दृष्टि से अधोलिखित परिभाषाएँ प्रासांगिक हैं –

बेस्ट के अनुसार " वर्णानात्मक अनुसंधान क्या है, की व्याख्या एवं निर्वचन या विश्लेष्ण करता है परिस्थितियां या सम्बन्ध जो वर्तमान में हैं, अभ्यास जो चालू है; विश्वास, विचारधारा, या अभिवृत्तियाँ जो पायी जा रहीं हैं, प्रक्रियायें जो चल रहीं है; अनुभव जो किये जा रहे हैं या दिशायें जो विकसित हो रहीं हैं उन्हीं से इसका सम्बन्ध है।"[१७]

मोले महोदय के अनुसार "वर्णनात्मक या सर्वेक्षण सम्बधी अनुसंधान शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक उपयोग में आता है। इसको सर्वे, नार्मोटिव सर्वे, स्टेट्स व वर्णनात्मक अनुसंधान आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। यह एक विस्तृत वर्गीकरण है जिसके अन्तर्गत अनेक विशिष्टि विधियाँ एवं प्रक्रियायें आती हैं जो कि उद्‌देश्य की दृष्टि से लगभग समान होती हैं। तथा यह उद्‌देश्य होता है- अध्ययन से सम्बन्धित विषय के स्तर का निर्धारण करना।"[१८]

वर्तमान शोध की जनसंख्या :-

वर्तमान शोध, कानपुर नगर, कानपुर देहात, औरैया तथा फर्रूखाबाद जनपद के प्राथमिक, माध्यमिक तथा महाविद्यालय स्तरीय शिक्षक/शिक्षकाओं पर आधारित है, अस्तु इन जनपदों के विभिन्न स्तरीय सभी शिक्षा संस्थाओं के सम्पूर्ण शिक्षक तथा शिक्षिकाएँ वर्तमान शोध की जनसंख्या है।

वर्तमान शोध का प्रतिदर्श :-

वर्तमान शोध के प्रतिदर्श में शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की बराबर संख्या में ली गयी इकाइयों की संख्या ९०० है। अर्थात प्रतिदर्श में ४५० शिक्षक तथा ४५० शिक्षिकाएँ सम्मिलित की गयी हैं। परिवेशीय आधार पर भी ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश से लीगयी शिक्षक/शिक्षिकाओं की

[17] J.B. Best, Research in Education, (Prentice-Hall of India Private Ltd., New Delhi, - 1978) Page- 116

संख्या समान है। जहाँ तक विभिन्न शिक्षण स्तरीय इकाइयों का प्रश्न है, वह भी समान है अर्थात शिक्षक/शिक्षिकाओं के समूह में सम्मिलित इकाइयाँ प्रत्येक शिक्षणस्तर तथा नगरीय एवं ग्रामीण परिवेश की दृष्टि से भी समान हैं।

प्रतिदर्श में शिक्षक/शिक्षिकाओं, ग्रामीण-नगरीय तथा शिक्षण स्तर - प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च के आधार पर वर्गीकृत एवं चयनित इकाइयों को अधोलिखित रूप में तालिकाबद्ध किया गया है-

तालिका ३.२

न्यादर्श में सम्मिलित शिक्षक-शिक्षिकाएँ :

परिवेश तथा शिक्षण स्तरानुसार

शिक्षण स्तर	नगरीय			योग	ग्रामीण			योग	महा योग
	प्रा०	मा०	उच्च		प्रा०	मा०	उच्च		
शिक्षक	७५	७५	७५	२२५	७५	७५	७५	२२५	४५०
शिक्षकाएँ	७५	७५	७५	२२५	७५	७५	७५	२२५	४५०
योग	१५०	१५०	१५०	४५०	१५०	१५०	१५०	४५०	९००

उपरोक्त न्यादर्श नगर क्षेत्र के नौ प्राथमिक, आठ माध्यमिक तथा सात महाविद्यालयों तथा ग्रामीण क्षेत्र के बीस प्राथमिक आठ माध्यमिक तथा आठ महाविद्यालयों से लिया गया है। इस प्रकार उन्तीस प्राथमिक, सोलह माध्यमिक तथा पन्द्रह महाविद्यालयों अर्थात कुल साठ शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक/शिक्षिकाओं के समूह में से लिये गये न्यादर्श को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है-

[18] G.J. Mouley, The Science of Educational Research (New Delhi, Eurasia Publishing House Pvt. Ltd., 1964)- Page- 231

तालिका क्रमांक-३.३

शिक्षण संस्थाएं : नगरीय तथा ग्रामीण

परिवेश	शिक्षण स्तर			
	प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च	योग
नगरीय	६	८	७	२४
ग्रामीण	२०	८	८	३६
योग	२६	१६	१५	६०

वर्तमान शोध के प्रतिचयन में प्रयुक्त विधि-

प्रतिदर्श और प्रतिदर्श चयन की विधि, वस्तुतः शोध के उद्देश्य पर निर्भर करती है। शोध के उद्देश्य के प्रकाश में ही प्रतिचयन की विभिन्न विधियो में से उपयुक्त विधि का चयन किया जाता है। वर्तमान शोध के उद्देश्यों में ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश मे स्थिति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन समाहित था अर्थात ग्रामीण तथा नगरीय दोनो ही परिवेशो में स्थिति विभिन्न स्तरीय शिक्षण संस्थाओ से शिक्षको तथा शिक्षिकाओं के समूह से प्रतिदर्श का चयन अभीष्ट था।

शोध की प्रकति तथा उद्देशों के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान शोध के प्रतिचयन हेतु स्तरित यादृदच्छिक प्रतिचयन (Stratitied Random Sampling) विधि को उपयुक्त समझा गया है। इसलिए शोधकर्त्री ने शोध क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली समस्त शिक्षण संस्थाओं को दो वर्गो-ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश में वर्गीकृत किया था। शिक्षण संस्थाओ के ग्रामीण तथा नगरीय वर्गीकरण के पश्चात प्रत्येक परिवेश में स्थिति बालक तथा बालिका विद्यालयो को विभिन्न स्तरों- प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च में वर्गीकृत किया गया था। ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के बालक तथा बालिका विद्यालयों को स्तरानुसार- वर्गीकृत करने के पश्चात इन शिक्षण संस्थाओ में

से दत्तों के संकलन हेतु रेण्डम में सेम्पिलिंग विधि (लाटरी विधि) से शिक्षण संस्थाओं का चयन किया गया था। दत्तों के संकलन हेतु शिक्षण संस्थाओं के विनिश्चयन के पश्चात उपरोक्त संस्थाओं से अपेक्षित संस्था में शिक्षक-शिक्षिकाओं का लाटरी विधि से चयन करने के पश्चात् शोध में प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणो का प्रशासन करके दत्तों का संकलन किया गया था।

-- शोध में मानकीकृत परीक्षणों के द्वारा शिक्षक-शिक्षिकाओ की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यो का ज्ञान अभीष्ट था । यद्यपि इन परीक्षणों के प्रशासन में किसी क्रम विशेष की बाध्यता एवं अपेक्षा नहीं थी तथापि शोधकर्त्री ने पहले जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण विषयक परीक्षण का प्रशासन किया था तदोपरांत जीवन- मूल्यों विषयक परीक्षण का प्रशासन किया था।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षण-

शोध परिणामों की सत्यता तथा सार्थकता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि शोध में अपेक्षित जानकारी ज्ञान तथा संकलित सूचनाएँ कितनी विश्वसनीय तथा वैध है तथा शोध के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले गये हैं वे कितने वस्तुपरक हैं अर्थात शोध के निष्कर्षों की ग्राह्यता इस बात पर निर्भर करती है कि जिन उपकरणो के माध्यम से सूचनाएँ संकलित की गयीं हैं वह कितनी विश्वसनीय तथा वैध हैं। परीक्षण की विश्वसनीयता से आशय परीक्षण वे उस गुण से है जिसके फलस्वरूप परीक्षण-पुनर्षरीक्षण में परिणाम समान आते है । जहाँ तक उपकरण की वैद्यता का प्रश्न है यह किसी परीक्षण का वह गुण है जो यह दर्शाता है कि कोई उपकरण विशेष उस गुण का ही मापन करता है जिसके मापन हेतु उस उपकरण (परीक्षण) का निर्माण किया गया है । शिक्षा तथा मनोवैज्ञानिक अनुसंधानो में प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है जिनकी विश्वनीयता तथा वैद्यता सुनिश्चित है।

वर्तमान शोध में दो मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया है- (१) शोढ़ी एवं शर्मा द्वारा परीक्षण जो जनसंख्या - शिक्षा के प्रति शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का मापन करता है। (२) डा० आर० के० ओझा द्वारा निर्मित "मूल्य अध्ययन" जो शिक्षक/शिक्षिकाओं के जीवन-मूल्यों का मापन करता है।

शोढ़ी एवं शर्मा (१६८५) द्वारा निर्मित अभिवृत्ति मापनी दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में सीमित परिवार के प्रतिअभिवृत्ति से सम्बन्धित १८ प्रश्न है जबकि परीक्षण के द्वितीय भाग में १६ प्रश्न जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार परीक्षण मे कुल ३४ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर हेतु तीन विकल्प हाँ, नही तथा निश्चित नहीं हैं।

प्रत्येक प्रश्न के हाँ/नहीं विकल्पो का संख्यात्मक मान +१ अथवा -१ है जबकि "निश्चित नहीं" विकल्प का संख्यात्मक मान शून्य है।

परीक्षण -

पुनर्परीक्षण विधि से ज्ञात परीक्षण की विश्वसनीयता ०.६४ है। परीक्षण से प्राप्त धनात्मक प्राप्तांकों के आधार पर शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को तालिका ३.४ के अनुरूप निम्न, मध्यम निम्न, मध्यम उच्च तथा उच्च वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

तालिका ३.४

जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति-वर्गीकरण

प्राप्तांक	नाम वर्ग
०-३	निम्न
४-८	मध्यम निम्न
६-१३	मध्यम उच्च
१४-१६	उच्च

मूल्य अध्ययन[19]:-

वर्तमान शोध में प्रयुक्त 'मूल्य अध्ययन' परीक्षण छः प्रमुख मूल्यों सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक का अध्ययन करता है। परीक्षण के दो भाग हैं। प्रथम भाग में प्रश्नों की संख्या ३० है तथा प्रत्येक प्रश्न के उत्तर दो हैं जबकि द्वितीय भाग मे १५ प्रश्न हैं। जिनमें प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प हैं। यद्यपि परीक्षण की कोई निश्चित समय सीमा नहीं हैं तथापि सामान्यतः परीक्षण के उत्तरो हेतु ४० मिनट का समय पर्याप्त है।

प्रथम भाग के विकल्पों के फलांकन में सहमत विकल्प के लिये तीन तथा असहमत के लिये शून्य अंक देय है। यदि उत्तरदाता की दोनों विकल्पों में सहमति सापेक्षिक है तो जिस विकल्प से अधिक सहमत है उसमें दो तथा कम सहमत विकल्प में एक अंक देना है। इसी प्रकार द्वितीय भाग के विकल्पों में सबसे अधिक सहमत, सहमत, कम सहमत तथा असहमत विकल्पों हेतु क्रमशः ४, ३, २, और १ अंक देना है।

अर्द्धविच्छेद विधि से ज्ञात, परिक्षण की विश्वसनीयता, विभिन्न मूल्यों– सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्म, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक हेतु क्रमशः .७८, ८१, ,७६, .८२, .८३ व .८४ है

प्रयुक्त सांख्यकी -:

प्रस्तुत शोध में दत्तों के विश्लेष्ण हेतु मध्यमांक, मध्यक विचलन, दो मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता तथा सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है शोध परिणामों की विश्वसनीयता का प्ररिक्षण ०.०५ स्तर पर किया गया है।

[19] आर.के. ओझा 'मूल्य अध्ययन' (नेशनल साइक्लोजिक कारपोरेशन–आगरा) २००१

चतुर्थ - अध्याय

चतुर्थ - अध्याय

चरों का सारणीयन, विश्लेषण एवं परिणामों की व्याख्या

४.१. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों का दृष्टिकोण

४.२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति प्राथमिक स्तरीय शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण

४.३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों का दृष्टिकोण

४.४ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तरीय शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण

४.५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति महाविद्यालय स्तरीय शिक्षकों का दृष्टिकोण

४.६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति महाविद्यालय स्तरीय शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण

४.७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण (सम्पूर्ण शिक्षक)

४.८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षिकाओं का दृष्टिकोण (सम्पूर्ण शिक्षिकायें)

४.९. जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों के दृष्टिकोण की पारस्परिक तुलना

४.१०. जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण की पारस्परिक तुलना

४.११. जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण की पारस्परिक तुलना

४.१२. जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों के दृष्टिकोण तथा विभिन्न चरों के मध्य सह सम्बन्ध

४.१३. जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण तथा विभिन्न चरों के मध्य से सह-सम्बन्ध

४.१४. परिणामों की व्याख्या

४.१५. शोध परिणामों की पूर्व शोध निष्कर्षों से तुलना

४.१६ शोध परिणामों का सारांश

अध्याय :४

दत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

विषय -प्रवेश

प्रस्तुत अध्याय शोध-प्रबन्ध का महत्वपूर्ण भाग है जिसमें विभिन्न उपकरणों के माध्यम से एकत्रित दत्तों का सारणीयन, विश्लेषण तथा व्याख्या समाहित है। वस्तुतः किसी शोध कार्य के परिणामो की उपयुक्ता की कसौटी इस बात पर निर्भर करती है कि प्राप्त दत्तों के आधार पर कितने सारगर्भित परिणाम निकाले जाते हैं शोध परिणाम व्यापक जनसंख्या का किस सीमा तक प्रतिनिधित्व करते हैं। क्योंकि किसी शोध कार्य में किसी समस्या से सम्बन्धित विशिष्ट परिणामों का सामान्यीकरण का गुण ही उपादेय होता है।

प्रस्तुत अध्याय की विषय वस्तु को तीन सोपानों में विभक्त किया गया है। सर्वप्रथम दत्तों का सारणीयन किया गया है। तत्पश्चात शोध से विभिन्न प्रश्नों के सम्यक् उत्तरों की प्राप्ति हेतु आवश्यक सांख्यिकीय विधियों–मध्यमान, मानक विचलन, समानांतर माध्यों की पारस्परिक तुलना तथा सहसम्बन्ध गुणांक का प्रयोग करते हुए शोध की परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है। परिकल्पनाओं के परिक्षण के पश्चात् शोध परिणामों की व्याख्या तथा पूर्व शोध निष्कर्षों से वर्तमान परिणामों की तुलना की गई है। तथा अध्याय के अन्त में प्राप्त निष्कर्षों का उल्लेख किया गया है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्तिः-

जनसंख्या–शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के सम्बन्ध में अद्योलिखित शोध प्रश्न का यथेष्ट उत्तर अपेक्षित है।

"क्या जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

उपर्युक्त शोध प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण किया है-

परिकल्पना-१

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है।"

उपरोक्त परिकल्पना के परीक्षण हेतु शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से सम्बन्धित मध्यमान तथा मानक विचलन तालिका ४.१ में दर्शाया गया है।

तालिका ४.१

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति

शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति

शिक्षक/ शिक्षिकाएं	अभिवृत्ति		
	N	M	S.D.
शिक्षक	४५०	११.८८	३.५६
शिक्षिकाएं	४५०	११.६४	३.२६
शिक्षक-शिक्षिकाएं	९००	११.७६	३.४१

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति क्रमशः ११.८८ तथा ११.६४ है जबकि मानक विचलन का मान क्रमशः ३.५६ तथा ३.२६है। सम्पूर्ण न्यादर्श हेतु समानांतर माध्य का मान ११.७६ तथा मानक विचलन का मान ३.४१ है। तालिका ४.१ में दर्शित मध्यमानों से यह भी विदित होता है कि शिक्षिकाओं की तुलना में शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कुछ अधिक है। मानक विचलन का मान भी शिक्षकों के संदर्भ

में शिक्षिकाओं से अधिक है जो इस तथ्य का द्योतक है कि शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों में अभिवृत्ति का प्रसरण अधिक है अर्थात शिक्षकों की अभिवृत्ति में अपेक्षाकृत विविधता अधिक है।

जहाँ तक शोध प्रश्न के परिप्रेक्ष्य में अभिवृत्ति के मानों के परीक्षण का प्रश्न है तालिका ३.४ में दर्शाये गए अभिवृत्ति के वर्गीकरण से तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति धनात्मक तथा मध्यम उच्च हैं, अस्तु शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक परिकल्पना की पुष्टि होती है।

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन मूल्य-

विद्वानों का मानना है कि मानव के प्रत्येक व्यवहार में व्यक्ति के जीवन मूल्यों का प्रक्षेपण होता है। शोधकर्त्री ने उक्त धारणा की पुष्टि हेतु प्रस्तुत शोध में यह जानने का प्रयास किया है कि ''क्या जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध है?

संदर्भित प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शोध परिकल्पना-

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।'' का परीक्षण वांछित है।

शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु दोनों चरों के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक

का परिगणन किया गया है तथा सह सम्बन्ध गुणांकों को तालिका ४.२ में दर्शाया गया है।

तालिका ४.२

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति

एवं जीवन मूल्यःपारस्परिक सहसम्बन्ध (सम्पूर्ण न्यादर्श)

जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति	जीवन मूल्य (सह सम्बन्ध गुणांक)					
	सैद्धान्तिक	आर्थिक	सौन्दर्यात्मक	सामाजिक	राजनीतिक	धार्मिक
	-.०५	.०५६	.०१२	.०१६	.०१४	-.०२

तालिका ४.२ में शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य दर्शित सह सम्बन्ध गुणांक के मानों से स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक एवं धार्मिक मूल्यों तथा अभिवृत्ति के मध्य सह सम्बन्ध गुणांक का मान ऋणात्मक है।

अस्तु अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा विविध चर -

प्रस्तुत शोध में शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा अन्य चरों-परिवेश, लिंग, शिक्षण-स्तर आयु तथा परिवार के आकार के मध्य भी सह-सम्बन्ध का परीक्षण अभीष्ट है जो प्रस्तुत शोध के प्रश्न-

"क्या जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध है?"

का यथेष्ट उत्तर होगा।

परिकल्पना ३ -

जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षणस्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध के विषय में शोधकर्त्री का अनुमान है कि-

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध है।''

शोधकर्त्री ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध की गणना की है तथा अभिवृत्ति एवं विविधचरों के मध्य के पारस्परिक सहसम्बन्ध गुणांकों के मान को तालिका ४.३ में प्रस्तुत किया है।

तालिका ४.३

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं विविध चर :

पारस्परिक सह सम्बन्ध- (सम्पूर्ण न्यादर्श)

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति	चर				
	परिवेश	लिंगभेद	शिक्षणस्तर	आयु	परिवार का आकार
	.०५	-.०३	.०६६	-.११३	-.०५

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि शोधकर्त्री द्वारा निर्मित शोध परिकल्पना कि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा विविधचरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षणस्तर, आयु तथा परिवार के आकर के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है, आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य है क्योंकि अभिवृत्ति तथा परिवेश एवं शिक्षणस्तर के मध्य सह सम्बन्ध

गुणांकों का मान ही धनात्मक है जबकि लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य के सहसम्बन्ध गुणांकों के ऋणात्मक मान होने के फलस्वरूप उक्त परिकल्पना की इन चरों के सम्बन्ध में ही धनात्मक सहसम्बन्ध की परिकल्पना की पुष्टि नहीं हुई है।

अस्तु, परिकल्पना ३ मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकारी जाने योग्य है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति-

शोध के उद्देश्यों में सामान्य प्रश्नों के अतिरिक्त कतिपय विशिष्ट प्रश्नों के भी सम्यक उत्तरों का खोजा जाना प्रस्तावित तथा अपेक्षित था जो वस्तुतः जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का विविध पक्षीय अध्ययन की दृष्टि से आवश्यक है। इस क्रम में सर्वप्रथम विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं के सम्बन्ध में अधोलिखित शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्तव्य है-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?"

परिकल्पना-४

ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक उपरोक्त प्रश्न के संदर्भ में शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण किया है-

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है"

उक्त परिकल्पना के परीक्षण के उद्देश्य से ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक आंकड़ों को तालिका ४.४ में दर्शाया गया है। तालिका-४.४ में दर्शित मानों की तुलना अभिवृत्ति के वर्गीकृत मानकों (तालिका ३.४) से की गयी है।

तालिका ४.४ के अवलोकन से स्पष्ट है कि विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षकों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक मध्यमनों के मान प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षकों के सन्दर्भ में क्रमशः १०.४४, १०.६२ तथा १२.४२ है।

तालिका ४.४

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति :

ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाएं

शिक्षक / शिक्षिकाएँ	शिक्षण स्तर			
		प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च
शिक्षक	N	७५	७५	७५
	M	१०.४४	१०.६२	१२.४२
	SD	४.६१	३.६२	३.१७
शिक्षिकाएं	N	७५	७५	७५
	M	११.६६	१०.८	१२.८१
	SD	२.८७	३.०५	२.६३

जहां तक प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा स्तरीय शिक्षकों के संगत मानक विचलनों के मानों का प्रश्न है वह क्रमशः ४.६१, ३.६२ तथा ३.१७ है। ग्रामीण शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक मानों क्रमशः ११.६६, १०.०८ तथा १२.८१ एवं संगत मानक विचलन के मानों क्रमशः २.८७, ३.०५ तथा २.६३ की तुलना अभिवृत्ति के वर्गीकृत मानकों से करने पर स्पष्ट है कि शिक्षक तथा शिक्षिकाओं अर्थात दोनों ही वर्गों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच है, अस्तु उक्त समूह की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक परिकल्पना ४ स्वीकार किये जाने योग्य सिद्ध होती है।

ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं शिक्षण स्तर-

तालिका ४.४ में शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को प्रस्तुत करने से यह विदित होता है कि विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच है तथापि यह तथ्य विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनंसख्या-शिक्षा के प्रति सोच में शिक्षण स्तरीय भेद को प्रकट नहीं कर पा रहे हैं, अस्तु शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को विभन्न शिक्षण स्तरों के मध्य पारस्परिक तुलना के आधार पर क्रान्तिक मानों को ज्ञात किया गया है ताकि उनके शिक्षण स्तर में पारस्परिक भेद की स्थिति क्या है? अर्थात शोध ने समस्या के अधोलिखित प्रश्न- ''क्या ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेद है?''

उपर्युक्त शोध- प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण किया है।

परिकल्पना-५

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद हैं।''

शोध-परिकल्पना पांच के परीक्षण हेतु विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के समानांतर माध्यों तथा मानक विचलन के मानों को तालिका ४.५ में दर्शाया गया है।

तालिका ४.५

ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति : पारस्परिक तुलना

(विभिन्न-शिक्षण स्तर)

शिक्षक/ शिक्षिकाएं	शिक्षण स्तर				क्रान्तिक अनुपात		
		प्राथमिक	माध्य०	उच्च	प्राथ० व माध्य०	माध्य० व उच्च	प्राथ० व उच्च
शिक्षक	N	७५	७५	७५			
	M	१०.४४	१०.६२	१२.४२	१.३७	२.५८▲▲	२.६५▲▲
	SD	४.६१	३.६२	३.१७			
शिक्षिकाएं	N	७५	७५	७५			
	M	११.६६	१०.८	१२.८१	२.४१▲	४.३६▲▲	१.६३
	SD	२.८७	३.०५	२.६३			

▲.०५ स्तर पर मान सार्थक है।

▲▲.०१ स्तर पर मान सार्थक है।

तत्पश्चात् विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों/शिक्षिकाओं के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता का परीक्षण क्रान्तिक अनुपात की गणना करके किया गया है। सर्वप्रथम विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की तुलना हेतु क्रमशः प्राथमिक व माध्यमिक, माध्यमिक व उच्च तथा प्राथमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों के अभिवृत्ति मानों हेतु क्रान्तिक अनुपात

की गणना की गयी है जो क्रमशः १.३७, २.५८ व २.६५ है। इन क्रान्तिक मानों की विश्वसनीयता स्तर से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक व उच्च एवं प्राथमिक व उच्च शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद है तथा यह भेद .०१ स्तर पर सार्थक है।

शिक्षकों की अभिवृत्ति की भांति ही शिक्षिकाओं हेतु भी विभिन्न शिक्षण स्तरों के मध्य क्रान्तिक अनुपातों के मानों का परिगणन किया गया है जो प्राथमिक व माध्यमिक, माध्यमिक व उच्च तथा प्राथमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं के लिए क्रमशः २.४५, ४.३६ तथा १.६३ है।

क्रान्तिक अनुपात के मानों की विश्वसनीयता स्तर के मानक मानों से तुलना करने पर विदित होता है कि प्राथमिक व माध्यमिक स्तरीय शिक्षिकाओं के मध्य अंतर .०५ विश्वसनीयता स्तर पर तथा माध्यमिक व उच्च स्तरीय शिक्षिकाओं के मध्य विश्वसनीयता स्तर पर .०१ पर अंतर सार्थक है जबकि प्राथमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी भी विश्वसनीयता स्तर पर सार्थक भेद नहीं है।

अस्तु, ग्रामीण शिक्षिक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद विषयक परिकल्पना आंशिक रूप से ही स्वीकार की जा सकती है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति-

विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का मूल्यांकन तथा उनकी अभिवृत्तियों में शिक्षण स्तर गत अंतर के परीक्षण के उपरान्त यह आवश्यक प्रतीत होता है कि ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की भांति ही नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का मूल्यांकन किया जाए ताकि शोध के प्रश्न-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?"

उपर्युक्त शोध के प्रश्न के उत्तर के संदर्भ में शोधकर्त्री ने अपने अनुमान को अधोलिखित परिकल्पना में व्यक्त किया है-

परिकल्पना-६

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है।"

नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति जानने तथा सम्बन्धित शोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मध्यमानों को तालिका ४.६ में दर्शाया गया है।

तालिका ४.६

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति : नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाएं

शिक्षक/ शिक्षिकाएँ	शिक्षण स्तर			
		प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च
शिक्षक	N	७५	७५	७५
	M.	१२.६२	११.६५	१३.२२
	S.D	२.४०	३.३५	२.१२
शिक्षिकाएँ	N	७५	७५	७५
	M.	११.८१	१०.८५	१६.६१
	SD	३.५४	३.७५	३.२१

तालिका ४.६ के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति मानों का समान्तर माध्य क्रमशः १२.६२ तथा ११.८२ शिक्षकों के सम्बन्ध में जहाँ मध्यमान का मान

शिक्षिकाओं के संगत मान से अधिक है; वहीं मानक विचलन का मान शिक्षकों की तुलना में शिक्षकाओं का अधिक है। माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर भी आँकड़ों की यही प्रवृत्ति यथावत् रही है। अर्थात मध्यमान के मान शिक्षकों के पक्ष में अधिक हैं। तो मानक विचलन का मान शिक्षिकाओं के सन्दर्भ में अधिक हैं।

जहाँ तक विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्रश्न है। तालिका ३.४ के वर्गीकरण के आधार पर सकारात्मक माना जा सकता है। किन्तु सभी स्तरों पर तथा दोनों ही परीक्षण समूह अर्थात शिक्षको तथा शिक्षिकाओं हेतु सकारात्मकता का स्तर मध्यम उच्च ही पाया गया। परिणामतः जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षकाओं की सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक शोध परिकल्पना-६ के स्वीकार किये जाने हेतु पर्याप्त आधार हैं। अतएव परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं शिक्षण स्तर-

विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनंसख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक मध्यमानों को तालिका ४.६ में दर्शित मानों से विभिन्न शिक्षण स्तरों के मध्य अन्तर तो प्रतीत हो रहा है किन्तु विश्वास पूर्वक इन शिक्षण स्तरों के मध्य अंतर को तब तक नहीं कही जा सकता है जब तक कि सांख्यकीय प्रमाणों के आधार पर इस अन्तर की पुष्टि न हो जाये । वस्तुतः सांख्यकीय आधार पर ही शोध के अधोलिखित प्रश्न-

"क्या जनसंख्या शिक्षण के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षकाओं के अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेंद है?"

शोध विषय के उपरोक्त प्रश्न के उत्तर हेतु शोधकर्त्री द्वारा अधोलिखित शोध-परिकल्पना का निर्माण किया गया है

परिकल्पना-७

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/ शिक्षकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद है ।"

नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय भेद विषयक परिकल्पना के परीक्षण हेतु तालिका ४.७ में अभिवृत्ति विषयक मध्य मान तथा मानक विचलन के मानों को प्रस्तुत किया गया है ।

तत्पश्चात विभिन्न शिक्षण स्तरों के मध्य अन्तर की सार्थकता हेतु क्रांन्तिक अनुपात के मान की गणना की गयी है । प्राप्त क्रन्तिक अनुपात के मान को विश्वसनीयता स्तर के संगत मानों से तुलना के फलस्वरूप अंतर की सार्थकता निश्चित की गयी है ।

तालिका में दर्शाये गये क्रान्तिक अनुपात के मानों से स्पष्ट है कि प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति में अंतर .०५ स्तर पर सार्थक है तथा यह प्राथमिक शिक्षकों के पक्ष में है । जबकि माध्यमिक व उच्च स्तरीय शिक्षकों के मध्य अंतर की सार्थकता ०.०१ विश्वसनीयता स्तर पर है। यद्यपि प्राथमिक तथा उच्च शिक्षको मध्य क्रांन्तिक अनुपात के मान १.८७ होने के कारण यह अंतर न तो ०.०५ स्तर पर और न ही ०.०१ स्तर पर सार्थक है ।

-- नगरीय शिक्षकाओं के सन्दर्भ में किन्हीं भी शिक्षण स्तरों के मध्य अंतर सार्थक नहीं है क्योंकि क्रान्तिक अनुपात का अधिकतम मान

प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षिकाओं के मध्य १.६ है जो किसी भी विश्वसनीयता स्तर संगत मान से कम है।

तालिका ४.७

नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्तिः पारस्परिक तुलना
(विभिन्न शिक्षण स्तर)

शिक्षक/ शिक्षिकाएँ		शिक्षण स्तर			क्रान्तिक अनुपात		
		प्राथ.	माध्य.	उच्च	प्रा० व माध्य.	माध्य. व उच्च	प्राथ. व उच्च
शिक्षक	N	७५	७५	७५			
	M	१२.६२	११.६५	१३.२२	२.०६▲	३.४८ ▲▲	१.८७
	SD	२.४०	३.३५	२.१२			
शिक्षिकाएँ	N	७५	७५	७५			
	M	११.८१	१०.८५	११.६१	१.६	१.३५	.३६
	SD	३.५४	३.७५	३.२१			

▲▲.०१ स्तर पर सार्थक परिणाम

▲.०५ स्तर पर सार्थक परिणाम

परिणामतः शिक्षक/ शिक्षकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षण स्तरीय सार्थक अंतर होने विषयक शोध परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही सत्य माने जाने योग्य है ।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्तिः विभिन्न शिक्षण स्तर -

ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश को आधार मानकर विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का मूल्यांकन करने के बावजूद यह आवश्यक माना गया है कि शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक निष्कर्ष निकाला जाय अस्तु ग्रामीण तथा नगरीय न्यादर्श के संयुक्त स्वरूप के आधार पर जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक मान तालिका ४.८ में दर्शाये गये है जिनसे अधोलिखित प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है- " क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है ।"
उपरोक्त शोध प्रश्न के सम्बन्ध में निर्मित शोध-परिकल्पना का परीक्षण किया जाना है ।

परिकल्पना -८

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है ?"

तालिका ४.८- शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति : विभिन्न शिक्षण स्तर

शिक्षक / शिक्षिकाएँ		शिक्षण स्तर		
		प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च
शिक्षक	N	१५०	१५०	१५०
	M	११.५३	११.२८	१२.८२
	S.D	३.६४	३.६६	२.७३
शिक्षिकाएँ	N	१५०	१५०	१५०
	M	११.८८	१०.८२	१२.२४
	S.D	३.२२	३.४१	२.६६

तालिका ४.८ में दर्शित अभिवृत्ति के समान्तर माध्यों के मानों से स्पष्ट है कि तीनो ही शिक्षण स्तरो के शिक्षकों ने जनसख्या शिक्षा

के प्रति मध्यम उच्च अभिवृत्ति दर्शायी है जहाँ तक मानक विचलन का प्रश्न है उसका मान प्राथमिक शिक्षण स्तर से उच्च शिक्षणस्तर की ओर ह्रास की प्रवृत्ति लिए हुए है क्योकि जहाँ प्राथमिक स्तर पर मानक विचलन का मान ३.६४ था वहीं घटकर उच्च शिक्षण स्तर पर मान २.७३ है।

अस्तु, शिक्षकों के सम्बध में शोध पर परिकल्पना स्वीकार किये जाने योग्य है।

शिक्षकों की भाँति ही शिक्षिकाओं ने भी शिक्षण के तीनों स्तरों पर जनसंख्या-शिक्षा के प्रति मध्यम उच्च श्रेणी की अभिवृत्ति प्रदर्शित की है । साथ ही साथ मानक विचलन के सम्बन्ध में भी प्राथमिक शिक्षण से उच्च शिक्षण स्तर की ओर ह्रसोंन्मुखी प्रवृत्ति पायी गयी है ।

सारांशतः विभिन्न शिक्षा स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं शिक्षण स्तर-:

तालिका ४.८ में विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को दर्शाने तथा संगत मानों की वर्गीकरण तालिका ३.४ से तुलना करने के फलस्वरूप विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की सकारात्मकता के ज्ञान के बावजूद विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में पारस्परिक भेद की स्थिति की अवगति नहीं होती है तथ शोध के अधोलिखित प्रश्न-

''क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है ?''

शोध के उपर्युक्त प्रश्न के सदर्भ में शोधकर्त्री द्वारा निर्मित निम्नलिखित शोध परिकल्पना को परिणामों के आधार पर स्वीकृत या अस्वीकृत किया जाना है।

शोध परिकल्पना एं :-

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के सार्थक भेद है।"

तालिका ४.९ - जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की आभिवृत्तिः पारस्परिक तुलना (विभिन्न शिक्षण स्तर)

शिक्षक/ शिक्षिकाएँ		शिक्षण स्तर			क्रान्तिक अनुपात		
		प्राथ० दत्त **N** =१५०	माध्य० दत्त **N** =१५०	उच्च दत्त **N** =१५०	प्रा० एवं मा०	मा० एवं उच्च	प्रा० एवं उच्च
शिक्षक	N	१५०	१५०	१५०			
	M	११.५३	११.२८	१२.८२			
	SD	३.६४	३.६६	२.७३	.५८	४.१६▲▲	३.३▲▲
शिक्षिकाएँ	N	१५०	१५०	१५०			
	M	११.८८	१०.८२	१२.२४			
	SD	३.२२	३.४१	२.६६	२.७८ ▲▲	३.८३▲▲	१.०२

▲.०५ स्तर पर परिणाम सार्थक

▲▲.०१ स्तर पर परिणम सार्थक

शोध समस्या की परिकल्पना ९ के परीक्षण हेतु विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं के मध्यमानों की पारस्परिक तुलना की गयी है।

उक्त तुलना के लिए मध्यमानों की मानक त्रुटि निकालने के पश्चात् किन्हीं दो समूहों के मध्यमानों के अंतर को मध्यमानों की मानक त्रुटि से भाग देकर क्रान्तिक अनुपात के मानों की गणना की गयी है। इस प्रकार प्राप्त क्रान्तिक अनुपात के मानों की विभिन्न सार्थकता स्तर के संगत मानों से तुलना के आधार पर मध्यमानों के अंतर की सार्थकता का परीक्षण किया गया है। तालिका ४.६ में शिक्षण स्तरों प्राथमिक एवं माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च तथा प्राथमिक एवं उच्च के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का परीक्षण किया गया है। शिक्षकों के समूह में माध्यमिक एवं उच्च तथा प्राथमिक एवं उच्च शिक्षकों के बीच क्रान्तिक अनुपात का मान क्रमशः ४.१६ तथा ३.३ है, जो .०१ सार्थकता स्तर पर सार्थक होने के लिये अपेक्षित मान २.५८ से अधिक है अर्थात उक्त दोनों ही मान .०१ स्तर पर सार्थक है । प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों के बीच क्रान्तिक अनुपात का मान .५८ है जो .०५ स्तर पर भी सार्थक होने हेतु अपेक्षित मान १.६६ से कम है अर्थात प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद नहीं है।

जहाँ तक विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के सार्थक भेद का प्रश्न है, वह प्राथमिक व माध्यमिक तथा माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण स्तरों के मध्य .०१ स्तर पर सार्थक है, क्योंकि प्राथमिक एवं माध्यमिक तथा माध्यमिक एवं उच्च दोनों ही तुलनाओं में क्रान्तिक अनुपात का मान .०१ स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित मान २.५८ से अधिक है। निःसन्देह प्राथमिक एवं उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद नही है, क्योंकि इन वर्गों हेतु गणित क्रान्तिक अनुपात का मान मात्र १.०२ है जो जनसांखिकीय दृष्टि से सार्थकता सीमा से दूर है।

उपरोक्त सांख्यकीय विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना आंशिक रूप में ही स्वीकृत की जा सकती है।

जनसंख्या- शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा लिंग-भेद -

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में लिंग-भेद के प्रभाव का अध्ययन तीन चरणों में किया गया है। सर्वप्रथम ग्रामीण परिवेश के शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना की गयी है । दूसरे चरण में नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मध्य पारस्परिक तुलना तथा अंतिम चरण तृतीय में दोनों परिवेशों के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के मध्य पारस्परिक तुलना की गयी है। उक्त तीनों प्रकार से तुलना करने के मूल में उद्देश्य यह रहा है कि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग-भेद की स्थिति स्पष्ट हो सके ।

ग्रामीण शिक्षक -शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा लिंग-भेद -

ग्रामीण शिक्षक - शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में लिंग-भेद की भूमिका के सम्बन्ध में शोध में अधोलिखित प्रश्न का उत्तर अपेक्षित है-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है।" शोध के उपर्युक्त प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना बनायी है जिसका परीक्षण वांछित है।

परिकल्पना-१०

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है।"

परिकल्पना १० परीक्षण हेतु अभिवृत्ति विषयक आकड़ों को तालिका ४.१० में दर्शाया गया है ।

तालिका ४.१०

ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्तिः

पारस्परिक तुलना

शिक्षक / शिक्षिकाएं	शिक्षण स्तर								
	प्राथमिक			माध्यमिक			उच्च		
	N	M	SD	N	M	SD	N	M	SD
शिक्षक	७५	१०.४४	४.६१	७५	१०.६२	३.६२	७५	१२.४२	३.१७
शिक्षिकाएं	७५	११.६६	२.८७	७५	१०.८	३.०५	७५	१२.८१	२.६३
क्रान्तिक अनुपात	२.३३			०.२१			०.८२		

विभिन्न स्तरों से सम्बन्धित शिक्षकाओं के मध्यमानों की तुलना की गई है तथा मध्यमान के मध्य अंतर की सार्थकता हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी है । तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मध्य क्रान्तिक अनुपात का मान क्रमशः २.३३, ०.२१ तथा .८२ है जो स्पष्टतः प्राथमिक स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में .०५ स्तर पर सार्थक भेद की पुष्टि करता है । शेष दो स्तरों- माध्यमिक तथा उच्च के सन्दर्भ में क्रान्तिक अनुपात के मान क्रमशः .२१ तथा .८२ है, जो सार्थकता स्तर हेतु अपेक्षित मान से कम होने के फलस्वरूप इन शिक्षण स्तरों पर शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर की पुष्टि नही करते ।

अस्तु विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकार की जाती हैं ।

नगरीय शिक्षक - शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा लिंग-भेद -

प्रस्तुत स्तम्भ में नगरीय शिक्षक - शिक्षिकाओं की जनसंख्या - शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग भेद की भूमिका का परीक्षण किया जाना है अर्थात शोध के अधोलिखित प्रश्न -

" क्या जनसंख्या - शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान हैं ?"

का सम्यक उत्तर अभीष्ट है । प्रस्तुत शोध प्रश्न के सन्दर्भ में शोधकर्त्री ने अपने परिणाम के सम्बन्ध में अपने अनुमान को अधोलिखित शोध परिकल्पना के रूप में व्यक्त किया है -

परिकल्पना-११

" जनसंख्या- शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है । "

उपर्युक्त शोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु सम्बन्धित अंक सांख्यिकीय का मान तालिका ४.११ में प्रदर्शित किये गये हैं । विभिन्न शिक्षण स्तरों पर लिंग भेद के अध्ययन हेतु शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जनसंख्या - शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता का परीक्षण क्रान्तिक अनुपात के मान की गणना के आधार पर किया गया है । तत्पश्चात प्राप्त क्रान्तिक मान की तुलना.०५ विश्वसनीयता स्तर तथा .०१ विश्वसनीयता स्तर पर सार्थकता हेतु आवश्यक मानों क्रमशः १.९६ तथा २.५८ से करने के आधार पर सम्बन्धित शिक्षण स्तरों पर शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मध्य सार्थक भेद का परीक्षण किया गया है ।

तालिका ४.११

नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति :

पारस्परिक तुलना

शिक्षण/ शिक्षिकाएं	विभिन्न शिक्षण स्तर								
	प्राथमिक			माध्यमिक			उच्च		
	N	M	SD	N	M	SD	N	M	SD
शिक्षक	७५	१२.६२	२.४	७५	११.६५	३.३५	७५	१३.२२	२.१२
शिक्षिकाएं	७५	११.८१	३.५४	७५	१०.८५	३.७५	७५	११.६१	३.२१
क्रान्तिक अनुपात	१.६५			१.३७			३.६५▲		

▲.०१ पर सार्थक

तालिका ४.११ में दर्शाये गये क्रान्तिक अनुपातों का मान प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर क्रमशः १.६५ तथा १.३७ है जो सार्थक भेद हेतु अपेक्षित क्रान्तिक मान से कम है ; अस्तु प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षण स्तरों पर लिंग-भेद की पुष्टि नहीं हुई है जबकि उच्च शिक्षण स्तर पर क्रान्तिक अनुपात का मान ३.६५ है जो .०१ स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षिक मान २.५८ से अधिक है ; अस्तु यह कहने का पर्याप्त आधार है कि उच्च शिक्षण स्तर पर नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है अर्थात उच्च शिक्षण स्तर पर पुरूषों की अभिवृत्ति शिक्षिकाओं की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक है ।

शोध परिणामों से विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद मूलक परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकार तथा आंशिक रूप से अस्वीकार की जाती है ।

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा लिंग भेद -

ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में लिंगभेद के अध्ययन के पश्चात विभिन्न शिक्षण स्तरीय सम्पूर्ण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना अपेक्षित है ताकि समग्र न्यादर्श में लिंग भेद की स्थिति स्पष्ट हो सके तथा शोध विषयक अधोलिखित शोध प्रश्न समुचित रूप में उत्तरित हो सके-

''क्या जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षा स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है ? ''

उपर्युक्त शोध के संदर्भ में निर्मित अघोलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण अपेक्षित है ।

परिकल्पना १२

''जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है । ''

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग-भेद का प्रभाव समग्र रूप में जानने के उद्देश्य से विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक मध्यमान तथा मानक विचलन के मानों को तालिका ४.१२ में दर्शाया गया है । समान्तर माध्यों के पारस्परिक अंतर की सार्थकता हेतु की गयी क्रान्तिक अनुपात की गणना से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मध्य क्रांतिक अनुपात का मान .८५ है जो अंतर की साकर्थकता हेतु अपेक्षित मानक मान से कम है

तालिका ४.१२

शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति :

पारस्परिक तुलना

शिक्षण/ शिक्षिकाएं		शिक्षण स्तर			
		प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च	योग
शिक्षक	N	१५०	१५०	१५०	४५०
	M	११.५३	११.२८	१२.८२	११.८८
	SD	३.६४	३.६६	२.७३	३.५६
शिक्षिकायें	N	१५०	१५०	१५०	४५०
	M	११.८८	१०.८२	१२.२४	११.६४
	SD	३.२२	३.४१	२.६६	३.२६
क्रान्तिक अनुपात		.८५	१.१५	१.७५	१.०६

अतएव यह मानने का पर्याप्त आधार है कि प्राथमिक स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद नहीं है । सबसे अधिक क्रान्तिक अनुपात का मान उच्च स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के मध्य १.७५ है किन्तु क्रान्तिक अनुपात का यह मान भी .०५ स्तर पर अंतर के सार्थक होने के लिए अपेक्षित न्यूनतम मान १.९६ से कम ;है इसलिए उच्च शिक्षण तथा माध्यमिक शिक्षण स्तर पर भी लिंग भेद के प्रभाव को मानने का कोई आधार नहीं है । चूँकि शिक्षा के तीनों स्तरों से सम्बन्धित क्रान्तिक अनुपातों के मान न्यूनतम सार्थकता स्तर मान से कम है अतएव शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के कुल समूह के मध्य अंतर न आना स्वाभाविक ही था जो सम्पूर्ण न्यादर्श लिंग

भेद से सम्बन्धित क्रान्तिक अनुपात के मान १.०६ होने से भी स्वतः स्पष्ट है ।

अस्तु, विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना १२ पूर्णतया निरस्त किए जाने योग्य है क्योंकि सांख्यकीय आधार पर इन समूहों के मध्य अंतर की पुष्टि नहीं हो सकी है ।

जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा परिवेश-

मानव व्यक्तित्व के निर्माण में परिवेश जनित कारक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । वास्तव इसमें परिवेश को मोटे तौर पर दो रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है -

१- सांस्कृतिक परिवेश

२-भौतिक परिवेश

सांस्कृतिक परिवेश के अन्तर्गत किसी समाज की आधारभूत मान्यतायें तथा उसकी जीवन-शैली आती है जो व्यक्ति के भावनात्मक व्यक्तित्व का गठन करती है। जबकि भौतिक परिवेश के अंतर्गत सामान्यतः वह परिस्थितियाँ है जिनमें व्यक्ति जीवन-यापन तथा जीवन निर्वाह का रहा है। यद्यपि प्रकरान्तर से भौतिक परिवेश ही सांस्कृतिक परिवेश का भी निर्माण करता है। मानव जाति के इतिहास में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में विकसित सांस्कृतिक परिदृश्य से इस तथ्य की भली भांति पुष्टि होती है। अस्तु, प्रस्तुत शोध में परिवेश को भौतिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में ही देख गया है तथा इसे मोटे तौर पर ग्रामीण तथा नगरीय रूपों में वर्गीकृत किया गया है, क्योंकि ग्रामीण तथा नगरीय परिस्थितियों में जीवन यापन की दशाओं, रहन-सहन व जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं आदि के स्वरूप में पूर्ण अंतर होता है। जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में परिवेशीय कारक की भूमिका का अध्ययन भी तीन चरणों में ही किया गया है प्रथम चरण में ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षको के मध्य पारस्परिक तुलना की गयी

है ताकि परिणामों में लिंग-भेद की भूमिका सीमित की जा सके। दूसरे चरण में ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति की पारस्परिक तुलना की गयी है। इस वर्गीकरण के मूल में भी लिंग भेद की भूमिका को नगण्य करने का ही उद्देश्य समाहित रहा है। तृतीय तथा अंतिम चरण में सम्पूर्ण न्यादर्श को ग्रामीण तथा नगरीय में वर्गीकृत करके तुलना की गयी है जिसमें लिंग भेद के प्रभाव को इस आधार पर उपेक्षणीय माना गया है कि चूँकि दोनों ही परिवेशों में अर्थात ग्रामीण तथा नगरीय में शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की संख्या समान है अतः लिंग-भेद जनित प्रभाव अन्ततः निष्प्रभावी हो जायेगा।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा परिवेश-

शिक्षको की अभिवृत्ति में परिवेशीय कारक की भूमिका के मूल्यांकन की दृष्टि से विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षकों को ग्रामीण तथा नगरीय वर्गो में वर्गीकृत किया गया है तथ्य वर्गीकृत अभिवृत्ति विषयक सांख्यकीय तथ्यों को तालिका ४.१३ में दर्शाया गया है ।

तालिका ४.१३-

ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति : पारस्परिक तुलना

परिवेश	शिक्षण स्तर								
	प्राथमिक			माध्यमिक			उच्च		
	N	M	SD	N	M	SD	N	M	SD
ग्रामीण	७५	१०.४४	४.६१	७५	१०.६२	३.६२	७५	१२.४२	३.७१
नगरीय	७५	१२.६२	२.४	७५	११.६५	३.३५	७५	१३.२२	२.१२
क्रान्तिक अनुपात	३.४६			१.२३▲▲			२.४८▲▲		

▲▲.०५ स्तर पर अंतर सार्थक

▲.०१ स्तर पर अंतर सार्थक

जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण विषयक ग्रामीण शिक्षकों के मध्यमान प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर क्रमशः १०.४४, १०.६२ तथा १२.४२ हैं जो नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति विषयक संगत मध्यमानों क्रमशः १२.६२,११.६५ तथा १३.२२ से कम है । जो यह स्पष्ट करती है कि प्रत्येक शिक्षण स्तर पर शिक्षकों की तुलना में नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति अपेक्षा कृत अधिक सकारात्मक है । जहाँ तक मानक विचलन के मानों का प्रश्न है, ग्रामीण शिक्षकों के प्रतेक शिक्षण स्तर पर नगरीय शिक्षकों के संगत शिक्षण स्तर पर मानक विचलन के मानों से अधिक है ।

तालिका में दर्शाये गये ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षको की अभिवृत्ति विषयक मानों की विविधता के परिप्रेक्ष्य में इस स्थान पर अधोलिखित शोध प्रश्न का तथ्य परक उत्तर आँकडो की विविधता पर सम्यक प्रकाश डाल सकेगा।

शोध प्रश्न-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति समान है? "

तालिका ४.१३ में प्रदर्शित मानों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में वास्तविक अन्तर होगा अतएव उक्त प्रश्न के सन्दर्भ में अधोलिखित परिकल्पना निरूपित करना स्वाभाविक ही है।

परिकल्पना १३-

" जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति सार्थक भेद है। "

ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षको की अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना का पुष्टिकरण सांख्यकीय निष्कर्षो की अपेक्षा रखता है। तब और केवल तब ही ऐसी परिकल्पना स्वीकार य अस्वीकार की जा

सकती है। अस्तु, उपरोक्त परिकल्पना की पुष्टि हेतु विभिन्न शिक्षण स्तरों हेतु प्राप्त अभिवृत्ति के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता का परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात के मानों का परिगणन किया गया है।

तालिका में उल्लिखित क्रांतिक अनुपात के मानों जो शिक्षा स्तरों प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च पर क्रमशः ३.४६,१.२३ व२.४८ है, से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों के मध्यमानों के मध्य.०१ स्तर पर अंतर सार्थक है अर्थात प्राथमिक स्तर नगरीय शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है। जहाँ तक माध्यमिक स्तर के ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में अंतर की सार्थकता का प्रश्न है, उसका उत्तर नकारात्मक ही है क्योंकि सार्थक अन्तर की पुष्टि हेतु अपेक्षित क्रान्तिक अनुपात के मान से कम मान का पाया जाना इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है ।

उच्च शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों के सम्बन्धित मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की पुष्टि का होना यह प्रमाणित करता है कि ग्रामीण शिक्षको की तुलना में नगरीय शिक्षकों की अभिृवत्ति अधिक सकारात्मक है। उच्च शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों के मध्यमानों के सम्बन्ध में प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान २.४८, ०.०५ स्तर पर अन्तर की सार्थकता की पुष्टि करता है।

अस्तु निष्कर्षतः प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तर पर तो ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर की पुष्टि होती है किन्तु माध्यमिक स्तर पर अंतर सार्थक स्वीकारने का सांख्यकीय आधार नहीं है।

परिणामतः ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की विभिन्न स्तरों पर अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार की जा सकती है।

जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा परिवेश-

शिक्षकों की अभिवृत्ति में परिवेशीय कारक की भूमिका के मूल्यांकन के पश्चात् शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में भी ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश की भूमिका का आंकलन आवश्यक है

शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की परिवेश के सापेक्ष तुलना करने के उददे्श्य से विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक मध्यमानों तथा मानक विचलन के मानों को तलिका ४.१४ में प्रदर्शित किया गया है आंकड़ों का सांख्यकीय विश्लेषण परिवेशीय कारक की भूमिका को स्पष्ट कर सकेगा तथा शोध के प्रश्न-

"क्या जनसंख्या शिक्षकों के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?"

शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक उपरोक्त प्रश्न के सम्बन्ध में परिणामों का पूर्वानुमान करते हुए शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना परीक्षण हेतु प्रस्तावित की है।

परिकल्पना- १४-

" जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षा स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेदहै।"

उपरोक्त शोध परिकल्पना का परीक्षण तालिका ४.१४ में उल्लिखित मानों के सांख्यकीय विश्लेषण के आधार पर किया गया है।

तालिका ४.१४

ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकाओं की अभिवृत्ति : पारस्परिक तुलना

परिवेश	शिक्षण स्तर								
	प्राथमिक			माध्यमिक			उच्च		
	N	M	SD	N	M	SD	N	M	SD
ग्रामीण	७५	११.६६	२.८७	७५	१०.८	३.०५	७५	१२.८१	२.६३
नगरीय	७५	११.८१	३.५४	७५	१०.८५	३.७५	७५	११.६१	३.२१
क्रान्तिक अनुपात	.२८			.०६			२.५५▲		

▲.०५ स्तर पर परिणाम सार्थक

तालिका ४.१४ में प्रदर्शित ऑकडे स्पष्ट करते हैं कि प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तर पर ग्रामीण शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति संगत शिक्षणस्तर पर नगरीय शिक्षिकाओं से अपेक्षा कृत अधिक है जब कि मानक विचलनों के मान दोनों ही स्तरों पर ग्रामीण शिक्षिकाओं के लिए कम है। जहाँ तक माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मध्यमान तथा मानक विचलनों के मानों का प्रश्न है यह दोनों ही समूहों के लिए लगभग समान है।

मध्यमानों मे अन्तर की सार्थकता हेतु गठित क्रान्तिक अनुपातों का मान प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरो पर क्रमशः .२८, .०६ तथा २.५५ है। जो इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण देता है कि मान उच्च शिक्षण स्तर पर ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद हैं, तथा ग्रामीण शिक्षकाओं की अभिवृत्ति नगरीय शिक्षिकाओं की तुलना में अधिक है।

परिणामतः ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक अंतर विषयक परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार्य है।

जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा परिवेश-

प्रस्तुत स्तम्भ के अन्तर्गत सम्पूर्ण न्यादर्श को दो वर्गों-ग्रामीण तथा नगरीय में वर्गीकृत करके शिक्षकों-शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में परिवेशीय प्रभाव की भूमिका का परीक्षण करने का प्रयास किया गया है। यद्यपि शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के संदर्भ में प्रथक प्रथक रूप में की गयी गणना के आधार पर इन समूह वर्गों में परिवेशीय कारक की भूमिका को संक्षेप में लिया जा चुका है तथापि ४.१५ के अनुरूप वर्गीकृत ऑकड़े परिवेशीय कारक की भूमिका समग्र रूप में व्यक्त कर सकेगें तथा शोध प्रश्न-

''क्या जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?''

का यथेष्ट उत्तर के साथ ही

शोध परिकल्पना-

''जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है। ''

को अस्वीकार अथवा स्वीकार किये जाने का सांख्यकीय आधार प्रस्तुत कर सकेगें

वस्तुतः तालिका ४.१५ में दर्शित ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मध्यमानों की
पारस्परिक तुलना हेतु मध्यमानों के अंतर की सार्थकता ज्ञात की गयी है।

तालिका ४.१५

विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति : पारस्परिक तुलना

परिवेश		शिक्षण स्तर			
		प्राथमिक	माध्यमिक	उच्च	योग
ग्रामीण	N	१५०	१५०	१५०	४५०
	M	११.२	१०.८६	१२.६२	११.५६
	SD	४.००	३.५	२.६१	३.६१
नगरीय	N	१५०	१५०	१५०	४५०
	M	१२.२२	११.२५	१२.४२	११.६६
	SD	३.०४	३.५५	२.८३	३.१६
क्रान्तिक अनुपात		२.४८▲		०.५२	१.०२

▲.०५ स्तर पर परिणाम सार्थक

तालिका ४.१५ के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तरों पर ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं की तुलना में नगरीय न्यादर्श के मध्यमान अपेक्षा कृत अधिक है यद्यपि यही उच्च शिक्षण स्तर पर नहीं पायी गयी है। विभिन्न शिक्षण स्तरो पर मध्यमानों की अंतर की सार्थकता हेतु निकाले गये क्रान्तिक अनुपात के मान प्राथमिक माध्यमिक उच्च तथा सम्पूर्ण ग्रामीण तथा नगरीय न्यादर्श हेतु क्रमशः २.४८, १.६,. ५२ तथा १.०२ है जिससे स्पष्ट है कि क्रान्तिक अनुपात का मान मात्र प्राथमिक शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों के मध्य ही सार्थक है अर्थात प्राथमिक स्तर पर ही ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद है।

अस्तु, ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा मनो-सामाजिक चर –

विद्वानों का मत है कि मनुष्य के सोच के निर्माण में विभिन्न मनों-सामाजिक कारकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । वस्तुतः मनुष्य के सोच तथा अभिवृत्ति का निर्माण निर्वात में नही होता है बल्कि सोच के निर्माण में केन्द्रीय भूमिका उन विविध कारकों की होती है जिनके प्रति पतिक्रियास्वरूप व्यवहार के स्वरूप का स्थरीकरण होता है। तथा जिसे अभिवृत्ति की संज्ञा दी जाती है।

प्रस्तुत शोध में शिक्षको/शिक्षिकाओं की जनससंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मनों-कारकों के अंतर्गत जीवन-मूल्यों तथा सामाजिक-कारकों के अन्तर्गत-परिवेश (ग्रामीण, नगरीय) लिंगभेद, आयु, परिवार का आकार तथा शिक्षण स्तर से सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया है ।

सांख्यकीय विश्लेषण के प्रथम चरण में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया है। जब कि द्वितीय चरण में अभिवृत्ति तथा अन्य विविध चरों के मध्य सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया है ।

जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्य -

यह सामान्य व्याख्या है कि मानव के प्रत्येक व्योवहार में उसके जीवन-मृल्यों का प्रकटीकरण होता है अर्थात व्यवहार जीवन-मूल्यों का प्रक्षेपण हैं। अस्तु, जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य पारस्परिक सह-सम्बन्ध ज्ञात करना प्रस्तुत शोध में अभीष्ट है। वस्तुतः व्यक्तियों को भी उनके जीवन-मूल्यों के आधार पर

वर्गीकृत किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा विशिष्ट जीवन-मूल्य से सह-सम्बन्ध अन्ततः यह स्पष्ट करने कि अमुक प्रकार के जीवन-मूल्य मेंआस्था रखने शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने यह प्रयास किया है कि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवनमूल्यों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध की गणना की जाये ताकि शोध के प्रश्न-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध है?"

का तथ्यपरक उत्तर पाया जा सके।

उपरोक्त शोध प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री ने अधोलिखित शोध परिकल्पना का निर्माण किया है जिसकी पुष्टि अथवा अपुष्टि शोध परिणामों पर निर्भर करेगी।

परिकल्पना १६-

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।"

शोध परिकल्पना के परीक्षण हेतु अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध गुणांको को तालिका ४.१६ में दर्शाया गया है ।

तलिका ४.१६

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं जीवन-मूल्य :

पारस्परिक सह-सम्बन्ध

शिक्षण स्तर	जीवन मूल्य					
	सैद्धन्तिक	आर्थिक	सौन्दर्यत्मक	सामाजिक	राजनीतिक	धार्मिक
प्राथमिक	-०.०२	-०.०४	-०.०१	०.०३	०.०४	०.०३
माध्यमिक	०.०३७	०.१०२	०.०३२	०.०३३	०.०४	०.००६
उच्च	-०.००६	०.१४	०.०१	०.०२	०.०२	-०.०२

उपरोक्त तालिका ४.१६ के अवलोकल से स्पष्ट है कि प्रथमिक स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकिाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन मूल्यों- सामाजिक एवं राजनीतिक के मध्य ही धनात्मक सह-सम्बन्ध है। अन्य सभी जीवन-मूल्यों- सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक का शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है। इस प्रकार प्राथमिक स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं के सन्दर्भ में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा ज़ीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध विषयक परिकल्पना मात्र अंशिक रूप में ही सत्य माने जाने योग्य है।

जहाँ तक माध्यमिक स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सह समबन्ध का प्रश्न है, यह सभी मूल्यों के साथ धनात्मक है। परिणामतः माध्यमिक स्तरीय शिक्षकों-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध मूलक परिकल्पना की पुष्टि हो रही है।

उच्च शिक्षास्तर पर मात्र सैद्धान्तिक तथा धार्मिक मूल्य ही ऐसे हैं जिनका जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है, अन्य सभी जीवन-मूल्यों-अर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा

राजनीतिक के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया है; फूलतः धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना उच्च्य शिक्षण स्तरीय शिक्षकों-शिक्षिकाओं के सम्बन्ध में आंशिक रूप में ही सत्य मानी जा सकती है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं जीवन-मूल्य-

पूर्ववर्ती तालिका ४.१६ में शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों में सह-सम्बन्ध ज्ञात करने हेतु न्यादर्श के उत्तरदाताओं को विभिन्न शिक्षण स्तरों में वर्गीकृत करके सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया था।

प्रस्तुत स्तम्भ में सम्पूर्ण न्यादर्श पहले को लिंग के आधार पर वर्गीकृत करके शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके संगत जीवन-मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध का मान ज्ञात किया गया है। तत्पश्चात सम्पूर्ण न्यादर्श को एक इकाई मानते हुए जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध ज्ञात किया गया। दत्तों के उपरोक्त ढ़ंग से किये गये विश्लेषण के मूल में वस्तुतः अधोलिखित शोध प्रश्न का यथेष्ट उत्तर पाने की नियति समाहित थी।

तालिका ४.१७ शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं जीवन-मूल्य : पारस्परिक सहसम्बन्ध

शिक्षक/ शिक्षिकाएँ	जीवन-मूल्य					
	सैद्धान्तिक	आर्थिक	सौन्दर्यात्मक	सामाजिक	राजनीतिक	धार्मिक
शिक्षक	-०.०१	.०५४	-.०५२	-.०१६	.०१४	-.००६
शिक्षिकाएँ	-०.००७	.०५६	.०६७	.०५३	.०८६	-.०४
शिक्षक-शिक्षिकाएँ	-०.०५	.०५६	.०१२	.०१६	.०१४	-.०२

शोध प्रश्न-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध है?"

शिक्षको की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध विषयक प्रश्न के सम्बन्ध में शोध परिणामो के आधार पर अधोलिखित शोध परिकल्पना का परीक्षण किया है-

परिकल्पना १७ -

"जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथ्य उनके-मूल्यो के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।"

शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक के मानों को तालिका ४.१७ में दर्शाया गया है।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षक वर्ग में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों में धनात्मक सह-सम्बन्ध मात्र आर्थिक तथा राजनीतिक-मूल्यों के मध्य है। जबकि जीवन मूल्यों-सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है। अर्थात शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य है।

शिक्षिकाओं के न्यादर्श में भी शिक्षकों की भांति कम से कम जीवन-मूल्यों के दो क्षेत्रों सैद्धान्तिक तथा धार्मिक में ऋणात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि की है। यद्यपि जीवन-मूल्यों सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक में शिक्षकों के विपरीत शिक्षिकाओं ने धनात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है। जीवन मूल्यों, आर्थिक एवं राजनीतिक तथा अभिवृत्ति के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि की गयी है- अर्थात जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक तथा धार्मिक के अतिरिक्त अन्य सभी क्षेत्रों में धनात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि हुई है।

अस्तु, शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों में धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना की भी शिक्षकों की भांति ही आंशिक रूप में सत्य माने जाने योग्य है।

जहाँ तक सम्पूर्ण न्यादर्श की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध का प्रश्न है शिक्षिकाओं की भांति ही मात्र जीवन-मूल्यों के दो क्षेत्र है सैद्धान्तिक तथा धार्मिक हैं जिनमें ऋणात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया है। शेष सभी क्षेत्रों में धनात्मक सह सम्बन्ध की पुष्टि है।

सारांशतः यह मानने का पर्याप्त आधार है कि शिक्षक/शक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक शोध की परिकात्मक आंशिक रूप में ही सत्यता की कसौटी पर खरी उतर रही है, अस्तु उक्त परिकल्पना आंशिक रूप में स्वीकृत की जाती है।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चर-

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन भी प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों में समाहित था। अस्तु, प्रस्तुत स्तम्भ में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध का परिगणन किया गया है। जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध की गणना दो चरणों में की गयी है-

प्रथम चरण में शिक्षक/शिक्षिकाओं को विभिन्न शिक्षण स्तरों में वर्गीकृत करके सह-सम्बन्ध की गणना की गयी है। जबकि दूसरे चरण में न्यादर्श को लिंगानुसार वर्गीकृत करके उक्त सम्बध निकाला गया है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध का मूल्यांकन प्रथम चरण में शोध के निम्नांकित प्रश्न का उत्तर दे सकेगा-

शोध प्रश्न-

"क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के-आकार के मध्य सह-सम्बन्ध है?"

उपरोक्त शोध प्रश्न के सम्बन्ध में शोधकर्त्री ने अपनी शोध परिकल्पना का अधोलिखित रूप दे, निर्माण किया है।

परिकल्पना १८ -

"जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों- परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।"

शोध की परिकल्पना १८ के परीक्षण हेतु सह-सम्बन्ध गुणांक के मानों को तालिका ४.१८ में दर्शाया गया है।

तालिका ४.१८

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्त

एवं विविध सामाजिक चर : पारस्परिक सह-सम्बन्ध

शिक्षण	सामाजिक चर			
स्तर	परिवेश	लिंग भेद	आयु	परिवार का आकार
प्राथमिक	०.१४	०.०४	-०.२४	-०.११
माध्यमिक	०.०५५	-०.०६	-०.०२	-०.०८
उच्च	-०.०३	-०.१०	-०.०६	०.०७

तालिका में दर्शाये गये सह-सम्बन्ध गुणांको के मानों से स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चारों-आयु तथा परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध है जबकि चरो-परिवेश तथा लिंग भेद में इसका धनात्मक मान क्रमशः ०.१४ तथा ०.०४ है। अस्तु, प्राथमिक शिक्षक-शिक्षिकाओं की स्थिति में जनसंख्या-शिक्षा

के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकलपन आंशिक रूप में ही सत्य है।

जहाँ तक माध्यमिक स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा संदर्भित सामाजिक चरों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध का प्रश्न है, वह भी आंशिक रूप में ही सत्य है। जो कि मात्र चर परिवेश के साथ प्राप्त धनात्मक सहसम्बन्ध गुणांक के मान से स्पष्ट है क्योंकि अन्य चरो-लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य प्राप्त ऋणात्मक सह-सम्बन्ध अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की परिकलपन के शत-प्रतिशत सत्य होने को बाधित करते हैं।

उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अपनी अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंग-भेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य क्रमशः तीन चरों-परिवेश, लिंग-भेद तथा आयु के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है। मात्र एक कारक परिवार का आकार ही ऐसा है जिसका जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से धनात्मक सह-सम्बन्ध है।

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांकों के आधार पर यह कहना युक्तिसंगत होगा कि जनसंख्या -शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों-परिवेश, लिंग भेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकलपना मात्र आंशिक रूप में ही सत्य है, अस्तु यह आंशिक रूप में स्वीकार की जाती है।

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा सामाजिक चर-

तालिका ४.१८ में शिक्षक/शिक्षिकाओं को शिक्षण स्तर के आधार पर वर्गीकृत करके सामाजिक चरों के साथ सह-सम्बन्ध की गणना के पश्चात् सम्पूर्ण न्यादर्श को लिंग भेदानुसार वर्गीकृत करके

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा विविध सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध की गणना प्रस्तुत स्तम्भ का अभीष्ट है ताकि शोध प्रश्न-

''क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों- शिक्षण परिवेश, लिंग भेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध है।''

में का तथ्यपरक उत्तर प्राप्त किया जा सके।

शोधकर्त्री ने यद्यपि शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लंग भेद, शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध के सम्बन्ध में अधोलिखित परिकलपना निर्मित की है, तथापि परिकलपन की वास्तविकता की स्थिति तो सह-सम्बन्ध गुणांको के परीक्षण के पश्चात ही स्पष्ट हो सकेगी।

परिकल्पना-१९

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-शिक्षणस्तर, परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।''

परिकलपना १६ के परीक्षण हेतु, शिक्षक-शिक्षकाओं की अभिवृत्तियों तथा चरों-शिक्षण स्तर, परिवेश, लिंग भेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक के मानों को तालिका ४.१६ में दर्शाया गया है। जो शोध प्रश्न का यथेष्ट उत्तर तथा परिकलपना को स्वीकार अथवा अस्वीकार किये जाने हेतु आधार-भूमि प्रस्तुत करेंगे।

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षकों ने कारकों, परिवेश तथा शिक्षण स्तर के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है जबकि कारकों आयु तथा परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है, अस्तु शिक्षकों के सम्बन्ध में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों-परिवेश शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के

मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकलपना मात्र अंशिक रूप में ही सत्य है।

तलिका ४.१९

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति एवं विभिन्न चर : पारिवारिक सह-सम्बन्ध

अभिवृत्ति	विभिन्न चर				
	परिवेश	लिंग	शिक्षण स्तर	आयु	परिवार का आकार
शिक्षक (N=450)	०.१७४	-	०.१४८	-०.०६६	-०.०६३
शिक्षिकाएँ (N=450)	-०.०६६	-	०.०४	-०.१३३	-०.०४५
शिक्षक-शिक्षिकाएँ	०.०५	-०.०३	०.०६६	-०.१३३	-०.०५

जहाँ तक शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों के मध्य सह-सम्बन्ध का प्रश्न है- मात्र एक चर शिक्षण स्तर ही ऐसा है। जिसका शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से धनात्मक सह-सम्बन्ध है। अन्य सभी चरों- परिवेश, आयु, तथा परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध के फलस्वरूप इन चरों के साथ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकलपना को आंशिक रूप में ही सत्य मानने की विवशता उत्पन्न की है।

यदि शिक्षक-शिक्षिकाओं के सम्पूर्ण न्यादर्श को एक इकाई मानकर विभिन्न सामाजिक चरों से सह-सम्बन्ध की गणना की जाती है, तो चरों-परिवेश तथा शिक्षण स्तर के साथ सह-सम्बन्ध धनात्मक प्राप्त होता

है। जबकि चरों-लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि हुई है।

अस्तु, शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों - परिवेश, लिंग-भेद, शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-समबन्ध विषयक परिकल्पना आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य हे।

दत्तो के विश्लेष्ण के फलस्वरूप अधोलिखित शोध परिणाम प्राप्त हुए हैं-

१- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति धनात्मक तथा मध्यम उच्च श्रेणी की है। (तलिका ४.१)

२- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक तथा धार्मिक से ऋणात्मक तथा जीवन मूल्यों-आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा राजनीतिक से धनात्मक सह-सम्बन्ध प्राप्त हुआ है।

३- शोध परिणामों से जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों कह अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश तथा शिक्षण स्तर के साथ धनात्मक तथा चरों-लिंगभेद, आयु एवं परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध प्राप्त हुआ है। (तालिका ४.३)

४- विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक पायी गयी है। (तालिका ४.४)

५- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक भेद की पुष्टि नहीं हुई है जबकि माध्यमिक व उच्च तथा प्राथमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में .०१ स्तर पर सार्थक भेद की पुष्टि हुई है। (तालिका ४.५)

६- ग्रामीण शिक्षकाओं के सन्दर्भ में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में प्राथमिक व मध्यमिक शिक्षण स्तर पर .०५ स्तर पर सार्थक भेद की पुष्टि की है। जबकि माध्यमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय

शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में अंतर .०१ स्तर पर सार्थक पाया गया। (तालिका ४.५)

७- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति माध्यम उच्च सकारात्मक पायी गयी है। मात्र उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति उच्च सकारात्मक पायी गयी है। (तालिका ४.६)

८- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय भेद मात्र माध्यमिक व उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों के मध्य पाया गया है। शेष शिक्षण स्तरीय शिक्षक अथवा शिक्षिकाओं के दृष्टिकोण में सार्थक भेद की पुष्टि नहीं हुई है। (तालिका ४.७)

९- सम्पूर्ण न्यादर्श को शिक्षक तथा शिक्षिकाओं में शिक्षण स्तर के आधार पर वर्गीकृत करने पर पाया गया कि सभी शिक्षण स्तरों पर तथा शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं दोनों ही वर्गो की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मध्यम, उच्च सकारात्मक पायी गयी है। सर्वाधिक सकारात्मकता उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों तथा सबसे कम सकारात्मकता माध्यमिक स्तरीय शिक्षिकाओं ने प्रदर्शित की है। (तालिका ४.८)

१०- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय भेद शिक्षकों ने माध्यमिक एवं उच्च तथा प्राथमिक एवं उच्च शिक्षण स्तर के मध्य दर्शाया है। जबकि शिक्षिकाओं के सम्बन्ध में सार्थक भेद की पुष्टि प्राथमिक एवं माध्यमिक तथा माध्यमिक एवं उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं के बीच हुई है (तालिका ४.९)

११- प्राथमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों से सार्थक रूप में अधिक सकारात्मक पाई गई है। (तालिका ४.१०)

१२- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति, उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से सार्थक रूप में अधिक सकारात्मक पायी गयी है (तलिका ४.११)

१३- सम्पूर्ण न्यादर्श को विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं में वर्गीकृत करने पर किसी भी शिक्षण स्तर पर जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में लिंग-भेद की पुष्टि नहीं हुई है। (तलिका ४.१२)

१४- प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति संगत शिक्षण स्तरों के ग्रामीण शिक्षकों से सार्थक रूप में अधिक सकारात्मक पायी गयी । (तालिका ४.१३)

१५- उच्च शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की संगत शिक्षण स्तरीय की नगरीय शिक्षिकाओं से सार्थक रूप में अधिक सकारात्मक पाये जाने की पुष्टि हुई है। (तलिका ४.१४)

१६- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति प्राथमिक स्तरीय ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से सार्थक रूप से अधिक सकारात्मक पायी गयी है। (तालिका ४.१५)

१७- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति प्राथमिक शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों सामाजिक एवं राजनीतिक के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध की पुष्टि हुई है (तलिका ४.१६)

१८- जनसंख्या -शिक्षा के प्रति माध्यमिक, स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सभी जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक, तथा धार्मिक से धनात्मक सहसम्बन्ध की पुष्टि हुई है। (तलिका ४.१६)

१६- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं ने जीवन-मूल्यों आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, तथा राजनीतिक, तथा धार्मिक के साथ धनात्मक तथा जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक तथा धार्मिक से ऋणात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है। (तलिका ४.१६)

२०- शोध के न्यादर्श को लिंग के आधार पर वर्गीकृत करने पर पाया गया कि जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षकों ने अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों-आर्थिक एवं राजनीतिक से धनात्मक तथा जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक व धार्मिक से ऋणात्मक सह सम्बन्ध दर्शाया है। (तालिका ४.१७)

२१- शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों सैद्धान्तिक एवं धार्मिक के साथ ऋणात्मक सह सम्बन्ध है। जबकि अन्य सभी जीवन-मूल्यों आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा राजनीतिक के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध है। (तालिका ४.१७)

२२- सम्पूर्ण न्यादर्श में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध की प्रवृत्ति शिक्षिकाओं के अनुरूप ही रही है। (तलिका ४.१७)

२३- प्राथमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षकों ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश तथा लिंग-भेद से धनात्मक तथा चरों-आयु तथा परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि की है। (तालिका ४.१८)

२४- जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा कारकों-परिवेश, एवं शिक्षण स्तर के मध्य धनात्मक तथा कारकों-आयु एवं परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक सह सम्बन्ध पाया गया। (तालिका ४.१६)

२५- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ने कारकों-परिवेश, आयु एवं परिवार के आकार के मध्य ऋणात्मक तथा मात्र कारक शिक्षण स्तर के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध की पुष्टि की है। (तालिका ४.१६) जबकि शिक्षक-शिक्षिकाओं के सम्पूर्ण न्यादर्श में जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा कारकों-परिवेश तथा शिक्षण स्तर के मध्य धनात्मक तथा कारकों- लिंग-भेद तथा आयु से ऋणात्मक सह सम्बन्ध की पुष्टि हुई है। (तालिका ४.१६)

२६- माध्यमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति मात्र चर परिवेश के साथ धनात्मक है जबकि अन्य चरों लिंग-भेद, आयु तथा परिवार के आकार के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध दर्शाया है। (तालिका ४.१८)

२७- उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति तथा चरों - परिवेश, लिंग-भेद तथा आयु के साथ ऋणात्मक तथा मात्र चर-परिवार के आकार के साथ धनात्मक सहसम्बन्ध की पुष्टि की है। (तालिका ४.१८)

शोध परिणामों की व्याख्या-

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति-शिक्षकों/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक वर्तमान शोध परिणामों के परिप्रेक्ष्य में एक तथ्य उभरकर सामने यह आया है कि यद्यपि शिक्षक तथा शिक्षिकाओं दोनों ने ही जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति की अभिव्यक्ति की है तथापि शिक्षकों की अभिवृत्ति शिक्षिकाओं की अपेक्षा कुछ अधिक सकारात्मक है । (तालिका ४.१) इस तथ्य की पुष्टि अभिवृत्ति तथा लिंगभेद के मध्य पाये गये ऋणात्मक सह-सम्बन्ध से भी होती है। (तालिका ४.३) शोध के न्यादर्श में शिक्षकों की अभिवृत्ति के मानक विचलन के मान का शिक्षिकाओं के संगत मानक विचलन के मान से अधिक पाया जाना जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति विविधता का संकेत देती है

अर्थात मानक विचलन के मान का अधिक होना शिक्षकों के समूह में कुछ शिक्षक अधिक तथा कुछ शिक्षक कम सकारात्मक अभिवृत्ति रखने के द्योतक हैं जो प्रकरान्तर से शिक्षको में जन संख्या वृद्धि जैसी समसामाजिक ज्वलंत समस्या के प्रति उनकी उदासीनता का संकेत देती है । शिक्षकों के सम्बन्ध में मानक विचलन के मान की अपेक्षा कृत अधिकता कतिपय शिक्षको की रूढ़िवादी सोच का भी परिणाम हो सकती है ।

इसके विपरीत शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति के मानक विचलन का मान पुरूषों की अपेक्षा कम पाये जाने की स्थिति जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में अधिक विचलन न होने का संकेत देती है जिसका अभिप्राय है कि औसत महिला शिक्षको की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सामान्य पुरूषों से अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है । निः सन्देह यह स्थिति शिक्षिकाओं के सोच की पृष्ठभूमि में उन परिस्थितियों के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता की परिचायक हो सकती है। जिनकी अनुभूति शिक्षिकाओं ने जनाधिक जनित समस्याओं में की होगी।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों के मध्य सह-सम्बन्ध की मीमांसा में पाया गया कि जीवन-मूल्यों-आर्थिक, सौन्दर्यात्मक सामाजिक तथा राजनीतिक से अभिवृत्ति का धनात्मक सह-सम्बन्ध है जो वस्तुतः शिक्षक-शिक्षिकाओं के मात्र उस वर्ग छोड़ कर जो अपेक्षा-कृत अधिक सैद्धान्तिक तथा धार्मिक है जनसंख्या-शिक्षा के प्रति स्वीकार्यता बढ़ रही है । प्रकान्तर से यह भी निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक समुदाय में जो वर्ग अपेक्षाकृत अत्यधिक सैद्धान्तिक तथा धार्मिक है वह जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच रखता है। यदि यह मान लिया जाये कि शिक्षक समाज के सोच का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं तो यह कहने का पर्याप्त आधार है कि समाज में सैद्धान्तिक तथा धार्मिक व्यक्ति जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक सोच रखते हैं।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा चरों - परिवेश, लिंग-भेद, शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार से सह-सम्बन्ध गुणांकों के मानों में चर - लिंग-भेद, आयु तथा परिवार के आकार के साथ ऋणात्मक है (तालिका ४.३) जो यह स्पष्ट करती है कि तुलनात्मक दृष्टि से शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक से सकारात्मक है। जो प्रकान्तर में चर- आयु के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध इस तथ्य का घोतक है कि अधिक आयु वाले शिक्षक कम आयु वाले शिक्षकों की अपेक्षा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच रखते हैं। शिक्षकों की नयी तथा पुरानी पीढ़ी में सोच का यह अन्तर नयी पीढ़ी की समसामायिक परिस्थितियों तथा जनाधिक्य जनित समस्याओं के प्रति अपेक्षाकृत अत्यधिक संवेदनशीलता का घोतक है । यह भी सम्भव है कि अधिक आयु वाले शिक्षक रूढ़िवादी तथा परम्परावादी सोच से प्रभावित हो परिणामस्वरूप वह जनसंख्या-शिक्षा के औचित्य के प्रति अपेक्षाकृत नकारात्मक सोच से ग्रसित हों।

चर- शिक्षण-स्तर का जनसंख्या-शिक्षा से धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया गया यद्यपि यह अत्यन्त कम है तथापि शिक्षण-स्तर के बढ़ने के फलस्वरूप अभिवृतित में सकारात्मकता के बढ़ने का संकेत तो देती ही है । शिक्षकों के सोच की यह स्थिति यह संकेत देती है कि शिक्षण स्तर में वृध्दि शिक्षकों में जनाधिक्य जैसी समस्या के प्रति उन्हें अत्यधिक संवेदनशील बना रही है ।

शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा परिवेश के साथ सह-सम्बन्ध का मान धनात्मक पाया गया है जो यह इंगित करता है कि नगरीय शिक्षक ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक सोच रखते हैं। (तालिका ४.३)

नगरीय शिक्षकों के सोच वर्तमान स्थिति के मूल में सम्भव है नगर की प्रतिस्पर्धा मूलक परिस्थितियां जो परिवार के आकार तथा जीवन

स्तर में विपरीत सह-सम्बन्ध देख रही हैं। यह भी सम्भव है कि नगरीय शिक्षक /शिक्षिकाएं जनधिक्य जनित समस्यायों के प्रति अधिक जागरूक तथा संवेदन शील है परिणामतः शोध के परिणाम ग्रामीण शिक्षको में सकारात्मक सोच विकसित किये जाने की आवश्यकता प्रमाणित करते हैं ।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा परिवार के आकार में ऋणात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना यह स्पष्ट करता है कि बड़े परिवार वाले शिक्षक जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक सोच रखते हैं । जबकि छोटे परिवार वाले शिक्षकें का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक है । विश्लेषणात्मक दृष्टि यह भी संकेत देती हैं कि वस्तुतः शिक्षकों की सोच उनके परिवार के आकार में परिलक्षित हुई है चरों -परिवार के आकार तथा आयु के साथ जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के णात्मक सह-सम्बन्ध की स्थिति यह भी स्पष्ट करती है कि अधिक आयु वाले शिक्षकों के परिवार का आकार बड़ा है तथा कम आयु वाले शिक्षको के परिवार का आकार अपेक्षाकृत छोटा है । वस्तुतः यह एक अच्छा संकेत है कि शिक्षकों की नयी पीढी सीमित परिवार के मानक को वरीयता देती प्रतीत हो रही है। निःसन्देह नयी पीढ़ी के शिक्षको में अपेक्षाकृत अत्यधिक सकारात्मक सोच के कारण जीवन की गुणवत्ता तथा जनाधिक्य का जीवन स्तर को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करने के तथ्यों के प्रति अत्यधिक जागरूकता है ।

ग्रामीण शिक्षकों की अभिवृत्ति में शिक्षण-स्तर बढ़ने के साथ ही अभिवृत्ति की सकारात्मकता में वृद्धि दृष्टिगोचर हुई है यद्यपि प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर पर अंतर नगण्य है किन्तु प्राथमिक और उच्च के मध्य अंतर सार्थक है। यह स्थिति उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकें की अपेक्षाकृत अधिक जागरूकता की द्योतक है ।

जहाँ तक शिक्षिकओं की अभिवृत्ति में शिक्षण-स्तर के बढ़ने के फलस्वरूप जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में वृद्धि का प्रश्न है ।

वह प्राथमिक स्तरीय शिक्षिकाओं की अपेक्षा उच्च स्तरीय शिक्षकाओं में कुछ अधिक है। माध्यमिक स्तरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का प्राथमिक तथा उच्च अर्थात दोनों ही शिक्षण स्तरों की शिक्षिकाओं के अभिवृत्ति मान से कम होने का कारण स्पष्ट है। (तालिका ४.५)

नगरीय न्यादर्श में तीनों ही शिक्षण-स्तरों पर शिक्षकों की अभिवृत्ति शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक पायी गयी है। ग्रामीण न्यादर्श की भांति नगरीय न्यादर्श में भी माध्यमिक स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरों से कम सकारात्मक पायी गयी है।

ग्रामीण तथा नगरीय न्यादर्श की पारस्परिक तुलनात्मक दृष्टि स्पष्ट है कि ग्रामीण अँचलों में जहाँ शिक्षिकाओं का जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है वहीं नगरीय क्षेत्रों में स्थिति ठीक विपरीत है । ग्रामीण शिक्षिकाओं की ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक सोच के पीछे शिक्षिकाओं में जनाधिक्य जनित समस्याओं के प्रति अधिक जागरूकता है सम्भव है। क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति का सर्वाधिक प्रभाव महिलाओं पर ही पड़ता है । (तालिका ४.५ व ४.६)

जहाँ तक जनसंख्या-शिक्षा के प्रति लिंगभेद का प्रश्न है ग्रामीण प्राथमिक स्तरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति अपने संवर्गीय शिक्षकों से सकारात्मक रूप में अधिक पायी गयी । जबकि नगरीय न्यादर्श में उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति सार्थक रूप में अधिक पायी गयी । सम्पूर्ण न्यादर्श में लिंगभेद का प्रभाव नगण्य पाया गया । (तालिका ४.१०, ४.११, व ४.१२)

सम्पूर्ण न्यादर्श में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति लिंगभेद के प्रभाव का न पाया जाना, शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का जनसंख्या-शिक्षा और प्रकान्तर से जनसंख्या समास्या के प्रति सोच की समानता का संकेत है, अस्तु यदि शिक्षक तथा शिक्षिकाओं को समाज के शिक्षित वर्ग का प्रतिनिधि

मान लिया जाए तो यह कहने का पर्याप्त आधार बनता है कि शिक्षा के फलस्वरूप जनसंख्या-शिक्षा तथा जनाधिक्य जनित समस्याओं के प्रति जागरूकता में सकारात्मक बृद्धि सम्भव है ।

लिंगभेद के प्रभाव का प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं के समूह पर मूल्यांकन करने पर स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक सोच है जबकि माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण-स्तर पर यह स्थिति ठीक विपरीत है अर्थात शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक सोच है जो इन शिक्षण स्तर पर प्राप्त सह सम्बन्ध गुणांकों के मानों क्रमशः .०४, -.०६ तथा -.१० से स्पष्ट है । (तालिका ४.१८)

माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरों पर शिक्षिकाओं की अपेक्षाकृत सकारात्मक सोच की स्थिति इन स्तरीय शिक्षिकाओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अत्यधिक सकारात्मक सोच विकसित करने के प्रयासों की आवश्यकता प्रतिपादित करती है ।

शिक्षको के न्यादर्श में परिवेशीय तुलना करने पर प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है जो इन वर्गों द्वारा जनसंख्या-शिक्षा की आवश्यकता को अपेक्षा कृत अधिक महत्व देने का संकेत है जबकि शिक्षिकाओं में उच्च शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति उच्च शिक्षण स्तरीय नगरीय महिलओं की अपेक्षा सार्थक रूप में अधक सकारात्मक है। यह स्थिति ग्रामीण उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षिकाओं की अपेक्षाकृत अत्यधिक जागरूकता का संकेत है। (तालिका४.१३ व ४.१४) जबकि सम्पूर्ण न्यादर्श में परिवेशीय कारक मान प्राथमिक स्तर पर ही सार्थक रूप में प्रभावी रहा जिसकी पुष्टि प्राथमिक स्तरीय नगरीय शिक्षक-शिक्षकाओं की अभिवृत्ति के

ग्रामीण प्राथमिक स्तरीय शिक्षक शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से सार्थक रूप में अधिक होनें से होती है । (तालिका ४.१५)

उक्त निष्कर्षों की पुष्टि प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा परिवेशीय कारक के मध्य प्राप्त सह-सम्बन्ध गुणांकों के मानों क्रमशः .१४, .०५५ तथा -.०३ से भी हो रही है। सह-सम्बन्ध गुणांकों के धनात्मक मान नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक सोच को प्रकट करते हैं। जबकि उच्च शिक्षण स्तर हेतु प्राप्त -.०३ सह-सम्बन्ध गुणांक का मान उच्च शिक्षण स्तर पर ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा प्रदर्शित अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति का संकेत देते हैं। (तालिका ४.१८)

उक्त आशय के परिणाम यह सोचने के लिए पर्याप्त आधार प्रदान करते हैं कि उच्च शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाऐं जनसंख्या-समस्या के प्रति नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक जागरूक हैं । यद्यपि ग्रामीण तथा नगरीय परिवेश के उच्च शिक्षण स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है तथापि प्रकरान्तर से यह निष्कर्ष उच्च शिक्षण स्तर पर नगरीय परिवेश के शिक्षक-शिक्षिकाओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मकता विकसित करने के अत्यधिक घनीभूत प्रयासों की आवश्यकता पर बल देते हैं ।

सह सम्बन्ध गुणांक (तालिका ४.१६) से यह भी स्पष्ट है कि शिक्षकों का परिवेश के साथ धनात्मक सह-सम्बन्ध है जबकि शिक्षिकाओं में परिवेश के साथ सह-सम्बन्ध ॠणात्मक है जो सिद्ध करता है कि ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा नगरीय शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है । शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा कारक परिवेश के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक के मान का -.०६६ (तालिका ४.१६) पाया जाना यह सिद्ध करता है कि नगरीय शिक्षिकाओं की अपेक्षा ग्रामीण

शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है। सह-सम्बन्ध गुणांक के मान तालिका ४.५ व ४.६ में प्राप्त अभिवृत्ति के मध्यमानों के मान की पुष्टि करते है ।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण स्तर में वृद्धि के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांकों के मान शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं के लिए क्रमशः .१४८ तथा .०४ है जो यह स्पष्ट करता है कि शिक्षण स्तर में वृद्धि के फलस्वरूप अभिवृत्ति में वृद्धि की प्रवृत्ति दष्टिगोचर होती है सह-सम्बन्ध गुणांकों के मान यह भी स्पष्ट कर रहे हैं कि शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों में शिक्षण स्तर में वृद्धि के फलस्वरूप अभिवृत्ति में सकारात्मकता की वृद्धि अपेक्षाकृत अधिक होती है । सह-सम्बन्ध गुणांक के यह मान (तालिका ४.८) के मान की पुष्टि करते है ।

शिक्षक तथा शिक्षिकाओं अर्थात दोनों ही समूहों में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा आयु के मध्य ऋणात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना इस तथ्य की पुष्टि करता है कि अधिक आयु वाले शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति कम आयु वाले शिक्षक/शिक्षिकाओं की तुलना में कम सकारात्मक है । जिसका अभिप्रेतार्थ यह है कि युवा शिक्षक/शिक्षिकएं जनाधिक्य के प्रति अधिक संवेदन शील है । यही नहीं शिक्षकें की अपेक्षा शिक्षिकाओं के सह सम्बन्ध गुणांक के मान का अधिक होना भी यह संकेत देता है कि युवा वर्गीय शिक्षक/शिक्षिकाओं में शिक्षिकाएं अपने समान वय वर्ग के शिक्षिकें की अपेक्षा जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखतीं हैं । (तालिका ४.१६)

सम्भव है शिक्षक/शिक्षिकाओं के इस सोच की पृष्ठभूमि में युवक तथा युवतियों में उन्नत जीवन स्तर के प्रति उत्तरोतर जागरूकता जीवन की गुणवत्ता तथा जीवन स्तर पर जनसंख्या की अधिकता के दुष्प्रभावों की समझ अधिक हो।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा परिवार के आकार के मध्य शिंक्षक तथा शिक्षिकाओं दोनों के ही सह-सम्बन्ध गुणांकों के मान नकारात्मक हैं जो वस्तुतः शिक्षक/शिक्षिकाओं के बड़े परिवार की पृष्ठभूमि में उनके जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच का कर ही परिणाम है। सहसम्बन्ध गुणांक के मानों की व्याख्या से यह भी स्पष्ट है कि जिन शिक्षक/शिक्षिकाओं के परिवारों में बच्चों की संख्या कम है उनकी जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है ।

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा चरों- आयु एवं परिवार के आकार के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांकों के ऋणात्मक मानों से स्थिति यह भी स्पष्ट होती है कि शिक्षक तथा शिक्षिकाओं अर्थात दोनों ही वर्गो में कम आयु वालों के परिवार का आकार अधिक आयु वाले की तुलना में छोटा होता है । अर्थात अधिक आयु वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं ने परिवार के आकार में अपेक्षाकृत अधिक वृद्धि की है, जो स्वाभाविक भी है। क्योंकि अधिक आयु वालों में सन्तानोत्पत्ति का काल अपेक्षाकृत अधिक रहा है।

पूर्व शोध निष्कर्षों से वर्तमान शोध परिणामों की तुलना-

पूर्व शोध निष्कर्षों से वर्तमान शोध परिणामों से तुलना करने पर ज्ञात होता है कि वर्तमान शोध के परिणाम पूर्व शोध निष्कर्षो में से अधिकांश की पुष्टि करते है तथापि कतिपय से पूर्व शोध निष्कर्ष भी है जिनकी पुष्टि वर्तमान शोध परिणामों ने नहीं की है।

संक्षेप में शोधकर्ताओं बारा सुब्रामनियम नारायण दास एवं अन्य (१९७०)द्वारा सम्पन्न हाईस्कूल स्तरीय शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक शोध, शैबाला दयाल (१९७३)आर० कल्यान सालकर (१९७५)वास्वानी (१९७७) एस० एल० नंदा (१९८४)आदि के जनसख्या शिक्षा पर सम्पन्न शोध निष्कर्षो जिनमें जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टि कोण पाया गया की वर्तमान शोध परिणामों से पुष्टि होती

है क्यों कि वर्तमान शोध परिणामों में शिक्षक तथा शिक्षिकाओं के जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टि कोण को सकारात्मक पाया गया है ।(तालिका ४.८)

वर्तमान शोध के निष्कर्ष भी सत्तारशक बाला (१६८१) के शोध निष्कर्षो की आंशिक पुष्टि करते है जिसमें जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टि कोण में लिंगभेद का सार्थक प्रभाव नही पाया गया था वर्तमान शोध के परिणामों ने प्राथमिक स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं तथा नगरिय शिक्षक/शिक्षिकाओं ने उच्च्य शिक्षण स्तर पर सार्थक लिंग भेद की पुष्टि की है । (तालिका ४.१० व ४.११)जबकि सम्पूर्ण न्यादर्श में लिंग भेद की पुष्टि नही हुई है । (तालिका ४.१२) तथापि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षिकाओं की अपेक्षा शिक्षकों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाये जाने की पुष्टि वर्तमान शोध निष्कर्षो ने की है । (तालिका ४.३)

कु० एस० कुलश्रेष्ठ ने अपने शोध निष्कर्षो में पिता वर्ग की अपेक्षा माताओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण का उल्लेख किया है । वर्तमान शोध के परिणामों से उक्त निष्कर्ष की पुष्टि नही हो सकती है । (तालिका ४.३ व ४.१२)

प्रस्तुत शोध परिणामों ने जी० डी० शर्मा (१६८३)के शोध-निष्कर्षो की पुष्टि की है जिनमें पाया गया था कि दम्पतियों के शैक्षिक स्तर का उनके जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण के मध्य सकारात्मक सह समबन्ध है (तालिका ४.३)

वर्तमान शोध के परिणाम एस० कुलश्रेष्ठ (१६६०) के परिणामों की भी आंशिक पुष्टि करते है । जिनमें पाया गया था कि नवजवान शिक्षिकाओं का जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण है । वस्तुतः वर्तमान शोध के परिणाम कुलश्रेष्ठ के इस निष्कर्ष की तो पुष्टि करते ही है बल्कि वर्तमान शोध के परिणाम शिक्षकों में भी आयु के आधार पर दृष्टिकोण में सह-सम्बन्ध के सन्दर्भ में भी नवजवान

शिक्षको के दृष्टिकोण का अधिक वह वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति की पुष्टि करते हैं। (तालिका ४.१६)

एस० अखता (१६६८) के निष्कर्षो के निष्कर्ष की पुष्टि वर्तमान शोध परिणाम भी कर रहे है । पूर्व शोधकर्ता ने पाया था कि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में आर्थिक स्तर की महत्वपूर्ण भूमिका है । एतद् विषयक निष्कर्ष की पुष्टि वर्तमान शोध के परिणाम भी कर रहे हैं क्योंकि शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का उनके आर्थिक जीवन-मूल्यों से धनात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना उक्त आशय का ही द्योतक है। (तालिका ४.१७)

आर० पटनायक (१६६८) ने अपने शोध निष्कर्ष में शैक्षिक-स्तर को महत्वपूर्ण कारक माना है वस्तुतः पटनायक के उक्त शोध निष्कर्ष की पुष्टि वर्तमान शोध निष्कर्ष उसी रूप में नहीं कर पा रहे हैं। यद्यपि वर्तमान शोध के निष्कर्ष में भी शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा शिक्षण स्तर के मध्य सकारात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना शैक्षिक स्तर की अभिवृत्ति में सकारातमक भूमिका का संकेत अवश्य देते हैं। शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति जैसे पटनायक के शोध निष्कर्ष के विपरीत वर्तमान शोध परिणामों में शिक्षकों की अभिवृत्ति को सकारात्मक पाये जाने के फलस्वरूप शोधकर्ता के उक्त निष्कर्ष की पुष्टि वर्तामान परिणामों से नही हो सकी है।

सारांश-

वर्तमान शोध परिणामों के आधार पर शोधकर्त्री अधोलिखित निष्कर्ष बिन्दुओं पर पहुची है-

१. शोध परिणामों से जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक शोध परिकल्पना की पुष्टि होती है।

२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य घनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिंकल्पना मात्र आंशिक रूप में ही सत्य है ।

३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा विविध सामाजिक चरों - परिवेश, लिंग-भेद, शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध - मूलक परिकल्पना आशिंक रूप में ही सत्य है।

४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक परिकल्पना की पुष्टि शोध परिणामों ने की है।

५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद मूलक परिकल्पना आंशिक रूप में ही स्वीकार किये जाने योग्य पाई गयी है ।

६. शोध परिणामों से विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सह-सम्बन्ध विषयक शोध परिकल्पना की पुष्टि की है।

७. विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना की शोध परिणामें से आंशिक पुष्टि हुई है ।

८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है; एतद् विषयक परिकल्पना की पुष्टि होती है ।

९. शोध परिणामों ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक शोध परिकल्पना की आंशिक पुष्टि की है ।

१०. प्रस्तुत शोध परिणामों से विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना की आंशिक पुष्टि ही हो सकी है ।

११. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद पाये जाने विषयक शोध परिकल्पना आंशिक रूप में ही स्वीकार्य है ।

१२. शोध परिणामों के आधार पर जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक लिंगभेदीय अन्तर विषयक परिकल्पना अस्वीकार की जाती है ।

१३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयक परिकल्पना की मात्र आंशिक पुष्टि ही हुई है।

१४. ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति मे सार्थक भेद विषयक परिकल्पना की भी पुष्टि आंशिक रूप में ही हुई है।

१५. सम्पूर्ण न्यादर्श में परिवेशीय कारक की सार्थक भूमिका विषयक परिकल्पना की मात्र आंशिक रूप में ही पुष्टि हुई है।

१६. विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों में धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना आंशिक रूप में अमान्य की जाती है।

१७. शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक शोध परिकल्पना की आंशिक पुष्टि शोध परिणामों ने की है।

१८. विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा चरों - परिवेश, लिंग-भेद, आयु तथा परिवार

के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की आंशिक पुष्टि हुई है।

१६. सम्पूर्ण न्यादर्श में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा सामाजिक चरों - शिक्षण स्तर, परिवेश, लिंग-भेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध विषयक परिकल्पना की भी आंशिक पुष्टि ही हुई है।
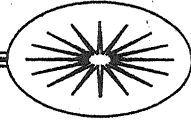
पंचम - अध्याय

पंचम - अध्याय

निष्कर्ष; सारांश एवं सुझाव

अध्याय-पंचम

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

विषय प्रवेश-

मानव-जाति का इतिहास वस्तुतः उसकी विकास यात्रा का इतिहास है। आदि काल में मात्र आखेट पर आश्रित मानव तथा वर्तमान में दूसरे ग्रहों पर पहुंचते मानव के कदमों के मध्य का अन्तर और अन्तराल उसके विकास की नियति को ही रेखांकित करते हैं।

अर्थशास्त्रियों का मानना है कि विकास में दो कारकों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है ओर वे कारक हैं- श्रम शक्ति तथा पूँजी। इन दोनों कारकों के मध्य की सन्तुलन और साम्यावस्था वस्तुतः विकास के लिये आवश्यक आधार-भूमि प्रदान करती है। इसके ठीक विपरीत इन कारकों के मध्य पारस्परिक वैषम्य की स्थिति विकास की दशाओं ओर परिस्थितियों के प्रतिकूल होती है। यदि इन दोनों कारकों के सापेक्षिक महत्व की चर्चा की जाये तो यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान परिस्थितियों में श्रम शक्ति में ह्ास की स्थिति की पूर्ति तो उच्च तकनीकी विकास तथा श्रम शक्ति के वैश्वीकरण के फलस्वरूप एक बड़ी सीमा तक हो भी जाती है किन्तु श्रम शक्ति में अधिकता की स्थिति के फलस्वरूप जब पूँजी क़ा एक बहुत बड़ा भाग लोगों के भरण पोषण में ही व्यय होने लगता है तब अन्य विकास के कार्यों तथा जीवन की गुणवत्ता हेतु आवश्यक संसाधनों की अभाव की स्थितियां उत्पन्न होती हैं। वर्तमान समय में दुनियां दो ध्रुवों- विकसित ओर विकासशील देशों के मध्य बँटी है। विकासशील देशों में जनाधिक्य की स्थिति शोचनीय बिन्दु तक पहुंच चुकी है। दुनियाँ की कुल जनसंख्या का बहुत बड़ा भाग इन विकासशील देशों में ही निवास करता है।

जहां तक भारत की जनसंख्या विकास की स्थिति का प्रश्न है- विश्व का प्रत्येक छठवां व्यक्ति भारतीय है। यद्यपि देश में जनसंख्या नियंत्रण का प्रयास सन १९५२ से ही परिवार नियोजन कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ हो गये थे, किन्तु कभी राजनीतिक संकीर्णता तो अपेक्षित इच्छा-शक्ति के अभाव के फलस्वरूप देश में लागू परिवार नियोजन कार्यक्रम के अधोलिखित परिणाम नहीं निकल सके।

देश की जनसंख्या नीति में समय-समय पर समीक्षा के परिणामस्वरूप आवश्यक परिवर्तन एवं संशोधन होते रहे हैं। देश की जनसंख्या-नीति - १९७६, १९७०, १९८१ तथा २००० इसके प्रमाण हैं। वस्तुतः बढ़ती हुई जनसंख्या के प्रति देश की वर्तमान केन्द्रीय सरकार अत्यधिक गम्भीर प्रतीत हो रही है। यही कारण है कि जनसंख्या नीति २००० में राष्ट्रीय जनसंख्या आयोग की नियुक्ति का प्रवधान किया गया है। जिसके अध्यक्ष माननीय प्रधानमंत्री जी होंगे।

जनसंख्या-नीति १९७६, १९७७ तथा १९८१ पर यदि विश्लेषणात्मक दृष्टि डाली जाए तो स्पष्ट होता है कि उक्त नीतियों का यह दोष रहा है कि तात्कालिक रूप में जनसंख्या को सीमित करने के प्रयासों पर जोर तो दिया गया अर्थात विभिन्न साधनों के माध्यम से वर्तमान के दम्पतियों को सन्तानोत्पत्ति से रोकने के प्रयास तो किये गये किन्तु जनसंख्या नीतियों में उन प्रयासों का पूर्ण अभाव रहा जो विद्यालयों में अध्ययनरत बालक/बालिकाओं अर्थात भविष्य के मां-बापों की सोंच में जनाधिक्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने के परिणामस्वरूप जनसंख्या-वृद्धि की समस्या रक्त-बीज की भांति उत्तरोत्तर जटिल से जटिलतर होती गयी शोधकर्त्री का मानना है कि जनसंख्या-वृद्धि तथा परिवार में बच्चों की संख्या एवं प्रकार एक मनो-सामाजिक समस्या है, अतएव जनाधिक्य की समस्या के समाधान इन मनो-सामाजिक कारकों के परिप्रेक्ष्य में सामान्यतः वर्तमान के दम्पतियों और विशेष रूप से विद्यालयों

में अध्ययनरत बालक/बालिकाओं की सोंच मे अपेक्षित परिवर्तन से ही सम्भव है। बालक/बालिकाओं में सीमित परिवार के मानक की आवश्यकता तथा औचित्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने की दृष्टि से वर्तमान के शिक्षकों का जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण सकारात्मक होना अनिवार्यतः- आवश्यक है ताकि वह विद्यालयों में अध्ययनरत भाविष्य के नागरिकों के सोच में परिवर्तन कर सके।

अस्तु, जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति के अध्ययन हेतु अधोलिखित शोध-शीर्षक के अन्तर्गत वर्तमान शोध सम्पादित किया गया है।

समस्या कथन-

''जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनो-सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन''

शोध उद्‌देश्य-

प्रस्तुत शोध के उद्‌देश्यों में अधोलिखित प्रश्नों के उपयुक्त तथा तथ्यमूलक उत्तर अभीष्ट थे-

सामान्य प्रश्न-

१. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

विशिष्ट प्रश्न-

१. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेद हैं?

३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

४. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय पारस्परिक भेद है?

५. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

६. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

७. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

८. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

९. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१०. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति समान है?

११. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१२. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों- शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति समान है?

१३. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

१४. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य सह सम्बन्ध हैं?

१५. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

१६. क्या जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों शिक्षणस्तर, परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य सहसम्बन्ध हैं?

शोध की परिकल्पनाएं-

प्रस्तुत शोध में सामान्य तथा विशिष्ट शोध -प्रश्नों के परिप्रेक्ष्य में अधोलिखित शोध परिकल्पनाओं का परीक्षण वांछित है।

सामान्य परिकल्पनाएँ-

१. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध हैं?

३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, शिक्षण स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

विशिष्ट-परिकल्पनाएँ-

४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद हैं?

६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद है?

८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक है?

६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१०. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

११. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१२. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१३. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१४. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१५. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षकों- शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद है?

१६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं?

१७. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन मूल्यों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं?

१८. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों-परिवेश, लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

१६. जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों तथा शिक्षण स्तर, परिवेश लिंगभेद, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध हैं।

शोध-विधि -

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण कोटि का है जिसमें शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति जानने हेतु मानकीकृत परीक्षणों के माध्यम से दत्तों का संकलन किया गया है

जनसंख्या -

कानपुर मण्डल के विभिन्न जनपदों-कानपुर नगर, कानपुर देहात, औरैया, इटावा, फरूर्खाबाद के ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र में स्थित प्राथमिक, माध्यमिक तथा महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण संस्थाओं के समस्त शिक्षक/शिक्षिकाएं प्रस्तुत शोध की जनसंख्या हैं।

न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध के न्यादर्श में ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र में स्थिति प्राथमिक, माध्यमिक तथा महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण संस्थाओं में से प्रत्येक स्तर से ७५ शिक्षक तथा ७५ शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया गया था इस प्रकार शोध के न्यादर्श में कुल ४५० शिक्षक तथा ४५० शिक्षिकाएं सम्मिलित थी अर्थात न्यादर्श में शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की सम्मिलित संख्या ६०० थी।

न्यादर्श के चयन की विधि-

न्यादर्श के चयन हेतु सर्वप्रथम शोध क्षेत्र की शिक्षण संस्थओं का रैण्डम सैम्पिलिंग विधि से चयन किया गया था तत्पश्चात चयनित

शिक्षण संस्थाओं में से शिक्षक/शिक्षिकाओं का चयन भी रैण्डम सैम्पिलिंग विधि से ही किया गया था।

प्रयुक्त उपकरण-

शोध में दत्तों के संकलन हेतु दो मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया था -

१- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति ज्ञात करने हेतु शोढ़ी एवं शर्मा द्वारा निर्मित परीक्षण।

इस परीक्षण में कुल प्रश्नों की संख्या ३४ है जिसमें १८ प्रश्न छोटे परिवार के प्रति दृष्टि कोण से सम्बन्धित तथा १६ प्रश्न जनसंख्या-शिक्षा के प्रति दृष्टि कोण से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के तीन विकल्प- 'हाँ', 'नहीं' और 'निश्चित नहीं' हैं। हाँ अथवा नहीं विकल्प का संख्यात्मक मान '+१' अथवा '-१' है जबकि निश्चित नहीं विकल्प का मान '०' है। परीक्षण पुनर्परीक्षण विधि से ज्ञात परीक्षण की विश्वसनीयता ०.६४ बताई गयी है।

२- शोध में दूसरा मानकीकृत परीक्षण डॉ० आर.के. ओझा द्वारा निर्मित 'मूल्य अध्ययन' था जिसका उद्देश्य न्यादर्श में चयनित शिक्षक/शिक्षिकाओं के जीवन-मूल्यों का ज्ञान करना था।

'मूल्य अध्ययन' नामक प्रयुक्त परीक्षण में छः प्रकार के जीवन-मूल्यों - सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक से सम्बन्धित प्रश्न हैं। अर्द्धविच्छेदित विधि से विभिन्न जीवन-मूल्यों- सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक के सम्बन्ध में विश्वसनीयता क्रमशः ०.७८, ०.८१, ०.७६, ०.८२, ०.८३ तथा ०.८४ बतायी गयी है। परीक्षण की वैधता का भी उच्च कोटि का होना बताया गया है।

प्रयुक्त सांख्यकी-

शोध में दत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता तथा सह-सम्बन्ध गुणांक की गणना की गयी थी तथा परिणामों की सार्थकता का परीक्षण .०५ विश्वसनियता स्तर पर किया था।

दत्तों के विश्लेषण के फलस्वरूप अधोलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये हैं-

१- शोध परिणामों से जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की सकारात्मक अभिवृत्ति विषयक परिकल्पना की पुष्टि होती है।

२- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों में धनात्मक सह-सम्बन्ध की आंशिक पुष्टि हुई है।

३- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा चरों- परिवेश, लिंग-भेद, शिक्षण-स्तर आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की आंशिक पुष्टि हुई है।

४- विभिन्न शिक्षण-स्तरीय ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी है।

५- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में शिक्षण स्तरीय सार्थक भेद की आंशिक पुष्टि हुई है।

६- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गई है।

७- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद मूलक परिकल्पना की आंशिक पुष्टि हुई है।

८- सम्पूर्ण न्यादर्श में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गई है।

९- शोध परिणामों से जनसंख्या शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक शिक्षण स्तरीय भेद विषयक परिकल्पना मात्र अर्द्ध सत्य सिद्ध हुई है।

१०- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में प्रत्येक शिक्षण स्तर पर सार्थक भेद नहीं पाया गया है।

११- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में प्रत्येक शिक्षण स्तर पर सार्थक भेद की पुष्टि नहीं हुई है।

१२- शोध परिणामों ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक लिंग-भेद की पुष्टि नहीं की है।

१३- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति विभिन्न शिक्षण स्तरों पर ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक तथा शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सार्थक भेद विषयंक परिकल्पना की मात्र आंशिक पुष्टि हुई है।

१४- सम्पूर्ण न्यादर्श में परिवेशीय कारक की सार्थक भूमिका की आंशिक पुष्टि हुई है।

१५- शोध परिणामों से जनसंख्या शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा उनके जीवन-मूल्यों के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की आंशिक पुष्टि ही हो सकी है।

१६- शोध परिणामों ने जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा चरों- परिवेश, लिंग-भेद, शिक्षण-स्तर, आयु तथा परिवार के आकार के मध्य धनात्मक सह-सम्बन्ध की आंशिक पुष्टि की है।

अस्तु, निष्कर्षतः शोध परिकल्पनायें- १, ४, ६ तथा ८ स्वीकार की गयीं हैं। शोध परिकल्पनाएं- २, ३, ५, ७, ९, १०, ११, १३, १४, १५, १६, १७, १८ तथा १९ मात्र आंशिक रूप में ही स्वीकार्य पायी गयीं जबकि परिकल्पना १२ त्याज्य सिद्ध हुई है।

शैक्षिक निहितार्थ -

वर्तमान शोध के परिणामों के अधोलिखित शैक्षिक निहितार्थ हैं-

१- यद्यपि ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी है तथापि ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा नगरीय शिक्षकों की अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है। जो प्रकरान्तर से ग्रामीण शिक्षकों में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने की अवश्यकता प्रकट करती है।

२- प्राथमिक स्तर पर शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक पायी गयी है जो प्रकरान्तर से शिक्षकों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक न होने की स्थिति का द्योतक है, अतएव इनमें सकारात्मक सोच विकसित करने की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता है।

३- माध्यमिक तथा महाविद्यालय स्तर पर शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति में सकारात्मकता विकसित करने की अपेक्षाकृत अधिक आवश्यकता की पुष्टि होती है।

४- तीनों शिक्षण-स्तरों - प्राथमिक, माध्यमिक तथा महाविद्यालयं के शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा आयु के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना अधिक प्रौढ़ शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने कीं आवश्यकता को प्रतिपादित करता है।

५- शोध परिणामों ने नगरीय शिक्षक-शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति ग्रामीण की तुलना में अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति को प्रदर्शित किया है, अस्तु, ग्रामीण शिक्षक- शिक्षिकाओं में सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित करने की आवश्यकता को बल मिलता है।

६- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक-शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति तथा जीवन-मूल्यों- सैद्धान्तिक तथा धार्मिक के साथ ऋणात्मक सह-सम्बन्ध का पाया जाना, सैद्धान्तिक तथा धार्मिक वृत्ति के शिक्षक-शिक्षिकाओं के सोच में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित किये जाने की आवश्यकता की पुष्टि करता है। ताकि जनसंख्या-शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति सकारात्मक हो सके।

७- प्राथमिक स्तरीय नवजवान शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति, नवजवान शिक्षकों से अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक पायी गयी, जो नवजवान शिक्षकों के सोच में सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता प्रतिपादित करती है।

८- शोध परिणामों में माध्यमिक स्तरीय ग्रामीण तथा नगरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति का कम सकारात्मक पाया जाना, माध्यमिक स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं में सकारात्मक सोच विकसित करने की आवश्यकता प्रकट करता है।

वस्तुतः माध्यमिक शिक्षण स्तर सम्पूर्ण शिक्षा काल का बहुत ही महत्वपूर्ण काल होता है क्योंकि माध्यमिक स्तर के पश्चात अनेक छात्र/छात्रायें अपने व्यावहारिक जीवन में प्रवेश करते हैं, अस्तु, इस स्तर के बालक/बालिकाओं में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच विकसित करने के उद्देश्य से माध्यमिक स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं के सकारात्मक सोच की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

वर्तमान शोध की सीमायें-

जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति विषयक वर्तमान शोध से महत्वपूर्ण शोध-निष्कर्ष प्राप्त हुए है। तथापि शोध-निष्कर्षों की सीमाओं की उपेक्षा नहीं की ज सकती है। वस्तुतः

वर्तमान शोध की सीमाओं को अधोलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है-

१- वर्तमान शोध के परिणाम मात्र ४५० शिक्षक तथा ४५० शिक्षिकाओं के न्यादर्श पर आधारित है जबकि अधिक सारगर्भित परिणामों के लिये अपेक्षाकृत बड़े न्यादर्श की अपेक्षा होती है अस्तु, जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को सीमित अर्थों में ही देखा जाना चाहिये।

२- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति शिक्षक/शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति को उनके जीवन-मूल्यों तथा चरों- परिवेश, लिंग-भेद, आयु, परिवार के आकार आदि से सह-सम्बन्ध की गणना की गयी है, जबकि अन्य चरों को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जा सका है, अस्तु, सह-सम्बन्धित चरों की दृष्टि से भी वर्तमान शोध एक सीमित अध्ययन है।

३- वर्तमान शोध में शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा विभिन्न चरों के मध्य सह-सम्बन्ध की गणना की गयी है अतएव सन्दर्भित चरों की कारक रूप में भूमिका विनिश्चयन नहीं हो सका है।

४- वर्तमान शोध के न्यादर्श को धार्मिक आधार पर वर्गीकृत नहीं किया गया था जिससे विभिन्न धार्मिक मतावलम्बियों की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को नहीं जाना जा सका है जबकि अभिवृत्ति में धर्म की उपेक्षा नहीं की सकती ।

५- वर्तमान शोध में जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति तथा उसका विविध चरों से सह-सम्बन्ध वस्तुतः प्रयुक्त परीक्षणों की विश्वसनीयता तथा वैधता पर भी निर्भर करते हैं।

६- यद्यपि न्यादर्श के चयन में पूर्ण सावधानी अपनायी गयी है ताकि न्यादर्श जनसंख्या का वास्तविक प्रतिनिधि हो तथा वह सामान्य सम्भाव्यता की दशाओं की पूर्ति करता हो तथापि व्यवहार मे ऐसे

न्यादर्श को प्राप्त कर पाना सदैव सम्भव नहीं होता है, अतएव वर्तमान शोध के परिणाम उस सीमा तक ही सत्य माने जाने योग्य हैं जिस सीमा तक न्यादर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

७- माध्यमिक स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्राथमिक तथा उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक/ शिक्षिकाओं की अभिवृत्ति से कम सकारात्मक पाये जाने का तार्किक आधार कारण बता पाने में प्रस्तुत शोध समर्थ नहीं हो सका है। निःसन्देह माध्यमिक स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाओं की कम सकारात्मक अभिवृत्ति के मूल में ऐसे कारकों की भूमिका सम्भव है जिनका वर्तमान शोध में अध्ययन नहीं किया जा सका है।

भावी शोध हेतु सुझाव-

वर्तमान शोध की सीमाओं के प्रकाश में शोधकर्त्री इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि भावी शोध हेतु अधोलिखित शोध बिन्दुओं को सुझाया जाये-

१- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक भावी शोधों में अधिक व्यापक न्यादर्श लेना सारगर्भित परिणाम दे सकेगा।

२- जनसंख्या-शिक्षा विषयक शोधों में अन्य विविध चरों को भी अध्ययन में सम्मिलित किया जाना उपयोगी सिद्ध होगा।

३- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक भावी शोधों में विविध चरों की कारक रूप में भूमिका का अध्ययन किया जाना उपयोगी होगा।

४- जनसंख्या-शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति विषयक भावी शोधों में विभिन्न धर्मावलंबी शिक्षक/शिक्षिकाओं को सम्मिलित किया जाना उचित होगा।

५- जनसंख्या-शिक्षा विषयक भावी अध्ययनों में अभिभावकों तथा छात्र/छात्राओं को भी सम्मिलित किया जाना औचित्य पूर्ण होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

संदर्भ ग्रन्थ-सूची

(अ)- हिन्दी ग्रन्थ

अग्रवाल, एस.के. : जनांकिकी के सिद्धान्त, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ १९७७

बघेल, किरण : जनांकिकी एवं भारत में जनस्वाथ्य, पुष्पराज प्रकाशन, इलाहाबाद, १९८२

चन्द्रशेखर, एस, : भारत की जनसंख्या : तथ्य समस्या और नीति, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, १९६८ ।

दुबे एवं मिश्र : जनांकिकी एवं जनसंख्या अध्ययन, साहित्य भवन आगरा, १९७२ ।

हीरा लाल : जनसंख्या भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर १९८६ ।

जैन शशि के० : जनसंख्या-शिक्षा : सिद्धान्त एवं उपादेयता जनसंख्या केन्द्र इन्दिरा नगर, लखनऊ, १९८५ ।

मिश्र भास्कर एवं अन्य : जनसंख्या-शिक्षा सिद्धान्त एवं तत्व, जनसंख्या केन्द्र उत्तर प्रदेश, लखनऊ, १९८७ ।

पंत, जीवन चन्द्र : जनांकिकी, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ १९८६ ।

रस्तोगी, घनश्याम : आधुनिक सामाजिक मनाविज्ञान, टाटा मैकग्राहिल पब्लिकशिंग कम्पनी, लिमिटेड, नई दिल्ली,१९८० पृ० सं० २५१-२५४ ।

राज्य शिक्षा संस्थान, उ० प्र० : जनसंख्या-शिक्षा दिग्दर्शिका मुख्य विचारणीय बिन्दु, १९८२

राज्य शिक्षा संस्थान, उ० प्र० : जनसंख्या-शिक्षा दिग्दर्शिका, १९८२

साक्षरता निकेतन, लखनऊ : जनसंख्या शिक्षा का प्रोढ़ शिक्षा मे समायोजन, १९८७ ।

साहनी, निर्मल एवं कुमार मिथलेश : जनसंख्या-शिक्षा, भारत जनसंख्या नीति में, जनसंख्या केन्द्र, उत्तर प्रदेश, लखनऊ, १९७७

श्रीवास्तव, एस, टी, : जनांकिकी सिद्धान्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, नई दिल्ली, १९८०

सिन्हा, बी, सी, एवं द्विवेदी,

आर, एस,	: जनांकिकी के सिद्धान्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, नई दिल्ली, १९८४ ।
श्रीवास्तव, ओ, एस,	: आर्थिक सामाजिक जनांकिकी शास्त्र, विवेक प्रकाशन जवाहर नगर,नई दिल्ली, १९८७ ।
रजिस्ट्रार सेन्स फॉर इण्डिया	: सेन्सस रिपोर्ट ऑफ इण्डिया, १९९१
शैरी, जी० पी०	: पोषण एवं आहार विज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९८५
त्रिवेदी, आर० एस० एवं त्रिपाठी कुमकुम	: जनसंख्या-शिक्षा का प्रौढ़ शिक्षा साक्षरता कार्यक्रम में समायोजन, राज्य संसाधन केन्द्र लखलऊ, १९९२
वर्मा चन्द्रशेखर	: जनसंख्या-शिक्षा का प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम में समायोजन, साक्षरता निकेतन प्रकाशन, लखनऊ, १९८७
वात्स्यायन	: सामाजिक जनांकिकी एवं जनसंख्यात्मक समस्यायें, विवेक प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली- ७ ,१९८२ ।

(ब)-अंग्रेजी ग्रन्थ

ABRAHAM, USHA P. :A study of awareness attitudes and skills of secondary school students of Hydrabad and Ranga Reddy Districts on populatiuon ISSUES PH. D Edu. USMANIA Uni-

AGRAWAL :Population Education, SHRIPRA PUBLICATIONS , Delhi, 2002 versity, 1991

AGRAWALA, R.N. :Population National Book Trust of India, New Delhi, 1967

AGRAWALA, S.N :India "s Population Problem, Mc Graw hill, Publidhing Co. LTD. New Delhi, 1985 .

AGRAWALA SARASWATI :An investigation into the awareness among primary and Secondary schoold teacher to wards population problems and theie attitudes towards population. Ph. D. Kanpur university 1990 .

AGRAWALA, S.N :Birth rate can be Halved in a Generation Yojna 8 (7) April 12, 1964

AGRAWALA, S.N :Indias"s Population in presepective planning, Asia publishing house, New Delhi, 1974

ANANTA PADMABHAM& CHANDRA RAMESH :Population education in :Classrooms, N.C.E.R.T. & Chandra Ramesh (ED.) New Delhi, 1978 .

AGRAWALA, S.N. :Attitude Towards family planning in India Asia publishing House, Bombay, 1962

ALLEN, L. EDWARD :Techniques of Attitudes & Scale

contruction, Appleton, Century crafts Inc. New York, 1957.

AMRITAGOWRI, R. :A Study of effective methods to implement population Education to Higher Secondary students M. Phil Home Sc. Avinashilingam institute Higher Eduction for women 1983.

ANASTASI, ANNE :Phychological Testing, The Macmillan Company , New York , 1954 .

BARASUBRANIAM , NARAYAN DAS AND OTHER :A study of the relatins of High School :Teachers to Population Education as Intregral part of the curriculum , family welfare vol. 17, no. 2 December 1970

BERTWITH, L. :A study of Social Phychology, Inninois The Dryden Press, Hindsdale, 1975.

BHANDARKAR, K.M. : A Study of Population Education knowledge and Attitudes of secondary Students and Teachers, Ph.d. Edu. Bhopal Univ. 1983.

BINGHOM. WALTER VAN DYKE : Aptitude and Attitude testing, Harper and Brother Pub-lishing New York, 1973.

Bose, A. Desai, P.B. & Jain, S.P. :Studies in Domography, George allen and Union Led, London 1970.

BOSE, ASHISH AND OTHERS : Population Studies in India, Vikash Publising House pvt. Ltd,, New Delhi.

BOSE ASHISH & OTHERS : Population of India's Development 1947-2000 Delhi, 1974.

CHAIWAT PANJAPHANGSE : Knowledge, Attitude and belief about population Eudcation of Teachers in Thailand, Ph. D. Thesis University of

Northcarolima At chapel Hill, 1974.

CHAIWAT PANJAPHONGS :Knowledge school Teachers About Population Education, Bangkok Mahidol University 1975, P.37(Research Report paper No.3)

CHANDRA SHEKHAR, S. :Idia's Population fact problem and policy, Meecakshi Publishing, Meerut, 1970 .

CHAULS, DONALD :Population Educationshould be introduced first at the primary levelfather at the secondary level-A sociological Approach, The Jaurnalof family welfare 19(2) 19-35 Bombay, Dec. 1972.

DANDEDAR, K. :Age at marriage in India, Economic and polotical weekly9 (22), June, 1974.

DEROTHY L. NORNAM :Population and family planning Programme, Aconpendium of data through 1983, Bew2 York.

DUBEY D.C. AND ANITA BARDHAN :Status of Women and Fertility in India, :Bational Instituter of Family Planning Bew Delhi, 1974.

DAYAL, SHAIBALA :A knowledge ofschool Teachers about family planning and their reaction curricullum, Journal of familuy welfare vol.17 No.3 March 1973.

FAMILY PLANNING ASS.OF INDIA :Population Education Bews chandigarh, Jan 19, 1984.

GANGULI, B.N. :Population and Development, S. Chand Co. Pvt. Ltd. Ram Nagar, New Delhi, 1973.

GARRETT, HENRY E. :Staytistics in Psychology and Education, Vakils, Feffer and simons private Ltd., Bombay1973.

GEORGEM K.V. :Identification of sez related prblems of adole scents in the college ofKerala and their perception ofsez Education, PH.D. Dducation University of Kerala, 1991.

GI;;FPRD,J.P. :Fundamental statistics in psychology and Education, Mc Graw Hill Book Co,pany, Bew York, 1956.

GUPTA, R. DAS :Population and Food, National Publishers, calcutta, 1970.

GUPTA, L.C. :Chance, India Book House, Pvt. Ltd.Bombay, 1983.

HANSRAJ :Population studies, surjeet publication Kamla Bagar, Delhi,1986.

JOHN.W. BEST :Research in Education , Prentice hall of India Private Limited, New Delhi, 1978.

H.E. GARRETT :Statistics in Psychology and Education vakils,Feffer And simons Private Limited Bombay-1973

HARRY, E.AND TRIANDMIS, H. :Aptitude and Attitude Change, Jhon willey & Sons, 1971.

JAIN, S.P. :Indian Population Situation, Population Education cell, NCERT, new Delhi, 1971.

KATIYAR, R.K. :Determinats of Voalues in Small family Borms, Bombay Journal offamilywelfare 22 (3) march, 1976, Bombay.P.P. 62-68. Attitude change and social wel fare Basic Book, 1964.

KOREAN EDUCATIONNAL DEVELOPMENT INSTITUTE :A survey ofpopulation Consciousness of Students and Teachers in Elementaryand secondary Schools, Scoul, 1997.

KULSHESTHA, S. :A study ofattitude of Women teacher towards population Education, Rohil Khand University, 1990.

KULASHRESTHA, S.P. :Emerging Value-pattern of Teachers and New Trends of Education in Idia, Light and like Piblisher, New Delhi, 1979.

KUMAR, JAGINDARS & JAGRAN REGEARCHCENTRE :India's Population Future Uttranchal and Uttar Pradesh Ata gloce, Jagram Research center Jagrom Building, 2, Sarrodaya nagar kanpur, 2003.

MARAYAM VATSALA :International Institute for Populationstudies Devnager, Bombay, 1975.

LULLA, B.P. :Population Education and Social Curriculla, rjasthan Board Journal of Education, ajmer 6(2) 21-27 April-june, 1970.

METHUS, T.S. :Essay on population Chapter I, 1978

METHA, T.S. & CHANDRA, R. Population Education N.C.E.R.T. N ew Delhi-16

METHA, T.S. SEXENA R.C. RAMESH CHANDRA ,R :Population Education Draft Syllabus (Class 1& 2) National council of education research and training , new Delhi, 1972.

MEHTA, T.S. &REMESH CHANDRA (ED.) :Population Eduction Selected Reading, NCERT New Delhi 1972.

MEHTA, T.S. ET AL , :Readings in Population Education , New Delhi , 1969.

MEHTA, T.S. PRAKASH, R B. M. Saxena R.C.(Ed.) :National Seminar on population Eduaction, (August 2-3, 1969) Jan. 1970.

MISRA, B. D. :On introduction to the study of population , South Asian pubiishers, Pvt. LTD., Delhi, 1980.

MEHTA, T.S.& PRAKASH R. :Population Eduction for Teachers-A Draft Syllabus for Secondary Teachers , Training Collage, New Delhi, NCERT , 1974.

MISRA, B.S. :A Study of the Improvement of Population Awareness among the Secondary Stage students through a tryout of population education Material Development by SCERT orrisa, 1989.

MURTHY, M.S.Q. :Some thoughts on population Education, Agrawal prakashan, Ambalacity 1975, p. 75.

MINISTRY OF EDUCATION RELLGIOUS AFFAIRS :A Study of knowledge and attitudes towards population education and preatices of family planning of Teachers , Dhaka , 1979.

NALNI DEVI, K. :A Study of population Awareness of school going chilldern and their willingness to recieve population eduction in schools, Ph. d. Home Sc. madras Uni. 1981.

NANDA, S. L. & OTHERS :A Study of the opinion of Teachers Towards population , Tripati population

Study Centre Sri Venkateshavra University , 1974 .

NANAVATI, U.R. :To Develope A learning package on population Education and to study its effectivenes, Ph.D. Eduacation SGU. 1981.

NCERT :Readings in population Education, 1978.

NCERT :Population Education - A Conceptual framework, 1979.

NCERT :Environmental Education at school level, new Delhi, 1781.

NCERT :National seminar on Population Education, 1969.

N.C.E.R.T. :National Bibliography on Population Education 1975.

NCERT :Population Education selected Readings, 1972.

NCERT :Indian Population and Dvelopment, New delhi, 1977.

NCRT :Fourth Survey of Research in Education, 1992.

NCRT :Fifth Survey of Research in Education, 1998.

ORWAWIN TROCKI :Attitude Towards family Planning and Population Education among Teachers and students singapore, Southeast Asia Population Reachers Awards Programme, 1977.p. 128 (Seaprap Research Report No. 21).

PATNAIL, R. :Measurement of Attitude towards

	Population Education, M.Phil Edu. Revenshaw College, Cuttak 1998
PRAMILA KAPOOR	:Marrige and the working womenin India, Vikas Publising House, New Delhi, 1970.
A PANEL DISCUSSION,	:Population Education, Asia Publishing House, Bombay, 1971.
PRAKASH, B.S.	:"Population education inception to institutional isation", NCRT New Delhi, 1985.
STATE INSTITUTE OF POPULATION EDUCATION TRIVENDRUM	:Training Mannual, 1983.
REGINOL COLLEGE OF EDUCATION	:'Population Education' A mannual for Teacher Educators, 1984.
ROKEACH, M.	:Beliefs, Attitudes and values, snaframcisco, JosseyBoss, 1968
ROA, D.GOPAL	:Population Education, Sterling publishing ltd. 1934.
ROA, D. GOPAL	:A study of the awareness of teachers of population problems and their reactions tot he introduction of Population Education in Schools. Population Education in Schools. Population Education Unit NCRT New delhi, 1976.
RUDDARDUTT, SUNDHA RAM, K.P.M.	:Indian Economy Chand, New Delhi, 2002
SALKAR, K.R.	:A Study of Population awareness among school students in Goa (std. VII-XI) as well as Teachers and parents and their reaction to the Inclusion of

Population Education in the School Curriculum, Ph.D. Edu. Bombay Univ. 1975

SATTASHAKWARA, H.G. :Tryout A strategy of Bringing about attitudional Cahnge in the context of population Ph.D. Edu. S.G.U. 1981.

SCERT, MAHARASTRA, :Tryout A strategy of Bringing about attitudional Change in the context of population Ph.D. Edu. S.G.U. 1981

SCERT, MAHARASTRA :An Evalution of the Teaching Learning of Population Education, National Population Education Project, Pune, 1986.

SCERT, BIHAR :Achievement of Scondary level student in population education, An Evaluation study, 1986.

SEN, S.K. :Nutrition and population Education, NCERT, New Delhi, 1973.

Sharma. G.D. :A Study of relationship between Educational level, Social Status, Attitudes and family size of middle area parents, Ph.D. Edu. H.P.U. 1983.

SRI NIVASHAN, K. MUKHERJEE :Dynamics of Populsion and family Welfare in india, Bombay Population Prakashan, Bombey, 1979.

SHARIRIF, M. SHERIF, C.W. :Social Phychology, NewYork, Harper and Row, 1979. see p. 19 (1969)

SODHI, T.S. SHARMA, G.D. :Mannual for attitute Scal Towards small family and population Education, National Phychological corporation 4/230, kacher Ghat, Agra, 1985.

THOMSON LEWIS :Population Problems, Tata MC Grahill Publishing Co. Ltd., New Delhi, 1978.

TRIBHUWAN UNIVERSITY CURRICULAM DEVELIPMENT CENTER :Knowledge and attitudes survey of Population Education . :Kathamandu, 1982.

UNESCO Population Trends and Development, Bangkok, 1977.

UNESCO :Popolation Education in Asia and the pacific, News latter, Bangkok'. 1980.

UNESCO :Population Education Program in Asia what research says' Bankok' 1983.

UNESCO :Training in out of School Population Education Bankok, 1982.

UNESCO :Teaching Methodologies for Population Education Inquiry/ Discovery Apporach Valu Clarification Bankok, 1985.

UNESCO :Popolation Education, Asia, source Book ,' A source Book 'Bangkok', 1975.

UNESCO :Popolation Educational a con – temporary, concern Educational Studies and Documents, Bangkok, 1978.

UNESCO :Popolation Education Innovative Structure , Regional office for Education Asia and Pacific, Bangkok,

UNESCO :Teaching Methodologies in population Education, Abstract bibliography Series 5 Bangkok, 1984.

UNESCO :Popolation Education in Rural Development Programme, 3 A Book of

our ricular Metrial “Bankok” 1980.

UNESCO :Future Directions of Populations A Report of Regional consulatative Semnar Manila, 1978.

UNESCO :Population Education in Non programme :A mannual for field workers, Bangokok, 1981.

UNESCO :Learning exprience in Population Education, Vol. ll Bangkok, 1985.

UNESCO :Population Education for out of school youth & Adults Reports of a consutultative Senminar, Bangkok Regional of fice for Education in Asia and pacific, Bangkok, 1985 .

UNESCO :Evaluation Research in Population Eduction, Bankok, 1977

WEST, JHON, W. : Research in Education Third Edition, Prentice Hall of India, Private Limited, New Delhi, 1978..

West Visayas State College Population for Training Research :Assesment of Secondary School Technology Students knowledge of and attitudes towards population eduction, Abstract, Iloilo ,1978.

VASWANT, N.V. INDRA KAPOOR :School Teacher,s attitude towards Population Eduction, Bombay Family welfar training and research center, 1977.

WADIA, A.D :Population Education, journal of family weflfare, 14, (14), Bombay june 1970.

परिशिष्ट

दत्त सूची

जनसंख्या –शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृत्ति का कुछ मनो–सामाजिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

विषयक दत्त

(प्राथमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकाएँ)

क्रम. सं.	जनसंख्या शिक्षा	परिवेश	लिंग	शैक्षिक स्तर	आयु	परिवार का आकार	जीवन मूल्य					
							A	B	C	X	Y	Z
1	0	1	1	1	48	0	39	34	40	49	34	43
2	-8	1	1	1	57	7	47	36	43	37	43	35
3	0	1	1	1	59	3	40	47	35	33	39	31
4	2	1	1	1	52	4	35	51	37	48	39	25
5	4	1	1	1	59	1	40	40	32	47	37	44
6	4	1	1	1	47	5	36	45	34	44	41	37
7	15	1	1	1	46	3	53	43	21	47	46	31
8	-3	1	1	1	54	3	56	42	33	43	45	39
9	13	1	1	1	59	2	45	41	30	42	48	34
10	11	1	1	1	55	2	36	43	27	48	50	36
11	11	1	1	1	45	3	37	43	27	45	52	46
12	11	1	1	1	40	2	36	43	27	48	50	36
13	11	1	1	1	33	4	36	42	26	40	44	36
14	12	1	1	1	49	3	23	16	8	20	38	25
15	11	1	1	1	45	5	36	40	18	44	40	41
16	14	1	1	1	30	2	40	40	37	49	42	32
17	14	1	1	1	40	0	36	46	26	48	50	34
18	14	1	1	1	45	2	40	40	37	49	42	32
19	11	1	1	1	58	5	36	43	27	48	40	35
20	10	1	1	1	45	0	37	43	27	48	49	35
21	13	1	1	1	50	2	36	42	28	48	50	36
22	11	1	1	1	54	2	35	42	28	38	51	36
23	11	1	1	1	50	7	43	48	35	33	34	37
24	14	1	1	1	50	3	40	43	35	42	41	39
25	11	1	1	1	31	2	36	42	27	48	51	36
26	-1	1	1	1	55	3	38	48	35	44	41	34
27	6	1	1	1	30	2	41	36	42	34	43	45
28	9	1	1	1	30	1	44	39	22	47	42	38
29	10	1	1	1	31	3	42	36	20	54	42	46
30	13	1	1	1	50	4	55	38	26	53	45	23

31	14	1	1	1	56	4	42	40	30	48	42	38
32	12	1	1	1	51	4	40	33	26	43	44	47
33	14	1	1	1	28	3	46	27	24	51	47	46
34	16	1	1	1	33	2	45	38	25	53	46	33
35	13	1	1	1	36	1	48	41	28	45	38	40
36	16	1	1	1	40	3	45	44	25	52	42	32
37	12	1	1	1	35	3	43	40	25	53	46	33
38	6	1	1	1	46	3	42	42	41	41	36	37
39	12	1	1	1	32	1	47	48	20	36	48	40
40	16	1	1	1	30	4	51	34	30	42	50	34
41	14	1	1	1	32	1	51	49	24	39	43	36
42	10	1	1	1	40	2	40	47	18	51	47	36
43	9	1	1	1	35	2	40	17	3	48	26	47
44	10	1	1	1	25		44	41	25	47	47	36
45	9	1	1	1	38	3	44	41	25	38	47	45
46	0	1	1	1	48		39	34	40	49	34	43
47	0	1	1	1	59	3	40	47	35	33	39	31
48	12	1	1	1	52	4	40	37	32	46	51	25
49	14	1	1	1	47	5	35	42	43	40	36	39
50	15	1	1	1	46	3	49	39	32	47	46	32
51	14	1	1	1	54	3	30	40	37	37	45	40
52	13	1	1	1	59	2	40	41	39	40	42	39
53	14	1	1	1	55	2	39	40	37	42	52	36
54	11	1	1	1	45	3	39	40	28	42	48	46
55	11	1	1	1	40	2	37	48	27	42	48	39
56	4	1	1	1	33	4	32	26	42	36	49	40
57	14	1	1	1	49	3	25	16	23	18	48	38
58	11	1	1	1	45	5	32	42	28	41	32	30
59	15	1	1	1	30	2	32	18	38	40	37	32
60	14	1	1	1	40		36	46	26	48	50	34
61	15	1	1	1	45	2	32	32	40	40	49	32
62	10	1	1	1	58	5	18	43	37	42	39	35
63	10	1	1	1	45		37	40	37	42	49	35
64	13	1	1	1	50	2	33	40	38	42	49	37
65	15	1	1	1	54	2	37	37	39	48	51	33
66	11	1	1	1	50	7	41	42	36	40	41	39
67	14	1	1	1	50	3	40	38	31	33	41	48
68	11	1	1	1	31	2	39	42	37	41	51	39
69	14	1	1	1	55	3	49	38	48	41	44	52
70	13	1	1	1	30	2	43	42	42	34	36	33
71	9	1	1	1	30	1	41	38	33	36	39	38

72	10	1	1	1	31	3	42	39	26	20	19	54
73	14	1	1	1	50	4	23	55	26	38	32	38
74	12	1	1	1	56	4	38	42	48	30	40	42
75	13	1	1	1	51	4	44	40	47	43	33	26
76	8	1	2	1	51		41	39	43	37	42	49
77	12	1	2	1	42	2	43	38	29	45	45	37
78	12	1	2	1	44	1	43	38	29	45	45	32
79	14	1	2	1	48	1	46	46	30	41	48	33
80	14	1	2	1	50	2	45	41	30	42	48	34
81	11	1	2	1	45	1	36	42	27	47	52	36
82	12	1	2	1	39	1	42	38	27	47	42	38
83	6	1	2	1	50	3	38	36	37	38	50	41
84	14	1	2	1	55	3	45	41	30	42	48	34
85	12	1	2	1	40	2	42	45	23	39	42	48
86	16	1	2	1	34	4	45	38	25	52	46	34
87	7	1	2	1	27	2	49	33	34	41	38	41
88	12	1	2	1	45	2	43	38	29	45	45	37
89	14	1	2	1	42	1	42	44	21	50	37	36
90	10	1	2	1	51	0	41	39	43	37	42	39
91	12	1	2	1	42	2	40	42	32	38	45	39
92	12	1	2	1	44	1	43	29	32	45	38	45
93	15	1	2	1	48	1	30	46	46	48	33	41
94	15	1	2	1	50	2	41	30	38	42	41	45
95	11	1	2	1	38	1	28	52	36	42	47	27
96	12	1	2	1	39	1	37	33	38	38	48	41
97	9	1	2	1	50	3	50	41	38	36	37	38
98	14	1	2	1	55	3	45	48	41	30	42	37
99	12	1	2	1	40	2	23	45	42	48	39	42
100	16	1	2	1	34	4	25	52	46	34	38	45
101	8	1	2	1	27	2	41	38	33	49	39	41
102	12	1	2	1	45	2	45	43	47	45	37	38
103	15	1	2	1	42	1	21	44	42	50	36	39
104	13	1	2	1	51		37	41	49	38	33	51
105	14	1	2	1	42	2	43	38	29	45	37	45
106	5	1	2	1	44	1	29	43	45	32	42	38
107	15	1	2	1	45	1	41	33	48	46	46	30
108	16	1	2	1	53	2	48	41	41	45	30	42
109	12	1	2	1	45	1	36	28	27	52	42	47
110	13	1	2	1	36	1	38	38	33	37	39	30
111	7	1	2	1	51	4	52	49	39	33	36	28
112	15	1	2	1	52	3	41	45	30	48	37	42

153	12	2	1	1	51	1	45	32	33	49	42	35
154	15	2	1	1	56	4	41	42	37	47	42	41
155	8	2	1	1	39	2	47	30	51	28	31	39
156	13	2	1	1	42	3	48	42	35	37	39	21
157	11	2	1	1	38	2	42	33	42	42	45	45
158	8	2	1	1	31	2	38	28	48	29	38	33
159	15	2	1	1	36	3	39	39	28	42	39	50
160	11	2	1	1	40	3	27	31	46	48	28	32
161	13	2	1	1	52	5	41	35	49	50	52	27
162	14	2	1	1	31		38	38	37	38	45	38
163	7	2	1	1	33	3	45	50	41	27	37	42
164	12	2	1	1	39	2	33	42	29	52	48	38
165	11	2	1	1	56	4	36	33	48	46	41	58
166	13	2	1	1	41	2	28	38	33	21	42	50
167	15	2	1	1	43	1	43	49	43	43	29	32
168	15	2	1	1	39	2	32	29	30	21	49	50
169	11	2	1	1	46	3	43	44	52	27	42	37
170	13	2	1	1	52	1	27	27	46	33	39	32
171	15	2	1	1	54	3	42	45	38	44	44	36
172	10	2	1	1	32	1	42	41	39	42	38	42
173	9	2	1	1	47	3	29	47	46	41	44	29
174	14	2	1	1	44	2	41	38	41	28	45	36
175	16	2	1	1	53	4	28	52	33	41	42	45
176	13	2	1	1	59	2	33	37	42	42	21	42
177	13	2	1	1	34		39	37	41	39	43	40
178	15	2	1	1	41	3	43	32	46	30	33	40
179	15	2	1	1	44	2	33	42	29	36	23	38
180	10	2	1	1	53	5	52	36	48	30	45	38
181	11	2	1	1	34	2	39	31	28	51	30	47
182	15	2	1	1	42	7	41	42	47	37	42	41
183	8	2	1	1	56		35	42	49	33	32	45
184	14	2	1	1	47	3	39	37	38	49	51	38
185	16	2	1	1	49	4	42	35	36	41	38	30
186	11	2	1	1	46	2	32	28	48	46	31	27
187	12	2	1	1	59	4	50	29	42	28	39	39
188	16	2	1	1	58	5	33	38	29	48	28	38
189	9	2	1	1	38	2	45	45	42	42	42	33
190	15	2	1	1	29		21	39	37	35	42	38
191	12	2	1	1	39	3	32	33	29	46	27	27
192	15	2	1	1	42	3	37	42	27	52	44	43
193	11	2	1	1	45	2	50	49	51	30	29	32

153	12	2	1	1	51	1	45	32	33	49	42	35
154	15	2	1	1	56	4	41	42	37	47	42	41
155	8	2	1	1	39	2	47	30	51	28	31	39
156	13	2	1	1	42	3	48	42	35	37	39	21
157	11	2	1	1	38	2	42	33	42	42	45	45
158	8	2	1	1	31	2	38	28	48	29	38	33
159	15	2	1	1	36	3	39	39	28	42	39	50
160	11	2	1	1	40	3	27	31	46	48	28	32
161	13	2	1	1	52	5	41	35	49	50	52	27
162	14	2	1	1	31		38	38	37	38	45	38
163	7	2	1	1	33	3	45	50	41	27	37	42
164	12	2	1	1	39	2	33	42	29	52	48	38
165	11	2	1	1	56	4	36	33	48	46	41	58
166	13	2	1	1	41	2	28	38	33	21	42	50
167	15	2	1	1	43	1	43	49	43	43	29	32
168	15	2	1	1	39	2	32	29	30	21	49	50
169	11	2	1	1	46	3	43	44	52	27	42	37
170	13	2	1	1	52	1	27	27	46	33	39	32
171	15	2	1	1	54	3	42	45	38	44	44	36
172	10	2	1	1	32	1	42	41	39	42	38	42
173	9	2	1	1	47	3	29	47	46	41	44	29
174	14	2	1	1	44	2	41	38	41	28	45	36
175	16	2	1	1	53	4	28	52	33	41	42	45
176	13	2	1	1	59	2	33	37	42	42	21	42
177	13	2	1	1	34		39	37	41	39	43	40
178	15	2	1	1	41	3	43	32	46	30	33	40
179	15	2	1	1	44	2	33	42	29	36	23	38
180	10	2	1	1	53	5	52	36	48	30	45	38
181	11	2	1	1	34	2	39	31	28	51	30	47
182	15	2	1	1	42	7	41	42	47	37	42	41
183	8	2	1	1	56		35	42	49	33	32	45
184	14	2	1	1	47	3	39	37	38	49	51	38
185	16	2	1	1	49	4	42	35	36	41	38	30
186	11	2	1	1	46	2	32	28	48	46	31	27
187	12	2	1	1	59	4	50	29	42	28	39	39
188	16	2	1	1	58	5	33	38	29	48	28	38
189	9	2	1	1	38	2	45	45	42	42	42	33
190	15	2	1	1	29		21	39	37	35	42	38
191	12	2	1	1	39	3	32	33	29	46	27	27
192	15	2	1	1	42	3	37	42	27	52	44	43
193	11	2	1	1	45	2	50	49	51	30	29	32

235	13	2	2	1	37	3	32	43	42	38	52	48
236	15	2	2	1	29	2	36	46	38	32	26	32
237	12	2	2	1	38	3	38	37	37	38	32	28
238	15	2	2	1	33	2	48	40	30	32	29	42
239	8	2	2	1	49	3	47	43	42	32	33	41
240	10	2	2	1	53	1	28	48	52	36	36	28
241	12	2	2	1	46	3	35	40	28	42	28	32
242	11	2	2	1	52	4	42	29	30	30	42	28
243	14	2	2	1	40	2	52	34	38	32	32	42
244	15	2	2	1	32	2	22	32	48	43	42	36
245	7	2	2	1	59	5	42	52	48	38	30	52
246	14	2	2	1	55	3	32	36	32	38	48	28
247	15	2	2	1	34	2	36	36	42	48	51	42
248	9	2	2	1	42	1	43	48	42	39	30	32
249	8	2	2	1	46	2	35	36	28	52	32	38
250	12	2	2	1	30	1	32	48	48	36	34	22
251	8	2	2	1	38	3	28	32	32	22	36	37
252	16	2	2	1	30		30	42	28	39	42	35
253	11	2	2	1	32	2	52	48	32	36	50	32
254	10	2	2	1	54	3	28	22	36	42	48	39
255	12	2	2	1	56	2	22	36	42	48	42	41
256	14	2	2	1	34	2	48	46	48	32	32	28
257	14	2	2	1	35	1	36	30	42	52	34	30
258	13	2	2	1	39	3	32	36	28	48	32	52
259	14	2	2	1	42	2	28	30	38	46	38	28
260	16	2	2	1	45	4	22	32	42	42	52	36
261	5	2	2	1	49	2	36	32	38	32	28	35
262	14	2	2	1	52	1	38	48	32	28	30	30
263	12	2	2	1	42	3	42	30	32	43	38	39
264	3	2	2	1	59	2	38	48	39	52	36	42
265	11	2	2	1	44	4	22	39	36	42	46	48
266	16	2	2	1	40	3	42	48	32	52	48	43
267	15	2	2	1	36	2	48	46	42	32	28	51
268	12	2	2	1	41	1	28	30	38	48	48	48
269	13	2	2	1	38	2	32	42	42	28	42	42
270	5	2	2	1	35	3	28	32	36	42	48	32
271	7	2	2	1	53	4	32	38	35	48	26	42
272	12	2	2	1	56	2	38	32	38	42	52	36
273	14	2	2	1	41	1	42	30	32	42	28	32
274	15	2	2	1	33	2	28	52	32	28	42	28
275	16	2	2	1	39	1	48	28	30	48	32	42

276	7	2	2	1	50	4	33	22	36	32	42	36
277	-3	2	2	1	58	2	35	48	30	28	30	52
278	10	2	2	1	46	1	52	36	46	32	48	28
279	12	2	2	1	40	3	35	32	36	36	51	42
280	8	2	2	1	51	2	29	28	22	42	30	32
281	15	2	2	1	36	3	38	22	48	48	32	38
282	11	2	2	1	31	1	43	36	42	42	34	22
283	16	2	2	1	28		30	38	32	28	36	37
284	14	2	2	1	26		28	42	48	38	42	35
285	10	2	2	1	47	2	42	38	36	42	50	32
286	14	2	2	1	40	1	42	22	48	38	48	39
287	13	2	2	1	45	3	34	42	36	32	42	41
288	15	2	2	1	39	3	48	48	36	32	32	28
289	14	2	2	1	34	2	38	28	52	39	34	30
290	16	2	2	1	26	1	48	32	32	36	32	52
291	13	2	2	1	29	2	42	28	34	32	38	28
292	14	2	2	1	39	1	52	32	29	42	52	36
293	16	2	2	1	43	3	22	42	40	38	28	35
294	11	2	2	1	49	2	42	30	28	42	30	30
295	16	2	2	1	32	1	32	46	30	36	38	39
296	15	2	2	1	56	3	36	48	38	42	36	42
297	8	2	2	1	54	2	43	39	48	28	46	48
298	11	2	2	1	50		35	48	48	48	48	43
299	10	2	2	1	38	3	32	30	32	32	28	51
300	9	2	2	1	49	1	28	48	42	52	48	48

संकेत :

परिवेश	आंकिक मान	**लिंग :**	आंकिक मान	**शैक्षिक स्तर :**	आंकिक मान	**जीवन मूल्य :**	
ग्रामीण	1	शिक्षक	1	प्राथमिक	1	A-सैद्धान्तिक	X- सामाजिक
नगरीय	2	शिक्षिका	2	माध्यमिक	2	B-आर्थिक	Y- राजनैतिक
				उच्च	3	C-सौन्दर्यात्मक	Z- धार्मिक

(माध्यमिक शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकायें)

क्रम सं.	जनसंख्या शिक्षा	परिवेश	लिंग	शैक्षिक स्तर	आयु	परिवार का आकार	जीवन मूल्य					
							A	B	C	X	Y	Z
1	0	1	1	2	26	0	44	40	48	49	16	43
2	15	1	1	2	40	3	42	29	28	48	47	48
3	14	1	1	2	35	2	50	34	27	48	42	39
4	16	1	1	2	23	0	48	35	24	44	44	37
5	14	1	1	2	29	0	47	38	33	40	44	38
6	14	1	1	2	25	0	44	38	29	52	46	31
7	7	1	1	2	31	1	55	42	28	43	42	36
8	14	1	1	2	29	1	42	44	16	49	48	41
9	14	1	1	2	21	0	42	49	23	41	41	46
10	8	1	1	2	28	0	47	32	29	48	37	44
11	9	1	1	2	37	3	51	37	21	55	44	34
12	10	1	1	2	32	1	54	42	20	48	44	32
13	10	1	1	2	40	4	42	39	31	47	45	36
14	10	1	1	2	24	1	50	42	30	48	40	30
15	14	1	1	2	25	1	54	33	21	40	41	51
16	14	1	1	2	39	0	47	36	20	54	50	33
17	7	1	1	2	30	0	33	30	34	53	44	37
18	7	1	1	2	37	1	33	30	34	53	43	37
19	12	1	1	2	21	0	37	36	33	51	41	40
20	14	1	1	2	20	0	37	36	39	51	40	40
21	14	1	1	2	50	4	37	36	36	51	41	40
22	14	1	1	2	36	2	40	41	30	47	45	37
23	14	1	1	2	30	2	46	42	18	53	45	36
24	10	1	1	2	24	1	44	45	22	52	52	25
25	14	1	1	2	38	2	41	42	25	47	52	27
26	12	1	1	2	40	2	44	45	24	52	52	23
27	11	1	1	2	45	3	43	47	23	49	55	23
28	12	1	1	2	45	4	44	45	22	52	51	25
29	14	1	1	2	49	3	48	50	24	48	50	20
30	12	1	1	2	52	3	44	45	22	52	52	25
31	12	1	1	2	46	3	44	45	22	52	52	25
32	12	1	1	2	47	2	44	42	35	41	43	35

33	-5	1	1	2	51	3	43	39	31	43	44	40
34	3	1	1	2	41	3	38	39	43	37	39	44
35	2	1	1	2	36	3	38	36	40	36	49	41
36	3	1	1	2	38	0	40	35	41	42	44	38
37	9	1	1	2	45	2	49	37	36	40	43	37
38	14	1	1	2	32	1	42	50	31	48	39	32
39	12	1	1	2	46	1	41	50	31	48	39	31
40	11	1	1	2	42	3	41	50	31	50	37	32
41	12	1	1	2	33	2	44	37	39	35	52	33
42	15	1	1	2	45	4	44	35	33	47	43	38
43	8	1	1	2	52	5	44	39	34	40	41	42
44	9	1	1	2	56	1	39	51	33	47	39	30
45	9	1	1	2	32	2	38	50	31	41	41	31
46	11	1	1	2	40	1	39	38	36	38	52	35
47	12	1	1	2	38	2	32	35	32	28	18	45
48	14	1	1	2	36	1	48	42	32	48	52	26
49	16	1	1	2	42	5	52	36	38	28	18	22
50	8	1	1	2	39	2	44	44	45	22	52	25
51	14	1	1	2	52	1	50	37	35	39	51	50
52	7	1	1	2	56	3	41	50	31	48	42	42
53	11	1	1	2	51	0	32	32	38	36	28	18
54	13	1	1	2	38	3	18	47	42	35	30	28
55	12	1	1	2	28	1	48	52	26	33	33	22
56	3	1	1	2	57	3	42	35	32	42	48	52
57	13	1	1	2	36	2	52	35	48	52	36	27
58	5	1	1	2	42	1	32	33	48	28	36	32
59	9	1	1	2	48	2	28	42	28	32	18	36
60	11	1	1	2	51	0	42	22	33	36	40	32
61	12	1	1	2	32	3	44	45	22	25	52	52
62	14	1	1	2	37	1	48	50	24	48	50	20
63	14	1	1	2	41	2	46	42	18	53	45	36
64	12	1	1	2	45	1	37	36	39	51	40	40
65	10	1	1	2	38	1	54	42	20	48	44	32
66	9	1	1	2	42	4	33	30	34	53	43	37
67	15	1	1	2	46	1	44	45	22	52	52	25
68	14	1	1	2	52	2	32	28	52	36	32	32
69	12	1	1	2	36	2	28	26	18	42	38	48
70	14	1	1	2	39	1	35	44	43	40	16	41
71	7	1	1	2	42	4	42	48	48	37	47	40
72	13	1	1	2	46	5	39	44	39	40	42	42

73	12	1	1	2	51	0	42	43	37	37	44	45
74	11	1	1	2	56	2	33	44	38	36	32	45
75	15	1	1	2	38	3	36	41	31	25	44	52
76	16	1	2	2	32	1	30	44	36	32	46	48
77	14	1	2	2	39	2	30	46	41	27	48	48
78	8	1	2	2	42	2	36	37	46	38	41	44
79	14	1	2	2	52	1	36	37	44	23	37	40
80	16	1	2	2	48	4	36	32	34	25	44	52
81	7	1	2	2	45	2	41	38	32	23	52	43
82	5	1	2	2	28	2	42	47	36	48	28	49
83	10	1	2	2	32	3	45	54	30	42	44	41
84	8	1	2	2	46	1	42	50	51	25	45	48
85	12	1	2	2	57	0	45	42	33	20	40	40
86	13	1	2	2	50	2	47	52	37	38	41	54
87	16	1	2	2	48	1	48	47	37	30	50	48
88	8	1	2	2	29	3	52	42	40	20	44	28
89	8	1	2	2	36	3	25	55	48	42	40	24
90	10	1	2	2	33	2	41	36	38	40	52	48
91	5	1	2	2	37	2	48	30	28	42	48	32
92	12	1	2	2	32	2	42	42	48	46	42	22
93	9	1	2	2	41	3	35	30	42	38	33	52
94	8	1	2	2	44	1	28	38	35	36	42	20
95	11	1	2	2	48	2	42	32	38	35	40	26
96	12	1	2	2	45	1	36	28	18	36	52	50
97	12	1	2	2	59	4	35	42	36	38	31	18
98	14	1	2	2	52	2	28	32	42	33	19	18
99	15	1	2	2	49	1	48	35	42	32	36	38
100	8	1	2	2	44	4	42	38	33	38	32	42
101	7	1	2	2	41	0	51	54	48	48	38	40
102	9	1	2	2	32	2	36	26	35	32	32	37
103	12	1	2	2	27	0	28	42	37	38	42	42
104	12	1	2	2	37	2	52	42	48	32	28	28
105	8	1	2	2	41	3	48	42	35	28	42	36
106	10	1	2	2	32	1	35	28	48	42	51	36
107	12	1	2	2	37	2	28	52	48	35	28	30
108	14	1	2	2	42	3	42	30	38	32	28	42
109	16	1	2	2	47	1	32	35	38	54	26	42
110	10	1	2	2	53	4	42	42	42	28	52	30
111	8	1	2	2	32	2	35	38	54	26	42	42
112	12	1	2	2	30	1	42	28	52	30	35	42

113	7	1	2	2	38	1	38	28	28	48	42	35
114	9	1	2	2	30	3	32	22	52	20	26	50
115	13	1	2	2	27	1	18	18	38	42	40	37
116	12	1	2	2	47	3	42	28	36	36	30	42
117	3	1	2	2	39	3	36	42	20	42	46	38
118	11	1	2	2	36	2	48	42	33	44	40	52
119	14	1	2	2	42	3	30	42	20	38	32	28
120	9	1	2	2	58	1	42	32	35	38	54	26
121	10	1	2	2	48	2	35	42	36	38	31	18
122	9	1	2	2	28	3	48	30	28	42	48	32
123	11	1	2	2	41	3	28	38	35	36	42	20
124	13	1	2	2	24	1	36	51	42	48	28	35
125	15	1	2	2	25	0	36	42	28	35	42	48
126	13	1	2	2	37	2	32	22	52	20	26	50
127	7	1	2	2	39	2	18	38	18	42	40	37
128	9	1	2	2	31	3	42	46	38	36	35	36
129	7	1	2	2	38	3	38	33	32	38	48	32
130	12	1	2	2	42	1	38	32	28	42	51	28
131	12	1	2	2	56	3	35	30	33	20	36	38
132	15	1	2	2	50	4	52	28	52	54	42	38
133	10	1	2	2	48	1	54	32	40	46	30	40
134	13	1	2	2	53	2	26	42	35	42	52	26
135	9	1	2	2	28	1	28	48	33	18	18	54
136	12	1	2	2	37	3	48	30	52	36	48	48
137	11	1	2	2	39	3	42	28	28	52	35	38
138	14	1	2	2	31	2	35	42	38	50	42	40
139	16	1	2	2	43	3	38	48	35	35	32	36
140	10	1	2	2	58	4	18	32	36	42	36	26
141	7	1	2	2	42	2	36	42	42	36	38	35
142	9	1	2	2	36	1	42	42	20	38	42	32
143	10	1	2	2	39	0	42	48	42	31	38	32
144	10	1	2	2	47	1	33	46	32	18	33	37
145	12	1	2	2	27	2	48	42	38	28	38	28
146	15	1	2	2	30	2	35	22	35	32	32	42
147	3	1	2	2	38	4	37	35	40	42	42	48
148	11	1	2	2	30	3	48	30	26	33	51	28
149	14	1	2	2	32	2	35	42	36	32	48	42
150	12	1	2	2	37	3	32	38	28	19	54	36
151	7	2	1	2	58	0	33	37	42	42	21	42
152	8	2	1	2	39	7	39	37	41	39	43	40
153	16	2	1	2	42	3	39	47	40	35	40	36

154	6	2	1	2	34	1	53	36	45	36	37	36
155	16	2	1	2	39	4	36	23	36	40	36	40
156	16	2	1	2	42	2	36	37	36	35	43	40
157	9	2	1	2	49	3	36	38	41	44	42	55
158	10	2	1	2	52	3	34	36	47	51	40	45
159	13	2	1	2	48	2	43	42	41	43	43	43
160	16	2	1	2	56	1	42	16	40	40	46	40
161	16	2	1	2	42	3	43	43	42	42	48	43
162	8	2	1	2	47	5	42	48	36	39	36	38
163	14	2	1	2	42	2	40	43	35	37	32	34
164	7	2	1	2	46	3	21	33	30	27	27	27
165	6	2	1	2	48	3	26	8	18	37	26	37
166	0	2	1	2	54	1	27	27	28	28	35	35
167	0	2	1	2	56	2	27	35	42	22	20	26
168	4	2	1	2	35	2	49	37	33	48	47	44
169	15	2	1	2	37	2	47	43	42	48	45	48
170	13	2	1	2	28	2	40	20	44	49	48	49
171	11	2	1	2	32	3	48	48	48	38	33	42
172	11	2	1	2	42	1	48	44	34	47	54	53
173	11	2	1	2	49	1	34	43	39	39	37	41
174	14	2	1	2	38	0	46	45	48	50	52	50
175	11	2	1	2	36	3	44	38	40	42	50	42
176	13	2	1	2	46	2	40	49	50	51	34	41
177	11	2	1	2	31	2	51	41	43	42	42	45
178	14	2	1	2	34	2	43	35	31	25	44	37
179	9	2	1	2	42	1	31	39	34	36	46	36
180	13	2	1	2	39	2	36	25	41	32	34	32
181	12	2	1	2	52	2	36	46	26	48	50	34
182	9	2	1	2	48	1	32	18	38	40	37	32
183	14	2	1	2	56	4	30	32	41	28	42	32
184	12	2	1	2	59	4	38	48	18	23	16	25
185	13	2	1	2	53	2	40	44	36	42	26	32
186	11	2	1	2	29	1	39	48	42	27	48	37
187	15	2	1	2	38	2	46	48	42	28	40	39
188	15	2	1	2	39	3	36	50	42	37	40	39
189	10	2	1	2	46	2	39	42	40	39	41	40
190	15	2	1	2	42	3	40	45	37	37	40	30
191	14	2	1	2	46	3	32	46	47	32	39	49
192	12	2	1	2	36	2	39	36	40	43	42	35
193	12	2	1	2	48	1	25	51	46	32	37	40
194	10	2	1	2	34	1	31	39	33	35	47	40

195	13	2	1	2	48	2	43	34	49	40	34	39
196	14	2	1	2	35	2	45	47	38	25	41	40
197	11	2	1	2	33	1	36	47	47	25	41	44
198	12	2	1	2	38	3	47	26	48	3	17	40
199	15	2	1	2	34	2	36	51	18	47	40	36
200	16	2	1	2	52	3	36	43	39	24	49	51
201	13	2	1	2	56	4	34	50	42	30	34	51
202	9	2	1	2	48	2	40	48	36	20	48	47
203	12	2	1	2	51	3	37	36	41	41	42	42
204	16	2	1	2	37	2	33	46	53	25	40	43
205	13	2	1	2	32	3	32	42	52	25	44	45
206	14	2	1	2	42	1	40	38	45	28	41	48
207	15	2	1	2	48	2	33	46	53	25	38	45
208	11	2	1	2	39	1	46	47	51	24	27	46
209	12	2	1	2	37	1	47	44	43	26	38	40
210	10	2	1	2	29	0	38	42	48	42	40	30
211	10	2	1	2	28	0	28	48	42	52	48	48
212	12	2	1	2	42	2	51	28	32	32	30	32
213	12	2	1	2	32	1	43	48	48	35	32	45
214	7	2	1	2	36	2	42	26	48	35	38	32
215	12	2	1	2	52	3	36	52	42	38	32	38
216	11	2	1	2	50	2	32	28	42	32	30	42
217	15	2	1	2	48	2	28	42	28	32	52	28
218	10	2	1	2	40	1	42	32	48	30	28	48
219	11	2	1	2	32	2	36	42	32	36	22	33
220	10	2	1	2	35	1	52	30	28	30	48	35
221	15	2	1	2	39	3	28	48	32	46	36	52
222	12	2	1	2	40	2	42	51	36	36	32	35
223	10	2	1	2	42	2	32	30	42	22	28	29
224	14	2	1	2	48	3	38	32	48	48	22	38
225	15	2	1	2	37	2	22	34	42	42	36	33
226	7	2	2	2	46	3	37	36	28	32	38	30
227	12	2	2	2	52	2	35	42	38	48	42	28
228	10	2	2	2	46	1	32	50	42	36	38	42
229	14	2	2	2	42	2	39	48	38	48	22	42
230	15	2	2	2	54	3	41	42	32	36	42	34
231	5	2	2	2	47	4	28	32	32	36	48	48
232	10	2	2	2	43	2	30	34	39	52	28	38
233	5	2	2	2	37	3	52	32	36	32	32	48
234	11	2	2	2	39	1	28	38	32	34	28	42

235	10	2	2	2	46	2	36	52	42	29	32	52
236	13	2	2	2	49	2	35	28	38	40	42	22
237	6	2	2	2	42	1	30	30	42	28	30	42
238	5	2	2	2	33	0	39	38	36	30	46	32
239	12	2	2	2	42	2	42	36	42	38	48	36
240	14	2	2	2	46	3	48	46	28	48	39	43
241	13	2	2	2	42	3	48	29	46	41	42	33
242	14	2	2	2	46	2	41	46	39	38	46	52
243	9	2	2	2	44	1	30	43	33	48	29	41
244	15	2	2	2	30	2	37	49	46	28	48	42
245	8	2	2	2	32	3	35	51	37	33	49	41
246	11	2	2	2	29	1	38	51	32	42	30	42
247	3	2	2	2	42	2	33	28	39	31	35	38
248	12	2	2	2	49	1	50	42	33	38	49	29
249	13	2	2	2	54	3	44	27	45	41	47	38
250	7	2	2	2	46	2	52	37	37	32	42	36
251	8	2	2	2	51	1	52	33	33	39	33	28
252	11	2	2	2	53	2	41	29	42	42	27	43
253	13	2	2	2	46	3	32	43	28	36	33	45
254	6	2	2	2	26	1	38	41	27	39	38	42
255	14	2	2	2	29	1	48	47	41	45	38	30
256	11	2	2	2	38		36	48	49	47	28	37
257	12	2	2	2	24		42	29	42	48	50	38
258	8	2	2	2	28	1	27	52	46	21	43	21
259	11	2	2	2	46	3	27	33	44	42	41	28
260	15	2	2	2	42	2	41	42	39	40	30	36
261	13	2	2	2	46	1	45	23	33	43	21	42
262	7	2	2	2	38	3	45	44	38	44	39	42
263	11	2	2	2	40	1	49	29	42	41	48	37
264	15	2	2	2	38	2	45	52	28	39	38	45
265	11	2	2	2	40	1	39	31	42	42	37	35
266	15	2	2	2	41	2	42	39	35	41	39	21
267	9	2	2	2	37	3	45	33	50	32	27	38
268	16	2	2	2	59	2	42	38	58	50	32	50
269	13	2	2	2	54	5	37	32	36	42	29	36
270	12	2	2	2	49	4	45	42	40	40	38	38
271	14	2	2	2	30		48	48	52	42	48	28
272	15	2	2	2	43	2	32	35	43	36	32	42
273	12	2	2	2	49		48	51	43	48	42	39
274	12	2	2	2	59	2	30	35	36	28	52	30
275	16	2	2	2	44	2	28	41	39	32	35	37

276	12	2	2	2	36	3	22	38	32	42	28	52
277	12	2	2	2	28	2	42	28	32	26	52	28
278	12	2	2	2	34	3	42	32	42	30	48	51
279	14	2	2	2	46	1	30	32	34	36	42	50
280	5	2	2	2	42	2	48	42	32	34	32	38
281	14	2	2	2	31	1	52	28	30	38	36	46
282	8	2	2	2	26		48	28	48	52	32	48
283	6	2	2	2	56	5	28	42	36	42	38	42
284	3	2	2	2	59	2	32	36	39	32	32	38
285	4	2	2	2	46	3	42	38	28	42	48	42
286	6	2	2	2	43	4	36	32	28	48	28	42
287	4	2	2	2	24		35	38	32	32	30	36
288	15	2	2	2	43	3	30	46	36	22	48	42
289	14	2	2	2	46	2	32	48	46	48	36	36
290	11	2	2	2	52	4	52	32	34	29	40	28
291	13	2	2	2	32	2	30	38	48	48	32	42
292	15	2	2	2	57	1	48	30	48	39	48	46
293	14	2	2	2	43	4	30	42	42	32	28	32
294	0	2	2	2	44	1	28	32	36	35	42	48
295	10	2	2	2	49	1	50	18	26	42	37	39
296	10	2	2	2	41	3	30	38	52	40	30	26
297	16	2	2	2	37		18	8	30	18	16	28
298	12	2	2	2	29	1	42	33	38	48	52	40
299	16	2	2	2	34	2	30	32	36	38	28	48
300	14	2	2	2	27	3	30	48	36	30	34	40

संकेत :

परिवेश आंकिक मान		**लिंग :** आंकिक मान		**शैक्षिक स्तर :** आंकिक मान		**जीवन मूल्य :**	
ग्रामीण	1	शिक्षक	1	प्राथमिक	1	A-सैद्धान्तिक	X- सामाजिक
नगरीय	2	शिक्षिका	2	माध्यमिक	2	B-आर्थिक	Y- राजनैतिक
				उच्च	3	C-सौन्दर्यात्मक	Z- धार्मिक

(उच्च शिक्षण स्तरीय शिक्षक/शिक्षिकायें)

क्रम. सं.	जनसंख्या शिक्षा	परिवेश	लिंग	शैक्षिक स्तर	आयु	परिवार का आकार	जीवन मूल्य					
							A	B	C	X	Y	Z
1	16	1	1	3	45	3	47	48	28	42	36	36
2	16	1	1	3	38	2	46	35	27	45	43	44
3	14	1	1	3	50	3	39	43	34	41	38	35
4	13	1	1	3	40	4	43	33	27	47	40	50
5	13	1	1	3	35	2	46	52	30	30	46	36
6	16	1	1	3	34	1	42	41	30	46	43	37
7	12	1	1	3	59	2	49	38	20	20	51	22
8	12	1	1	3	39	3	43	22	32	20	36	36
9	16	1	1	3	42	2	32	32	43	48	41	28
10	14	1	1	3	52	4	36	31	42	47	50	48
11	12	1	1	3	48	2	33	28	42	40	43	44
12	15	1	1	3	46	1	32	38	28	36	36	37
13	10	1	1	3	53	2	20	30	43	38	32	50
14	14	1	1	3	57	4	38	42	48	47	30	41
15	13	1	1	3	56	2	32	38	35	31	41	48
16	16	1	1	3	42	3	36	35	50	36	22	48
17	13	1	1	3	36	1	44	42	43	37	30	46
18	12	1	1	3	34	2	20	42	28	38	36	36
19	14	1	1	3	48	2	46	44	35	45	27	43
20	10	1	1	3	46	3	22	20	20	31	42	47
21	15	1	1	3	39	2	30	43	42	48	31	48
22	13	1	1	3	36	2	36	50	35	37	30	42
23	16	1	1	3	38	1	22	32	46	20	20	41
24	13	1	1	3	32	2	27	47	40	45	44	28
25	10	1	1	3	34		41	27	30	46	20	51
26	12	1	1	3	38	2	28	42	42	43	32	38
27	11	1	1	3	52	4	40	47	48	31	28	22
28	14	1	1	3	56	3	31	47	38	36	40	47
29	16	1	1	3	47	2	41	30	32	36	43	50
30	16	1	1	3	42	2	44	48	28	36	22	37
31	14	1	1	3	25		47	30	37	42	48	35
32	15	1	1	3	30		42	54	38	30	45	31
33	-4	1	1	3	48	7	48	42	30	46	47	27
34	10	1	1	3	42	5	42	50	31	34	51	31
35	13	1	1	3	25		42	47	27	42	46	36
36	9	1	1	3	44	2	43	30	27	50	53	35
37	12	1	1	3	26	3	45	34	28	31	55	47
38	10	1	1	3	29	2	42	48	26	30	42	41
39	14	1	1	3	42	4	22	43	40	28	32	20
40	11	1	1	3	48	3	44	20	30	31	42	47
41	10	1	1	3	36	3	36	30	21	41	30	32
42	5	1	1	3	28		36	43	50	41	36	51
43	10	1	1	3	34	2	43	46	40	38	43	36

44	12	1	1	3	41	5	36	44	35	50	36	37
45	13	1	1	3	43	4	22	36	28	48	44	37
46	10	1	1	3	36	2	50	41	48	48	46	36
47	9	1	1	3	30	3	43	47	48	42	41	28
48	12	1	1	3	37	2	51	38	22	47	50	37
49	11	1	1	3	28		28	32	38	48	42	30
50	9	1	1	3	38	4	40	46	35	42	20	35
51	5	1	1	3	32	2	28	43	50	35	48	43
52	10	1	1	3	34	3	28	42	42	43	32	20
53	10	1	1	3	35	3	30	30	27	34	27	28
54	12	1	1	3	29		42	45	41	47	30	46
55	11	1	1	3	32	1	20	20	48	47	40	36
56	13	1	1	3	30		38	47	31	36	37	38
57	10	1	1	3	32	2	45	31	48	37	20	45
58	8	1	1	3	32	2	46	43	31	36	42	27
59	14	1	1	3	36	1	36	30	22	41	30	32
60	13	1	1	3	26		36	43	50	36	43	41
61	14	1	1	3	37	2	30	42	36	39	41	50
62	15	1	1	3	40	1	32	28	43	36	32	22
63	16	1	1	3	56	3	37	41	32	37	28	32
64	14	1	1	3	34	1	42	36	33	42	48	32
65	13	1	1	3	39	3	26	41	52	28	36	31
66	16	1	1	3	42	4	42	43	36	32	30	46
67	16	1	1	3	47	2	37	43	28	36	28	32
68	15	1	1	3	41	1	28	42	28	32	35	41
69	16	1	1	3	45	3	32	36	43	32	52	28
70	14	1	1	3	38	2	36	50	22	32	32	46
71	10	1	1	3	34	2	33	33	28	46	32	30
72	15	1	1	3	46	5	42	41	32	32	20	18
73	13	1	1	3	53		48	46	30	28	42	42
74	12	1	1	3	32	2	32	52	22	48	22	50
75	15	1	1	3	40	3	41	33	37	28	18	51
76	12	1	2	3	28	1	52	36	32	52	36	32
77	10	1	2	3	36	2	28	30	42	41	47	40
78	7	1	2	3	52	1	36	50	22	36	32	32
79	15	1	2	3	57	2	31	43	36	31	41	50
80	9	1	2	3	55	3	43	33	28	46	28	20
81	3	1	2	3	53	2	36	18	48	52	36	37
82	13	1	2	3	32	2	32	32	40	28	20	18
83	15	1	2	3	42	1	30	43	47	32	31	42

84	10	1	2	3	57	3	46	44	52	48	18	30
85	16	1	2	3	52	2	32	37	28	41	36	36
86	16	1	2	3	38	1	30	52	32	47	28	36
87	13	1	2	3	29		32	18	30	46	28	41
88	15	1	2	3	39	2	46	42	42	47	52	18
89	12	1	2	3	31	1	48	28	32	40	27	19
90	13	1	2	3	40	2	28	52	47	33	32	36
91	10	1	2	3	32	2	36	19	18	41	36	30
92	14	1	2	3	42	3	36	18	28	42	48	28
93	7	1	2	3	48	2	19	18	41	36	36	36
94	13	1	2	3	43	1	30	42	18	37	20	50
95	11	1	2	3	37	3	32	40	32	51	50	42
96	15	1	2	3	28		18	30	46	28	41	32
97	16	1	2	3	32	2	46	31	32	32	22	50
98	16	1	2	3	39	2	39	36	37	42	28	32
99	13	1	2	3	42	4	36	32	32	32	46	32
100	15	1	2	3	37	3	28	48	28	52	41	36
101	10	1	2	3	43	3	31	46	52	28	32	48
102	14	1	2	3	40	1	41	47	46	47	40	33
103	15	1	2	3	37	4	32	27	52	28	28	36
104	11	1	2	3	49	3	18	31	20	36	28	41
105	10	1	2	3	47	1	32	47	36	18	22	42
106	14	1	2	3	58	2	20	32	32	52	35	28
107	13	1	2	3	32	1	30	36	48	28	32	41
108	15	1	2	3	29		47	32	42	30	32	28
109	10	1	2	3	36	2	52	47	40	48	28	36
110	10	1	2	3	33	2	22	42	32	37	22	30
111	14	1	2	3	39	1	32	28	22	43	28	28
112	14	1	2	3	47	2	36	52	33	32	32	43
113	15	1	2	3	50	4	42	36	28	41	36	41
114	16	1	2	3	42	2	43	43	42	36	50	43
115	16	1	2	3	36	2	41	46	52	33	36	30
116	8	1	2	3	38	3	50	43	33	18	32	43
117	10	1	2	3	29	1	44	37	52	18	42	42
118	15	1	2	3	34	2	28	52	28	48	36	46
119	16	1	2	3	40	2	32	30	32	46	30	32
120	10	1	2	3	54	3	36	43	31	36	28	52
121	16	1	2	3	59	5	41	32	48	42	33	36
122	15	1	2	3	27		32	22	37	36	32	50
123	10	1	2	3	35	1	15	14	20	14	27	8

124	11	1	2	3	44	2	39	39	28	49	37	45
125	14	1	2	3	25		44	45	26	46	50	29
126	14	1	2	3	33	2	43	50	28	39	49	34
127	14	1	2	3	26	1	32	44	38	32	43	46
128	16	1	2	3	24		50	43	26	42	39	39
129	14	1	2	3	23	1	53	40	18	51	49	30
130	12	1	2	3	28	2	37	50	47	22	38	51
131	9	1	2	3	32	1	28	41	42	48	47	43
132	12	1	2	3	36	1	36	46	48	48	41	50
133	14	1	2	3	26		37	44	48	28	36	22
134	13	1	2	3	24		37	36	50	35	44	36
135	15	1	2	3	42	3	22	43	40	28	32	20
136	13	1	2	3	44	2	44	20	31	30	42	27
137	15	1	2	3	23		36	30	22	41	30	32
138	14	1	2	3	26	1	36	43	50	41	36	51
139	12	1	2	3	38	2	43	46	40	38	43	36
140	13	1	2	3	33		36	36	36	31	43	46
141	11	1	2	3	35	1	45	20	37	48	31	45
142	10	1	2	3	28		38	37	36	31	47	38
143	14	1	2	3	46	3	36	40	47	48	20	20
144	13	1	2	3	33	2	46	30	47	41	45	42
145	10	1	2	3	29		28	32	38	42	30	40
146	12	1	2	3	26		46	35	42	20	35	28
147	15	1	2	3	29	1	43	50	35	48	43	28
148	16	1	2	3	46	3	42	35	38	42	30	38
149	14	1	2	3	40	2	28	31	32	22	27	34
150	15	1	2	3	27		48	30	47	47	42	40
151	16	2	1	3	55	3	48	45	47	51	46	53
152	16	2	1	3	57	2	55	42	32	42	30	36
153	10	2	1	3	54	2	43	36	44	46	41	50
154	10	2	1	3	58	2	42	20	48	32	27	30
155	16	2	1	3	56	3	40	37	20	32	30	43
156	12	2	1	3	59	1	35	31	27	31	36	35
157	9	2	1	3	58	2	47	41	20	47	32	51
158	13	2	1	3	50	1	36	37	37	36	28	37
159	13	2	1	3	22	3	30	35	43	20	28	46
160	12	2	1	3	48	2	46	36	38	45	27	32
161	9	2	1	3	50	1	50	22	31	48	31	48
162	12	2	1	3	43	3	41	27	42	50	35	38
163	12	2	1	3	47	5	22	48	48	28	35	40
164	10	2	1	3	50	1	50	21	30	40	26	28

165	12	2	1	3	41	2	27	27	31	30	38	37
166	10	2	1	3	43	1	30	54	42	50	47	30
167	12	2	1	3	42	1	34	48	43	20	30	43
168	14	2	1	3	39	2	46	44	36	41	47	38
169	13	2	1	3	40	2	32	46	43	42	30	45
170	11	2	1	3	41	2	20	47	31	43	30	43
171	16	2	1	3	37	0	36	36	36	45	38	20
172	16	2	1	3	36	3	42	30	28	28	40	28
173	15	2	1	3	35	2	51	43	50	22	36	43
174	14	2	1	3	29	2	36	36	44	22	42	45
175	15	2	1	3	32	1	43	42	42	48	42	47
176	14	2	1	3	39	3	44	20	30	31	42	47
177	15	2	1	3	31	2	36	30	21	41	30	32
178	15	2	1	3	29	2	43	50	41	36	51	48
179	11	2	1	3	48	3	47	42	48	42	42	43
180	14	2	1	3	42	2	45	42	22	44	36	36
181	12	2	1	3	56	3	43	36	22	50	43	51
182	12	2	1	3	59	3	28	40	28	28	30	42
183	9	2	1	3	47	2	20	38	45	46	36	36
184	13	2	1	3	48	4	30	54	42	50	47	30
185	13	2	1	3	42	3	34	48	43	20	30	43
186	14	2	1	3	40	2	46	44	44	36	41	47
187	11	2	1	3	42	2	38	32	46	43	42	30
188	10	2	1	3	41	3	45	20	47	31	43	30
189	9	2	1	3	31	1	43	37	38	30	31	27
190	15	2	1	3	34	1	27	28	26	40	30	21
191	13	2	1	3	35	2	50	40	35	28	48	48
192	16	2	1	3	39	3	22	38	35	50	42	27
193	15	2	1	3	36	1	41	48	31	48	31	22
194	16	2	1	3	52	4	50	42	30	46	34	42
195	10	2	1	3	59	1	50	31	30	28	31	41
196	15	2	1	3	53	2	41	38	50	48	48	42
197	13	2	1	3	56	3	47	48	42	35	43	34
198	15	2	1	3	48	2	47	47	36	37	36	41
199	15	2	1	3	46	2	36	48	45	47	51	46
200	13	2	1	3	40	2	53	55	42	32	42	30
201	15	2	1	3	37	2	36	43	36	44	46	41
202	12	2	1	3	39	1	50	42	20	48	32	27
203	16	2	1	3	34	2	30	40	37	20	42	30
204	15	2	1	3	29	2	43	35	31	27	31	36
205	13	2	1	3	36	2	35	47	41	20	47	32

206	14	2	1	3	39	2	51	36	37	37	36	28
207	16	2	1	3	31	1	37	30	35	43	20	28
208	16	2	1	3	37	3	46	36	38	45	27	32
209	16	2	1	3	42	2	47	45	43	28	20	30
210	14	2	1	3	36	1	39	46	38	45	43	27
211	13	2	1	3	40	3	50	22	41	50	50	41
212	13	2	1	3	46	1	47	47	36	53	36	50
213	10	2	1	3	52	2	50	30	43	35	51	37
214	16	2	1	3	57	2	46	42	42	36	40	38
215	12	2	1	3	55	1	54	48	44	32	20	37
216	15	2	1	3	52	2	28	40	38	48	42	31
217	15	2	1	3	50	2	38	48	47	48	55	43
218	14	2	1	3	48	4	42	40	35	47	36	30
219	13	2	1	3	41	3	36	48	22	22	28	45
220	10	2	1	3	40	2	42	43	44	46	47	38
221	12	2	1	3	36	1	26	35	35	31	30	30
222	14	2	1	3	29	0	50	42	36	45	42	36
223	16	2	1	3	33	1	20	37	31	41	37	35
224	13	2	1	3	36	2	38	42	44	50	28	46
225	13	2	1	3	35	2	50	20	36	43	31	30
226	12	2	2	3	39	2	40	28	50	48	46	28
227	12	2	2	3	30	1	28	48	35	37	47	32
228	14	2	2	3	34	3	44	48	20	27	20	37
229	15	2	2	3	40	3	37	43	45	42	36	43
230	14	2	2	3	30	1	30	36	47	30	41	42
231	8	2	2	3	32	2	43	31	30	48	42	31
232	16	2	2	3	37	3	34	31	48	43	36	51
233	5	2	2	3	40	2	42	46	32	42	31	47
234	8	2	2	3	37	1	36	20	27	43	36	51
235	14	2	2	3	35	2	42	36	30	43	47	30
236	7	2	2	3	37	3	30	27	21	48	27	22
237	16	2	2	3	39	1	42	41	42	34	41	46
238	13	2	2	3	38	0	30	41	27	30	36	32
239	12	2	2	3	42	2	47	45	43	28	20	30
240	13	2	2	3	40	3	34	46	38	45	43	27
241	12	2	2	3	46	3	50	22	41	50	50	41
242	14	2	2	3	38	2	47	47	36	53	36	50
243	10	2	2	3	32	1	30	43	35	51	37	46
244	10	2	2	3	37	2	42	42	36	40	38	54
245	14	2	2	3	41	2	48	44	32	20	37	28

246	9	2	2	3	43	2	40	38	48	42	31	38
247	11	2	2	3	40	4	48	47	48	55	53	43
248	15	2	2	3	30	0	42	40	35	47	36	30
249	7	2	2	3	32	0	36	48	22	22	28	45
250	8	2	2	3	50	3	42	43	44	46	47	38
251	15	2	2	3	57	4	26	35	35	31	30	30
252	12	2	2	3	59	5	50	42	36	45	42	36
253	10	2	2	3	59	3	20	37	31	41	37	35
254	11	2	2	3	60	2	38	42	44	50	28	46
255	16	2	2	3	53	4	50	20	36	43	31	30
256	13	2	2	3	33	1	40	28	50	48	46	28
257	16	2	2	3	36	2	48	35	37	47	47	32
258	7	2	2	3	40	2	44	48	20	27	20	37
259	8	2	2	3	39	3	43	45	42	36	43	30
260	13	2	2	3	43	3	36	47	30	41	42	43
261	12	2	2	3	40	3	31	30	48	42	31	34
262	11	2	2	3	52	5	31	48	43	36	51	42
263	8	2	2	3	55	2	46	32	42	31	47	36
264	10	2	2	3	57	4	20	27	43	36	51	42
265	14	2	2	3	53	2	36	30	43	47	30	30
266	14	2	2	3	48	3	27	21	48	27	22	42
267	13	2	2	3	46	3	41	42	34	41	46	30
268	11	2	2	3	43	2	41	27	30	36	32	28
269	10	2	2	3	36	2	28	32	36	48	45	47
270	13	2	2	3	35	2	51	46	53	32	35	28
271	4	2	2	3	56	2	52	40	44	35	18	33
272	10	2	2	3	53	2	20	42	48	48	32	39
273	-1	2	2	3	46	3	36	20	46	28	20	39
274	10	2	2	3	47	3	40	30	37	36	35	53
275	14	2	2	3	49	2	32	38	54	36	48	36
276	8	2	2	3	36	2	37	20	33	32	50	36
277	15	2	2	3	39	1	25	25	44	18	37	36
278	15	2	2	3	40	4	32	42	32	42	36	34
279	10	2	2	3	37	3	48	48	28	38	32	43
280	12	2	2	3	39	3	41	23	35	38	28	42
281	12	2	2	3	38	3	40	25	42	35	38	43
282	8	2	2	3	32	1	42	23	39	52	38	42
283	12	2	2	3	30	1	45	38	42	54	40	40
284	12	2	2	3	35	2	45	27	33	26	26	21
285	14	2	2	3	37	2	52	32	36	28	54	26
286	10	2	2	3	40	1	48	25	30	48	38	27

287	8	2	2	3	42	3	48	36	30	42	48	27
288	16	2	2	3	38	2	44	37	36	35	38	49
289	13	2	2	3	46	2	40	40	38	38	40	47
290	10	2	2	3	48	3	52	37	36	18	36	40
291	7	2	2	3	43	3	43	40	28	36	26	48
292	14	2	2	3	47	4	49	42	36	42	35	48
293	14	2	2	3	41	2	41	36	41	42	52	34
294	16	2	2	3	42	3	48	52	42	33	32	46
295	12	2	2	3	40	3	40	53	45	48	32	44
296	13	2	2	3	35	2	54	48	47	37	37	40
297	14	2	2	3	38	2	48	51	48	37	28	51
298	14	2	2	3	54	3	28	53	52	48	42	43
299	15	2	2	3	49	5	24	48	41	35	48	31
300	14	2	2	3	57	1	48	25	25	32	28	36

संकेत :

परिवेश	आंकिक मान	**लिंग :**	आंकिक मान	**शैक्षिक स्तर :**	आंकिक मान	**जीवन मूल्य :**	
ग्रामीण	1	शिक्षक	1	प्राथमिक	1	A-सैद्धान्तिक	X- सामाजिक
नगरीय	2	शिक्षिका	2	माध्यमिक	2	B-आर्थिक	Y- राजनैतिक
				उच्च	3	C-सौन्दर्यात्मक	Z- धार्मिक

मानकीकृत परीक्षण

T. M. No. 458715

Dr. T. S. Sodhi *(Patiala)*
Dr. G. D. Sharma *(Simla)*

Consumable Booklet
of
ASSFPE
(Hindi Version)

कृपया निम्न सूचनाएँ भरिए—

नाम .... आयु ....

शैक्षणिक योग्यता .... लिंग ....

व्यवसाय .... मासिक आय ....

बच्चों की संख्या .... दिनांक ....

फलांकन तालिका

	प्रथम क्षेत्र—लघु परिवार	द्वितीय क्षेत्र—जनसंख्या शिक्षा
योग	+ –	+ –

Estd. 1971 ✆ (0562) 364926
NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230, KACHERI GHAT, AGRA – 282 004 (U. P.) INDIA

निर्देश

1. इस दृष्टिकोण माप के दो भाग हैं, प्रथम भाग—परिवार के आकार के प्रति दृष्टिकोण से तथा दूसरा भाग—जनसंख्या शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण से सम्बन्धित है।

2. कृपया प्रश्नों को सावधानी से पढ़िए और प्रश्न के सामने दिए गए खानों में जहाँ आप उचित समझें, सही (√) का चिन्ह लगाइए।

3. स्पष्टीकरण के लिए एक उदाहरण लीजिए "लघु परिवार एक खुशहाल परिवार है।" यदि आप इस तथ्य से सहमत हैं तो "हाँ" के नीचे उस प्रश्न के सामने वाले खाने ☐ में सही (√) का चिन्ह लगाइए। यदि आप इस कथन से असहमत हैं तो "नहीं" के नीच वाले खाने ☐ में सही (√) का चिन्ह लगाइए और यदि आप किसी भी तर्क का निर्णय लेने में असमर्थ हैं या अपने विचार व्यक्त नहीं करना चाहते हैं तो (" ?") के नीचे खाने ☐ में सही (√) का चिन्ह लगाइए।

4. आपको इस दृष्टिकोण माप के दोनों खण्डों को हल करना है। किसी भी प्रश्न को सही (√) का चिन्ह लगाए बिना नहीं छोड़ना है।

5. इसको पूर्ण करने में कोई समय निर्धारित नहीं है। आप जितना समय चाहें ले सकते हैं। साधारणतया लोग इसे 30 मिनट में समाप्त कर देते हैं।

6. इस प्रपत्र को आपको ईमानदारी व निर्भयता से करना है। प्राप्त सूचनायें बिल्कुल गोपनीय रखी जायेंगी।

7. यदि आपको किसी भी स्थान पर अपने उत्तर को बदलना है तो आप गलत उत्तर को साफ-साफ काट दें और फिर इच्छित स्थान पर सही (√) का चिन्ह लगाइए।

8. यदि आप इस दृष्टिकोण माप की भाषा, अर्थ, धारणा या विचार को समझने में असमर्थ हैं तो स्पष्टीकरण हेतु प्रबन्धक से पूछिये।

प्रथम भाग

क्रमांक	प्रश्न	हाँ	?	नहीं
1.	बच्चे माता-पिता की शान होते हैं।	☐	☐	☐
2.	बच्चे भगवान की देन है, हमें उनके आगमन पर रोक नहीं लगानी चाहिए।	☐	☐	☐
3.	अधिक बच्चों की अधिक समस्याएँ।	☐	☐	☐
4.	बड़ा परिवार लड़ाई की जड़ है।	☐	☐	☐
5.	बड़ा परिवार किसान परिवारों के लिए आवश्यक है।	☐	☐	☐
6.	बच्चे परिवार की निरन्तरता को बनाए रखने के लिए अत्यावश्यक हैं।	☐	☐	☐
7.	गर्भ-निरोधक औरत के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।	☐	☐	☐
8.	धनी मनुष्यों के पास काम करने के लिए मशीनें होती हैं, गरीबों के पास अधिक बच्चे होने चाहिए।	☐	☐	☐
9.	पुत्र के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती।	☐	☐	☐
10.	जनाधिक्य मानवीय गुणों पर बुरा प्रभाव डालता है।	☐	☐	☐
11.	भारत जैसे विस्तृत देश में मेरे परिवार के आकार से कोई अन्तर नहीं पड़ता।	☐	☐	☐
12.	परिवार नियोजन पर वाद-विवाद आकार को छोटा रखने में सहायक है।	☐	☐	☐
13.	पुत्र इच्छा से परिवार वृद्धि मूर्खता है।	☐	☐	☐
14.	अकेला बच्चा भी एक समस्या है।	☐	☐	☐
15.	परिवार नियोजन अप्राकृतिक व अमानवीय है।	☐	☐	☐
16.	भारत सरकार को प्रौढ़ विवाह प्रणाली अपनानी चाहिए क्योंकि वह परिवार के आकार को सीमित रखने में सहायक है।	☐	☐	☐
17.	यदि मानव ने बढ़ती हुई जनसंख्या को न रोका तो प्रकृति इसमें हस्तक्षेप करेगी।	☐	☐	☐
18.	जिन व्यक्तियों के अत्यधिक बच्चे हैं उन पर अनुपाततः कर लगाए जाने चाहिए।	☐	☐	☐

द्वितीय भाग

क्रमांक	प्रश्न	हाँ	?	नहीं
1.	जनसंख्या शिक्षा, माध्यमिक स्कूलों व कालिजों में, अध्ययन का विषय लागू करना चाहिए।	☐	☐	☐
2.	जनसंख्या शिक्षा लघु परिवार के प्रति जागरूकता की भावना पैदा करती है।	☐	☐	☐
3.	जनसंख्या शिक्षा बच्चों को जनसंख्या से अवगत कराती है।	☐	☐	☐
4.	जनसंख्या शिक्षा यौन क्षेत्र के संवेगात्मक कार्यों का रहस्योद्घाटन करती है।	☐	☐	☐
5.	जनसंख्या शिक्षा अनैतिक कार्यों की ओर प्रेरित करती है।	☐	☐	☐
6.	जनसंख्या शिक्षा हमें सिखाती है कि सन्तान का होना कोई दैवीय घटना नहीं है।	☐	☐	☐
7.	जनसंख्या शिक्षा पर खर्च बिल्कुल व्यर्थ है।	☐	☐	☐
8.	जनसंख्या शिक्षा पाठ्यक्रम को बोझिल बना देगी।	☐	☐	☐
9.	परिवार-जीवन शिक्षा युवा वर्ग के प्रजनन सम्बन्धी व्यवहार को परिवर्तित करने में सहायता करती है।	☐	☐	☐
10.	जनसंख्या शिक्षा लाभांश प्राप्त करेगी।	☐	☐	☐
11.	परिवार जीवन शिक्षा एक प्रचार मात्र है और असामयिक भी।	☐	☐	☐
12.	परिवार जीवन शिक्षा माता-पिता के प्रति द्वेष की भावना उत्पन्न करेगी।	☐	☐	☐
13.	परिवार जीवन शिक्षा भाई-बहनों के प्रति घृणा की भावना पैदा करती है।	☐	☐	☐
14.	जनसंख्या शिक्षा आरम्भ नहीं की जानी चाहिए क्योंकि हमारे अध्यापक इसको पढ़ाने में असमर्थ व अयोग्य हैं।	☐	☐	☐
15.	जनसंख्या शिक्षण वर्तमान पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग समझा जाना चाहिए।	☐	☐	☐
16.	स्कूलों में जनसंख्या शिक्षण की कोई उपयोगिता नहीं है।	☐	☐	☐

Printed By- Archana Printers, Subhashpuram, Bodla, AGRA-7

1

T. M. No. 458715

गोपनीय

डा. राज कुमार ओझा
एम. एस-सी., पी-एच. डी.
अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
के. जी. के. कालेज, मुरादाबाद (उ. प्र.)

मूल्य अध्ययन
(Study of Values)

नाम .... आयु .... लिंग ....

ग्रामीण/शहरी .... जाति .... धर्म ....

शैक्षिक योग्यता ....

पिता का व्यवसाय ....

आपका व्यवसाय ....

स्थान ....

SCORING TABLE

Values / Page	A	B	C	X	Y	Z
1						
2						
3						
4						
5						
6						
7						
Total						

Phone : 364926

Estd : 1971

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION
4/230, Kacheri Ghat, AGRA – 282 004 (INDIA)

भाग 1

निर्देश (Study of Values)

नीचे की पंक्तियों में कुछ प्रश्न दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के नीचे दो–दो सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। दाहिनी ओर के रिक्त स्थानों में बने कोष्ठों में उचित अंकों द्वारा आपको अपनी वैयक्तिक प्राथमिकता प्रदर्शित करनी है।

1. यदि आप उत्तर 'अ' से सहमत हैं और उत्तर 'ब' से असहमत हैं तो प्रथम कोष्ठ 'अ' में संख्या 3 और दूसरे कोष्ठ 'ब' में 0 (शून्य) लिख दीजिये।
2. इसी प्रकार यदि आप उत्तर 'ब' से सहमत हैं और उत्तर 'अ' से असहमत हैं तो प्रथम कोष्ठ 'अ' में 0 (शून्य) और द्वितीय कोष्ठ 'ब' में संख्या 3 लिख दीजिये।
3. यदि आप कथन 'अ' को कथन 'ब' से कुछ अधिक प्राथमिकता देना चाहते हैं तो पहले कोष्ठ 'अ' में संख्या 2 और दूसरे कोष्ठ 'ब' में संख्या 1 और कथन 'अ' से कथन 'ब' को अधिक प्राथमिकता देना चाहते हैं तो पहले कोष्ठ 'अ' में संख्या 1 और दूसरे कोष्ठ 'ब' में संख्या 2 लिख दीजिये।

समय का कोई प्रतिबंध नहीं है किन्तु किसी एक ही प्रश्न पर मत उलझिये। कृपया सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

A	B	C	X	Y	Z

1. मानवता के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किस विषय का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है ? (A: अ ☐, Z: ब ☐)
   (अ) विज्ञान
   (ब) धर्म
2. वैज्ञानिक शोधों का उद्देश्य क्या होना चाहिए ? (A: अ ☐, B: ब ☐)
   (अ) सत्य की खोज करना।
   (ब) व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति करना।
3. समाजोत्थान के लिए आप किसके कार्यों को महत्वपूर्ण मानते हैं ? (Z: अ ☐, Y: ब ☐)
   (अ) स्वामी विवेकानन्द।
   (ब) महात्मा गाँधी।
4. मान लीजिए आपके पास सब साधन उपलब्ध हैं और योग्यतायें भी हैं तो आप क्या बनना चाहेंगे ? (Y: अ ☐, B: ब ☐)
   (अ) राजनीतिज्ञ।
   (ब) व्यापारी।
5. धार्मिक ग्रन्थों जैसे रामायण, गीता, कुरान अथवा बाइबिल के बारे में आपका क्या विचार है ? (A: अ ☐, Z: ब ☐)
   (अ) ये कथा एवं उच्च कोटि के साहित्य हैं।
   (ब) ये आध्यात्मिक ज्ञान के भण्डार हैं।

Z	Y	X	C	B	A

6. आधुनिक नेताओं के कार्यों में आप किस कार्य को महत्व देंगे ?

(अ) आर्थिक लक्ष्यों की पूर्ति करना ।

(ब) अपने संगठन को मजबूत करने के लिए दूसरों को प्रभावित करना ।

7. किसी भव्य समारोह में आप किस बात से प्रभावित होते हैं ?

(अ) उस संस्था की शक्ति, सिद्धान्त एवं महत्व से ।

(ब) उसकी शानदार सजावट व चमक-दमक से ।

8. आपके विचार से अच्छे व्यक्तियों में कौन से चारित्रिक गुण अधिक वांछनीय एवं महत्वपूर्ण हैं ?

(अ) उच्च आदर्श एवं भक्ति ।

(ब) निःस्वार्थता एवं सहानुभूति ।

9. यदि आप में पर्याप्त योग्यता हो और आपको कालेज का अध्यापक बना दिया जाय तो आप किस विषय को पढ़ाना पसन्द करेंगे ?

(अ) कविता ।

(ब) शोध विषय ।

10. दैनिक समाचार-पत्र पढ़ते समय आपको यदि निम्नलिखित सूचना एक साथ दिखाई पड़ती हैं तो सबसे पहले किसको पढ़ना पसंन्द करेंगे ?

(अ) धार्मिक नेताओं के शान्ति के लिए प्रयास ।

(ब) फिल्मी कलाकारों की वैवाहिक सूचना ।

11. यदि समाचार-पत्र पढ़ते समय आप दो सूचनायें एक साथ देखते हैं तो आप सबसे पहले क्या पढ़ना पसन्द करेंगे ?

(अ) सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय सम्बन्धी सूचना ।

(ब) नवीन वैज्ञानिक खोज सम्बन्धी सूचना ।

12. यदि कभी आप अपने धार्मिक स्थानों में प्रवेश करते हैं तो वहाँ की किस वस्तु से अधिक प्रभावित होते हैं ?

(अ) वहाँ व्याप्त पूजा एवं ध्यान की आध्यात्मिक भावना से ।

(ब) उस भवन की निर्माण कला से ।

13. यदि आपके पास पर्याप्त समय है तो उसका उपयोग किस कार्य में करेंगे ?

(अ) अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने में ।

(ब) सामाजिक या सार्वजनिक कार्य करने में ।

14. यदि किसी नवीन भवन को देखने का सुअवसर आपको मिलता है तो बताइए आप क्या पसन्द करेंगे ?

(अ) भवन की निर्माण कला ।

(ब) भवन के निर्माण का वैज्ञानिक आधार ।

B	X	Y	A	Z	C

15. मान लीजिए आप किसी ऐसे जनसमुदाय में जाते हैं जो बहुत पिछड़ा हुआ है और आपके पास जनसमुदाय के विकास के लिए सब साधन उपलब्ध हैं तो आप क्या करना चाहेंगे ?
(अ) सामाजिक सुधार समिति की स्थापना ।
(ब) उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए उद्योग-संस्थानों की स्थापना ।

16. आजकल मन्दिरों, गिरजाघरों व मस्जिदों का क्या उद्देश्य होना चाहिए ?
(अ) उदारतापूर्ण भावनाओं का प्रचार ।
(ब) केवल आध्यात्मिक भावनाओं का प्रचार ।

17. मान लीजिए आप किसी गाड़ी की प्रतीक्षा में स्टेशन पर बैठे हैं और कुछ समय आपको व्यतीत करना है तो आप निम्नलिखित पत्रिकाओं में से किसको पढ़ना अधिक पसन्द करेंगे ?
(अ) वैज्ञानिक तथा साहित्यिक पत्रिकायें ।
(ब) कला और शिल्प सम्बन्धी पत्रिकायें ।

18. आप किस विषय पर व्याख्यान सुनना पसन्द करेंगे ?
(अ) भारत और किसी विदेशी सरकार की तुलनात्मक श्रेष्ठता ।
(ब) धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं का महत्व ।

19. आपके विचार में शिक्षा का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?
(अ) सांसारिक कार्यों में दक्षता व व्यावहारिकता प्रदान करना ।
(ब) सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान की शिक्षा देना ।

20. आप किसकी जीवनी पढ़ना पसन्द करेंगे ?
(अ) सम्राट अशोक, सिकन्दर, अकबर आदि शासकों की ।
(ब) फिल्मी कलाकारों की ।

21. क्या आज का भारत प्राचीन भारत से औद्योगिक या वैज्ञानिक क्षेत्र में आगे है ?
(अ) हाँ ।
(ब) नहीं ।

22. यदि आपको किसी औद्योगिक संस्थान में नौकरी करनी पड़े और वेतन समान हो तो आप किस पद को चुनेंगे ?
(अ) कर्मचारियों के सलाहकार ।
(ब) प्रशासक ।

23. आप निम्न पुस्तकों में से किस पुस्तक को पढ़ना पसन्द करेंगे ?
(अ) भारतीय धर्मों के विकास का इतिहास ।
(ब) भारतीय उद्योगों के विकास का इतिहास ।

X	A	Z	B	C	Y

24. भौतिक पतन को कैसे रोका जा सकता है ?

(अ) नागरिकों को उनके कर्तव्यों का ज्ञान कराकर ।

(ब) मानव व्यवहार के मूलभूत नियमों का अधिकाधिक ज्ञान कराकर ।

25. मान लीजिए आपके पास ऐसी क्षमता है कि आप लोगों के रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठा सकते हैं तथा जनता के विचारों को बदल सकते हैं तो आप क्या करना चाहेंगे ?

(अ) लोगों के रहन-सहन के स्तर में परिवर्तन ।

(ब) जनता के विचारों में परिवर्तन ।

26. आप किस विषय पर व्याख्यान सुनना पसन्द करेंगे ?

(अ) देश के किसी भाग की सामाजिक सेवा की प्रगति ।

(ब) चित्रकला एवं शिल्पकला की प्रगति ।

27. सभी तथ्य इस बात के साक्षी हैं कि विश्व की वर्तमान रचना का कारण :

(अ) ईश्वर की शक्ति है ।

(ब) प्राकृतिक नियम सिद्धान्त हैं ।

28. आप किस विषय पर रेडियो द्वारा समाचार सुनना पसन्द करेंगे ?

(अ) बाजार भाव का विवरण ।

(ब) चलचित्रों का विज्ञापन ।

29. आप अपने बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा देना चाहेंगे ?

(अ) धर्म की शिक्षा ।

(ब) व्यायाम की शिक्षा ।

30. आप किस विचार से अधिक प्रभावित होते हैं ?

(अ) संगीत जीवन मानवीय दृष्टिकोण को विकसित करता है ।

(ब) अछूतों को कपड़ा देने से समाज से विषमता दूर होती है ।

भाग 2

निर्देश

प्रस्तुत भाग में कुछ प्रश्न या कथन चार सम्भावित उत्तरों के साथ दिये गये हैं । प्रत्येक उत्तर को उसकी महत्ता के अधार पर अंक देने हैं ।

1. जिस उत्तर से आप सबसे अधिक प्रभावित होते हों, उसके सामने कोष्ठ में संख्या 4 लिख दीजिये ।
2. जिस उत्तर से आप पहले उत्तर की अपेक्षा कम प्रभावित होते हैं, उसके सामने कोष्ठ में संख्या 3 और यदि आपको थोड़ा भी उत्तर प्रभावित करता हो तो संख्या 2 और यदि उत्तर बिल्कुल भी प्रभावित नहीं करता हो तो संख्या 1 लिख दीजिये ।
3. आप अपनी इच्छानुसार किसी भी उत्तर को प्राथमिकता दे सकते हैं । यदि आपको अनुमान लगाना कठिन हो कि किसको प्राथमिकता दी जाये तो आप प्रश्न छोड़ सकते हैं । परन्तु इस बात का ध्यान रखे कि एक प्रश्न पर दो बार संख्या 4, 3 या 2 आदि न लिखें ।

1. आपकी समझ में एक अच्छी सरकार का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?

(अ) सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करना ।
(ब) व्यापार तथा उद्योग का विकास करना ।
(स) धर्म के अनुकूल नीतियों और सिद्धान्तों का निर्माण करना ।
(द) अन्य राष्ट्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखना ।

2. आपके विचार में जो व्यक्ति पूरे सप्ताह मेहनत से अपने व्यापारिक कार्यों की देखभाल करता है उसे अवकाश का दिन निम्नलिखित में से किस मनोरंजन पर व्यतीत करना चाहिए ?

(अ) सुन्दर तथा अच्छी पुस्तकें पढ़कर अपने ज्ञान को बढ़ाने में ।
(ब) राजनैतिक कार्यक्रम में ।
(स) संगीत, सम्मेलन, सिनेमा, नाटक आदि में ।
(द) धार्मिक उपदेश सुनने में ।

3. मान लीजिए आपके पास ऐसी क्षमता है कि अपने शहर के विद्यालयों के शैक्षिक विकास में परिवर्तन ला सकते हैं तो आप क्या करना चाहेंगे ?

(अ) संगीत तथा अन्य ललित कलाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना ।
(ब) सामाजिक समस्याओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना ।
(स) प्रयोगात्मक विषय पर विशेष ध्यान देना ।
(द) विभिन्न पाठ्यक्रमों के व्यावहारिक पहलू को बढ़ावा देना ।

4. क्या आप अपने यौन के ऐसे मित्र को पसन्द करेंगे जो :

(अ) कुशल, परिश्रमी, व्यावहारिक और धनवान हो ?
(ब) अपने जीवन की परिस्थितियों के विषय में धार्मिक दृष्टि से सोचता हो?
(स) नेतृत्व की योग्यता और संगठन की शक्ति रखता हो ?
(द) कलात्मक योग्यता रखता हो ?

C	Z	A	Y	X	B

5. यदि आप किसी छोटे शहर में रहते हैं और आपकी आय आवश्यकता से अधिक है तो आप इसका उपयोग कैसे करेंगे ?

(अ) औद्योगिक तथा व्यापारिक उत्पादन की प्रगति के लिए ।
(ब) स्थानीय धार्मिक संगठनों के कार्यों की प्रगति के लिए ।
(स) बालोद्यान के निर्माण में ।
(द) समाज कल्याण के लिए ।

6. यदि आप कभी नाटक देखने जाते हैं तो किस दृश्य में अधिक आनन्द लेते हैं ?

(अ) बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित दृश्यों में ।
(ब) नाच-गानों तथा इसी प्रकार के काल्पनिक दृश्यों में ।
(स) मानव के दुःख एवं सुख सम्बन्धी दृश्यों में ।
(द) समस्यापूर्ण दृश्यों में ।

7. मान लीजिए आप में निम्नलिखित व्यवसायों के लिए आवश्यक योग्यतायें विद्यमान हैं और उनकी आय समान हैं तो बताइए आप किस व्यवसाय को चुनेंगे ?

(अ) अध्यापन ।
(ब) आयकर अधिकारी ।
(स) धार्मिक उपदेशक ।
(द) राजनीतिज्ञ ।

8. यदि आपके पास पर्याप्त समय तथा धन हो तो आप इनका उपयोग किस प्रकार करेंगे ?

(अ) अच्छी-अच्छी मूर्तियों, कलाकृतियों के एकत्रित करने में ।
(ब) प्रौढ़ व्यक्तियों के लिए पाठशालायें खोलने में ।
(स) सरकारी पद प्राप्त करने के प्रयत्न में ।
(द) व्यापारिक संस्थान को खोलकर रुपए आदान-प्रदान करने में ।

9. अपने यौन मित्र के साथ शाम के वाद-विवाद में किन विषयों में आप अधिक रुचि लेते हैं ?

(अ) बेकारी की समस्या ।
(ब) वैज्ञानिक प्रगति ।
(स) साहित्यिक चर्चा ।
(द) सामाजिक उत्थान ।

10. यदि आपके पास योग्यतायें विद्यमान हों और अन्य परिस्थितियाँ भी अनुकूल हों तो ग्रीष्मावकाश में निम्नलिखित कार्यों में से क्या करना पसंद करेंगे ?

(अ) पुस्तकें लिखना और उनको प्रकाशित करना ।
(ब) किसी पहाड़ी स्थान में निवास करना, प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेना।
(स) खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेना ।
(द) नए व्यापारों के सम्बन्ध में शिक्षण और अनुभव प्राप्त करना ।

A	Z	X	Y	B	C

11. महान व्यक्तियों के योगदान इसलिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं क्योंकि :

(अ) उनसे विश्व-बन्धुत्व की भावना बढ़ती है ?
(ब) उनसे रहस्यों का स्पष्टीकरण होता है और ज्ञान बढ़ता है ।
(स) उनमें सामाजिक कल्याण की भावना निहित होती है ।
(द) वे धार्मिक विचारधाराओं में परिवर्तन लाते हैं ।

अ ब स द

12. किसी व्यक्ति के नैतिक स्तर को ऊँचा उठाने के लिए आप उसे किस प्रकार प्रेरित करेंगे ?

(अ) धार्मिक विश्वासों से ।
(ब) महान पुरुषों के जीवन चरित्र से ।
(स) सामाजिक, मान्यताओं, परम्पराओं और आदर्शों से ।
(द) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक प्रगति के कारणों को समझाकर ।

अ ब स द

13. आप निम्नलिखित लोकप्रिय व्यक्तियों में से किसको अधिक पसन्द करेंगे ?

(अ) जवाहरलाल नेहरू
(ब) स्वामी रामकृष्ण परमहंस
(स) बिड़ला सेठ
(द) रवीन्द्रनाथ टैगार

अ ब स द

14. आप अपने पति (यदि आप स्त्री हैं) या पत्नी (यदि आप पुरुष हैं) का चयन करते समय किन विशेषताओं पर अधिक ध्यान देंगी/देंगे ?

(अ) जो राजनैतिक कार्यों में सक्रिय भाग लेता/लेती हो ।
(ब) जो व्यक्तियों की सेवा पसन्द करे ।
(स) जो मूल रूप से अपने जीवन के प्रति आध्यात्मिक अभिरुचि रखे ।
(द) जो कलात्मक योग्यता में दक्ष हो ।

अ ब स द

15. किसी श्रेष्ठ फिल्म को देखकर आप उसके विषय में क्या सोचते हैं ?

(अ) वह उच्च राष्ट्रीय भावों से ओतप्रोत है ।
(ब) उसका संगीत एवं निर्देशन अद्वितीय है ।
(स) वह आर्थिक दृष्टि से सफल चित्र है ।
(द) उसका कथानक प्रभावशाली है ।

अ ब स द